ॐ नमः सिद्धेभ्यः

कविवर श्री नयनानन्द यति विरचित--

नयनसुख विलास

भाग प्रथम

प्राप्तकर्ता—

श्री पन्नालाल जैन अग्रवाल-देहली।

प्रकाशकः—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

दिगम्बर जैन पुस्तकालय-सूरत।

प्रथमवार]

स्व० ब्र० सीतलप्रसादजी स्मारक मालाकी ओरसे 'जैनमित्र' के ७ वर्षके ग्राहकोंको भेंट
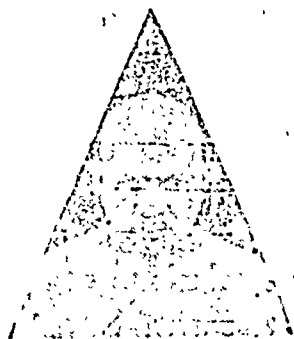
स्वर्गीय ब्र० सीतलप्रसादजी स्मारक ग्रन्थमाला पुष्प २३ का

निवेदन

करीब ७० ग्रन्थोंके सम्पादक, अनुवादक, टीकाकार तथा 'जैनमित्र' और 'वीर' के सम्पादक तथा रातदिन जैन धर्मके प्रचारके लिये भ्रमण करनेवाले श्री जैन धर्मभूषण ब्र० सीतलप्रसादजीका स्वर्गवास लखनऊमें ६५ वर्षकी आयुमें आजसे ३० वर्ष पर अर्थात् वीरसं. २४६८ में हो गया तब हमने आपकी धर्मसेवा, जाति सेवाकी याद कायम रखनेको आपके नामका स्मारक फण्ड खोला था जिसमें सिर्फ ६०००) आये थे तौ भी हमने जैसे तैसे प्रबन्ध करके आपके नामकी यह ग्रन्थमाला आजसे २८ वर्ष पर प्रारम्भ की और इससे प्रकाशित ग्रन्थ 'जैनमित्र' के ग्राहकोंको भेंट देनेकी योजना की थी जो बराबर चल रही है व इस ग्रन्थमालासे आज तक निम्न २२ ग्रन्थ प्रकट कर 'जैनमित्र' के ग्राहकोंको भेंट कर चुके हैं—

ग्रन्थमालाके प्रकट हुए ग्रन्थ—

और अब २३ वाँ ग्रन्थराज

श्री नयनसुख विलास भाग १

प्रथम बार प्रकट कर व 'मित्र' के ७२ वें वर्षके ग्राहकोंको भेंट कर रहे हैं जो कि २२० पृष्ठोंका व साढ़े तीन रु० के मूल्यका है।

यह ग्रन्थराज कूचा सेठ दि० जैन मन्दिर देहलीका हस्तलिखित ग्रन्थराज है जिसकी खोज नयेर साहित्यके खोजी वयोवृद्ध विद्वान् श्री पन्नालाल अग्रवाल देहलीने करके हमको लिखा था कि यह नयनसुख विलास ग्रन्थ भेजते हैं जो उत्तम व प्रकट करनेयोग्य है। तो यह पद्य ग्रन्थ होनेसे व

बड़ा होनेसे हमने पहले तो इन्कार किया था लेकिन इसके स्वाध्याय करनेसे हमें मालूम हुआ कि यह तो बहुत उपयोगी व प्रकट करनेयोग्य है अतः बड़ा होने पर भी दो वर्षमें प्रकट करके 'मित्र' के ग्राहकोंको भेंटमें बांटेंगे।

इस ग्रन्थके कर्ता कविवर नयनानन्द यतिवीर कांधला (मुजफरनगर) नि० थे लेकिन आप देहली, सहारनपुर, हस्तनापुर आदिमें बहुत रहे थे। व आप करीब ७५ वर्ष पर ही हो गये हैं।

इस पद्य ग्रन्थराजमें आपने धार्मिक व आध्यात्मिक पद्य रचना ऐसी उत्तम की है कि यह ग्रन्थ स्वाध्याय करने व संग्रह करनेयोग्य है और इससे 'मित्र' के हजारों पाठकोंको लाभ होगा।

कविश्री कवित्वशक्तिके ऐसे विद्वान थे कि आपने इस ग्रन्थमें ३०-४० रागनियोंमें पद्य रचना, रचना समय सहित की है। कुछ रागनियोंके नाम ये हैं—

दोहा, ठुमरी, झंझोटी, हजुरी, धनासरी, मल्हार, ढोलकी, झन्कार, गझल, गीता, कालंगडी, खमाच, ड्योंडी, जंगला, होवरी, काफी, रेखता, अशावरी, भैरवी, सारंग, सोरठ, रजवाडी, जोगीया, आल्टा, गौड, पंचाल, पीलु, धानी, सवैया ३१ आदि।

इस प्रकार कविश्री अनेकानेक राग रागनियोंके बड़े विद्वान थे। ग्रन्थ बडा होनेसे यह प्रथम भाग बडा हुआ है तथा दूसरा भाग भी बडा होगा (४० अध्याय तकका है) जो आगामी वर्षमें प्रकट कर भेंट किया जायगा।

इस प्रकार 'जैनमित्र' अपने ग्राहकोंको आज तक करीब १५०) के ग्रन्थ भेंट कर चुका है उसमें ब्र० सीतलप्रसादजीकी सेवा अपूर्व है और हम प्रकट करनेवाले तो उनके दास हैं।

इस ग्रन्थराजकी कुछ प्रतियां चिकने कागज पर जिल्द सहित भी विक्रयार्थ तैयार की हैं।

आशा है इसका शीघ्र प्रचार हो जायगा।

सूरत
सं० २४२८ कार्तिक
सुदी १५ ता.२-११-७१

निवेदक—
मूलचन्द किसनदास कापडिया,
प्रकाशक।

विषय-सूची

(२३ से ४० अध्यायोंके पदोंका संग्रह दूसरे भागमें छपेगा)

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः, श्री वीतरागाय नमः ॥

कविश्री—नयनानंद यति विरचित—

नयन सुख विलास

अथ पीठिका तीर्थ भाग १ लिखैं हैं। वचनिका—

जंबूद्वीप भरतक्षेत्र विषैं कुरुजांगल देश है। वहां श्री हस्तनापुरकी पश्चिम दिशामें कांधला नामक नगर है। वर्तमानकालमें मल्के विक्टोरिया बादशाह आदी जो मुल्क इंगलिस्तानमें लंडन नगरकी बादशाह है। ईशामसी पूर्वेशके मतकी धरनहारी अंग्रेजवंशी है। ताका निःकंटक राज्य प्रवर्तै है। ताकी छत्रछायाका आश्रय पाय हम भी शत्रुके भीत सैं निर्भय हैं। इस ग्रन्थके रचनेका उद्यम किया।

इस कांधला नगरमें दो जिन मंदिर हैं। वहां एक मूवरदासजी नामकरि जैन जती भये हैं। यद्यपि जैन जती बाह्य अभ्यंतर ग्रंथके त्यागी निर्ग्रंथ मुनिनको कहिये हैं। तथापि नैगमनयके आश्रय शीलवंतनिकूं भी जती पद है। तातैं उनका जती उपाक प्रसिद्ध था। वो बडे गुणवान पुरुष थे। सफरें उनका अनेक देश देखा हुवा था। श्वेतांबरी न थे दिगम्बर जिन धर्मके यथार्थ पंथकी जिनकै दृढ़ श्रद्धा था। मैं उनका भ्रातृ पुत्र हुं। ब्रह्म पोखसेरी निज जाति है। जब मैं उनकी गोदमें पड़ा तब मेरी दश वर्षकी अवस्था थी। उन्होंने बडे बडे कठिन कष्ट अपने शरीर पर उठाय मोकूं अक्षराभ्यास कराया। उनहीके अनुग्रहसे मोहि जिन मतका परम लाभ हुवा।

वे मेरे विद्यागुरु मेरा परम उपगारकरि सम्वत १९१५ ज्येष्ठ शुक्ला ३ शनिवारको पर्याय पूरीकर परभवकूं प्राप्त भये। तब मैं अनाश्रय छिन्न उवावत् अति खेदखिन्न भया। उनका संस्कार करि कैं जब निवर्त हुवा तौ तीन वर्ष उनके स्थानपर बैठा रहा। कोई प्रकारका सत्संग न था कि जिससे काल विक्षेप होय। कुछ कुछ जिन धर्मको जानता चला था अचानक एक पत्र बागप्रास्थनगरके जैनी पंचनका मेरे नाम आया। तामें यह लिखा था कि जो तुम भूधरदासजीके शिष्य हो। भूधरदासजीके उपगारका कुछ फल चाहो तो इहां आवो। कुछ उपगारमैंसे उपगार औरनकूं भी बांटो।

भावार्थ—तुम भी इहां आय करिदो चार लड़कनकूं पढाय जावो। उनके लाङ्गत पत्र पर मैं वहां संवत् १९१८ में चला गया। और संवत् १९२३ तक पांच वर्ष वहां रहा। इन पांच वर्षके अंतरगतकी व्यवस्था यों है कि वहां एक निश्चलरायजी श्रावक बड़े गुणवान और अध्यातम ज्ञाता न्याय वेत्ता पंडित थे। वृद्ध अवस्थाके कारण मन्दिरजीका शास्त्र पूजन नहीं कर सकते थे।

उन्होंने मोसैं कही हम तुमकूं सिद्धांतनको स्वाध्याय करावेंगे। तुम हमारा कहना करो। हमने तुमकूं इस वास्ते बुलाये हैं जो इस बस्ती में सेठ शादीराम अर उनका भानजा शुगनचन्द जैनियोंमें प्रधान पुरुष हैं। इनके घरमें मन्दिरजीके कारखानेका उपगार होता है। शुगनचन्दके चन्दनलाल एक ही लड़का है। सो कुसंग में बैठता है। अभी तो बालक है। पढने योग्य है। जो तुम्हारे उपगारसे यह कुछ जिनमतका मर्म ? हो जाय तो इसके कारण और भी दो चार लड़के भाईयोंके पढ जांयगे। सत्संग बना रहैगा।

धर्मका उपगार थोड़ा बहुत चला जायगा। नहीं तो सब

काम बिगड़ जायगा। मैं उसके हालसैं भेदी न था। मैंने प्रमाण किया। तब पंचोंने चन्दनलालकूं और चार लड़कों समेत मेरे पास पढनेकूं बै गये। वो कुबुद्धि कुसंगका बैठने वाला माता पिताका लाडला मेरे पास जिस दिन पढने बैठा मैंनें प्रथम ही उसकूं ॐ नमः सिद्धेभ्यः लिख कर दिया।

और कह्या कि बोल ॐ वह बोल्या कि तू ही बोल। मैं कही तू क्या कहै है। वह बोल्या तू क्या बक है। मैं कहूं तू पढ़ जो कहूं तू पढ। मैं कही मन्दिरमें चल तुझे पढाऊंगा।

वह कहै तुम चलो मैं आऊंगा। मैं मन्दिरसैं बुलावा भेजूं। वह उसके बदले मन्दिरमें ईंट पत्थर आकाश मार्ग करि भेजै। किसीका शिर फूट जाय। किसीका हाथ टूट जाय। एक संकटमें जी था। चित्तमें अनेक प्रकारकी तरंग उठें थी। सोचमें था कि अच्छा विद्यार्थी मिला। जो छोड कर देशकूं चला जाऊं तो उपहास होगा। और यहां रहूं और यह ऊत ही रहा तो पंचोंमें लज्जा आवेगी। यह अति कष्ट है क्या करूं। फिर यह सोचा भला थोड़े काल देखो तो क्या भावी है। परतु उसी दिनसैं उसकूं पढने वास्ते फिर नहीं कहा।

यह सोचता रहा कि देखूं इसकूं कौन बातका व्यसन है। जब इसका व्यसन मालूम होगा उस ही व्यसन में तू भी पड़ैगा तब यह तेरे अनुकूल होगा। जो इसका संस्कार अच्छा है तो सुधर भी जाय। जीवनके कर्मकी विचित्र गति है। देश कालके योग तैं भले तो बुरे हो जांय हैं। बुरे भले हो जांय हैं। सो मैंने चार मास तक उसकूं टोक्या नहीं। तब उसके चित्तकी भ्रांति मिटी। और जाना कि अब तो मुझे चेटोकते ही नहीं हैं। सो अब वह निश्शंक मेरे मकानके आगेकूं होता हुवा अपने घर जाया आया करे। परंतु मैं

देखता क्या हूं कि जब उधरकूं निकसे तब कुछ न कुछ राग अला अलापता अपनी धुनिमें गिट गिट भरता निकसे।

एक दिन पहर भर रात्रि गये लगभग। कान्हाड़ा देशके स्वरोंमें एक मल्हारको अलापता निकला। न जाने सरस्वती मूर्ति मान भई थी। न जाने उसके कण्ठ ध्वनिने प्रेरणा करी थी। गंधर्व किन्नरोंको मोहित करै था। मैं उसकी ध्वनि सुन बैठकसे बाहर निकस रस्ते पर खड़ा हो रहा। वह मुझे देख बोला बाबाजी खड़े हो। हां भाई खड़े हैं। मैं कही आवो चन्दनलाल बैठो तुम्हारा स्वर मुझकूं बहुत प्रिय मालूम हुवा। तुम तो बड़े गुणी हो। तुमकूं कोई जिन मतका भी भजन आवै है तब वह बोल्या मुझे तो जिनमतके भजन अच्छे नहीं लगते। न तो समझमें आवे हैं।

न उनकी चाल ढाल प्रिय है। बुद्धिरांडों कैसे गीत मुझे तो पसंद नहीं। मैं तो वैराग रागनो गाता हूं। जो दिल्ली, लखनऊ, पंजाब, बुन्देलखंडके चालाक लोगोंने नई नई तर्ज काढ काढ टप्पे। ठुमरी, गजल, धुरपद। तर्जें नौटंकी। सरवण। सांगा। सरहटो तुर्रा। कलंगा। चौबोला इत्यादि जारी किये हैं सो मेरी पसंद हैं। मैं शब्द अर्थकूं नहीं जानता, मैं तो लय धुनिकूं समझूं हूँ। तब मैंने यह कही, अच्छा, जो तुम्हारी मरजी माफिक जौनसी लय ध्वनि तुम्हें पसन्द होय उस ही ध्वनि में जिन मतके पद बन जांय तब तो तुम मन्दिरमें गाओगे तब वो अति प्रसन्न हूं आयह बोला कि जो तुम मेरी फर्माईश माफिक पद बनाकर मेरे याद कराते रहोगे तो मैं तुम्हारे पास ही पड़ा रहूंगा। और नित्य मन्दिरजी में भजन करा करूंगा।

घणी कहांताई कहूँ उसहीके कारण मैं तो सितार सीखा। और यह भजन समूह ग्रन्थ उसही की फर्माईश माफिक अनेक

प्रकारकी राग रागिनियों में बनाया। कितेक पद उनहीके नाममें अंकित किये। फेर पद पढ भी गया। पूजन पाठ स्वाध्याय भी करने लगा। चारों अनुयोगकी कथनीमें प्रवेश पाय।

चन्दनकीसी महिमाकूं धारि शीतल परिणाम करि प्रतिबुद्ध हुवा। सर्व कुव्यसन छोड जिन भजनके उपयोग लगाया। यहांतहां उत्सव भावनामें जाने लगा। दिल्लीमें प्रभावना अंग भया। श्री हस्तनापुरजीमें प्रभावना अंग भया। पटौतमें जिन यज्ञका प्रभावना अंग भया। किरथनेमें प्रभावना अंग भया। कांधलेमें प्रभावना अंग भया। तिनमैं ठासन जैनो भाई सैंकडांकोशनके मेले भये। तहां चन्दनलालकी सैली जाया करै थी। धर्मकी बडो महिमा होय थी।

चन्दनलाल १। कुंजलाल २। सौदागरमल ३ प्रतापसिंह ४ निहालसिंह ५। नवलसिंह ६। चिरंजीलाल ७। दिलसुखराय ८। तथा मेरा लघु भ्रात बलदेवसहाय ९। ये नवजने या नव रत्न शैलीमें गान विद्यामें प्रवीण हैं। तिन सबनमें चन्दनलाल ही लाल था। कर्मनकी विचित्र गति है। माता पिताके वंशका यह अंकूर था। बड़े कष्टसे पाला था। जब यह वृक्ष बड़ा हुवा गुणरूप शाखा प्रति शाखा निकरि यवनताकूं प्राप्त गया। एक ही फल लगने पाया था। नोचानकलाल कर क्यालने ऐसा धक्का दिया।—

—जो संवत १९२९ मैं मूलतैं उड़ाय दिया। यद्यपि वह दिन अबकों है। याका शोच सोच है। परन्तु जैसे वृक्षकी छाया वृक्षकी साथ ही जाय है। तैसैं या सैलीकी शोभा वाहीके साथ गई। वाही दिनतैं चित्त सब सैलीके उचित हैं। जिन धर्म तो सदैव भुवनत्रयमें जयवंत है। परन्तु हमकूं या भवमें चित्तावलंबन नहीं रहा यह महाखेद है। खेर जो भई सो

भई । अब हम ऐसा सोचे है । जो इन पदोंके बनावनेमें बड़ा परिश्रम भया था ।

और जहां तहांतें इनकी मांग आवे है । और लड़केवालोंके यामें चित्त विशेष लगे है । और इन बाल ढालोंमें कोई भजनोंका समूह ग्रन्थ है भी नाही । और प्रभावना अगका कारण भी है । और ये पद ऐसे भी हैं जो ग्वाल बाल भी कार्य छोडि सुना चाहे हैं । अपनी अपनी रुचि माफिक सुनि चित्त प्रसन्न करे हैं । याके मिस मन्दिर धर्मशालानिमें जेहां मनुष्य मेले हो जा हैं ।

जब मेले होय हैं तो अवश्य कुछ ना कुछ धर्मकथा भी चले है । तब कोई ना कोई धर्मात्मा पठन पठनका भी उद्यम करे हैं । पूजा प्रभावना जिन भजन जिन न्हवन जलयात्रा रथयात्रादिकमें प्रवर्तै हैं । तब जिन धर्मके प्रभावतें जिन धर्मिनके विभव और दयादान वात्सल्यादि गुणकूं देखि अन्य मती भी जिन धर्मकी महिमा देख श्रद्धा रुचि करै हैं । यातें जिन भजन और सैली समाजकूं चितावलंब हेत शुभोपयोगका कारण जानि मेरै ऐसी रुचि उपजी जो तैनें अनेक चीजनके बनावनेमें श्रम किया है । अब जो उन सब प्रबन्धोंका एक जगह संग्रह न करैगा तौ पिछे सब तेरातोल हो जांयगे ।

अरु थोडे कालमें नष्ट हो जांयगे अरु आयु पूर्ण हो जायगा तो तेरातोल वर्षका परिश्रम भ्रष्ट हो जायगा । अरु काहूके काम न आवेंगे । यातें सबका संग्रह करि जुदे जुदे अधिकार रूप यह नयनानन्द विलास नामांकित ग्रन्थ लिखया है सो जानोगे । पुनः विदित हो कि इस विलासके दो भाग मुख्य हैं तिनमें एक पूर्व भाग है ताके अध्याय २८ हैं । दूजा उत्तर भाग है ताके अध्याय १२ हैं । दोनूं भागोंके कुछ

अध्याय ४० है। तिनमें पूर्व भागके २८ अध्यायोंकी सूचना इस भांति है—

अर्थात् इस पूर्व भागमें १७ अध्यायतक तौ मैंने अपने शिष्य चन्दनलाल सेठ बागप्रस्थ निवासीकी फर्मायशो राग-रागनियोंके अन्दाजपर रचे थे तिनमें बहुधा रागनियोंमें चन्दनलालजीका नाम मैंने भोगकी जगह लिखा है। और ११ अध्याय अपनी इच्छासे सर्व साधर्मीजनोंके धर्म ध्यान योग्य रचिकर पूर्व भागकूं पूरा किया है सो जानोगे। आगे उत्तर भागके १२ अध्याय हैं तिनकी सूचना उत्तर भागके प्रारम्भमें लिखेंगे तहां देख लेना।

अथ पूर्व भागके २८ अध्यायोंकी पृथक् पृथक् सूचना लिखये हैं।

वर्णन अध्याय

प्रथम अध्यायमें ग्रन्थोत्पत्ति कारण पूर्वक पीठि। और गायन शिक्षा है तो: गवैयाके। दशदोषोंका वर्णन है। दूजे अध्यायमें मंगलाचरणके ३४ दोहे तेरह ध्रुपद। दो चतरंग। दो तराने। तीन प्रकारकी तालके तीन पद। तीजे अध्यायमें चौबीसी अषाडा। अर्थात् चौबीसों महाराजके २४ पद इस क्रमसें हैं कि अहोरात्रिकी साठ घड़ी होती हैं कोई चौबीस ठाम साठ ही होते हैं। अर्थात एक एक महाराजके पदके गानेका ढई ढई घडीका काल बांधा है। जैसें आदिनाथजीका पद कालंगडेमें है तो अजितनाथजीका पद भैरवीमें है। ऐसें तीर्थंकरका नाम रागका नाम। रागका समय। सुबहसे लेय स्याम तक। स्यामसे प्रभात तक। समय समयके रागोंमें बदलता चला गया है। पुनः चौथे अध्यायमें गुरु भजनाष्टक

है तिसके आठ पद हैं। पांचवें अध्यायमें पैन कणीके भजनोंका समुदाय है ताके पद हैं ॥५॥

छट्ठे अध्यायमें समुदाय जिन स्तुतिके पदोंका संग्रह है ॥६॥ सप्तम अध्यायमें प्रत्येक जिनके नामके पदोंका संग्रह है ॥७॥ अष्टम अध्यायमें श्रीमान राजमती सतीके तथा नेमजीके पद है ॥८॥ नवमें अध्यायमें ज्ञानोपदेशके पदोंका संग्रह है ॥९॥ दशवें अध्यायमें अनुभवात्मक पदोंका संग्रह है ॥१०॥

ग्यारवें अध्यायमें हस्तनापुर क्षेत्र सम्बन्धी पद हैं ॥११॥ बारवें अध्यायमें जलयात्रा सम्बन्धी पद हैं ॥१२॥ तेरवें अध्यायमें राम लक्ष्मण सीता सम्बन्धी पद है ॥१३॥ चौदवें अध्यायमें विसंवादात्मक अन्य मत खण्डनके पद हैं ॥१४॥ पन्द्रहवें अध्यायमें शंरट हरन महाप्रभाविक पद हैं ॥१५॥

सोलवें अध्यायमें दिल्लीका मंदिर मंजरी जैनोपकार मंजरी वा जैन स्तम्भ मंजरी है ॥१६॥ सत्रवें अध्यायमें दिल्लीकी महिमा मंजरीके पद हैं ॥१७॥ अठारवें अध्यायमें अनेक नगरोंकी जैन जात्राओंके पदों सहित अनेक पदोंका संग्रह है ॥१८॥ उन्नीसवें अध्यायमें सुरेन्द्र नाटकके ३६ पद अद्भुत हैं ॥१९॥ बीसवें अध्यायमें छोटी छोटी रागरागनियोंमें अति अद्भुत पदोंका सर्वप्रकार संग्रह है ॥२०॥

इक्कीसवें अध्यायमें पंचकल्याणके स्तवनोंसे गर्भित है ॥२१॥ बाईसवें अध्यायमें तत्वार्थ अधिगम सूत्रके प्रथमोध्यायके उपाठ है ॥२२॥ तेईसवें अध्यायमें रामका बनोवास सम्बन्धी जैन मतका ब्याहला है ॥२३॥ चौबीसवें अध्यायमें सीताका बनोवास अरु शील प्रभाव सम्बन्धी बारहमासा है ॥२४॥ पच्चीसवें अध्यायमें पुष्पदंत चक्रवर्तीका वा रासा प्रश्नोत्तररूप है ॥२५॥

छब्बीसवें अध्यायमें राजमती सतीका बारहमासा उद्बोधक है ॥२६॥ सत्ताईसवें अध्यायमें राजमती अरु नेमीश्वरके प्रश्नोत्तर

रूप उर्दबारामासा है ॥२७॥ अट्ठाईसवें अध्यायमें द्वादशानुप्रेक्षा सिद्धांत स्वरूप परमार्थ उपदेश है ॥२८॥

पुनः उत्तर भागके १२ अध्यायोंकी सूचना उत्तर भागके आदिमें देख लेना।

धर्मात्मा पुरुषोंसे मेरी यह विनती है कि यह गान विद्याके समाजका जिकर है। और गान खमालढोंका शास्त्र है। या मैं जो पद भजन हैं, जो उन राग रागिनियोंमें बनाये गये हैं। जो अवार इस कालमें दिल्ली लखनऊ मकसूदाबाद सहारनपुर हैदराबादके मध्य देशोंके गन्धर्व लोगोंने नई नई ताललय धुनि चाल ढाल जारी किये हैं। और वे बहुत सुन्दर चाल हैं। परन्तु तालसम उनके बड़ी मरोड रखते हैं।

तातैं यह प्रार्थना है कि अक्षर मात्रा अनेक यथार्थ पद जैसैं मैंने बनाये हैं। और जिस मात्राको लाग दिये हैं। तैसैं ही उसीके त्यों समटेकके विश्राम जैसैं या मैं हैं तैसे ही लिखो पढ़ोगे। और याद करो करावोगे तो जिस सभामें गावोगे अति शोभा पावोगे। और अक्षर मात्रा भंग करके लिखा पढ़ोगे तो मोकूं भी दूषण दिवाओगे और जिस सभामें गावोगे तहां तालकी चालसैं चूक ऐसे लज्जित होवोगे।

जैसे सूरमा युद्धमें घोड़ेसैं गिरके फोड़ा होय है। ताललय स्वर साथ भगवत भजनका आभूषण है। फिर अन्यसे देखा भी यद्यपि महानिपुणमती स्वतः स्वभावतैं होवे हैं तथापि भगवन्तोंके गुणानुवाद गावै तो अन्यमती भी भिन्नपनसैं अनुराग करि सभामें आय बैठे हैं। और बेताल बेसुर भयंकर स्वरसैं गावै तो अपनी हांसी करावे। और श्रोता सकलहि उकताय उठि जाय। जिन भजनकी अवज्ञा होय। तातैं शुद्ध प्रति लिखना। जाके जुदे जुदे पद छेद होंय। रागका नाम ठीक ठीक होय सो जानोगे।

पुनः उत्तम पुरुषनकूं मालूम हो कि प्रथम तो जो पद जिस रागके स्वरोंमें अलापा जायगा। उस रागके अलापका नाम हरएक पदके साथमें लिखा है। बुद्धिवान तो अलापका नाम जाणिके ही उस पदकूं गावेंगे। और जो अलापमें भी चाल नहीं पावें तो जिस जिस प्रसिद्ध रागनीकी चालमें ये पद बने हैं। उन उन रागनियोंकी भी एक एक टेक। एक एक कड़ी। इस पुस्तकमें भिन्न सूचिपत्रमें लंबरवार लिखी हैं।

प्रथम लंबरके पदको। प्रथम लंबरकी रागनीसे। मिलाय चाल जान लेना। दूजे लंबरका पद दूजे लंबरकी रागनीकी चालमें जानना। ऐसे ही लंबरसे लबर मिलाय सूचिपत्रमें चालका पता लगा लेना। यद्यपि मेरी अति मूढता है कि मैंने मिथ्यातकी रागनी इस धर्म समाजके शास्त्रमें जुदी भी क्यों लिखी तथापि स्वार्थ जान लिखी हैं। कि वे प्रत्यक्ष रागनी हैं बाल गोपाल और गंधर्व कलावंत डूमभाट नृत्यकी प्रमुख उनको सब गावै हैं। और चाल ढाल बहुत प्यारी है।

उसकी एक कड़ीको बांचते ही उसलंबरके पदकी चाल पालेंगे। तातें भिन्न लिख दई हैं। लंबरसे लबरकी समस्या जानचाल कंठ कीज्यो। और कछू उनसे प्रयोजन नाही है। यद्यपि पहले हमारा ऐसा अभिप्राय था कि प्रसिद्ध रागिनियोंका सूचिपत्र जुदा लिखें परन्तु वे मिथ्यातकी वाहीयात थी इस वास्ते टाल कर गये हैं।

॥ इति अथ गंधर्वके दशदोष लिख्यते। और गायन शिक्षा लिख्यते ॥

भावार्थ—गानेवाला ये दश दोष टाल गावे तो सभामें सोभा पावैं। और इनकूं नहीं त्यागे तो बहुत जल्दी इथेकी पिटवावे। प्रथम सारंगी, तंबूरा, मृदंग, कंसालकूं आदि देके संगीतके साज वीणादि होय तिनकूं खूब स्वरमें मिलवावैं। और आप में

गावने बैठैं ता समयके रागरूपमें उनकी गति सुनैं। और आप ताल देता रहै बिना स्वर मिले साजके संग न गावै ॥१॥

और गावने बैठे तब दोनूं गोडोमोड सिंहकी भांति प्रसन्नचित्त मनका भय लज्जा छोडि सिंह आसन बैठे। और आसन बैठे नहीं। काहेसैं जो धुनि और उपज संपूर्ण स्वासनाभि सैं निकसै है। नाभि सूधी रहै तो स्वास टूटै नहीं। अन्य आसन बैठै तो पूरी ध्वनि नहीं निकसै ॥२॥

और गावनेसे प्रथम जो राग गाया चाहै, उस रागका रूपकूं स्वरसें मिला हुवा तीन प्रकार मंद मध्य और तार ग्रामभरके दो च्यार बार समताकी साथ अलापै। घबराय कर अथवा एक ही बार उच्च स्वरसें न अलापै ॥३॥

और बहुत मुख न फाडै ॥४॥

और ऐसा न चिल्लावैं जो कंठकी रग फूल जांय वा माथा दमकने लग जाय वा कि नछने लग जाय वा मुखकी चेष्टा बिगड जाय। पसेवमें भर जाय सो न करै ॥५॥

औरगावती बरियां स्वरतालसे अपनेकूं बिगडा जानै तो तत्काल थम जाय। साजबाजके स्वरमें तालमें अपना ध्यान लगाय लयकूं बिचारै। जब साजमें एक समा चूकै तब फिर उस कलीकूं गावै। एकबार ही बेस्वर बेताल न दौडे ॥६॥

और हरबार एकबार कलीकूं गाय सम पूरा करि बिश्राम ले। दूसरीबार उस कलीकी उपज और नई रंगतकूं साजमें सुनै। जब साजका समा आ चुके तब दूसरी कलीकूं वा वाहीकूं गावै। इस बातका आवश्यक ध्यान रखना चाहिये। कि एकबार आप गावै एकबार साजको सुनै ऐसा किये तैं नई नई लय और उपजका लाभ होता है। गुन बधै है और आप हारे नहीं बिश्राम मिलता है ॥७॥

और पे मौके बहुत मटके नहीं। मंदमुसकान मंदहाव-भाव-विनय सहित ध्यान लगाय नमस्कार करांजुलि जोड जैसा पद विनतीका भाव हो तैसा अपने हाथ पाव नेत्र मुखका भाव दरसाय भक्ति प्रगट करै ॥८॥

और देवनिकूं वा गुरुधर्मकूं पीठ न दे। और सर्व सभाकी तरफ फेरी लेता गति करता रहै ॥९॥

सास्त्रधाम्रमैं मूंड पसारै नहीं। कान साज स्वरमैं राखे। ध्यान ताल और भावमैं राखे। और बिना देवगुरु धर्मकूं मनायें और पूज्य पुरुषनकूं मनायें और पूज्य पुरुषनिका मंगलाचरण करे बिना गावे नहीं। काहे तैं जो अभिमानी रूपकुल धन आदनके गर्व करि कंठ स्वरके भरोसे पर बहुत भये इष्टकूं नाहीं मनाये हैं। बहुत भये देवगुरुकी अवज्ञा करे है। तिनके कंठमें भगवती सरस्वती माताका निवास नहीं होता है। ते दुराचारी मार्ग-भ्रष्ट हैं सभामें निंदा पाय निकासे जांय हैं। और जो देवगुरु सरस्वतीकी विनय करे हैं ते विनयवान भगवानके भक्त परभवमें इंद्र धरणेंद्रनिके अखाडेनिका नृत्यु देखें हैं। पूज्यनके पूज्य होय परंपरा मोक्षकूं पावे हैं। या भांति इस ग्रंथकी उत्पत्तिका कारण आदि गन्धर्व शिक्षा पर्यंत पीठिकाका वर्णन किया जो कोई या ग्रंथकूं लिखें सो अति सावधानी सूं अक्षर मात्रा संयुक्त जैसा यह लिखा है तैसा ही पीठका सूचिपत्र राग अलाप और टेक समेत लिखें कमती बढती अक्षर न करें यह कविताकी प्रार्थना है। याकूं पढे लिखैंगा पढ़ाय लिखाय प्रसिद्ध करैगा। ते धर्मात्मा धर्मानुरागका फल कर्ता सुख्य पावैंगे। यह बालकनके चित्तका अवलंबन मैंने बालबुद्धि कर बनाया है। भूलचूक होय सो गुणीजन सोध लाज्यो मैं अति ही अल्पश्रुत हूं।

इति श्री नयनानन्दयतिकृत विलास संग्रह ग्रंथोत्पत्ति कारण

तथा कवि प्रार्थना गंधर्वके दश दोष गायन शिक्षा प्रमुख भूमिका वर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

अथ अध्याय दूजा यामें मंगलाचरणके दोहे २४। ध्रुपद १४। चतरंग २। तर्राने २। तीन प्रकारकी तालके पद तीन लिख्यते। अथ मंगलाचरण हे तो: चतुर्विंशति दोहा लिख्यते। तत्रादौ देवगुरु धर्म एकीभावकरण मंगल चौंतीसी समाचरेव।

दोहा।

ज्ञानानन्द अनंत शिव, अर्हन् मंगल मूल।
कलिल कुलाचल तोरकर, हरो नाथ अघशूल ॥१॥
तुम शिवमग नेता रहो, भेत्ता कर्म पहार।
विश्व तत्व ज्ञाता परम, त्यो बुधि वेग हमार ॥२॥

तुम त्रिभुवनके भानु हो, मैं खद्योत समान।
कैसैं तुम गुण वरणऊं, अल्पमतिनको नान ॥३॥
उदय भक्ति प्रेरक भई, एकहरि पकरि पान।
लंपट क्यो पदकमल दिए, लक्ख अगव गुरु ध्यान ॥४॥

तुम अनंतगुण आगरे, पट तर अवरन कोय।
तुम वाणी तैं जानिये, जो कछु जगतैं होय ॥५॥
भूत भविष्यत कालकी, षट द्रव्यन पर जाय।
वर्तमान सम तुम लखो, दरसा सकल सुभाय ॥६॥

सकल चराचर जगत थित, ज्ञान मुकर रहो झूल।
तातैं तुम अर्हंत हो, सकल जगत करि पूज ॥७॥
तुमतैं गणधरनै लख्यो, चऊं गति मय संसार।
तातैं तुम हो परम गुरु, पतित उधारन हार ॥८॥

वीतराग सर्वज्ञ तुम, तारन तरन महान।
तातैं तुमरे वचन प्रभु, हैं पट मत परमांन ॥९॥

धर्म अहिंसा तुम कहो, जहां हिंसा तहां पाप।
दयावंत भव जल तिरैं, पापी लग संताप ॥१०॥
जीव दयागुण वेलको, बोई ऋषभ जिनेश।
पट दर्शन मण्डप चढो, सींचो भरथ नृपेश ॥११॥
मिथ्या वचन अनादरे, तुमने हे जगदेव।
तातैं झूंठनकी प्रतत, जहां तहां धिरकी रेव ॥१२॥
सत्य धर्म तैं होत है, त्रिभुवनमें परतीत।
सत्य तैं गोला लोहका, होय तुषार प्रतीत ॥१३॥
चोरी तुम वर्जन करी, परम पाप लख धीर।
त्यागी पद पद पूजिये, चोरत हैं भव पीर ॥१४॥
अनाचार वर्णन कियो, ग्रहण करन कहो शील।
जिन धारयो सो जगतरे, जिन छारयो कहा कील ॥१५॥
शील शिरोमण जगतमें, या सम धर्म न और।
अग्नि होय जल परणवे, विष हो अमृत कौर ॥१६॥
मृदग माळकै परणवै, शूल सेज मख तूल।
आधि व्याधि आवैं नहीं, शीलवंत ढिग मूल ॥१७॥
भव तृष्णा दुःख दायनी, भाखो तुम भगवान।
त्यागी त्रिभुवन पति भये, रागो नर्क निदान ॥१८॥
देव धर्म गुरु हो तुम हो, ज्ञान ज्ञेय ज्ञातार।
ध्यान ध्येय ध्याता तुम हो, हेयाहेय विचार ॥१९॥
कारण हो शिव पंथके, उद्धारण भव कूप।
कारज कारण जीवके, हो तुम हो शिव भूप ॥२०॥
उत्तम जन बहु जगतमें, तारे तुम भगवान।
अधमनता खोय कही, तारो हे जगवान ॥२१॥
आयो तुम पद पूजने, भजन करनके चाव।
राखो भव भव भजनमैं, अवलग जग भरमाव ॥२२॥

भजन करत संसार सुख, भजन करत निर्वाण ।
भजन बिना नर जगतमें, है तिरजंच समान ॥२३॥

भजन करत जग उद्धरे, सिंह नवल कपिसूर ।
गणधर हो वृषभेशके, मुक्ति भये अघचूर ॥२४॥

निरअंजन अंजन भये, गज लि रात भये सिद्ध ।
स्वान छटी पन्नगति रे, तिनकी कथा प्रसिद्ध ॥२५॥

कहां पशुपर आय नर, कहां मुक्तिको धाम ।
तू भी मूरख भजन कर, सुखमें भलो न घाम ॥२६।

या जग विषम विदेशमें, बन्धु भजन भगवान ।
सार्थ बाह निर्वृत्तिको, लखि निश्चै उर आन ॥२७॥

भजनबाद जिन भक्ति बिन, भक्तिबाद बिन भाव ।
भावबाद जब गाढ बिन, गाढबाद बिन चाव ॥२८॥

धन्य महूरत धन घड़ी, धन्य दिवस गिन आज ।
तरन तरन करण जुहो, श्री जिन भजन समान ॥२९॥

रहो सदा सैली सुखी, रहो सदा सतसंग ।
जातैं श्री जिन भजनमें, प्रतिदिन होय उमंग ॥३०॥

धन्य पुरुष सज्जन मिले, भये सहायक धर्म ।
भजन करूं भगवंतका, राख सरस्वती सम ॥३१॥

तू कैवल्य उद्योतको, परम ज्योति तम हार ।
नयनानंद गरीबकी, यह विनती उर धार ॥३२॥

मोह महातम दूर करि, शुद्ध ज्ञान परकाश ।
ज्यों जब सांचे देवका, गाऊं भजन विकाश ॥३३॥

यह विधि मंगल मानिके, कहूं भजन दो चार ।
भाखूं नयनानंदके, कृत विलास अनुसार ॥३४॥

॥ इति मंगल चौबीसी समाप्तम् ॥

अर्थ—प्रत्येक मंगलाचरण हेत चौदह ध्रुपद लिखें हैं। ये धुरपद, भैरवी, विलावल, सारंग, गौड़, भीमपलाश, बरवा, धनासरी, गौरी, येमन, स्याम कल्याण, परमाच, कान्हड़ा, देश, सोरठ, विहाग जैजैवंती, मेघ, वसंत, ललित, विभाष, नट, पट, परज, कालगड़ा, प्रमुख, अनेक रागोंमें समय अनुकूल गाये जाते हैं। चाहो जौनसा धुर पद इन रागोंमेंसे चाहो जौन से रागसें गालयो निःसंदेह गाया जायगा। यातैं प्रति धुर पद रागकी मुख्यताका नेम नहीं किया, गंधर्वकी इच्छा प्रधान है।

अर्थ—वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थंकरके नाम गुग समेत नमस्कार करनेका उपदेशात्मक धुर पद लिख्यते। ऋषभाजित संभवंद अभिनंदन सुमतिकन्द पद्मप्रभ पाद्वंदि भगवत गुग गावरे टेक।

सेवो शुभ पाश संत चंद्रप्रभ पुष्पदंत शीतल श्रेयांसकेत जीये मन ध्यावरे, वासवनुत वासुपूज भजिकर निर्मल जलज भाग भव अनंत धूम सद्धर्म प्रभावरे। धार ले मन शांति कुंथवरि के चरमल्लिपथ चरिले मुव्रत अनंत नमि नेमीशपावरे, कर ले पारसके भेट स सन्मति नाथ भर्मभेट चत्यो चिरकाल क्यों न सरसी सुर छावरे ॥१॥

अथ—पूर्वोक्त चौवीस जिन जगतपिता हैं तिनके पितानके नाम गुणपूर्वक नमस्कार करनेका उपदेशात्मक धुरपद प्रारम्भः।

वंदू जगनाथ तातना भिल जितशत्रुनाथ धरिके जुग हाथमाल मन धन जठधारी ॥टेक॥

जय तार सुवीर मेव धारण सुनहिटने धमहृखेन सु कृत वेग दृढरथ सुखकारो। विमलेश्वर वासुदेव जय वृष सिंहसेन पत मानव सिंहसेन सेव सूरज दुखहारो। सुन्दर दर्शन नरेशकुंभल भो सुमंतेश विजयोजय। समुद्रविजय पुन्यातम भारो।

भजरे मन अश्वसेन सिद्धारथ सिद्ध दें न ये जिन चौबीस तात एक भवतारी ॥२॥

अथ वृषभादि चौबीस जिन जगत चूडामणि देव हैं तिनकी मातानिके नाम गुण सहित वर्णनपूर्वक नमस्कार करनेका उपदेशरूप धुरपद प्रारम्भः।

सुनरे मन मेरी बात जाए जिन जगत तात ऐसी जिन मात ताहि बन्दन नित करनी ॥टेक॥

मरुदेवि जयामतीय श्रीयुत पेणामतीय सिधमर्था मंगलीय सीमा सुख भरनी। प्रथवो शुभ लक्षणीय रामारु सुनंदनीय विमला जयदेवि रमा सूर्या दुख हरनी। सुभ व्रत धरणी सतिय एलाअरु श्रीमतीय मित्रावार रक्तीय श्यामा अघ हरनी। विशिषा शिवदेवि माय वामा त्रिशलादि ध्याय वंदू यह कोष जगत चूड मणि धरनी ॥३॥

अथ—चतुर्विंशति वृषभादि जिन जन्म नगर इंद्रन करि पूज्य षोडशपुरी तीर्थस्थान हैं तिनके नाम और तिनकूं नमस्कार आज्ञा करनेका उपदेश रूप धुरपद प्रारम्भः।

कौशल सावतिय धाम शाशो कौशंबि ठाम। तीर्थंकर जन्म ग्राम तीरथकर प्यारे ॥टेक॥

चंपापुर चंद्रपूर भद्दलपूर सिंहपूर मिथुलापूर रत्नपूर गजपुर नित जारे। काकंदी कंपिलादि सूरजपुर रापि यार काकर कुश अग्रपूर मुनि सुव्रत ध्यारे। कुण्डलपुर चोर देव षोडश हैं नगर एव जन्मे भगवन्त जहां आतातुर धारे। घरवर भई रत्न वृष्टि धर्मातम भई सृष्टि सोभा बरनी न जाय नरभव फल पारे ॥४॥

अथ—चतुर्विंशति ऋषभादि जिनेंद्राणं चरण चिह्न लिख्यते।
॥ धुरु पद ॥

भापूं जिन चरण चिह्न जाके तन तैं दमिल मुनि के चित्त हो मगन संशय सब टारियें ॥टेक॥

वृष गजघोटक कपीश कों चक अंभोजपीश स्वस्तिक निशिईश शमछ औ वस्त्र विचारिये। स्गपग महि कावरा दृवावर वज्रायुधाह मृग वाक धनुर्गिनाह कलशा उर धारिये। कछय बर कमल शंख सर्प सहे हरि निशंक लखि के जिन अंक नाम निश्चय चित्त धारिये। धरियें उर ध्यान देव करिये प्रभु चरण सेव जातैं भवसिंधु खेव शिव मैं ले तारिये। भावूं जिन चरण चिह्न ॥५॥

अथ—निर्ग्रंथ वीतराग गुरुनिकूं नमस्कार ॥ धुर पद ॥

वंदू निर्ग्रन्थ साधु त्यागी जिन जग उपाधि आतम अनुभव अराधि पर परण तिछारी ॥टेक॥

तजि तजि पद चक्रवर्ति मन वचतन हो निरतें पाय न प्रथिवी विचतें जिन दिक्षा धारी। समदम संवर संमारि निर्जर करिकर्म टारि सटत न प्राणी उवार करुणा विस्तारी। जीते त्रयशल्य दक्षसुर गिर सम भये अचल रत्नत्रय धरण मल्ल कष्ट सहें भारी। जयजय महिमा निधान जंगम तीरथ समान मेरे उर धो ध्यान वंदूं जग तारी ॥५॥

अथ—जिन सरस्वतीकूं नमस्कारका धुर ॥पद॥

निकसी गिर वर्द्धमानसेती गंगा समान गोतम मुख परी आन शारद जग माता ॥टेक॥

तीरत भ्रम गज सुदंत जड़ता तप करि प्रशांत—रत्नाकर ज्ञान अत पहुंचो भवत्राता जा मैं सप्तांग भंग उठे निर्मल तरंग अमृतकी छोर—मोक्ष मारगको दाता। आदिरु मध्यांत सान निर्मल किरपानिधान—धारा पर वाहवान त्रिभुवन विख्याता। वंदे दृग सुखदाय मेरे उर कर निवास गाऊं जिन गुण विलास कीजे सुखसाता ॥६॥

अथ—रत्नत्रय धर्मकूं नमस्कार धुरपद उपदेश रूप। लागरे

तू मोक्षमगा रत्नत्रय मांहिपगा मोरे मत नाहिं डगा पहुँचै शिव धामरे ॥टेक॥

सम्यक मई दृष्टि ठान हित अरु अनहित पिछान शंसे भ्रम भान-ज्ञान चिंतामणि धामरे पूंजी परभौकी जान सम्यक चारित्र आन टूटैं अघ जाके मुक्ति पावै बिन दामरे। तन धन आशा बिहाय कृषि करि काया कषाय-कोई न करि हैं सहाय जब कै अघका मरै। नैनानंद कहत मीत शास्त्रो सतगुरुनें रीत बोवै बबूल तौन लागैंगे आम रे ॥७॥

अथ—दर्शनविशुद्धादि षोडशकारण भावनांकूं भावनेका उपदेश रूप धुर ॥पद॥

भारे दर्शन विशुद्ध-तजि करि परणति विरुद्ध प्रवचन वत्सल सुबुद्धि आदिक बल फुरि कै ॥टेक॥

तीर्थंकर प्रकृत सार-ताकी यह देनहार आराधन युत संभारि अपनी उर जुरिकै। जिन पद अरविंद सेय सतगुरुकी सरण लेय, आगममें चित्तदेय, टूटैंअघचुरिकैं। भरम्यो चऊंगति मंझार, नैनानंद सुनलेयार, जावनकी देरटार, भागेमति उरकैं। भागैंकु छविद्धनांहि, देनूभव बिगरजांय, भरमेंगोफेरफेर, रोरोझुरिझुरिकै ॥८॥

अथ—पंच परम इष्ट नवकार मंत्रकूं निरंतर ध्यावनेका उपदेश और पंच पद गर्भित धुर पद।

चेतरे अचेत मीत, खोनों चिरकाल बीत, तजिकैं परमाद रीति, अब तो तू जागरे ॥टेक॥

भजले परब्रह्म रूप, अर्हन्त सर्वज्ञ भूप, सिद्धनके गुण अनूप चितवनमें लागरे। आचारज उवझाय साधुन पदवीस न्याय, वेहो छुडवाय, उष्ट विषयन सूं भागरे। हिंसा अरुझूंठनापि, मत कर चोरी मिलाप, मैथुन विरतारिपाप, तृष्णा अग त्यागरे।

वर्चरन कषायखार, कटुकन दुर्गंधगंध, स्यामन पीताली। हरितन आरक्त खेत, धूपन तम ज्योति देत, शब्दन सुर नर परेत, नर्क नव नवाली। जल थल बिल नभ चरीत, त्रिय पुंलन-पुंसकीन, सम्यग्दृष्टि भाखी ॥१२॥ पुनः

सम्यग्दृष्टिनके निरबीकल्प सम्यक्तको नमस्कारका धुर पद। ताका आशय ऐसा है जो मैं पंच जड द्रव्यनितैं भिन्न एक अखंड स्वरूप चैतन्य चिद्रूपस्वरूप न्यारा जीव द्रव्य हू इन पंच द्रव्यनिका भेषी हूं ये मेरेतैं भिन्न हैं ॥पद॥

धर्मीन अधर्मपाल, जतमें आकाश काल, पुद्गलसें भिन्न एक चेतन चितसारी ॥टेक॥

पर जय गति थिति धरंत, त्रिभुवन नभ मैंभ्रमंत, त्रिपणी खोहि सब बहंत, अय थाह पधारी मूरत तन लग पाय, दो विध तर बरन काय, जिनका त्रय रूप नांहि, इन्द्रिय सब न्यारी। सबहैं थान मेल खेल, जैसे तिल मांहि तेल, पावक पाषाण, जेम हमरो लिखि सारी। ऐसे विज्ञान भानु, दग सुख महिमा निधान, तिनकूं जुगजोरि पान, वंदन विस्तारी ॥१३॥ अथ

अभव्य मिथ्यादृष्टीकी व्यवस्था राग अडरंग खम्मा चका ॥पद॥

षट दर्शनकी बात बनावै, बानी ग्यारह अंग सुनावै, गाढो समकित कब ऊन आवै। षट दर्शनकी बात ॥टेक॥

जीवके सरूप मद्धि दौर धूप होय, तातैं गिर गिर, गिर गिर, गिर गिर नव ग्रीवतैं आवै॥ षट दर्शनकी बात बनावै। बानी ग्यारह अंग सुनावै, गाढो समकित कब ऊन आवै, षट दर्शनकी ॥१॥

शंसय विमोह विपरीत तान जाय। नैनानंद आगम विभावमें, श्रद्धांवाना श्रद्धांवाना। श्रद्धांवाहीन पावै। षट

दर्शनकी। ज्ञानी ग्यारह अंगसु० गाढो समकित, षट दर्शनको० ॥१४॥ पुनः

चतरंग खम्माचरागका जीवनकूं पंच पापके त्यागका उपदेश है। जिनोंने नहीं त्यागे तिनकी कथा है॥ और इस रागमें कट पटे बोल होते हैं सो जैसा यह राग है तैसेंही शब्द रखे गये हैं। इसमें ताळकी बारीकी गंधर्वोंने रुढो मरोडसे रखी है सोजानोगे खम्माचरे मन जैन धरम ना बिचारे, पंच पाप तजि देरे प्यारे, पापिनके सुन चरित अकारे, रेमन जैन धरम ना बिचारे ॥टेक॥

झूंठा तन झूंठी माया च्यारूं गतिमें तू फिर आया। ऊरध मध्य पताल–गतागत–नट नाटक किये स्वांग अपारे। अरे मन जैन धरम; पंचपाप त०; पापिनके सुनिच०॥१॥ जीवनकी हिंसा करि, ब्रह्मदत्त आदि, मरिमरि, मरिमरि, मरिमरि, मरि मरि नरक सिधारे। रे मन जैन धरम; पंचपाप; पापिनके ॥२॥ वसु झूंठ सेती फाटी नरक हग भूमि; टूट्यो आसन तत्काळ, गयो सातवीं पताळ, वेदन पाई हैं कमाळ, करु सुष भये कारे। अरे मन; पंच पापत; पापिनके ॥३॥ चोरी करी लंकपति गये नर्क घोर, धिग धिग धिग धिग धिग धिग धिग धिग जगत उचारे। अरे मन; पंचपाप; पापिनके ॥४॥ कीचकसे पर नारी कारन, भीमसेनने सांग खेळके, रेळ पेळके, घुमाय डाल दे मारे। अरे मन; पंचपाप; पापिनके ॥५॥ तृष्णा करि बहुत नर्क सिधारे, कौन कहै तिनके दुःख सारे, छिन छिन पळ पळ तन धन सिनसै ह्गसुख अब उरझो सुरझारे। अरे मन; पंचपाप; पापिनके ॥६॥ ॥१५॥

अथ अर्हंतदेवोंकी स्तुतिमें राग बरवेका तराना प्रारम्भः।

हे दादाजी जगजनतारण, शरणा तेरी आये। पकरकर

तारो मोहि जगतजनजी। हे दाताजी जगजनतारन, शरण तेरी आये ॥टेक०॥

तारोजी तारोजी तारोभवदधि अपार। अन्तरजामी काटो मोरी फन्द, मैं बहु दुख पाये। हे दाताजी पकरकर तारो मोहि। १॥

धिगतकर्म, धुवबिट विषयन बिकार। शिवपथ गामी, कीज्यो दीनबन्धु, रहेअर जीलयाकये। हे दाताजी, पकर-कर तारो ॥२॥

अटक तोरि, मोहि झटपट निकार, भरल्यों हामी। निरखग अदंबमा मन भावे। हे दाताजी, पकरकर तारो मोहि ॥ ३ ॥

अनघ अघ घ घ घ धुनि सुनि तुमार। भग परणामी, भाषे दग सुख तेरी सेव सुहावे। हे दाताजी, पकरकर तारो ॥४॥ ॥इति॥

पुन: अर्हंतदेवोंके सर्वोत्कृष्ट ज्ञानकी महिमा रूप स्तुतिमें अरु चैतन्यका भिनरव निरूपन रूप बरवे रागका तर्ाना दूजा प्ररंभः।

पटजीवऽजीव नाना बिधि बिगत् बिरुधा। गोत्तमादीन् निरूपैं निशदिन सुन्दर भारी बानी ॥ टेक ॥

अपनू रूप चेतन निशदिन चितारना अकझाई। भापै जैन बैन सरव ज्ञानी। षजी बाजा ननाना गौत्तमा दीननि रूपैं। गत् गत् गत् प्यार भये जगमें अनादि, ना सुरझाई, राची उरझेर, नाकी पमानी। सबा जीव। गोत्तमादीन् ॥२॥

अपनी सिद्धि, आपापर बिचार कीया। और न कोईया-मैंने न सुख न तेरी हानो। षजोवा जोव नाना बिधि बिगत बिरुधा। गोत्तमादीन निरूपैं निशदिन सुन्दर भारी बानी ॥३॥

अथ शुद्ध नामातालमें शुद्धात्माका निर्देश निरूपण पद लिख्यते। यह बडी कठिन ताल है बड़े गांधर्व इसके भेद कूं जाने हैं। गोप्य विद्या है। साक्षात स्वरूप कागदपर लिखा नहीं जाता। कण्ठ स्वर और हृदयका उपायसैं श्रवण गोचर जात है ॥शुद्धताल॥

आतम दरबको भेद न पायो पर परणतिकर, ये नर जन्म गंवायो आत्मदरबको ॥टेक॥ भरम भगडबप पंच दरबफंधि, नटवत् नवरस दमें रचायो। आतम दरबको पर परणति कर ॥१॥

सपर सरस सर गंधवरण स्वर इनतैं पर निज क्यों न लखायो। आतम दरबको पर परणति० ॥२॥

वंश अगनि ज्योंदधिमें घृतत्यों, किन तिल तेल जतन बिन पायो। आतम दरबको-पर परणति० ॥३॥

तजि परपंचन माटी कंचन ढूंढि निरंजन सतगुरु गायो। आतम दरबको-पर परणति० ॥४॥

दृग सुख चिप न दाह निकन्दन अताल करि ज्ञान सुनायो। आतम दरबको पर परणति ॥५॥

तप उपाय करि अनेक मुनि नर्क गये तिनका दृष्टांत देकर भाव प्रभृत ग्रन्थानुसार शुद्ध आत्माका अनुभव करनेका उपदेश रूप राग भरमा धनाश्रीमें तिलवाड़ेकी आलीतालका वर्णन यद्यपि यह ताल भी श्रवण गोचर रहै। तथापि बहुधा गांधर्व लोग जाने हैं।

पद-हे अनारी नरचेतनकूं सुध्याय ॥ टेक० ॥

विषय भोग विडम्बनासैं लेचित मीत हटाय। हाड चाबत गाल फटत स्वान समनच गाय। हे अनारी० ॥१॥ बाहु मुनिसे नर्क पहुँचे धारि तैजस काय। फूंकि दण्डक भूपकूं रहे जगतमें अटकाय। हे अनारी० ॥२॥

भ्रष्ट होय वशिष्ठसे मधु कपिलसे मुनिराय। जगमंडरि कुल सगर डोब्यो रहे आप डुबाय। हे अनारी० ॥३॥

ऋगय जुर साम अथ वर्णाहिक अगल वेद बनाय। दिये स्वर्ग आत दिखाय जीव अनन्त दिये भरमाय॥ हे अनारी ॥४॥

डूबे दिया शागसे परायण द्वारिका भरमाय। सो विकट वचन अतीत गौतम नर्कमें परे जाय। हे अनारी ॥५॥

विकुल परिग्रह तजि तपोधन छिन स्वरूप पहिंगाय। हा कष्ट तिनकी यह दशा जहां शरण है न सहाय। हे अनारी ॥६॥

मुनि कुन्दकुन्द स्वभाव प्रभृत कही सीख सुनाय। दग सुख तुख अरु माङ्खि शिवमूति खम सुरझाय। हे अनारी नर चेत कू बुध भाग्य।७॥ इति ॥१९॥

पञ्चेंद्रिनके विषयभोगनकी आशातैं निराश होनेकूं शरीरका ममत्त छुड़ायनेका निर्देश कर रागबानीमें चालतैं लिगको लिखया है।

अरे नर तनको मोह न कर रे तू चेतन यह जर रे।

अरे नर तनको मोह न कर रे।।टेक॥

अपर नपोषि विषैकूं चाहै सो मोरी रही पर रे।

अरे नर तनको मोह न कर रे ॥ तू चेतन यह जर रे ॥१॥

रसना क्यान भयो या जगमें सब पुद्गल किये परे रे।

अरे नरतन० ॥ तू चेतन० ॥२॥

नाक फांक मत फूल सुघैरै, रही विनफ सूंभर रे।

अरे मनन रतनको मोह न कर रे ॥ तू चेतन० ॥३॥

जिन आंखन पर गोरी निरखै, खोडो ढोंर ही हर रे॥

अरे मन० ॥ तू चेतन० ॥४॥

धर्मकथा सुनि मोखन चाहै, तो एकानक तर रे।

अरे मन नरतनको मोह न कर रे ॥ तू चेतन० ॥५॥

तू निरअंजन है भय भंजन, तनको टनको धर रे ।

अरे मन नर० ॥ तू चेतन० ॥६॥

दर्पिवत् मणि पटभाव निराळी, आपत हैं सतगुर रे ।

अरे मन० ॥ तू चेतन० ॥७॥

दग सुख होय चिदातम दरशन, भवसागरसूं तर रे ।

अरे मन तन० ॥ तू चेतन० ॥८॥

दादरेकी तालमें राग दादरेमें पद जिनवानीका ।

अरे जीवका कल्याण सदा जैन वानी रे ।

जैन वानी जैन वानी जैन वानी रे ॥ अरे जीवका कल्याण । टेक॥

शंसयादि दोष हरे मोहकूं निर्मूल करे । तो पदार्थ नंदनं घनं समानी रे । अरे जीवका कल्यान सदा जैन वानी रे ।

अरे जीव० ॥ जैनवानी जैन० ॥१॥

कर्मजाल भेदनी है भर्मको उछेदनी । वस्तुके स्वरूपकी है लाभ दानी रे । अरे जीवका कल्याण जैन वानी रे ।

जैनवानी जैन० ॥२॥

वस्तुकूं विचार जीव पार होत हैं सदेव । केवलादि ज्ञानकी कहा निधानी रे । अरे जीवका कल्याण सदा जैनवानी रे ।

जैनवानी० ॥३॥

नैन सुख अन्तकालमें करैं सबै निहाल । नाग नाग स्थान किये स्वर्ग वानी रे । अरे जीवका कल्याण सदा जैन वानी रे ।

जैनवानी जैन० ॥४॥

इतिश्री नयनानंद यति कृत विलास संग्रह मंगलाचरण चौंतीस तथा तेरह धुरपद दोय चतरंग दोय तराने और तीन प्रकार ताल तथा दादरा ताल प्रमुख वर्णनो नाम द्वितीयोऽध्याय सम्पूर्णम् ॥२॥

तीसरा अध्याय

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। अथ चौबीसी वसाडा नाम तृतियोऽध्याय प्रारम्भः।

तत्रादौ श्री ऋषभावतारके वर्णनमें भजन हजूरी रागका लंगडा प्रभात ढाई घड़ी दिन चढे तक गाया जायगा।

अब तो सखी दिननीके आए आदीश्वर लीनो अवतार ॥टेक॥
सर्वारथ सिद्ध तैं चय आये मरुदेवी माता उर धार।
नाभि नृपति घर बटत बधाई आज अजुध्या नगर मझार ॥
अब तो० ॥१॥

सुखम दुखममें तीन बरष अरु शेष रहे वसु मास पखार।
अब तो जाग जाग मोरी आली हिलमिल गावैं मंगलचार ॥
अब तो० ॥२॥

पुन्य उदयतैं नरभव पायो अरु पायो उत्तम कुल सार।
धर्मतीर्थ करता गुरु पाये अब कटि हैं सब कर्म विकार ॥
अब तो० ॥३॥

स्वयं बुद्ध पूरण परमेश्वर मोक्ष पन्थ दरसावन हार।
नैन सुख मन वचन काय कर नमूं नमूं वसु अंगप धार ॥
अब तो० ॥४॥

इति भजन श्री अजितनाथ अवतारका है हजूरी रागनी भैरवोंकी ढाई घड़ी दिन चढ़ेसे पांच घड़ी दिन चढ़े तक गाते हैं।

अजित कथा सुनि हरष भयोरी ॥टेक॥

विजय विमाण त्यागके प्रभुजी वजे अमावस च्या निरयौं।
माघ सुदी दशमी नवमीकूं जनम तथा जग त्याग कियोरी ॥
अजित० ॥१॥

जित रिपु तात मात विजयादेनगर अजुध्या दरश दिया।

जाके चरणचिह्न गाज पतिको ढोंच शतक तन तुंग भयोरी ॥
अजित० ॥२॥
लाख बहत्तर पूरब आयू इन्द्रन पांच कल्याण कियो ।
पोष शुक्ल एकादशि अब सरब दरशन ज्ञान बोध भयोरी ॥
अजित प्रभु० ॥३॥
मधु शित पांचैंकूं शिव पाई भवि अनंत उद्धार कियो ।
नैन सुख दीन पाठ तिहूं जगमें जो जिनवर जयवन्त भयोरी ॥
अजित० ॥४॥

इति सम्भवनाथ अवतारके वर्णनमें पद हजूरी है राग बिलावल पांच घड़ी दिन चढ़ेसे ७॥ साढ़ेसात घड़ी दिन चढ़े तक गाते हैं ।

सम्भवनाथ हरो मम आरत आप पड़े प्रभु चरण तुम्हारे ॥टेक॥
तुम बिन कौन हरे मम पातिग तुम बिन कौन सहायक हमारे ।
धनुष च्यार शत मूरत तुमरी निरखत उपजत हरष अपारे ॥
सम्भवनाथ० ॥१॥
सुनियत जन्मपुरी सावत्थी सुनियत घोटक चिह्न तुम्हारे ।
पिता जितारथ सेना माता मात लाख पूरब थित धारे ॥
नैन सुख देख दिगम्बर तुमसौं और लगें सब देव उगारे ।
सम्भवनाथ० ॥२॥

इति अभिनन्दननाथ अवतारके वर्णनमें भजन हजूरी रागनी भोढी साढ़ेसात घड़ी दिन चढ़े तक गाते है ।

जै जै जै संवर नृपनन्दन अभिनन्दन जिन जगत अधार ॥टेक॥
विजै विमाण त्याग तुम आये, सिद्ध अर्थाके गर्भ मंझार ।
जन्मे माघसुदी द्वादशीकूं, नगर अजुध्या सुखदातार ॥ जै जै०॥१
जिस दिन जन्म उसी दिन दीक्षा, ज्ञान पौष बदी चौथ अपार ।
भये सिद्ध वैशाख सुदी छट, पूरब लाखपचास उमार ॥जै जै०॥२
धनुष तीनसे साढ़े काया स्वर्ण वर्ण कपि चिन्ह तुमार ।

तुम इक्ष्वाकुवंशके भूषण सुरनर गावत, सुजस अपार ॥जै जै०॥३
नयनानंद भया अब मेरे देख दिगम्बर मुद्रा सार।
सुन सुन वचन विगत मल तुमरे त्यागे कुगुरु कुदेव निवार ॥
जै जै जै० ॥ ४ ॥

इति सुमतिनाथ अवतारके वर्णनमें भजन हजूरी है, रागनी जोगिया असावरी है दस घडो दिन चढ़ेसे साढ़े बारा घडो दिन चढे तक गाते हैं।

तुम कुमति विनाशन हारे, सुमति जिन कुमति विनाशन हारे ॥ टेक ॥

तात सुमेघ मंगला माता, खग पग क्रौंच तुम्हारे।
लीन्यो जनम अजुध्या नगरी, इक्ष्वाकु मझारे ॥
सुमति जिन कुमति विनाशन हारे॥ तुम कुमति० ॥१॥
धनुष तीनसै तुंग प्रभु तुम तप भव भोग विसारे।
कर्म घातिया तोड़ि छिनकमें, लोकालोक निहारे ॥
सुमति जिन कुमति विनाशन हारे। तुम कुमति० ॥२॥
विश्व तत्व ज्ञायक जगनायक जीव अनन्त उधारे।
दिन कारण भ्राता जगत्राता, दृग सुख शरण तिहारे ॥
सुमति जिन कुमति विनाशन हारे। तुम कुमति० ॥३॥

इति पद्म प्रभु अवतारके वर्णनमें भजन हजूरी है, राग भैरूंतर साढे बारा घडो दिन चढेसे १५ घडा दिन घडो दिन चढ़े तक गाया जायगा।

वन्दनकूं प्रभु वन्दनकूं, हम आये पद्मप्रभ वन्दनकूं ॥टेक॥

जन्म लियो कौशांबी नगरी, भविजन पाप निकन्दनकूं। हम आये हैं पद्मप्रभ वन्दनकूं ॥१॥ मातसु सीमा गोद खिलाये, पूजूं धारण चन्दनकूं। हम आये हैं ॥२॥ वंश इक्ष्वाकु कृतार्थ कीनो, दूर किये दुःख खण्डनकूं। हम आये हैं० ॥३॥ नैना नंदन है सुन स्वामी, काट मेरे भव फन्दनकूं। हम आये हैं

पद्मप्रभ वंदनकूं, एजी वंदनकूं पूजनकूं। हम आये हैं पद्मप्रभ० ॥४॥

इति श्री सुपार्श्वनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राग सारंग ठीक मध्याह्नसे लेकर साढ़े सतरा घडी दिन चढ़े तक गाते हैं।

देव सुपारस ध्याइये, अरे मन देव सुपारस ध्याइये ॥ टेक ॥
भव आताप निवारण कारण, घसि घनसार चढाइये। अरे०॥१॥
अक्षत ले प्रभु चरण चढाओ, तुरत अपयपद पाइये। अरे०॥२॥
भरि पुष्पांजलि पूजन कीजे, मदकंदर्प नशाइये ॥ अरे मन०॥३॥
अपनी क्षुधा हरनके कारण, उत्तम चरु धर आइये। अरे०॥४॥
नासे मोह महातम भागे, दीपग ज्योति जगाइये। अरे०॥५॥
करमबंध विध्वंस करनकूं, धूप दशांग जराइये। अरे मन०॥६॥
फलतैं फल शिवपदको पावैं, नैनानन्द गुण गाइये अरे मन०।७॥

इति चन्द्रप्रभ अवतारका भजन हजूरी है, राग पीलू पंजाबी ठुमरी है साढ़े सतरा घडी दिन चढ़ेसैं २० घडी तक गाते हैं।

दिल लागा मैंडावे, भला दिल लागा मैंडावे।
श्री चन्दा प्रभु दे नाले, दिल लागा मैंडावे ॥टेक॥
भवि अनन्त उद्धार किये तुम, ऐसे दीन दयाले।
दिल लागा मैंडावे, श्री चन्दा० ॥१॥
जाके वचन सुनत भय भागैं, टूट पड़ैं अघजाले।
दिल लागा० श्री चन्दा० ॥२॥
दरस देख मोरे नैन सुफल भये, चरण परसके भाले।
दिल लागा० श्री चन्दा० ॥४॥
गुण समरत भयो जनम सफल अरु पुन्य फलपतरु डाले।
दिल लागा० श्री चन्दा० ॥४॥

कहत नैनसुख भवसागरसैं, हे प्रभु वेग निकाले।
दिल लागा मैंडावे, भला दिल लागा मैंडावे ॥ श्री० ॥५॥

इति श्री पुष्पदन्त अवतारके वर्णनमें हजूरी है, बीस घड़ी दिन चढ़ेसे २२॥ घड़ी दिन चढ़े तक गाया जायगा, राग खमाच चरचा है।

गावोरी अनंद बधाई मेरी आली पुष्पदन्त जिन जनम लियो है ॥टेक॥

काकन्दीपुर वामादे उर वैजयंतसेती आ तिष्ठयो है ।गावोरी०॥१॥

वंश इक्ष्वाक सुफल कियो जाने, कुल सुग्रीव कृतार्थ भयो है।
गावोरी० ॥२॥

सकल सुरासुर पूजन आये, सुरगिरपै अभिषेक कियो है।
गावोरी० ॥३॥

नैनानन्द धन धनवे प्राणी, जिन प्रभु भक्ति सुधांबु पियो है।
गावोरी अनन्द बधाई मेरी आली पुष्पदन्त० ॥४॥

इति श्री शीतलनाथ अवतारके वर्णनमें भजन हजूरी है, २२॥ घड़ी दिन चढ़ेसे २५ घड़ी दिन चढ़े तक गाया जाय है। झंझोटी है जिल्ला है।

हे परखिकै मूरति शीतलकी। मेरा शीतल ऊधा शरीर। परखिकै० ॥टेक॥

परमानन्द घटा उर छाई। बरसे आनन्द नीर ॥परखिकै० ॥१॥

भागो जन मनन नमकी मेरी भवतृष्णाकी पीर।
परखिके० ॥हे मेरा० ॥२॥

मुद्रा शांति निरखि भय भागे, ज्यों घन लगत समीर। पर० ॥ हे मेरा शीतल हुवा शरीर। परखिके ॥३॥

दास नैनसुख यह वर मांगे हरो नाथ भवपीर। परखिके मूरति शीतलकी। मेरा शीतल ॥४॥

इति श्रेयांसनाथ अवतारका भजन हजूरी है रागनी ऊंको-टोकी है पचीस घड़ी दिन चढ़ेसे साढ़े सताईस घड़ी दिन चढ़े तक गाते हैं ।

श्री श्रेयांस जिनेश्वरने सज्जि सकल करमदल हरेहरे ।

सजि संजम संनाहमहाभट धीर धरा पग धरे धरे । छिमा ढाल समभाव पड़गले अष्टकरम संग अरे अरे । श्री श्रेयांस० ॥ १ ॥

देख अनन्तबली अगनायक च्यारों घायक टरे टरे । च्यार अघायक शक्ति बिना बिन मारे आपहि मरे मरे श्री श्रेयांस० ॥ २ ॥

निज अनुभूति परी पर साधन ता कारन सजि वरे वरे । तब पाई अपने करमें तब सकल मनोरथ वरे वरे श्री श्रेयांस० ॥ ३ ॥

जे जैकार भयो त्रिभुवनमें इन्द्रादिक पग परे परे । नैनानंद मन वचन काय सूं हिवकर वन्दन करे करे । श्री श्रेयांस० ॥ ४ ॥

श्री वासुपूज्यावतारका भजन हजूरी है राग जंगलेका ठुमरी है साढ़े सत्ताईस घड़ी दिन चढ़े ईंतीस घड़ी दिन चढ़े तक गाया जाता है हर वक्तका ।

पूजत क्यों नहिरे मतिमन्द । वासुपूज्य जिन पद अरविन्द । पूजत क्यों ॥ टेक० ॥

बालब्रह्मचारी अवतारी परम दिगम्बर मुद्राधारी । दुविध परिग्रह संगत ज्योजित । गुण अनन्त सुख सम्पति सिंधु । पूजत क्यों ॥ १ ॥

ध्याता ध्येयं ध्यान विभासी । ज्ञाता ज्ञेयं ज्ञान प्रकाशी । पापा तिक्त विमुक्त महोघं । तारण तरण सहज निर्द्वन्द । पूजत क्यों ॥ २ ॥

महिमा बर्णत गणधर हारे। बचन अगोचर हैं गुण सारे।
र छत्र छात लनम ठग दरसैं। भामण्डल अतिसै झलकंत।
पूजत क्यों ॥ ३ ॥

प्रातिहार्य व सुमंगल दर्व। सेवत सुरनर मुनिगण सर्व।
पांच बार जाहि पूजन आये। चंपापुर सुर इन्द्र फनेन्द्र।
पूजत क्यों ॥ ४ ॥

बासुदेव कुलचन्द्र उजागर। जयो जयावति सुत गुननागर।
हग सुख बीतराग लखि तुमकूं। आये शरण काटिभव फन्द।
पूजत क्यों नहिरे मतिमन्द। बासुपूज्य जिनपद अरबिंद।
पूजत क्यों नहिरे मतिमन्द ॥ ५ ॥

बिमलनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राग नोधनाबरी
चाल है। तीस घडी दिन चढेसे लेकर साढे बतीस घडी दिन
चढ़े तक गाते हैं।

अब मोहि बिमल करो। हे बिमल जिन अब मोहि
विमल करो ॥ टेक० ॥

धरम सुधा रस प्याय जगतगुरु विषय कलंक हरो।
वीतरागता भाव प्रकाशो शिवमग मांहि धरो। हे विमल जिन
अब मोहि विमल करो ॥ १ ॥

तुम सेवाको यह फल चाहूं क्रोध कषाय टरो, माया मान
लोभकी परणतिसे जग जाल जरा। हे बिमल जिन० ॥ २ ॥

जबलग आगत भ्रमण नहि छूटे ऐसो टेव परा, सब देव
धरम गुरु सेऊ नयनानंद भरो, हे बिमल० ॥ ३ ॥

श्री अनंतनाथ अवतारका भजन हजुरी है, रागनाधानः गौरीके
जिलेमें गानेको चीज है। ३२ घडी दिन चढ़े पीछे ३५ घडी
दिन चढ़े वा सूर्यअस्त होने पहिले अरू पाछे भी गाते हैं।

स्वामी अनंतनाथ चरनोंके तेरे चेरे हैं ॥ टेक०

ऐसा करौन तेरी तक मोर है ए मेरोजी, तुमकौं नहीं है चाह पापोंने हमको घेरे हैं। स्वामी० ॥१॥

विभ्रम मुझे जो आया संघेने फिर भ्रमायाजी, पकरी कर मने बांह देशाखेंसे गेरे हैं। स्वामी० ॥२॥

करता हुँ तेरी आसा, मेटो जगतका वासाजी, तुम हो त्रलोक सहाय, संजमके साथ मेरे हैं। स्वामी० ॥३॥

चरनौंमें रस कीजे आनंद नैनदीजेजी, अब तो बतादो राह, जैसे हैं तैसे तेरे हैं, स्वामी अनन्तनाथ चरनोंके तेरे चेरे हैं स्वामी अनन्तनाथ ॥ ४ ॥

इतो श्री धर्मनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राग स्याम कल्याण दिन छिपे पीछे गाया जायगा गोधुक समयसे।

तारधनी अब मोहि जगतसे, तारधनी। टेक०॥

भटकत भटकत भवसागरमें, भोगी त्रिविध विपताघनी अब मोहि० ॥१॥

लख चौरासी जो दुःख देखे सो विपता नहि जायगिनी। अब मोहि० ॥२।

धर्मनाथ प्रभु नाम तिहारो, धरम करो मोपै आनिबनी। अब मोहि० ॥३॥

कर उद्धारनिकार जगतसें, दृग सुखभक्ति विधान भनी। अब मोहि० ॥ ४ ॥

इति शांतिनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राग जोषम्माचको ठुमरी है। घंटाभर रात गये पीछें पांच घडी रात गये तक गाते हैं।

पद—हमारी प्रभु शांतसें लगन लागीरे, हो विघन गये भजिके। प्रभुके पद जजिके, हमारी प्रभु शांतसें लगन लागीरे ॥ टेक० ॥

जीव अजीव सकल दरसन कीनो, बखानी गुण परजै। अनघ धुनि गरजै। हमारी प्रभु शांत० ॥ १ ॥

सब भाषमय वचन प्रभुजीको, सभीके मन भावैं, भरम विनसावै। हमारो० हो बिघन गये० ॥ २ ॥

बिन कारन जगजन्तु उबारे तो, नयन सुखदाता, सबीके जग त्राताजी। हमारो० विघन० ॥ ३ ॥

कुन्थनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राग पुनः खम्माचकी ठुमरी ५ घड़ी रात गयेसे ७॥ घ०।

आज आली श्रीमती जननि सुत जायोरी, आज आली श्रीमती० ॥टेक॥

सोम बंश हस्तनापुर नगरी, सूरज नृप सुख पायोरी। आज आली० ॥१॥

लख जोजन गज सजिके सुरपति, दरबपकूं उमगायोरी। आज आली० ॥२॥

पांडुक बन सिंहासन ऊपर, क्षीरोदधि जल न्हायोरी। आज आली० ॥३॥

कुन्थु कुन्थु कहि संस्तुति कीनो, तांडव नित्य करायोरी। आज आली० ॥४॥

सखियन मिल जिन मंगल गाये, मोतियन चौक पुरायोरी। आज आली० ॥५॥

सौंप पिता जननि गयो सुरपति, नैनानंद गुन गायोरी। आज आली श्रीमती० ॥६॥

इति श्री अरहनाथ अवतारका भजन हजूरी है आढ़े ग्यारत घड़ी रात गयेसें दश घड़ी रात गये तक गाते हैं।

राग देशलाख है खोई प्रारम्भः।

तुम सुनोरी सुहागन चतर नार, अरहनाथ प्रभु भये वैरागी ॥टेक

सखि लख चौरासी गयंद तजे, जो कंचन मणियन माल सजे।

तजि घोटक ठारा कोड सबी, अरु आनवें सद्व त्रिया त्यागी ॥
तुम सुनोरी० ॥१॥

सखि चौदह रतन जिवार दिये, अरु पंचमहाव्रत धारि लिये ।
तजि वस्त्राभूषण जोग लियो, भये परम धरमसैं अनुरागी ॥
तुम सुनोरी० ॥२॥

सखि निरख निरख पग गमन कियो, समता घर करम बिपाक दह्यो । चलो परम पुरुषके वन्दनकूं, अब केवलज्ञान कला जगी ॥ तुम सुनोरी० ॥३॥

हथनापुर तीरथ प्रगट कर्यो, जहांगर भजन मत पद्मान धर्यो । नयनानंद पावन ध्यान धर्यो, वाहीके चरनसूं लौ लागी ॥ तुम सुनोरी ॥४॥

इति श्री मल्लिनाथ तथपारका भजन हजूरी है; रागनी सोरठ खास अर्द्धरात्रि मध्यमें गाते हैं ।

थे देखो लाठीरी मल्लिनाथ कुमार, हे थे देखो० ॥टेक॥

माता जाकी प्रभावतीदेवी, हैजी तात कुम्भ भूपाल । त्यागो सब परिवार ॥ थे देखो० ॥१॥

तजि मिथलापुर जोग लियो, हैरी वंश इक्ष्वाकु विसार । कीनो भुवन विहार । थे देखो० । २ ।

भोग्यो राज न व्याह न कीनोरी, बाल ब्रह्म तप धार । कीनो कर्म छार । थे देखो० ॥३॥

कहत नैनसुख जोग जुगतिसें, रोप ऊंचे मुक्ति मंझार । गावो मंगलाचार । थे देखो० ॥

इति श्री मुनिसुव्रतनाथजीका राग बिहाग अर्ध रात्रिके आधी पर आधा घण्टा बजे तक गाते हैं ।

अब सुध लेऊ हमारी मुनि सुव्रतस्वामी । अब० ॥टेक॥

तुमको देख न लागें, दूजो मैं दुखिया संसारी ।
मुनिसुव्रतस्वामी, अब सुध लेऊ हमारी ॥ १ ॥

तुम ही वैद्य धनन्तर कहियो, तुम ही मूल पसारी।
मुनिसुव्रत० अब० ॥२॥

घट घटकी सब तुम ही जानो कहा दिखाऊं नारी।
मुनिसुव्रत० अब ॥३॥

करम भरम मय रोग नशाओ, इन मोहि दुख दियो भारी।
मुनिसुव्रत० अब० ॥४॥

तुम जगदीश अनन्त उधारे, अबके पार हमारी।
मुनिसुव्रत० अद० ॥५॥

दग सुख तारन तरन निरखके, आयो शरण तिहारी।
मुनिसुव्रतस्वामी, अब सुध लेऊ हमारी। मुनिसुव्रत० ॥६॥

इति नमिनाथ अवतारका भजन हजूरी है, रागनी जैजैवंती है, आधी रात पर एक बजे पीछे दो बजे तक तथा एक घण्टा गाते हैं। पद।

कर बडभागन जाकर रचागन नमि जिनपति तेरे पुत्र भयो है ॥टेक॥

तू सुख नींद मगन भई सोवत, हम प्रभु भक्ति सुधांबु पियो है। कर बडभागन० ॥१॥

जागऊ तात विजय रथ राजा, तुम कुल चन्द्र उद्योत कियो है।
कर बडभागन० ॥२॥

बरसत रतन सुधारस घर घर, मिथुला नगर दरिद्र गयो है।
कर बडभागन० ॥३॥

विप्रा मात उठो सुन संस्तुति, फिर प्रभु गोद पसार लियो है।
कर बड० ॥४॥

नील कमल पगमांहि विराजत, वंश इक्ष्वाक कृतार्थ कियो है।
कर बड० ॥५॥

दग सुखदास आस भई पूरन, अब दुःख दन्दतार दियो है।
कर बद० ॥६॥

इति नेमीनाथ अवतारका भजन हजूरी है, राग जंगला ओ॰ मांडकी ठुमरी है, इसकूं जिला रजवाड़ा कहते हैं आधी रात पर दो बजेसे तीन बजे तक गाते हैं।

नेमी पियाके ढिग मोहि जान दे,
मैं वारी नेमी पियाके ढिग मोहि जान दे ॥ टेक ॥

झूठी काया झूठी माया झूठा सब संसार, झूठी जगकी ममता। मोहि करमोंके लेख मिटान दे, मैं वारी नेमी पियाके ढिग मोहि ढिग जान दे ॥१॥

भजन करूँगी जोग धरूँगी, भजन जगतमें सार।
भजन बिना मैं बहु दुख पाये, मेरी भवबाधा मिट जान दे।
मैं वारी नेमी पियाके० ।२॥

सब जग स्वारथका रागारी, अपना सगा न कोय।
अपना साथी धरम हैरी, भवसागरसे तिर जान दे॥
मैं वारी नेमी पियाके० । ३॥

भोग बिना निरधन दुखीरी, तृष्णावश धनवान।
नेम बिना सब जग दुखी प्यारी, नेमीसे नेम ग्रहाण दे॥
मैं वारी नेमी पियाके० ॥४॥

नेम छिवे बहुं तेजन सुरखे, मेरे नेम अधार।
दग सुख राजल कहत सखी सुन, अब मोहि नेम ग्रहाण दे॥
मैं वारी नेमी० ॥५॥

इति श्री पार्श्वनाथ भगवानका भजन हजूरी है, राग परज घण्टा भर रात बाकी रहेपर गाते हैं। पद हजूरी।

भजि भजिरे मन परम सुधारस। तजि भारसंपारक भगवान। भजि भजिरे मन० ॥टेक॥

होय कुधातुक गत जिम कंचन वचन सुनत मिट जाय अज्ञान। पूजत पद व सुध्यर्मं विनासे होय त्रिविध संकट अवसान। भजि भजिरे० ॥१॥

मंगल होय उदंगल विघटैं प्रगटैं ऋद्धि समृद्ध असमान। नाग भये धरणेंद्र छिनकमें बहुते जीव गये निर्वाण॥ भजि भजिरे० ॥२॥

अश्वसेन वामाकुल नंदन जग वंदन बंधन विघटाना। प्राणत स्वर्ग थकी चय आये बानारसिपुर जन्मे थान। भजि भजिरे ॥३॥

नव कर उच्च सजल घन तन पग पन्नग वंश इक्ष्वाक प्रमान। अवधि शताब्द धरण दुखदारुण। हरण कमठ शठ विघन वितान। भजि भजिरे० ॥४॥

विषम रूप भवकूप विषैं हम पावत हैं प्रभु दुःख महान। नयनानंद विरद सुनि तुमरो गावत भजन करो कल्यान॥ भजि भजिरे० ॥५॥

इति श्रीमान् वर्द्धमान अंतम तीर्थंकरके निर्वाण समयका भजन हजूरी राग परज, घड़ीभरके तड़के गाते हैं दिन निकलेसैं पहलै॥

जय श्री वीर जयति महावीरं सन्मति दातार ॥टेक॥

वर्द्धमान तुमरो जस जगमें तुम अतम तीर्थंकर सार। पंचम काल विषैं तुम शासन करत जग जीवन उद्धार॥ जय श्री वीर० ॥१॥

षोडश स्वर्गथकी चयआए षाढ सुकल छट गर्भ मंझार। चैत्र शुक्ल त्रयोदशिके अवसर कुण्डलपुर तुमरो अवतार॥ जय श्री वीर० ॥२॥

सिद्धारथ नृप बाप तुम्हारे त्रिशलादेवी मात तिहार। सात हाथ तनतुंग तुमारो नाथ वंशके तुम सिरदार॥ जय श्री वीर० ॥३॥

चिह्न सिद्ध तुमरे पदको हैं माघ असित द्वादशि जग छार।
दशमी असित वैशाख भये तुम चक्र दरन दरशी इकबार॥
जय श्री वीर० ॥४॥

पावापुर सरवरपै प्रभु तुम ध्यान धरयो संजोग विसार।
कातिक कृष्णा चौदशकी निशा वश प्रातवरी शिवनार॥
जय श्री वीर० ॥५॥

दुःखम सुखमके तीन बरष अरु शेष रहे वसुमा सअवार।
ता दिन तुम्हैं रतन दीपकने पूजे सुरनर करि त्यौंहार॥
जय श्री वीर० ॥६॥

छरसैं पांच बरष जब बीते तब विक्रम संवत् विस्तार।
जबलग रहै धरा नभ मंडल नैनानंद जपो नवकार। जै श्री वीर जयति महावीरं सन्मति दातार॥७॥

इति श्री नयनानंद यति कृत विलास संग्रह चतुर्विंशति भजनावली नाम तृतियोऽध्याय समाप्तम् ॥३॥

चौथा अध्याय

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। अथ गुरु भजनाष्टकका चतुर्थ अध्याय प्रारम्भः। पद गुरु स्तुतिका है। राग बरवा है।

कबधों मिलैं गुरुदेव हमारे, भरजोवन बनोवास विचारे ॥टेक॥

आतम लीन अनाकुल देवा, जाकै सुमति बसे हृदयमैंवा जी। कबधों० ॥१॥

परहित हेत वचन विस्तारैं, सो गुरु भव भय हरन हमारेजी। कबधौं० ॥२॥

प्रगट करैं शिव मारगनीका, बरस रह्यो मनुष मेघ अमीका। हमचौं० ॥३॥

वैरी मीत बराबर जाकै, कंचन कांच उपल समता कैसी।

हमचौं० ॥४॥

महल मसान दुशन सरीसे, जीवन मरन बराबर जीसे।

हमचौं० ॥५॥

करुणा अंगर तन अघधारी, नैयानंद वांछि धोक हमारी।

हमचौं० ॥६॥

पद्दरो गुरुदेवका राग भेरूं नर, चरनन मैंकी म्हारी लागी लगन। टेक।

धाध पमंडल करमें पीछो, मिले गुरु निरतारन तरन।

चरनन० ॥१॥

धनमैं करौं कर्णं इंद्र कूं, धारैं करुणा रूप नगन।

चरनन० ॥२॥

हितमित वचन धरम उपदेशे, मानो बरषत मेघ सरन।

चरनन० ॥३॥

नैन नंदन मत है तिनकूं, जो नित आतम ध्यान मगन।

चरनन० ॥४॥

पद गुरु स्तुतिका रागनी जंगलाऊं कोठी सम्माद का डिला ठुमरी पूर्वी।

हे बहनियां मेरो अंगना पावन भयोरी, हे दयाल गुरु आप कृपाल गुरु आयरीं बहनिया मेरो। टेक।

मुक्तिपंथ दरसाय नहारेरी, हे रतनत्रय सामैं मयूर पिछ हाथैरी, युग पतनर मंडल पावन भयोरी। हे बहन० ॥१।

गमन ईरजा करत पधारेरी, हे बिसारें मान माया, डारैं अटका यारी, बचन म्हारे अगम भवन भयोरी। बहन० ॥२॥

पांच प्रकार रतनकी धारारी बिबुध वृंदगेरैं, ये जै जै जै धुनि टेरैंरी, भविजन आनंद छावन भयोरी। महन० ॥३॥

इति पद गुरु उपगारका निर्देश रागनी खिचगारा खम्माचका जिला ठुमरी लखनऊ वालोंकी चलैकी ॥

हे मैय्या गुरुदेवन पैजा मांगियों, वजो वे तो परम दयाल, दुखित देख देंगे धरम सार, गुरु० ।टेक।

नगन भेष बनवास रखत हैं जी, देख मिटेंगे तेरे मन विकार। गुरुदेवन० ॥१॥

कंचन कांच बराबर जाके, मित्र बिरोधी जानें एक सहार, गुरुदेवन० ॥२॥

महल मसान समान गुरुन केजो, जाप जपे हैं वे तो ॐकार। गुरुदेवन ॥३।

निगम निधान नैनसुख सागरजो क्यों न हरेंगे तेरो करम भार, गुरुदेवन पैजा मांगियो, हे मैय्या गुरुदेवन पैजा मांगियो, वजि वे तो दुखित देख देंगे धर्मसार। गुरुदेव० ॥४॥

पदगुरु कृत्य यथाव कर्मोंकूं कैसें जोतें है रसोईका दृष्टांत है राग जंगला ठुमरी।

इक जोगी असन बनावे। तसु भषत अशन अवन खन होत।
इकजोगी० ॥टेक॥

ज्ञान सुधारस जल भर ल्यावै, चूल्हा शील बनावे।
करम प्रकृकूं चुग चुग डालै, ध्यान अगन प्रजलावैजी ॥
इकजोगी० ॥१॥

अनुभव भाजन निज गुण तंदुल, समता क्षीर मिलावै।
सोहं मिष्ट निशंकित व्यंजन, समकित छौंक लगावैजी ॥
इकजोगी० ॥ तसु भषत० ।२॥

स्याद्वाद सतभंग सभाछे, गिणती पार न पावै ।
निश्चयनयको समचा फेरै, विरध भावना भावैजी ॥
इकजोगी० ॥३॥

आप पकावै आप हि खावै, खावत नाहि अघावै ।
तदपि मुकति पद पंकज सेवै, नयनानंद शिर न्यावैजी ॥
इकजोगी० ॥४॥

इति पदगुरु स्तुतिका रागनी, घनाछरीमें अथवा देशमें अथवा सोरठमें गाया जाता है ।

सतगुरु परम दयाल जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥टेक॥
सब जीवनकी संशय मेटै देत कलह सब टाल ।
दुखसागरमें डूबत जनकूं छिनमें देत निकाल ॥
जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥१॥
सुरग मुकतिको पंथ बतावैं, मेट करम भ्रम जाल ।
धरम सुधारस प्याय हरैं अघ छिनमैं करत निहाल ॥
जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥२॥
स्वान सिंह सतगुरुने तारे, तारे गज विकराल ।
सुगुरु प्रताप भये तीर्थंकर अरु तारे गोपाल ॥
जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥३॥
पांच शतक मुनि कोल्हू पीड़े दंडक नृप चण्डाल ।
होय जटायु सु गुरु पदसे ये पायो सुरग विशाल ॥
जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥४॥
पदसे दुष्ट सु पंथ लगाए सतगुरु दिसु दयाल ।
नयनानंद सु गुरु जस जगमें कौन करै प्रतिपाल ॥
जगतमें सतगुरु परम दयाल ॥५॥

इति समाप्तम् पदपाल ।

मैंने भेटे जग बखे सतगुरु कबे जिन दर्शनधारी ।टेक।
मैंने जान लई पांचों दर्शन में है गड़बड़ भारी ।

है शिव साधक जिन लिंग और सब सांग है संसारी ॥
मैंने भेटे० ॥१॥
है संसारी और मुक्त दशा दो जानत नरनारी ।
है जिनदर्शनसें मुक्ति पांय हैं उनके अधिकारी ॥ मैंने० ॥२॥
है उनतें दर्शन पांच असत मत तरुवरकी डारी ।
कोई रटके मटके चढ़े गिरे कोई मरे है दुख भारी ॥ मैंने० ॥३॥
ई पांचों असत अनाम स्वपरके घातक दुखहारी ।
सो सत पुरुषोंने तजेमें अजुं उनके बलहारी ॥ मैंने० ॥४॥
नहिं दर्शन पांचों पूज पूज्य हैं जिन मूरति प्यारी ।
जो त्रिभुवन मैंय द्योतमूत हैं अकृत अविकारी ॥ मैंने० ॥५॥
शिव साधन हेत जो पद धारैं सतगुरु हितकारी ।
है उनहीसें मर्याद अनादी कृत्रिम उपगारी ॥ मैंने० ॥६॥
जिनदर्शन हम मुनिवर वंदू अरु प्रतिमाधारी ।
और नमूं परजका धर्मी अलैं जो जिनमत अनुसारी ॥ मैंने० ॥७॥
जो रतनत्रय व्रत धरैं दिगम्बर परम ब्रह्मचारी ।
सो जिनदर्शी मुनि जानने न मुछनमें धारचारी ॥
मैंने भेटे अबसें सतगुरु सधे जिन० ॥८॥

सतगुरु स्तुतिका उपदेशी महावीरजीके भीलभवमें उसकी भद्रभाविका भीलनी उस भीलकूं उपदेश करे हैं कि तू दिगंबर गुरुकूं बाणसें मत मारे । रागनी जंगलाऊ कोटी पीलूका जिला ।

मत मारे रे वेदर्दी मत मार, ए कोई त्यागी पुरुष ॥टेक॥
मत लाइते मिरगके धोपे, मत बांधे ध्रिभार ।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१॥
निश्चल निर्भूषण निरदूषण, ध्यानी अरु अणगार ।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥२॥
इनके शत्रुमित्रपै समता, राव रंक इक सार ।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥३॥

कंचन कांचन पल्ले बांधे, करैं स्वपर उपगार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥४॥
त्यागे महल समान करैं तप, खेल खिलान विचार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥५॥
डूबत वंश नरकमें जिनके, छिनमें देत निकार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥६॥
मंगल दान सुकृतको इनपै, सुरनर सुक्ख पसार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥७॥
तू अब इन परप्राण उठावत, धिग धिग जनम तुमार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥८॥
धिग यह मूरख व्याध धिग यह अघ, धिग तुम धिग हम नार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥९॥
जो सतगुरुकी घात करैगो, मर हों उदर विदार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१०॥
कंप्यो भील पड्यो चरणो पर, नारि कियो उपगार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥११॥
धनुष तोरि सिर चाय झुकायो, सतगुरु चरनन मझार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१२॥
निहिताश्रव उपदेश दियो तब, धरे अणुव्रत सार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१३॥
पुष्कल देश विदेह क्षेत्रमें, पुण्डरीकपुर सार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१४॥
भील पुरुषकुं समझायो, भद्र कालिका नार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१५॥
अवसर पाय भयो तीर्थंकर, महावीर अवतार।
ए कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१६॥

केवल पाय बताय मोक्ष मग, कर गये जग उद्धार ।
प कोई० ॥ मत मारेरे०॥१७॥
इन्द्रचन्द्र वंदित पद पंकज, दृग सुख शरण तुमार ।
प कोई० ॥ मत मारेरे० ॥१८॥

इति गुरु भजनाष्टक नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
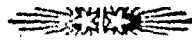
पांचवां अध्याय

अथ—जिन धर्म स्तुति नाम जैनवाणी के भजनोंका पांचवां अध्याय प्रारंभः ॥

अब मुजे सुख आई जैनवानी सुन पाई । काल अनादि निगोद वेदना, सुगतो कहिय न जाई । जैनवानी सुनपाई । अब मुझे सुध पाई । जैनवाणी सुनपाई ॥१॥

पड्यो नरक चिरकाल बिलाप्यो । कोई न शरण सहाई । जैनवानी० । अब मुजे ॥२॥

कब ऊब कंठ कुठार न चीर्यो बांध लटकाई । जैनवानी० ॥३॥

कबऊक पीर डार कोल्हूमें । तिल वत देह पिलाई ।
जैनवाणी० ॥४॥

ताते तेल भाडमें भुलस्यो, कम ऊक शूल दिखाई ।
जैनवाणी० ॥५॥

आंख नतू न कानमें ठढे । ना खापो रचगाई । जैनवाणी ॥६॥
वैतरणी में गेर घसींड्या । गाठिकु घाव पिलाई । जैनवाणी०॥७॥
तांबा प्याय लोहको पूतली, ताती उर लिपटाई ।
जैनवानी० ॥८॥

मात पिता युवती सु बांधव, संपत काम न आई ।
जैनवानी० ॥९॥

कबऊक पशु पर जाय धरी तहां, बध बंधन अधिकाई।
जैनबानी० ॥१०॥
खन नत पन दाहन अरु धौंकन छेदन वेदन पाई।
जैन० ॥११॥
समन अमन दोऊ भांत भरे दुःख बहुबिध मरण कराई।
जैन बानी० ॥१२॥
कब ऊक मानुष देह बिहंव्यो बिषयनमें लवलाई। जैन० ॥१३॥
अंध पंगु अरु राब रंक भयो। रोग सोग दुख दाई।
जैनबानी० ॥१४॥
कुष्ट जलोद्र और कठोदर, इष्ट बियोग बुराई। जैनबानी ॥१५॥
देव भयो पर संपति निरखत, झुर झुर देह कराई।
जैनबानी० ॥१६॥
बाहन जाति तथा भव पूरन, निरख रह्यो पछताई।
जिनबानी० ॥१७॥
यह बिधि काल अनंत भज्यो हम, मिथ्या भाव कुपाई।
जैनबानी० ॥१८॥
अव्रत जोग फिरा भटकत ही, सम्यक दृष्टि न आई।
जैनबानी० ॥१९॥
अब जिन धर्म परम रस बरसे, भय तृष्णा नरहाई।
जिनबाणी० ॥२०॥
दग सुखदास आस भई पूरण, धन जिन वैन सहाई।
जैनबानी० ॥२१॥

इति जिनबाणीका पद राग धनाश्री ॥
जिन मत परम निधान जगतमें जिनमत० ॥टेक॥
जिन मारग तैं उरझी सुरझै छूटैं पाप महान, अरु जिया कूं अनुभव सुधि आवे। भांगै भरम बितान, जगतमें जिन मत परम निधान ॥१॥

वस्तु स्वरूप यथावत दरसे धरसे भेद विज्ञान, सब जीवन पर करुणा उपजै । जाने आप समान जगतमें० ॥२॥

शूकर सिंह नवल मर्कटको वर्णण आदि पुराण, भील भुजंग मतं गज सुरसे करयाको बखान । जगतमें० ॥३॥

अंजन आदि अधम बहु उतरे पायो सुरग बिमान, नर भव पाय मुकति पुनि पाई नयनानंद निधान । जगतमें जिन मत परम निधान ॥४॥

इति पद जिनवाणीका राग हिंडोलमें मलहार ॥

सुनोजी सुनोजी सम भावसूं, श्री जिन वचन रसाल । सुनोजी सुनोजी सम भावसूं ॥टेक॥

द्रव्य कामने तुम ठगे, भाव करम हिये डार । नो कर्मनसूं बांधियो, दीनों चऊंगति डार । सुनोजी सुनोजी० ॥१॥

कब ऊंच नर्क दिखाईया, कब ऊंच पशु पर जाय । नव ग्रीवक लों ले चढ़े, पटक्यो भाव डिगाय । सुनोजी० ॥२॥

जिनने जिन वचन हि सुने, जिनका सुनो वरदर । नर भव चिंतामणी रतन, दियो सिंधुमें डार । सुनोजी० ॥३॥

पंच महा व्रत ना हिये, श्रावक व्रत दिये छार । तिनकूं नरक निगोदमें, मारया चाम उतार । सुनो० ॥४॥

मति थोडो विरता घना, कहे कहां लों वीन । थोडोमें सऊ सीखयो, होय सुघर नर जीन । सुनोजी० ॥५॥

पायो धरम जिहाज पद, पायो नर भव सार । नैन सुख भव सिंधुमें, उतर उतर भेया पार । सुनोजी सुनोजी० । ३॥

इति पद जिनवाणीका राग काफी चाल होलीमें है !

जिनवानीकी सार न जानी ॥टेक॥

नरक सधारण शिव सुख कारण जनम जरा मृत हानी, उदर जलोदर हरण सुधा रस काटन करम निशानी पहुव तेरे हाथ न आनी । जिनवानी० ॥१॥

कल्पवृक्ष चिंतामणि अमृत, एक जनम सुखदानी । दूजे जनम फिर होय भिखारी, वह भव भ्रमण मिटानी । तज्यो दुर-व्यसन कहानी । जिनवानी० । २॥

ब्याह सुता सुत बांटलूं भाजी, हरिलूं नार बिरानी । ऐसें सोचत जात चले दिन, होत बराबर हानी । समझ मन मूरख प्रानी । जिन० ।३॥

भव वारिध दुस्तरके तरनकूं, कारन नाव बखानी । खोक नयन आनंद रूपमैं, धर सम्यक् श्रद्धानी । मोक्ष पद मूल निशानी । जिनवानीकी सार न जानी ॥४॥

पद जिनवाणीका राग येमन कल्याण ।

जइया जिन राज बिना कौन हरे मेरी ।।टेक।

सुनत ही जिनेंद्र वैन, भयो मोह अतुल चैन । सम्यकके अभाव मैने कीनी भव फेरी । जइया० ॥१॥

अतुल सुख अतुल ज्ञान, अतुल वीर्यको निधान । कायामें विराजमान मुक्ति मेरी चेरी । जइया० ॥२॥

द्रव्य कर्म विनिर्मुक्त, भाव कर्म असंयुक्त, निश्चय नय लोक मात्र परजय वपु घेरी । जइया० ॥३॥

जैसे दधि मांहि घीव, तैसे जडमांहि जीव । देखो हम अपने नेन आनंदकी ढेरी । जइया० ॥४।

पद जिनवाणीका राग खम्माचको ठुमरी पूर्वी कहरवा चालै पर ।

रसीली जैन सारदा जियामें बसो, जो कोई ध्यावे सोई फल पावैरे ॥ जगमें सुगम हिरै ॥टेक॥

अनघ जैन भरती संसारमें निकारती, विभाव बंधन टारती । जियामें बसी रसीली जैन सारदा ॥जियामें बसो ॥१॥

जो कोई ध्यावे सोई फल पावैरे, जगमें सुगम हिरै ।

कुज्ञान दैत्य कालिका सुज्ञान दीपमालिका जिनेश जाव बालिका ॥ जियामें बसो ॥रसीली० ॥२॥

जो कोई ध्यावैं सोई फल पावेरे, जगमें सुगम तिरे।
प्रथम जो जोग घनी, करण जोग सोघनी, चरण जोग सो घनी॥
जियामें बसी ॥रसीली० ॥३॥
जो कोई ध्यावैं सोई फल पावेरे, जगमें सुगम तिरे।
द्रव्य जोग रंगिका, सपत भेद भंगिका, नयन सुख संगिका॥
जियामें बसी ॥रसीली० ॥४॥

पद जिनवाणीका राग बानी मुलतानीकी गजल।

तेरी वानीकी भनक जो मैंने, सुन पाई दाता मैं तो शरसाद हूवा ॥टेक॥
कुगुरुनकूं मैं गुरु कर माने, व देव कुदेवनमें पहचाने।
दया धरममें दूषण लाने, सो मैं ख्वार हूवा ॥तेरी वानी० ॥१॥
मिथ्या तत्व लोग दखाई, मेरी बुधि च्यारों भरमाई।
आठों कु विसनमें लौलाई, जोनाविकार हूवा ॥तेरी वानी० ॥२॥
उलट पुलट च्यारों गति भटका, नरकोंमें उलटा लटका।
अब लागेका मुझकूं खटका, सोना दरकार हूवा ॥तेरी वानी० ॥३॥
अब मैं फिरता फिरता हारा, आय पड़ा जिन चरन तुम्हारा।
करो नैनसुखका निस्तारा, हाजिर दरबार हूवा ॥तेरी वानी० ॥४॥

पद जिनवाणीका–राग दादरा पूरबी।

करै जीवका कल्याण सदा जैन वानीरे ॥टेक॥
संशयादि दोष हरैं, मोहकों निमूंल करैं।
दोष दाय नवनं दनं समानीरे ॥ करै० ॥१॥
सप्तभंग भेदनी है भर्मको उछेदनी।
वस्तुके स्वरूपकी है लाभ दानीरे ॥ करै० ॥२॥
वस्तुको विचार कीये पार होत हैं कदीम।
केवलादि ज्ञानकी कला निशानीरे ॥ करै० ॥३॥
नैनसुख अन्तकालसैं करै सबै निहाल।
नाग काय स्थान किए स्वर्ग आनीरे ॥ करै जीव० ॥४॥

पद जिनवानीका राग भैरू।

संसै मिटै मेरी संसै मिटै, जिनवानीके सुनै मेरी संसै मिटै ॥टेक॥
पाप पुन्यको मारग सूझै, भव भवकी मेरी व्याधि घटै।
॥ जिन०॥१॥
और ठौर मोहि विकलप उपजै, ह्यां याके आनंद हटै।
॥ जिन० ॥२॥
निज पर भेदविज्ञान प्रकासै, विषयनकी मेरी चाह घटै।
॥ जिन० ॥३॥
वानी सुन नैनानंद उपजै, मोह तिमरको दोष हटै।
जिनवानीके सुनै मेरी संसै मिटै ॥संसै० ॥४॥

पद जिनवानीका रागनी खम्माचकी ठुमरी मल्हारकी तर्जेपर।

जिया तैने तजा धरम हितकारी, ऐसो जग जनतारक कलमलहारक अधम उधारक रतन सार, तेने तजा धरम हितकारी ॥टेक॥
तेरे कर्मबंध तोरि डारै, तीनौं दुखतैं उबारै।
भवतैं निकारै, अघहारी ॥ जिया तैनैं० ॥१॥
नरकसैं निकारि लेय, तीर्थराज पद देय।
धरमसो न कोऊ उपगारी ॥ जिया तैनैं० ॥२॥
नैनसुख धर्म सेयो, आतम स्वरूप वेदो।
लागै पार खेवो तदवारी। जिया० ॥३॥

पद जिनवानीका राग धनासरी।

जिनवानी रस पी, हे जियरा जिनवानी रस पी ॥टेक॥
तुम हो अजर अमर अगनायक ज्ञान सुधा सरसी।
तेरो हरनहार नहि कोई क्यों मानत डरसी ॥
हे जियरा जिनवानी० ॥१॥

करम छिपतकर मनतैं न्यारो केवलमैं दरसी ।
ज्यों तिल तेल मैल सुवरणमैं क्यों पुद्गल परसी ॥
हे जियरा जिनवानी० ॥२॥

जबलग परकूं निज घर मानत, तब लग दुख भरसी ।
छूटे नांहि कालके करसैं, मर मर फिर मरसी ॥
हे जियरा० ॥३॥

पूजा दान शील तप धारो, सब पाति गहरसी ।
नयनानंद सु गुरु पद सेवो, भवसागर तरसी ॥
हे जियरा० ॥४॥

पद जिनवाणीका रागनी जंगला ।

सुगुरुकी वानीजी सुगुरुकी वानीजी, तेरे दिलमें क्यों न समानी सुगुरुकी बानी । अरे अभिमानी, सुगुरुकी बानी ॥टेक॥
वीतराग हिमगिरतैं निकसी यह गंगा सुखदानी ।
सप्त विभंगा अमल तरंगा भव आताप मिटानी सुगुरुकी बानी ॥
तेरे मनमें क्यों न समानी ॥ सुगुरु० ॥
अरे अभिमानी सुगुरुकी० ॥१॥

जग जननी परमारथ करनी भाषी देवदज्ञानी ।
सत्य सरूप यथारथ निर्णय सो तैने विसरानी ॥ सुगुरुकी वानी ॥
तेरे दिल० ॥२॥

जामैं बंध मोक्षकी कथनी सु, निसुरके बहु प्राणी ।
पशु पंछीसे पाय मनुष पद, होय रहे शिवथानी ॥ सुगुरु० ॥
तेरे मनमैं० ॥३॥

तैं मिथ्यामत देव धरम भजि, पियो मूढ मद पानी ।
कीनी मूव ऊतकी सेवा, मिली न कौडी कानी ॥सुगुरु०॥
तेरे मनमैं० ॥४॥

मर्म अविद्या अब या जगमें, आ प्रभु तेरी छानी।
अब जिन वैन गंग तट सेवो दृग, सुख शिव सुखदानी ॥सुगुरु०॥
तेरे मन० ॥५॥

पद जिनवानीका छन्द त्रोटक व्रत सरस्वती अष्टक।

मुनि भाव तरंग विशुद्धतरे रज पाप अताप विभाव हरे।
मद मोह महादल भेद जवे, जय वीर हिमाचल पाद्भवे ॥१॥
चटनन्द तपाखरकी नगरी, लखि तोहि मिटैं भवके मयरी।
अरु जीव चिन्तावन रूप नवे, जय वीर हिमाचल० ॥२॥
भव कानन कांगन भीर माथ', दऊबारकु जन्म कुयनि परथो।
जगशूल निमूल तिवज्र दवे, जय वीर हिमा० ॥३॥
मम क्लेश करांकुर जोरि धरे, बल कोटि सुमेरु विदाय परे।
दृग पाव पिता जननी सुपवे। जय वीर हिमा० ॥४॥
जल बिन्दु समायन अश्रु मर्म, मम सर्व हितू जन एह मर्म।
अति खेद भरे कर्मोद्भवे। जय वीर० ॥५॥
अब ज्ञान परथे तुपरे दरपै, अपवर्ग धरो हमरे करपै।
जग जाल विमोचन भाव नवे। जय० ॥ ६ ॥
तुम नाम हरे भव खेद घना, जिम तीव्र पोह तरांव जनान।
पद्माधर आपर बात भवे। जय० ॥ ७ ॥
सब देव यजे जनतोष भयौ, लखि रूप कृतारथ जन्म भयौ।
अखि अमृत वारिधि कौन पीवे। जय वीर हिमा० ॥८॥

गीता छन्द

कुज्ञान छैनी मोक्ष दैनी, आतमा दरसावनी।
घट घट प्रकाशन जैन शासन संतजन मन भावनी ॥
रवि नंद जुग जुग बदी बिक्रम भादवित्र तेरस शशी।
चरदाव दृग सुखदायकी सुनि नाशि भव बंधन फंसी ॥९॥

पद जिनवाणीका चाल गीत मारवाडका राग।

जिवरा सांचेको सांचा कर जानिये, जिवरा झूठेका झूठ पिछान। जो तू चाहै निज कल्याणकूं, जिवरा तजि हठ होय सुजान। क्यूं अटकाई नैया जानके ॥टेक॥

जिवरा जाके भई है कवि ज्ञानकी, जिवरा ताहीकी मिटी है कषाय। ताहीकूं जुगपत ज्ञानमें, जिवरा लोकालोक लखाय॥
क्यों अटकाई नैया जानके० ॥१॥

जिवरा लागे हैं करम अनादिके, जिवरा ज्यों तिल तेल संजोग। ऐसैं सुनी है केवलज्ञानमें, जिवरा बन्ध बढ़ावैं भोग॥
क्यों अटकाई० ॥२॥

जिवरा राग न कीजै इष्ट जानिके, जिवरा द्वेष अनिष्ट मंझार। परमें झूठो निजता तजो, जिवरा मैथुन भाव निवार॥
क्यों अटकाई० ॥३॥

जिवरा काऊपे क्रोध न कीजिये, जिवरा निज परकूं दुखकार। काहूं मद बिकरायके, जिवरा तजिये मायाचार॥ क्यों अट०॥४

जिवरा लोभ घटावै गुरुता आपनी, जिवरा हांसीसैं बंधन आय। भयसैं सम्यक ना रहै, जिवरा भारत बल विनशाय॥
क्यों अटकाई० ॥५॥

जियरा कीजिये मन्द कषायकूं, जिवरा पार लगावन हार। नैनसुख मन रोकिये, जिवरा ज्यौं उतरै भव पार। क्यों० ॥६॥

जिवरा पक जुगुप्सा वाहै पुन्यकूं, जिवरा तजिये मूढ प्रमाद। यातैं चऊं गति हंडियो, जिवरा बीत्यो काल अनादि॥
क्यों अटकाई० ॥६॥

पुनः जिन धुनिकी महिमा चाल सरवण करीजन चाहवके तौर पर चतुर्गति दुख वर्णनम्। ताके चौक चार।

सुन सुन जिन धुनि भयोरे अचम्भा सब संसार मार।
जिया जाने रे सब सब संसार असार॥टेक॥

इक संसार विषे रे होसु क्रीडा, भ्रमतें पावे नहीं पार ।
अब जाने रे भ्रमतें पावे नहीं पार ॥१॥
जनम मरण जरा रे हो सतावै रे, चहुँगति भ्रमण अपार ।
अब जाने रे चऊ गति० ॥२॥
भयों सुरगमें देव मिथ्याती रे, राग उदय दुख धार ।
अब जाने रे राग उदे० ॥३॥
देख पराई संपत झुरो रे, कीनो नरक तयार ।
अब जाने रे कीनो नरक० ॥४॥
सुन सुन जिन धुनि भयोरे अचम्भा, अब संसार अपार ।
अब जाने रे अप० ॥५॥

अथ नर्क गति वेदना ।

दुरगति आय अधो मुख लटक्योरे, तल सिर ऊपर पाय ।
अब जाने रे तल सिर० ॥६॥
कर्मनके वश पड्यो पुकारै रे, दुखको कारन यार ।
अब जाने रे दुखको० ॥७॥
कांटों पर जब पडे रे जानकर, रोवें हाहाकार ।
अब जाने रे रोवे० ॥८॥
पकड नारकी चीरें रे पले, जुदा देव घणोंके मार ।
अब जाने रे देत घणोंको० ॥९॥
कोल्हूमें पीडे ताते तेलमें जरावे रे, लोचन लेय निकार ।
अब जाने रे लोचन लेय० ॥१०॥
मदिरा पीनेवालेको सुन लीजयोरे, प्यावें तांबा गाल ।
अब जाने रे प्यावें तांबो गाल ॥११॥
ताती पुतली गलेमें लगावे रे, जिन सेई पर नार ।
अब जाने रे जिन सेई प० ॥१२॥
सागर बन्ध उमर जहां पाई रे, मिलै न कण जलधार ।
अब जाने रे मिले न० ॥१३॥

मात पिता सब होवेंगे बिगाने रे, तोहि नरकमें बार।
सब जाने रे तोहि नरक० ॥१४॥
जिनको तू अपने कर जाने रे, सब मतलबके यार।
सब जाने रे सब मत० ॥१५॥
सुन सुन जिन धुनि भयोरे अचम्भा, सब संसार असार।
सब जाने रे सब संसार असार॥

अथ मनुष्य गति दुख वर्णनम्।

मानुष गतिमें भयोरे विकल तन, अन्ध बधिर दुखकार।
सब जाने रे अँध बधिर दुखकार॥१६॥
रोग सोग कर भयोरे कूबड़ो, उदर जलोदर भार।
सब जाने रे उदर ज० ॥१७॥
घात कुघात भई रे तन पायो रे, इष्ट वियोग अपार।
सब जाने रे इष्ट वियोग अपार॥१८॥
कै पाई कलहारीसी नारी रे, कै न चल्यो परिवार।
सब जाने रे ॥१९॥
कै समरथ सुत भयोरे व्याहकर, रोवत छांड़ नार।
सब जाने रे रोवत छोड़ो नार॥२०॥
कै जीयो तो पति भयो रे कुबुद्धि, कुल कलङ्क विस्तार।
सब जाने रे कु०॥२१॥
तीर्थंकर चेतु वेरे दिगम्बर लखि संसार, लखि संसार।
सब जाने रे लखि० ॥२२॥
सुन सुन जिन धुनि भयो रे अचम्भा।

पशुगति दुख वर्णनम्।

शूकर कूकर भयोरे बघेरा, पशुगति दुःख अपार।
सब जानेरे पशुगति० ॥२३॥

महिषा वैल भयोरे, जु घोडारे दुःख पाये बद भार।
अब जानैरे दुख पाये० ॥२४॥

धर्म अधर्म नगिन्योरे अज्ञानीडा, देव कुदेवनधार।
अब जानैरे देव कुदेव ॥२५॥

दियो न उत्तम दानरे सु ज्ञानीडा, कियो नवयज्ञाचार।
अब जानैरे कियो न ॥२६॥

ज्यों वधारी धनको धरैं गांठका, बडा हाथ दं ऊ झार।
अब जानैरे ध० ॥२७॥

क्रोधमान छल लोभ इन्द्रीनेरे, कीनों तोहि दिवार।
अब जानैरे कीनो तोहि ॥२८॥

चेतन चिंतामणि नग तेरोरे, दियो धूरमें डार।
अब जानैरे दियो धूरमें ॥२९॥

गुरुकी ज्ञान छत्र अब पायोरे, चहुँ गति धूर बहार।
अब जानैरे चहुं गति धूर ॥३०॥

नैनानन्द अपनौरे मन निरमल, क्योंकि नहिं लेत निखार।
अब जानैरे क्या नहिं लेत निखार ॥३१॥

चन्दनकी आतम रस तामैं, रे क्यों नहिं लेत उजार।
अब जानैरे क्यों नहिं लेत उजार।
अब जानैरे क्यों नहिं लेत उजार। सुनसुन ॥३२॥

दोहा—जिन शासन तेरो हितू, ताहि पूज अब सोह।
मेटै भव बाधा सकल, चहुं गति भ्रमण छोह ॥३३॥

इति उपदेश बत्तीसी समाप्तः। पंचमोऽध्याय समाप्तम् ॥

छठा अध्याय

अथ षष्टम अध्यायमें समुच्चय जिन स्तुतिका पद लिख्यते ।

पद समुच्चय जिन स्तुतिका हजूरी गजल ।

इस मन मधु व्रतका मेरे लग भाग जगाओ, तेरे भक्तिके पद पंकजाश्रम मांहि य पगाओ ॥ टेक० ॥

अरविन्ददलों भी उदार हैं पादारविन्द तेरे । विश्राम पाके श्रम सनातन मोरा भगाओ, इस मन० ॥ १ ॥

हे कर्म मर्म भेदने हे परम योगिने, अब तो चरण शरणमें तेरे आ ठगाओ, इस मन० ॥ २ ॥

हे वचनवाऽगोचर चरित्र धारिने धनी । इस कर्मने भी भौंमें दा हमको दगाओ, इस मन० ॥ ३ ॥

हे भवस्था दिभूतके भावाव भासने । हमको कुगुरु कुदेवने बहुता ठगाओ ॥ इस मन० ४ ॥

हे सतमूलोन्मूलित अनादि क्लेश हारिणे । दग सुखका अब तेरे लिवाको है लगाओ ॥ इस मन० ५ ॥

पद हजूरी अर्हंत स्तुति, राग दादरा ।

कौने करीजो थारी कौने करी समोसरणोंकी रचना भारी कौन करी ॥ टेक० ॥

कौन पुन्य संपति याहि, लागो निरखत हो भव पोर टरी ।
समोसरणैकी रचना० ॥ १ ॥

तरु अशोक छवि शोक भगे, सब सकल जगतको जाने व्याधिहारी
समोसरणैकी० ॥ २ ॥

खिरै त्रिकाल दिव्य धुनि तुमरी, जाहि सुनत सारी सृष्टी तरी ।
समोसरणैकी० ॥ ३ ॥

सात जनम भामण्डल भासै, अति अचिंत्य महिमाए भरी ।
समोसरणैकी० ॥ ४ ॥

द्वादश अर्द्ध कोटि धुनि बाजै, बार तीन लागैं इतनै झरी।
समोसरणैकी० ॥ ५ ॥
सिंह पीठपर अधर बिराजो, तीन छत्र मणि किरणैं छही।
समोसरणैकी० ॥ ६ ॥
त्रिभुवननाथ पाय तब सेवैं, इन्द्र नरेन्द्र गणेन्द्र हरी।
समोसरणैकी० ॥ ७ ॥
अनिदछ बैन घनौघ अनक्ष रस, यन समऊ उरमांहि धरी।
समोसरणैकी० ॥ ८ ॥
या निधिकूं जग सकल बिलस्वै, सो तुम पाय न जाय परी।
समोसरणैकी० ॥ ९ ॥
धरम चक्र भगवन्त तुमारे, आधि व्याधि शत कोश टरी।
समोसरणैकी० ॥ १० ॥
दग सुख खुश भयो लखि तुमकूं, आज मनो शिवनार बरी।
समोसरणैकी० ॥ ११ ॥

पद अर्हंत स्तुतिका हजूरी, राग करखेकी ठुमरी।

लगे नैनासमोसृत वारेसैं ॥ लगे नैना० ॥
हे बारेसैं जग प्यारेसैं ॥ लगे नैना० ॥ टेक० ॥
बिश्वतत्व ग्याता जगत्राता, करम भरम हर तारेसैं।
लगे नैना० ॥ १ ॥
तारण तरण सुभाव धर्या जिन, पार लंघा बन हारेसैं।
लगे नैना० ॥ २ ॥
बिन स्वारथ परमारथ कारण, डूबत काढन हारेसैं।
लगे नैना० ॥ ३ ॥
दग सुख परम धरम हम पायो, स्याद्वाद मतवारेसे।
लगे नैन ० ॥ ४ ॥

पद हजूरी अर्हंत स्तुतिका अति मनमोद है।
इसमें न मालूम सरस्वती कैसे समयमें दयाल हुई थी, लिख

किसी फंद के वास्ते १०८ दफे पढ़ते हैं फांसी तकका हुकम मौकूफ हो जाता है और कृपाकर्ये भक्तजन जेवंत होकर अपने घर जाते हैं। अबतमें यह है कि कविता लघु भ्राता पंडित भैरवानंद एक झूठे मुकद्दमें में अति विकट बंधनमें इलजाम किया गया था, और कविता उसकी पैरवी जिले मेरठकी अदालत फौजदारीमें करे था। जिस दिन उसकूं २ वर्षकी कैद कठिन बोली गई, और कारागारमें भेजा गया उस दिन कविताकूं अति चिन्ताने सताया। फौरन अपील किया और पेशीसें पहले कचहरीमें ही बैठे बैठे भगवानके चरणविंदके में अरजी गुजारी और यह पद वहां बैठे बनाया इतनेहीमें कविताकी बुलाय हुई और गुनहगारकूं कारागारसें बुलाया गया। फाजल साहिब इजलासकूं इजनियर नहर रुहेलखंड मुद्दई हाजिर आया फौरन बंध तोड़े गये और मुद्दईको हार हुई कवि ताका भ्राता. पूर्ण पदसे छुट होनेपर स्थापन दिया गया, तबसें इस पदकी प्रतीत हुई तो अनेक कष्टोंमें इसने शांति करी, धर्मदास सिकंदराबादके राजबंधन टूटे इत्यादि अनेक साखी हैं। जो कोई जैनी श्रद्धा सहित पढेगा उसके महान कष्ट दूर हो जायगे, कुछ संदेह नहीं है। वह पद यह है—

पद राग मांड देशकी ठुमरी।

प्रभु तारतार भवसिंधु पार, संकट मझार तुम ही अधार, दुख दे बहार, वेगी काढो मोरी नैय्या ॥टेक॥

परमाद चोर, कियो हमपै जोर, मग पोत तोर, दिये मझमें बोर। तुम सम न और, तारन तरवैय्या। प्रभु तार तार० ॥१॥

मोह दंड दंड, दियो दुख प्रचंड, कर खण्ड खण्ड, चऊं गतिमें दण्ड। तुम हो तरंड, तारो तारो मोरे सैय्या। प्रभु तार तार० ॥२॥

दग सुखदास, तेरो है हिराम, मेरो काट फांस, हर भवको त्रास। हम करत आस, तू है जग तब रैया। प्रभु तार तार० ॥३॥

पद हजूरी जिन स्तुति राग खम्माच।

सेवैं सब सुर नर मुनि तेरा द्वार, तोही धरम अरथ काम मोक्षको दवैया। तोहि तजि अब जाऊं प्रभु किसके द्वार, सेवैं सब सुर नर मुनि तेरा द्वार ॥टेक॥

अतुल परम धन, अतुल ज्ञान धन अतुल सुख धन कौन पार सेवैं। तोहि तजि० ॥१॥

खंड छतरपति कर तन गत जति, चरन परत मस्त गए झार। सेवैं। तू है०। तोहि० ॥२॥

तुमकूं नमाय माथ, कौन पैप आरूं हाथ। तुही दिवैया देत आखनागर, सेवैं०। तू है०। तोहि० ॥३॥

तुम बिन राग दोख, देत होय जन मोख। लिये हैं पजो सख यही प्रकार सेवैं०। तू है०। तोहि० ॥४॥

तुम सन्मुख रहे, तिन्है नैनसुख भये, तुमसे विमुख, रुले जग मंझार, सेवं० तू है०। तोहि० ॥५॥

पद हजूरी जिन स्तुति रागनी भैरवी।

भाग जग्योजी आज तो हमारो भाग जग्योजी ॥टेक॥

आज भयो मेरा जनम कृतारथ, आज भयो भवोदधि पार लग्योजी। आज हमारो० ॥१॥

मैं तुम ढिग कब हु नहिं आयो, कर्मनके वश ताप ठग्योजी। आज० ॥२॥

वैन तेय सम दर जति हारा, निरखत छाड सुजं गभग्योजी। आज० ॥३॥

आज भई मेरो मनसा पूरण, आज हो नयनानंद पग्योजी। आज० ॥४॥

पद हजूरी राग जोगारा।

दर्शनके देखत भूख टरी। दर्शन० ॥टेक॥

समोसरण महावीर बिराजे, तीन छत्र सिर ऊपर छाजैं।
भामण्डल सैरवि शशि लाजे, चंवर ढरत जैसैं मेघ झरी।
दर्शन० ॥१॥

सुर नर मुनि जन बैठे सारे, द्वादश सभा सुगणधर ग्यारे।
सुनत धरम भये हरख अपारे, बानी प्रभुजी प्यारी प्रीत भरी।
दर्शन० ॥२॥

मुनिवर धरम और गृह बासो, दोनू रीति जिनेश्वर प्रकाशी।
सुनत हटी ममता की फांसी, तृष्णा डायन आप मरी।
दर्शन० ॥३॥

तुम धाता तुम ब्रह्मा महेश, तुम ही धन तर वेद जिनेशा।
काटो नैन नंदके कलेश। तुम ईश्वर तुम राम हरी।
दर्शनके० ॥४॥

पद हजूरी, रागनी ठुमरी।

मिटाओ प्रभु व्यथा हमारीजी, पजी हम आये हैं दर्शन काज। मिटाओ० ॥टेक॥

सेठ सुदर्शनको पण राख्यो सूली सेज समान। अगनसे सीता उवारीजी येजी हम आये हैं दर्शन काज। मिटाओ० ॥१॥

नाग नागनी जलत उबारे, दियो मंत्र नवकार। मरण गति उनकी सुधारीजी। येजी० ॥२॥

त्रिभुवन नाथ सुन्यो जस ऐसो, अब आयो तुम पास। करो ना प्रभु मेरी गुजारीजी, येजी हम० ॥३॥

भटकत भटकत दर्शन पायो, जनम सफल भयो आज। लखी जो मैंने मुद्रा तुमारीजी। येजी हम० ॥४॥

मैं चाहत तुम चरण शरण गत, मांगत हूं तजि काज। सुनोजी नैनानंदकी पुकारीजो। येजी० ॥५॥

पद हजूरी रागनी।

अब तेम तेरा तजाना तभीसैं आया पिछाना, जबसै तेरा० ॥टेक॥

निज पर भेद विज्ञान प्रकाश्यो, तत्व प्रकाशे नाना तभीसें आया पिछाना। जबसें ते राम तजाना, तभीसैं० ॥१॥

दर्शन ज्ञान चरित्र अराध्यो, धर्‌यो जैन मतदाना। तभीसैं० ॥२॥

काल अनादि भज्यो मिथ्या मत, धरम मर्म अब जाना। तभीसैं० ॥३॥

अब टूटी ममताकी फांसी, समता डोल भाना। तभीसें ॥४॥

अब ही मैं यह बात पिछानी, यह भव बंदीखाना। तभीसैं० ॥५॥

करम बंध जगमें दुख पाऊ, मैं त्रिभुवनको राना। तभीसें ॥६॥

कहत नैनसुख वार वार प्रभु, तुम हो सत गुरु दाना। तभीसैं० ॥७॥

इति पद जिनरक्त किया हजूरी रागनी राग देश बरवा जंगला मिलकर तीनोंका किया है।

ठाडेजी गुसैंय्या तेडे दरबारे मैं, स्वामी म्हारावे। ठाडेजी गुसैंय्यां तेडे दरबार ॥टेक॥

करम हमारे बंध गये भारेजी, हो इनकूं दीजे निवार। ठाडेजी गुसैंय्या तेडे दरबार मैं। स्वामी म्हारावे, ठाडेजी गुसैंय्यां तेडे दरबार ॥१॥

बिघन हरण तुम सब ही के दाता जो, हो अतिशै अगम अपार। ठाढेजी गुसैंय्यां तेडे दरबारमें। स्वामी म्हारावे, ठाडेजी गुसैंय्यां तेडे दरबार मैं ॥२॥

निरखत रूप पुरंदर हारेजो, हो जय गावत गणधार। ठाढेसो गुसैंयां तेडे दरबारमें, स्वामी म्हारा वे। ठडेसो गुसैंयां तेडे दरबार ॥३॥

मन मयूर नैनें नंद मान वसो, सुन सुन वचन विहार। ठडेसो गुसैंयां तेडे दरबारमें, स्वामी म्हारावे। ठडेसा गुसैंयां तेडे दरबार ॥४॥

पद हजूरी जिनस्तु तिका दादरा रागनी पीलूकी पूरबो चालमें गाते हैं।

वारी वारी जाऊंरे, मैं वारी वारी जाऊं रे। भला मेरे स्वामी पे। मैं वारी वारी जाऊं रे ॥टेक॥

अष्ट दरब ले पूजन आये, दर्शन कर सुख पाऊं रे। मैं वारी वारी जाऊं रे, भला मेरे० ॥१॥

नाच बजाय गाय गुण माला, मोतियन अरघ चढाऊं रे। मैं वारी वारी जाऊंरे। भला मेरे स्वामी पै, मैं वारी वारी जाऊं रे। वारी० ॥२॥

दग सुख देव धरम गुरु सेवा, यह पूजा फल पाऊं रे। मैं वारी वारी जाऊंरे, भला मेरे स्वामी पे। मैं वारी वारी जाऊं रे। वारी० ॥३॥ इति।

अथ पद हजूरी जिन स्तुतिका राग खम्माचकी ठुमरी पूर्वी लखनऊ वालोंकी चलैकी।

हे देवयामें तो पूजन जिन जूकी जांइया भला मैंतो पूजनेका चाव, मघवान आयो समोशरणसार। मैं तो पूजन ।टेक।

सिरधर झाऊ छीरोदधिको गगरिया, नये ल्याऊं दरब सार, मैं तो पूजनसिरी ॥१॥

अष्ट दरबसें पूजन करिके, आरते थाल भर रतन सार, मैं तो पूजन० ॥२॥

गंधोदक ले शीश चढ़ाऊं, बढ़ेंगे अनंद घटें करम भार, मैं तो पूजन० ॥३॥

चौंसठ इंद्र चमर जहां ढारैं, पाऊं पाऊं पाऊं हग सुख अपार, मैं तो पूजन सिरो जिन आंदियां ॥४॥

अथ पद हद हजूरी जिन स्तुतिका उराहाओ और गणपत गणपते गणेश मनाया इसमें ठडी चजे पर है रागनी जंगला।

भगवान दर्शन दीजे, जी महाराज दर्शन दीजे। जि मैं तो दर्शन कारण आया, जी भगवान दर्शन दीजे। जी महाराज दर्शन दीजै॥ टेक॥

कोई तो मांगे प्रभु स्वर्ग सम्पदा, मैं आनैं पूजन आया। जी भगवान दर्शन दीजे, जी महाराज दर्शन दीजै, जी मैं तो दर्शन कारण आया, जी महाराज दर्शन दीजै॥१॥

इन्द्र न्हवावे तुम्हैं क्षारोदधिसैं, मैं प्रासुक जल लाया। जी भगवान०॥२॥ इन्द्र चढावे प्रभु रतन अमोलक, मैं तन्दुल चुग लाया। जी भगवान०॥३॥ इन्द्र करे है प्रभु तांडव नाटक, मैं जस गावन आया। जी भगवान०॥४॥ कहै ननसुख दरसन कहिये, जब नरभौ फल पाया। जी भगवान दर्शन दीजे, जी मैं दरशन कारण आया॥५॥

अथ पद हजूरी जिनस्तुतिका राग कालगडा।

जो तुम हो प्रभु दीनदयाल, तो तुम निरखो मेरा हाल। जो तुम हो॥टेक॥

नरक निगोद सहे दुःख भारी, फांसे निज न भ्रमें जगजाल। जलथल पावक पवन वरोवर, घरघर जनम मरे बेहाल॥ जो तुम हो तो तुम०॥१॥

कम पिपीलिका भ्रमर भरा हम, विकलत्रयकी सोखो चाल। फिर हम भए असैनी सैनी, चढ़ि नभ प्राद गिरे तत्काल॥ जो तुम हो तो तुम०॥२॥

कहै नैनसुख भवसागरसे, काढ़ पकड़ मोहि देगि निकाल। असमरथ होय हमें न उभारो, तौ न कहूं फिर दीन दयाल॥ जो तुम हो सो तुम० ॥३॥

अथ पद हजूरी ठुमरी जंगला झंझौटी। इसमें कुदेवोंके अभक्षका जिकर है जिनको भेढ और बकोमें भैंसे बकरे मुरगे मांस मदिरा लोग चढाते हैं।

मैं दरसन बिना गया तरस तेरी महिमा ना जानी जी। मैं दरस० ॥टेक॥

मैं पूजे राग द्वेष गुरु सेये अभिमानीजी, हियामें माना धरम, सुनी मिथ्यामत बानीजी। मैं दरस० ॥१॥

मैं फिर पूजता मूत ऊत कर खेढ मसानाजी, मैं जंत्र मंत्र बहु करे मनाये नाग भवानीजी। मैं दरस० ॥२॥

मैं भैंसे बकरे भेड हने बहु तेरे प्रानीजी, नहीं हुआ मनोरथ सिद्ध भए दुरगतिके दानीजी। मैं दरस० ॥३॥

मैं पढ़ लिये बेद पुराण जोग अरु भोग कहानीजी, नहीं आशा तृष्णा मरी, सुगुरुकी सीख न मानीजी। मैं दरस० ॥४॥

मैं फिरा रसायन हेत मिली नहीं कौडी कानीजी, नहीं छूटा जनम अरु मरन खाक बहु तेरी छानीजी। मैं द० ॥५॥

कई भुगत चुरासीलाख सुनी नहीं तेरी बानीजी, हुआ जनम जनममें खुवार धरमकी बात न जानीजी। मैं दरस० ॥६॥

तेरी वीतराग छवि देखि मेरे घटमांहि समानीजी, हो तुम ही तारणतरण तुमी हो मुक्ति निसानीजी। मैं दरस० ॥७॥

है दयामई उपदेश तेरा तुम हो गुरु ज्ञानीजी, हो षट मत में परधान नेनसुखदास बखानीजी। मैं दरस० ॥

अथ पद हजूरी चाल सेहरा बनेका गुन्दल्या मोरी मालना सेहरा राग खम्माचका।

लागा हमारा तोवे ध्यान, दाता भवसे निकारो मैंकोजी। लागा हमारा तोसैं ध्यान ॥टेक॥

तुम सर्वज्ञ सकल जग नायकजी, केवलज्ञान निधान। हे दाता लागा० ॥१॥ जीवदयामई धरम तिहारोजी, षट मतमांहि प्रधान। हे दाता भवतें लागा० ॥२॥ तुम बिन कौन हरे भव बाधाजी, सब जगत देखा छान। हे दाता लागा० ॥३॥ दास नैनसुख कछु नहीं मांगतजी, दीजिये शिवपुर थान। हे दाता लागा० ॥४॥

अब पद हजूरी रागनी जंगला झंझौटी मारवा दादरामिलेझु हुलेकाजिका है।

किस बिध कीने करम चकचूर, थारी परम छिमापैजी अचम्भा मोहि आवे प्रभु। किसबिध कीने करम चकचूर ॥टेक॥

एक तो प्रभु तुम परम दिगम्बर, वस्त्र शस्त्र नहीं पास हजूर। दूजे जीव दयाके सागर, तीजे सन्तोषी भरपूर। थारी परम छिमापै, जो अचम्भा मोहि आवे प्रभु। किस बिध कीने करम चकचूर ॥१॥

चौथे प्रभु तुम हित उपदेशी, तारणतरण जगत मशहूर। कोमल सरल वचन सत वक्ता, निर्लोभी, संयम, तपसूर। थारी परम० ॥२॥

त्यागी, वैरागी, तुम साहिब, आकिंचन, वृतधारी भूर, कैसैं सहस अठारह दूषण, तजिके जीत्यौ काम कलूर, थारी परम छिमापै० ॥३॥

कैसैं ज्ञानावरण निवारयौ, कैसैं गेरयौ, अदर्शन चूर, कैसें मोह मल्ल तुम जीत्यौ, अन्तराय कैसैं कीयौ निर्मूर। थारी परम० ॥४॥

कैसैं केवलज्ञान उपायो, कैसैं किये चयारूं घाती दूर, सुरनर मुनि सेवैं चरण तुमारे, फिर भी नहि प्रभु तुमकूं गरूर, थारो परम० ॥५॥

करत जाय अरदास नयन सुख दीजे यह मोहि दान जरूर, जनम जनम पद पंकज सेऊं और न कुछ चित्त चाह जरूर, म्हारी परम० छिमापे ॥६॥

अथ पद हजूरी राग ख्याल देश है, राजरी मूरत प्यारी लागे छे, म्हांनें राजरी मूरत प्यारी छे ।टेक।

नाम मंत्र परताप राजरे, पाप भुजंग भागे छे। म्हानें राजरी० ॥१॥

मन नत तन मन सब तुमसे ध्यान फला उर जागे छे, म्हानें राजरी० ॥२॥

ज्यों शशि निरखि कमोदनि बिकसैं, चितचकोर पग पागै छे। म्हानें राजरी ॥३॥

द्रिग सुख ज्यों घन निरख मगन है, मन मयूर अनुरागै छे म्हानें राजरी० ॥४॥

छप्पय छन्द—अर्हंत परमेष्टि कूं आशीर्वादका है, इसी छन्दका दूसरी पक्षमें अर्थ करिये है, तो उजागर मला श्री चन्द्रत हजी-अदारकूं, आशीर्वाद निकले है, टीका सहित इस छन्दकूं लिखना, तत्रादौ उजागर मल तहसीलदार मेरठके आशीर्वादका ।

श्लोक छन्द छप्पय ।

सत्य, रज, स्तम, गुणातीत केवलमय, मूरत, अविरल शब्द, घनौध, असाधारण चिकुरध, निर्विकार, निश्चिदानन्द, गुणगन्ध परायण, परमारथ उपदेश । तरण तारुण्य, तारायण, भ्रम उन्मदगय, हरण गुरु त्रिजग, त्रिधायं, व्यथा है । जिन जगत उजागर नृपति कूं दगा नन्द जय उद्धरैं ॥१॥

अस्य अर्थ—प्रगट हो कि यहां हमनें दोनूं पक्षमें आशीर्वाद किया है ॥१॥

अर्हंत परमेष्ठीकूं तथा उजागरमल वद्र्धीवदारकूं, अहो भव्यजना: अर्हंत जगत उजागर राजा हैं। तिनकूं हम जयवंत होऊ ऐसा आशीर्वाद किया है। उसकी महिमा कैसी है। जगतमें उजागर है सो कैसे है ताहि दिखावें हैं प्रथम तो, सतोगुण रजोगुण तमोगुण रूपी त्रीगुणतें व्यतिरिक्त है जुदा है। केवल-ज्ञानमय मूर्ति है ॥१॥

पुन: कैसा है जाकें विरवता कहियें वर्ण मात्राकी भिन्नता रहित, असाधारण कहिये स्वत: बिना ही इच्छा घन समान दिव्य ध्वनिका प्रस्फुरण है ॥२॥

पुनः कैसा है जाके निर्विकार कहिये सर्वथा एकांत पक्षरूप विकारतें रहित अनेकांतात्मक निश्चय व्यवहार नयकरि निश्चित जो वस्तु स्वभाव, ता करि प्राप्त भई जो ज्ञानी नररूप सुशांवताकूं परायण कहिये, परमार्थ निमित्त पर जानकूं बांटि दीनी है ॥३॥

भावार्थ—वस्तु स्वभावकूं बिना इच्छा प्रगट कीया, अहो मोक्षमार्ग धर्म था ताका उपदेश प्रगट करनेवाला, अर्हंत जगत उजागर राजा, जहाज तुल्य, तरणतारण देव है। अथवा दीव है, तरुण शक्ति जाकी ऐसा है ॥४॥

पुन: कैसा है जैसें त्रिदोषके कोपतें जीवन कै, कपाल चेष्टाकी चैतन्य शक्तिमें विघ्न होने तैं, उन्माद रोग पैदा हो जाता है, और उसके होनेसें सुबुद्धि जाती रहती हैं। तपशक्तेय सुन्दर उपचार करि, वाकारोग दूर करै है।

सुगंध द्रव्य वैद्याधा दरै है, तैसें ही अर्हंत जगत उजागर वैद्य राजानैं। निश्चित, वृत जो वस्तु स्वभाव। ताके उपदेश रूप मकरंदकूं फैलाय, त्रिजग कार्य कहिये। तीन लोकके भव्यात्मा जीव तिनका भ्रम रूप उन्मादकूं, दूर करि। जन्म जरा मृत्यु रूप त्रिदोषकी व्यथा दूर करी है, ऐसा जो कोई

जगतका परम गुरु जगतमें उजागर राजा है ताकूं हम जयवंत होहु। ऐसा शिष्य भाव करी आशीर्वाद करा है, यो प्रथम पक्षमें है॥२॥

पक्षांतर अर्थ, तथा पक्षांतरमें उजागरमल राजाकूं याही श्लोकमेंसैं दूसरा अर्थ करि, या भांति आशीर्वाद करैं है। कैसा है उजागरमल राजा जगत उजागर राजा है, सब जानैं हैं राज द्वीप पर आरूढ है। उक्त महाविरकूं भोगै है॥१॥

पुनः कैसा है रतज कहिये मन रज कहिये धूलता आरतम कहिये आवरण, तातैं अतीत कहिये अलग है।

भावार्थ अन्य अन्याय रूपकूं, धूलवत आनिताके कलंकके आवरण तैंदूर रहै है ॥२॥

पुनः कैसा है केवल मय मूरति कहिये. केवल अपनी तनख्वाहमें ही शरीरको पुष्टकरै है।

भावार्थ केवल अपने मय कहिये श्रम द्रव्यमें ही खुश है॥३॥

पुनः कैसा है असाधारण विस्फुरति कहिये, ऐसा धारणा जाके फुरी है कि अविरत्न शब्द घनौघाः पदके। पद छेदका जो अर्थ है सो गुण स्वभाव ही तैं तामैं पाईये हैं॥ तातैं या पदके पद छेद करिये हैं, अविः अजमत कहिये। अवित असुहावणा लागै है॥ यहां शब्दनामा शब्दके मध्यकार, पद पूर्णके अर्थ था। सो हमनें इस पक्ष मैं वकारकूं त्याग दिया, प्रयोजनके वसतैं सो जानना। पुनः अवित असुहावणा लागै है यह धारना कैसैं हुई॥ यों हुई अघ ओघानः, पापूंका संचय नहीं है, तातैं भई अथवा, घनौघाः कहिये जैसैं घनके शब्द स्वभाव जन्म होता है। तैसैं स्वभाव ही रिसवत लेनेका त्याग भया है, यहां अकारका लोप जानौं जो वनसे पहली था॥६॥

पुनः कैसा है निर्विकार ताकूं निश्चै किया है।

भावार्थ—राजाकूं दिग्बत् लेना विकार है सो यह ताके त्यागसैं निर्विकार है ॥७॥

आनंद कहिये सन्तोषी है ॥८॥

गुण गन्ध परायण कहिये गुण रूप सुगन्ध जहां देखता है। तहां परायण कहिये परुंचाले भौंरेकी भांति जा किरटे है ॥९॥

परमार्थ उपदेश तरण तारण पतराय रायण कहिये। पर जो प्रजा लोग तिनकूं मा कहिये ॥ लक्ष्मीकी पैदावारी अथवा अर्थशास्त्र कहियै। असि, मसि, कृषि, कर्मादि राजनीतिके उपदेशका देनेवाला है ॥ पुनः दुष्टकूं दंड सज्जनका पालन करनेवाला है। ऐसा तरणे जोग्य न्यायवंत राजा है ॥ महाजतुल्य है भरमोन्माद जो प्रजाको असावधानी। तिसका हरनेवाला है, जगतगुरु कहियै एको देशमैं, जगतके राजनीत धर्मका उपदेश देने तें जगतगुरु है ॥ भाजं कहिये भव्य जीव है। त्रिदोष कहिये आत्मस्तुतिः ॥ परनिंदा तथा निर्विवेकतारूप जो त्रिदोष। सोई भया रोग तिसकूं दूर किया है ॥ ऐसे गुण विशिष्ट जगतमैं। प्रजागरमक राजाकूं देखि। जगो नयनानंद, जयवान होहु अर्थात शत्रुगतिकूं विजय करो ऐसा आशीर्वाद करै है ॥ इत्यर्थ। अथ पदपंचपरमेष्टीकी स्तुतिका पूजाके समत पढनेका हजूरी रागनी झींझो।

जै जै जै जिन सिद्ध आचारज उपज्झाय साधव शिवकर ॥टेक॥

जै कल्याण धाम जग तोरथ पोषक सकल चराचर जंत। पूजत नित पदपंकज तुमरे नरनारायण करि सब सन्त। जै जै जै जिन० ॥१॥

शूकर सिंह नकुल मर्कटको सुर्यों सकल हमनैं विरतंत।

ऐसे आगम उचारे तुमनें अठ कीने तिनकूं अरहन्त ॥
जै जै जै जिन० ॥२॥

नागदष दंदक स्थानादिक भीलभेरसे जीव अनंत। कर उद्धार पार किए जगसैं जिन पूजे तुमकूं भगवंत ॥
जै जै जै जिन० ॥३॥

रावरंक सेवक अरु शत्रु निर्गुणगुणी निर्द्धन धनवंत। सबकों अभैदान तुम बांटो जो भवके भयसैं भयवंत ॥
जै जै जै जिन० ॥४॥

है व्याकरण विषै तुम शास्त्रा अर्हं इति पूजायां अन्त। शब्द अखण्डित, पूजा मंडित पंडितजन मान्यो सब संत ॥
जै जै जै जिन० ॥५॥

वीतराग सर्वज्ञ भए तुम तारण सु भाव धरंत। तीरथ परम परम पुरुषोतम परम गुरु सब स्तुति कहंत ॥
जै जै जै जिन० ॥६॥

तातैं जल चन्दन हम अर्चैं अक्षत पुष्प चरु दीपंत। धूप महाफलसैं तुम पूजा है, त्रिकाल त्रिभुवन जैवंत ॥
जै जै जै जिन० ॥७॥

सब पर दया सभीके साहिबदास नैनसुख एम भनंत। कर पतदिष्ट भ्रष्ट मत राखो वेग हरो भव बाधा अन्त ॥
जै जै जै जिन० ॥८॥

अथ हजूरी रागनी खंम्माचकी।

क्यों नाबचाते जिनराज हो मैं शरणैं आयाजी, क्यों नाबचाते जिनराज ॥टेक॥

भगन्दर प्रकोतोजी, भस्म करै है मैंकोजी। वेग बुझल्यो जिनराज ॥ हो मैं शरनैं ॥१॥ लाल लहेडे नैं तो जी, जाल लगा दियाजी। आन फसौ मैं जिनराज ॥ हो मैं० ॥२॥ टूटीजी नैया मेरीजी, पार लगा दो जी। मझधारामें पडो आय ॥ हो मैं० ॥३॥

नैनानंद थारीजी है बलिहारीजी। भवभवमें हुजियो सहाय॥ हो मैं ॥४॥

अथ पद हजूरी रागनी झ्यंझो

राजको सोच न, काजको सोच न। सोच नहीं प्रभु नर्कगणको ॥ राजको० ॥ ५ ॥टेक॥

सुरग छुटेको सोच नहीं है, सोच नहीं तिरजंच भयेको। जन्म मरणको सोच नहीं है, सोच नहीं कुड नीच गयेको॥ राजको० ॥१॥ ताडन तापनको, सोच नहीं है सोच नहीं तन अगनदहेको। सीस छितेको सोच नहीं है, सोच नहीं नृव भंग दियेको॥ राजको सोच न० ॥२॥ ज्ञान लुटेको सोच नहीं है, सोच नहीं ऊर्ध्वान भयेको। नयनानंद इक सोच भयो अब, जिनपद शक्ति विसार दियेको ॥राजको सोच न० ॥३॥ राजको सोच न काजको सोच न सोच नहीं प्रभु नरक गयेको। राजको सोच न० ॥४॥

अथ पद हजूरी रागनी खमाची ठुमरी।

हमैं शिव दिखला दे मुकतीके बसैयाजी ॥टेक॥

चारित तजैय्या, परिग्रह तजैय्याजी हो मैं थारो निज-रसके रसैय्याजी। हमैं शिव० ॥१॥

आश्रव हरैय्या, निर्जरा करैय्याजी। हो मैं थारो दुर्गतिके नशैय्याजी ॥ हमैं शिव० ॥२॥

तेरी नगरिया तेरी अटरियाजी, हो मैं थारो द्रग सुखके करैय्याजी। हमैं शिव दिखलादे मुक्तिके [illegible]जी ॥३॥

अथ पद रागनी खास भैरवी, तथा खास खम्माचमें यह ठुमरी हजूरी गाई जायगी।

डूबी पडी भवसागरमें मोरी नैयाकूं पार उतारो महाराज। डूबी पडी० ॥टेक॥

बीत्यो है अनन्तकाल, डूबी जन्मके जंजाल, देकै अवलंबनिज तारो महाराज ॥डूबी पड़ो० ॥१॥

लोभ चक्रमांहि परो, क्रोध मान माया भरो । राग दोष मल्लसैं उबारो महाराज ।.डूबा पड़ो० ॥२॥

तारे अधरमी अनेक, पापी.ऊ उतरो एक, वीतराग नाम है तिहारो महाराज ॥ डूबा पड़ो० ॥३॥

कहै दास नैनसुख, मेटो मेरा सब दुख, खैंचिकैकू घाटसैं निकारो महाराज । डूबो पड़ो भवसागरमैं मोरो ॥४॥

अथ पद हजूरी राग मारङ्ग । कर्मनकी गति टार हो स्वामी, कर्मनकी गति टार ॥टेक॥

दरपन तैं मैं संकट पाए, गयो नरक बहुबार । हो स्वामी· कर्मनकी ॥१॥ कबहुक पशु परजाय धरी वहां, दुख पाए अरमार हो स्वामी । करमनको० ॥२॥ देव मनुष गति इष्ट वियोगी उपहो वारनपार । हो स्वामी कर्मनको० ॥३॥ बार वीतराग लखि तुमकूं राखो चरन मझार हो स्वामी । करमनकी ॥४॥ नैनसुखकी अर्ज यही है, भवसागरसैं तार हो स्वामी ॥कर्मन०॥

इति समुच्चय जिनस्तुति षष्ठोऽध्याय संपूर्णम् ॥ ६ ॥

सप्तम अध्याय

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । अथ सप्तम अध्यायमें प्रत्येक जिन के पद लिख्यते । तत्रादौ आदिनाथ जी के पदोंका संग्रह आदिनाथ-जीका पद हजूरी राग खम्माच जंगला गजल ॥

सुनरी सखी इक मेरी बात, आज नगरमें बरसैं रतन । ॥टेक॥ कीनो है आज ऋषभ अवतार, नाभिराय घर हरख अपार । रतन जु बरसैं पंच प्रकार, शीतल पवन सुधाको

चरन। सुनरी सखी इक मेरी बात, आज नगरमें बरसें रतन ॥१॥ पुष्पवृष्टि दुन्दुभि जयकार, बट तब धाई घर घर बार। आज अजुध्या नगर मंझार, पूजत इन्द्र प्रभूके चरन, सुनरी सखी इक मेरी बात, आज नगरमें बरसैं रतन ॥२॥ सब अद्भुत जंगल गुलजार, वन उपवन फूले इक बार। कामिनी गावैं मंगलाचार, बोलत पिक द्विज चरय बचन। सुनरी सखी इक मेरी बात। आज नगरमें बरसैं रतन ॥३॥ चन्दनसें चर्चे घरबार, लटकाये सखि वन्दनवार। है जो दृग सुखको दातार। लीजै प्रभूका चलके चरन, सुनरी सखी इक मेरी बात। आज नगरमें बरसें रतन।४॥

अथ पद आदिनाथजीका हजूरी राग ड्योंडी।

आदि पुरुष तेरी शरण गही, अब टूटीसो नाव समुद्र बिच वेड़ा ॥टेक॥ नाभि पिता मरुदेवीके नन्दन, इस जगसर कोई नहीं मेरा। अगम उदधिसैं पार लगावो, जान पहुंचाओ काल लुटेरा। आदि ॥१॥ आतम गुणकी खेपलुटी सब, लूट लियो अनुभव धन मेरा। दीन बंधु इस करम भंवरकी, कठिन बिपत्तिमैं पड़ा है धाराचेरा। आदि ॥२॥ क्या तौ नैया उलटी ही फेरो, क्या अब पार करो यह वेड़ा। नैनानन्दकी अरज यही है, नातर बिरद जावै तेरा। आदि ॥३॥

अथ पद हजूरी आदिनाथजीका राग जंगलेकी लावनी वा ठुमरी बत्तौर बधाई।

नाभि घरले चलरी आली; जहां जन्मे आदि जिनन्द किया वेमान बिजय खाली ॥टेक॥ ऐरापति गजराज सुरगऐं सुर सेना चाली। फूलनके गजरा गुन्दवाये बागनके माली। नाभि घर ले चलरी आली ॥१॥ नन्द इन्द्र जय जय टेरैं मोर मुकटवाली। ऊन नऊन नद्रि गद्रि गन करत सुरदे देवर

थारी। नाभि घर ले चकरी भाको ॥२॥ गंधोदककी दृष्टि रतनकी धारा सु' ढाको। शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह च्यारों दिश भाको। नाभि घर ले चकरी भाको ॥३॥ जल चन्दन अक्षत सुर ल्याये फूलनको ढाको, चरु दीपक शुभ धूप फलादिक भर भर थाको नाभि घरले चल भरी भाको० ॥४॥

सुफल भयो अब जन्म हमारो, चऊं गति दुख टाको। नैनानंद भयो भविजनकूं कलि यह खुशयाको, नाभि घरले चल री भाको। जहां जन्में आदि जिनंद हुयो सर्वार्थ सिद्धवाको ॥५॥

अब पद आदिनाथजीका हजूरी ठुमरी जगला झंझौटीका मिश्र। नाभि कंवरका देख दरश अब दूर हुआ दिलका खटका ॥टेक॥

इन्द्र वधू जिन मंगल गावैं, भेष कियें नागर नटका। मेरु शिखर पर प्रथम इन्द्रका जिन उत्सवकूं मन भटका। नाभिक० ॥१॥

पांडुक वन सिंहासन ऊपर रतन माल मण्डप लटका, सुर गण ढालत क्षीर उदधिके सहस्र अठोतर भर मटका नाभिक० ॥२॥

तांडव नृत्य कियो सुर राईस कल अंग मटका, सुर किंनर जहां बीन बजावे कर कंगण झटका झटका। नाभि कवर का० ॥३॥

कुगुरु कुदेव कुलिंगी दुर्जन देखन कूंभी नहीं फटका, धर्म सार पायो दुखदाई देश त्यागका भैंबटका। नाभि ॥४॥

पुन्य भंडार भरे भवि जीवन सरनलह्यो प्रभु पद तटका, सरधावंत भये मिथ्याती पाप भार सिर पटका। नाभि ॥५॥

नाथ विश्वकूं दास नैनसुख फिरताथा भटका भटका, दीन बंधु अब वही दिवस है देऊ पुन्य हमरे खटका। नाभि कवरक देख दरश अब दूर हुआ दिलका खटका।

अथ पद आदिनाथजीका हजूरी ठुमरी जंगला, किया काज प्रभूजीनैं। जनमपत्री चलो अवधिपुरी गुन गावनकूं ॥टेक॥

तुम सुनोरी सुहागन भाग भरी, चलो मोतियन चौक पुरावनकों। किया काज० ॥१॥

सुवरण कलश धरो सिर ऊपर जल ल्यावैं प्रभु न्हावनकों, किया काज० ॥२॥

भर भरथाल दरबके लेकर चलोरी अरघ चढावनकों, किया काज० ॥३॥

नैनानंद कहै सुन सजनी फेर न अवसर आवनको, किया काज प्रभूजीनै० ॥४॥

अथ अजितनाथजीका पद राग भैरवी हजूरी ठुमरी जंगला।

तुम हमैं उतारो पार अजित जिन भवि दधि मांह पडरिकैजी ॥टेक॥

हमकूं अष्ट करम वैरीनैं, लीने बांध जकरिकै जी। हमन चलेंगे उनके संग, रहैं तेरे द्वार पकरिकैजी। तुम हमैं उतारो पार अजित० ॥१॥

अष्ट दरबले पूजन आयें, लेंगे दान अरिकैजी। भावैं दया निमित शिव दीज्यो, भावैं दीज्यों तकरिकैजी। तुमहमैं उतारोपार० ॥२॥

जिन जिन तुमकों पूजे ध्याये, भक्ति गये पर्स सुकरिकैजी। द्विग सुखके भव बन्धन तोडो, खरिहै नाहिं मुकरिकैजी। तुमहमैं० ॥३॥

अथ पद पद्मप्रभुजीका रागधनासरीदादरा।

हमकूं पद्मप्रभु शरण तिहारोजी ॥टेक॥

पद्म जिनेश्वर पदमा दायक, घायक दु भवके दुख भारीजी। हमकूं पद्म० ॥१॥

तुमसो देव न जगमें दूजो, अन हमसे दुखिया संसारीजी । हमकूं पद्मप्रभु शरण० ॥२॥

अपने भाव सकल मोहि दीजे, यह तुमसे अरदास हमारीजी । हमकूं पद्म० ॥३॥

नैनसुख प्रभु तुमरी, भव दधि पार उतार न हारीजी । हमकूं पद्म० ॥४॥

अथ पद्मप्रभुजीका पद शाहपुरके मन्दिरके मूल नायक रागनी भैरवी ।

आनि विराजे जिव पद्म जिनेशा ॥टेक॥

वानगरीमें दुखम सुखमकूं, गनिये सुखम समेशा । आनि विराजे० ॥१॥

सबबादिक आवनको तरसैं, तातैं हमरे भागवलेशा । आनि विराजे० ॥२॥

दोहा—मनवल धनवल अंगवल, नृपवल नृपवल हीन ।

आनि विराजे शाहपुर, आनि सरावग दीन जिनेशा ॥३॥

इवे ऽ संगमय विव विहारी, ज्यों अकलङ्क निशेशा ।

पाप ताप निरखत ही भागत, ज्यों अहि निरखि खगेशा । आनि० ॥४॥ ज कुमारपर करुणा धरजी, विष्टेश सुधरेशा । पंचन मिलि मंदिर चिनवायो; जै जे जै नम तेशा । आनि विराजे जिव पदम जिनेशा ॥५॥ जबलौं नाथ तरूं भवसागर, सुगतूं करम कलेशा । भव भवमें प्रभु तुमरी सेवा; चाहत नैन सुखेशा । आनि विराजे जिव पदम जिनेशा ॥६॥

अथ पार्श्वनाथजीका पद रागनी ज्योति ।

हमकूं आप करो अपनी सम पारस कलि अरदास करी है । हमकूं आप ॥टेक॥

नाम प्रभाव कुधातक नकहो महिमा अगम अनन्त भरी है । सकल सृष्टि वतविष्ठ सम्पदा, तुम पद पंकज आय परी है ॥

हमकू० ॥१॥ जो तुम पद पद्माकर सेवैं तिनतैं भव आताप टरी है, जनम मरण दुःख शोक विनाशन, ऐसो तुमपे परम जरी है। हमकूं ॥२॥ कहत नैनसुख हमरी नैय्या, इस भव भंवर मंझार अडी है। परम अशाता मेरी मेटो जगत्राता, झां सुख साता नहीं एक घडी है॥ हमकूं आप करो० ॥३॥

इति सप्तमोध्याय सम्पूर्णम्।

अष्टम अध्याय

अथ श्रीमान् राजराजेश्वरी उग्रसेन राजदुलारी श्रीराजेमती सतीके नेमिनाथ अवतारके वियोग योग और वैराग्य भावके पदोंका संग्रह रूप अष्टम अध्याय बालबोधार्थ लिख्यते।

इसमें तीन तुङ्ग हैं। इस भांति भुवन तुङ्ग ॥१॥ होली तुंग ॥२॥ चन्दन काठ नामांकित भजन तुंग ॥३॥ पद वचन राजमती चाकुल की स्त्रियोंसे राग ठुमरी जंगला।

वंशकी पतिव्रता नारी, तुम सुनो शुद्ध यदुवंश वंशकी पतिव्रता नारी ॥टेक॥

सूर्य चन्द्र हरवंशयहू, अरु नाथवंश धारी। तुम भरथ भागवोंकी थापी हो सब उत्तम डारी, तुम सुनी शुद्ध यदुवंश वंशकी पतिव्रता नारी ॥१॥

सब हो रही हिलमिल एक, यदपि हो सब न्यारी न्यारी। ज्यों एक सीमके भेद, खेतकी हों दोयों क्यारी॥ तुम० ॥२॥

इन क्यारिनमें पतियोंने आये तीर्थंकर प्यारी, जिन उपादेय अरु हेय बताके शुद्ध दशाधारी ॥तुम० ॥३॥

मनमें धर सन्तोष उन्होंने तृष्णा निर्वारी, अरु केवलज्ञान उपाय किया फिर मोक्ष पंथ जारी। तुम० ॥४॥

जिनको सुरनर मुनि मानतनें आज्ञा शिर धारी । जिन संगी उनकी आन हुआ अनंत संसारी । तुम० ॥५॥

हम उनके कुलकी बहो धन्य शिवदेवी मातारी, जिन जाया मेरा कंथ नेम है उसी खेना तारी । तुम सुनों० ॥६॥

मैं गूंदा उसपर सीस उसीकी चुनियां आधारी, जो तज दई उसके संग और अब न रहूँ आधारी । तुम० ॥७॥

मैं दोके वंश विभूषण दूषण कैसें ल्यूं प्यारी, ज्यों लंकपतिकूं देख कलंकी हुआ दुराचारी । तुम० ॥८॥

उन छोटे कीने भाव अखतकी फांसी गलडारी, वह कुलका कर गया नाश हूब गया अठला गया मारी । तुम० ॥९॥

है जनक सुता जैवंतसु जस है जग जोमी जारी, मैं क्यों कर गूंदूं सीस, और पे अपजस है भारी । तुम० ॥१०॥

यों करि पति बुद्ध सुबुद्ध राजमति गई जो गिरनारी, लिया नेम नपठ जोड़ा नन सुख जावै बलिहारी । तुम० ॥११॥

राग धनासरी वचन राजमतीका सखियोंसे, येरी भैना बावरी कौन हमारा नातो, कौन हमारा नातो कौन हमारा नातो, येरी भैना बावरी कौन हमारा नातो ॥टेक॥

मोह बिकल तुम, हमहिं न रोको. जियाको मोह जरातो, पूरव भव अनंत सखियन संग, खेलत रही सिलछातो । येरी भैना० ॥१॥

मेवोदधि, धन, वन, करि वेल्यं, यह भव और बतातो, पट दरशन भरपूर भरा हो, कोई न दिसू जो साथी । येरी भैना० ॥२॥

मूढो पन्थ फिरूं, भव कानन, शिवपुर डगर न पातो, चऊं-गति द्रुमतल बैठि बैठिकै, रो रो नैन सुजातो । येरी भैना० ॥३॥

ऊंच नीच कुल नाम धरायौ, करि करि ठारा नातो, अंतराय बस तप नहिं कीनौ, दुःख सहे दिन रातो, येरी मैना बावरी कौन हमारा नातो ॥४॥

अब हमने प्रपिया ढिग सजनी, आतम हित बन आतो, नैनसुख अब मन राजुलकूं लिनरो क्यों मन हाथो, येरी मैना बावरी० ॥५॥

अथ—राग जंगला झंझोटी बरवा देश च्यारोंका कवीर ठुमरी रांजेकी, बचन राजमतीका पितासैं।

मैं अब जैन जोग ल्यूंगी, हे बाबल मोहि पता गिरनार, मैं अब जैन जोग ल्यूंगी ॥टेक॥

शोरीपुरसें व्याहन आये, नेमिनाथ भरतार, जूनागढ़में बरन लगे जब, पशु बन करी है पुकार, मैं अब जैन जोग ल्यूंगी ॥१॥

तीर्थंकरसे व्याहन आवे होत मंगला चार देखो हमकूं उग्रसेननें, दिये बंधमें डार। मैं अब० ॥२॥

इतनी सुन बैराग भये, प्रभु धिग धिग या संसार। प्रभु छुड़ाय आभूषण तारे, दिये भूमिमें डार। मैं अब० ॥३॥

नव भव राखो सरण आपने, दशमें दई बिसार। नैनानंद जो मैं बिसरूंगी, तब उतरूंगी पार। मैं अब० ॥५॥

अथ—पद उर राजमतीका अपनी माताखे राग बरवा ठुमरी॥

मेरे करमसें जोग लिखारी, मत सोग करै मेरी माय। करि एरी मत सोग करै मेरी माय, मेरे करमसें जोग लिखारी। मत सोग करै मेरी माय ॥टेक॥

भील जनममें करम कथा मेरी, मुनिवर दई थी बताय री। मेरे करमसें जो० ॥१॥ तेरो पिया नव भवको संगाती, दशवें जनम शिव जायरी। मेरे करमसें जो० ॥२॥ अब मैं धीर धरूं कैसें सजनी, पीव भए मुनि राख दाखरी ॥मेरे०॥३॥ जाय

तपोवन भई अरजिका, नैनानंद गुण गायरी । मेरे करमके जोग बिजारी, मत जोग करे मेरी माय ॥४॥

भजन राजुलजीका सखियोंसे राग पीलू दरबां जंगला मिश्रित ठुमरी ॥

बदल गए नैनारी, बदल गए नैना नेमजी पीछे बदल गए नैना । नेमजी पीछे बदल गए नैना ॥टेक॥

जिनका जनम उपगार करन किये, नरक परतरासे भैना । बदल गए नैना, नेमजी पीछे बदल० ॥१॥ सुनरी बहनियां मैं हूं वाकी मिलनियां, हनत गुनि नयनु छैना । बदल गए नेमजी० ॥२॥ जोग दिखाई सत गुरसे छिमाए जब सब सीखे वृत लेना, बदल गए नेमजी० ॥३॥ नव भव पहरे वाके नव भरू चुरला, काईके गुदाए बिदी बैना । बदल गए । नेमजी० ॥४॥ याद दिलाय पूर बही बतियां, सुन पशुवनकी सैना । बदल गए० । नेमजी० ॥५॥ मोतियन मांदा कहा जब करनो, कहा करनो मोहि गहना । बदल० नेमजी० ॥६॥ छैयां पहि मोरी वैयां, गहेंगे और बिसूरेनि भैना । बदल नेमजी० ॥७॥ रज मत कहत बहन सुन हमरे, देख छिमा कर देना । बदल० नेमजी० ॥८॥ अब हम नेम शरण वन बसि हैं, हमरे ठिख ये ही कहना । बदल० । नेमजी० ॥९॥ नैनानन्द धन धन वे प्राणी जिन भव भोग गहे ना । बदल० । नेमजी० ॥

भजन—यह बचना राजुलजीका नेमिनाथजीसे राग जंगला ख्याल ॥

देके दरस क्यों फिर गएजी प्रभु देके दरस क्यों० । टेक॥

क्यों जूनागढ ब्याहन आये, क्यों बलिभद्र हरी संग ल्याये । क्यों सिरपै सेहरा बन्धवाये, क्यों गिरनार शिखर गयेजी ॥ प्रभु देके दरस ॥१॥ नव भवकी मैं चेरी थारी, तुम मेरे नाथ मैं हूं थारी नारी । इस भव में किस हेत बिसारी, हो कौनके

वनमें पढ गयेजी ॥ प्रभु देख० ॥२॥ नगन दिगम्बर मुद्रा धारी, अब चाहत हो मुक्ति पियारी। ऐसो बोम न चहिये भारी, करुणा भाव बिशर गएजी ॥ प्रभु देख० ॥३॥ प्रभु वनको तुम बन्ध छुटाई, राजुल शरन तुम्हारी आई। नैनानन्द यह विनती गाई, शरन आये को सिर गएजी ॥ प्रभु० ॥४॥

अथ वचन राजुलजीका समस्त परिवारसे।

मुक्ति रमणिसैं अटको हमारे पिया, मुक्ति रमणिसे अटक्यों रे ॥ टेक ॥

व्याह समैत पशुनको शोर सुनत अटक्यों रे, हरि बलभद्रको कह्यौ न मानै। अपनी हठसैं हटक्यों रे ॥ मुक्ति रमणि० ॥१॥ नासा द्रिष्टी खडो गिरवर पर भेद न खोले घटको रे। समुद्रबिजे सेय पच पहारे, डाल तराबिर पटको रे ॥मु० ॥२॥

कर कंगण गल हार बिसारे, कियो न लोभ मुकटको रे। नैनानन्द उस नेम नवलके, दर्शनकूं मन भटक्यों रे ॥ मुक्ति रमणिसैं अटक्यों रे, हमारे पिया० ॥३॥

अथ वचन राजमतीजीका रागनी झँझोटी ठुमरी।

गिरनारीकी डगर बतादो रे, गिरनारीको डगर बतादो रे ॥टेक॥

हिरदेका हार बाजूबन्ध दूँगी, हो पियासैं कोई, गिरनारीकी डगर बतादो रे ॥१॥ नेवर लउ मेरे करकी मुन्दरी हो तो मांगे को दिला दो रे। गिरनारीकी डगर बतादो रे ॥२॥ मेरा पिया मेरा प्राण पियारा, पकडके कोई ल्यादो रे ॥गिर० ॥३॥ नौ भवकी मैं चेली उसकी, मनकी खट मिटादो रे। गिरनारीकी डगर बतादो रे ॥४॥ पूरब भव हम सोक सौकनी, इतनो दाव जितादो रे। गिरनारीका डगर बतादो रे ॥५॥ रहूं सदा चन्दन सेवा कर, यह लिखत मैं लिखवादो रे। गिरनारीकी डगर बतादो रे ॥६॥

अथ वचन राजमतीजीका माताषे रागनी झंझोटीकी ।

जियरा ना लागे माई, आज पियरवा गए हैं विजयको री जियरा ना लागे माई ॥टेक॥

तीन लोक धन पहले भोगे, बहु प्रदेश रहि ताई माई । अब तजि ताहि चल्यो, शिव सघन सम्यक शक्ति बढाई माई ॥१॥ काम दामतें काज न लीनों, भेद बण्ड प्रगटाई माई । अब शिव राज करेंगे, निर्भय हमकूं छा छिटकाई माई । आज० ॥२॥ जगमें नाहि मिलूं फिर कासूं, तातैं यह चित भाई माई । राजुल नयन ढिग त्रिगसुख, दिक्षा धर सुख पाई माई ।आ०॥३॥

अब वचन राजमतीका नेमिजीसों रागनी ठुमरी खम्माचकी पूर्बी बतीरन बलाऊघाजीके ।

आछे वैरवा आम ल्यो हमारी अरा वैय्यांजी । एजी प्रभु आम ल्यो पियारे मोरी वैय्यांजी ॥टेक॥

बिनती करत थारे पैय्यां परत हूँ, बारबार समझाईय्यां । आछे० ॥१॥ तन सिंगार मोहि बुरा लागत है, तन संजम जन भाईयां । आछे० ॥२॥ नैननसे मोरे नीर झारत है, गमकी घटा देखो छाईयां । आछे० ॥३॥ परख देखि दग सुख उपजत हैं, सुनियों अरज गुसांईयां । आछे० ॥४॥

अथ वचन राजमतीजीका नेमिनाथजीसे ठुमरी खम्माचकी दूसरी तरह पर उखनऊकी चलैकी ।

बाईजी मैं तोपे पियरवा कहो कवन विधि राखूं जियरवा बाई० ॥टेक॥

भोलतीपे भौंहे पिया बावरा तुमारा हिया, काहे त्याग दीना मेरा पांपे हिरदयवा । बाई० ॥१॥ ग्रीपम धूप भारी, पावसकी रैन कारी । सीतमें सहोगे कैसे भारी सियरवा । बाई० ॥२॥ पशु बन छोर कीनों, नेमी प्रभु जोग लीनों । राजुलने धार्यों इक पट्टो जियरवा । बाई० ॥३॥ सीख न्यारे

नैनसुख मेटो मेरा भव दुःख, जगके निकारो आयो तोरे नियरवा। आई० ॥४॥

अथ यचन राजमतीका सखियोंसे राग भरूंन।

हुवा मगन मेरा हुवा मगन, दर्शनसे जीया हुवा मगन ॥टेक॥

कर्म दवानल शांति भई है, आनन्द बादल छाये गगन। दर्शनसे० ॥१॥ मैं तो जोग धरूंगी तुम संग, नौ भवकी मेरी लागी लगन। दर्शनसे० ॥२॥ शिवपुर पहुँचनको उर वंछा जासूं मिटे मेरा आवागमन। दर्शनसे० ॥३॥ कहै नैनसुख दो कर जोड़े, हमकूं रखल्यौ अपनी सरन। दर्शनसे० ॥४॥

अथ वचन सन्देश राजमतीका लावनी पीलूकी।

मेरे सजनसे यों जा कहियौ, क्या हमने तकसीर करी। अजी क्या हमने तकसीर करी ॥टेक॥

तुमको प्रभु कसम हमारी, किसने तुमपर जोली मारी। किस कारण तुम दीक्षा धारी, हमें उतारो पार मेरे भरतार॥ किस उधारामें पड़ी। मेरे सजनसे० ॥१॥ पशु छुटावनको मिस कीनौ, सो तन मुक्तिने वस कीनौ। इस कारण तुम जग तजि दीनूं, लोग बतावें जोग मुक्तिके भोगको तृष्णा। क्यों नमरी ॥मेरे०॥२॥ पुरी हुई फिर तुमारी इच्छा, तुम कीनी पशुवनकी रिछा। हमकूं भी प्रभु दीजे दिक्षा, तुम हो दीनदयाल करो प्रतिपाल॥ कि मो पर बिपत पड़ो ॥मेरे०॥३॥ कहै नैनसुखदास तुमारा, करो प्रभु हमारा निस्तारा। ये उनियां हैं धुन्ध पसारा, दिया जगतको छोड़ गये मुख मोड़ ॥बिधाता कैसो करी ॥मेरे०॥४॥

अथ आज्ञा राजुलकी सखियोंसे राग नौटंकी तहजोकी चालमें।

ल्याओ मेरे पियाकूं जाके री कि उनकूं ल्यावो मनाके री। अजी तुम कहियौ हमारी अरदास जाके आज प्यारीरी ॥ल्याओ मेरे पियाकूं जाके री ॥टेक॥

प्रभु तुम कैसी बिचारीजी, कि राजुल क्यों तैं धारीजी।

कि विद्या क्यों तुमें भारीजी, पियां तैंनें तजी जगतकी आशकाके काज प्याराजी ॥ ल्यावो मेरे पियाकूं० ॥१॥ करी वाकूं जीउथी दिठ धारी, कि मत कर मुक्त वजावां धारी । कि प्रभु मेरी पूरीये आधारी, प्यारे तू तो कीजियो भोगविलास, पाके राजभाराजी ॥ ल्यावो मेरे पियाकूं आकेरी ॥२॥ करीवानैं पशू निहारेरी, तभीसे बनकूं सिरधारेरी । कि वाके भूषण उतारेरी, कमीवाकूं नमें नैनसुखदास गाके आज प्यारीरी ॥ ल्यावो मेरे पियाकूं आकेरी ॥३॥

अथ वचन राजमतीका मातासें रागनी जंगला झंझोटी मिले हुवे ।

मेरारी जिनेन्द्र देवारी, हे मेरारी जिनेन्द्र देवारी । छाडी मैय्या मेरी परतीत, हे छाडी मैय्या मेरी परतीत ॥ महाव्रत धारे, महाव्रत धारे । वानें सब छाडीरी जगकी रीत ॥ मेरारी जिनेन्द्र देवारी । टेक॥

बिन अपराध विचार, दई हूंरी कुछ मेरे जीयाकी न जानी । हे उमरिया मेरी वारी, वानें सब छाडा जगकी रीत ॥ हे मेरा जिनेन्द्र देवा री ॥१॥ ग्रीषमकाल शिखरके ऊपरहे, पावस तरु तले ठाडो । हे रेयनियां छाईकारी, वाने सब छाडीरी ॥ हे मेरारी जिनेन्द्र देवा री ॥२॥ शीतकाल तटनी तट पौपटहे, पीड सहै अधिकाई । नैनानंद बलिहारी, वानैं सब छांडीरी जगकी रीत ॥हे मेरा० ॥३॥

अथ वचन राजमतीका नेमजीसें राग पीलूमें, गीत औरतोंका ।

बना मेरा नेमीश्वर भगवान, बना मेरा नेमीश्वर भगवान ॥टेक॥

बना मेरे तू ही पति तू ही परमेश्वर, सब जग मातपिता समान । बना मेरा नेमीश्वर भगवान ॥१॥ बना मेरे सब स्वारथके संगी, परमारथके तुम परधान ॥ बना मेरा नेमीश्वर भगवान ॥२॥ बना तेरा परगट परम बडप्पन, परदुख जानत

मेरु समान ॥ बना मेरा० ॥३॥ बना तुम तजि सुख सीस धरे दुख, पशुवनकी कई पीर पिछान ॥ बना मेरा नेमी० ॥४॥ बना मेरे व्याह समैं भये जोगी, नौ भवकी न करी कछु कान। बना मेरा नेमी० ॥५॥ बना तेरी जो मरजी सोई मरजी, यह अरजी सुन लेऊ सु जान। बना मेरा नेमी० ॥६॥ बना मैंने सर्व अवस्था भोगा। तुम संग भोग जोग सुख मान ॥ बना मेरा नेमी० ॥७॥ बना मेरो नाथ भया तीर्थंकर। सेवे इन्द्र वधू पग आनि ॥ बना मेरा नेमी० ॥८॥ बना अब तुम तजि और वरु नहिं। कूकर हाड करुं न कहान, बना मेरा नेमी० ॥९॥ बना मेरे मुझको द्रिग सुख जस दी। ले चल संग नगर निर्वाण ॥ बना मेरा नेमी० ॥१०॥

इति भजन तुंग समाप्तम्।

अब होली तुंग लिख्यते, अब होली अध्यात्म राजमतीजीकी तरफसैं राग।

होरी खेलत राजमतीरी हे सखीरी, होरी खेलत राजमतीरी ॥टेक॥

संजम रूप वसन्त धरयौ सिर तजि मद भोगे सखीरी, श्री गिरनार विजन वन कुंजन। धर्मन संग उरतीरी, फंद काढे मद हैं घातीरी ॥ होरी खेलत० ॥१॥ भरि सन्तोष कुण्ड रंग सोहं, टेरपंथ सुम तीरी, वरतन्त्र व्रतधारि कुतूरक। आगमसूं करतीरी, स्वांग जगसूं डरतीरी ॥ होरी खेलत० ॥२॥ रोके हैं आश्रव जल मतवारे, संवर डफ धरतीरी। तीन गुपतिकी ताल बजावत भवसागर तरतीरी, मनको मद हरतीरी ॥ होरी खेलत० ॥३॥ कर्म निर्जरा बसत मंजीरा, शिवपथगनि मगतीरी। द्रिगसुख धरि संन्यास छिनकमें, पाई है देव गतीरी। सुरग अच्युत मैं सतीरी ॥ होरी खेलत राजमतीरी हे सखीरी ॥४॥

इति प्रथम होरी सम्पूर्णम्।

होरी राजमतीकी राग जंगला झंझोटीका फीका जिला।

गावोरी जिन व्याहकी होरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥टेक॥

छप्पन कोटि चढ़े जदुराय, ब्याह न आये नियां नवलाय। चढ़ा बना घोरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥१॥ समुद्र विजै सब भद्र सुरान्, व्याहेंगे राजुल नेम कंवार। माठी बनी जोरी ॥ गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥२॥ ढोरत इन्द्र चंवर चहुँ ओर, दुंदुभि शब्द बजैं घनघोर। बन्धीकर डोरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥३॥ अंग अंग आभूषण धार, सीस मुकट कुण्डल गलहार। छिपे पोरीपोरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥४॥ करत सुहागन आरती चार, भरभर अक्षत मोतियन थार अरघ भर जोरी ॥ गावो० ॥५॥

सहस अठोतर दिवला जोर, छूवत ही एक छेशर, चंदा चिरचेरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥६॥ करत प्रभू तोरन व्यवहार, कलश लियें ठाढी पनहार, घुघटपट मोरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥७॥ ता अवसर पसुकी नौंघोर, है त्रिभुवन पति बंधन तोर, निरखि हम तोरी, गावोरी व्याहकी होरी ॥८॥ व्याह निमित पशुपीड निहार, दीन्यौं भोगनकूं धिरकार। जाग प्रभु भोरी, गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥९॥ पटकि आभूषण कुण्डलहार, कंगन तोर चाढ़े गिरनार। सुजीन छियौरी ॥ गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥१०॥

द्रिग सुखा सकल परिग्रह त्याग, परनी शिवसुन्दर बड़ भाग। चरनचाकी त्यौरी ॥ गावोरी जिन व्याहकी होरी ॥११॥

होरी राजमतीकी राग काफी।

चल खेलिये होरी नेमि वैराग भयोरी। चल खेलिये होरी नेमि वैराग भयोरी ॥टेक॥

केवलज्ञान क्षीरसागरमैं भाजन मन भर ल्यौरी, तामैं पंच

सुमतिकी केशर घसघस रंग करोरी। ध्यानके ख्याल लगोरी॥ चल खेलिये होरी॥१॥ समकितकी पिचकारी ले ले शुभ सखी संग ल्यौरी, भव्य भाव शुभ हेरि हरिकें। निज निज भवन रंगोरी, धरम सबहीको सगोरी॥ चलके खेलिये होरी०॥२॥ सप्त तत्वके लेय कुमकुमे, नव पदार्थ भर झोरी। भिन्न भिन्न भविजन पर फैंको तृस्नामान हरोरी, वेग चनदाम पसोरी॥ चल खेलिये होरी०॥३॥ मोहदंड होरीका फूंको जा तेंदुरचन भगोरी, पंचम गतिको राह यही है। जारत चित दिखरोरी, नैन सुख जोग धरोरी॥ चल खेलिये होरी। नेमि वैराग भयोरी॥४॥

अब होरी राग कान्हड़ा तथा काफी में, सुमति सखी ग्यान भरतार से खेले है। अर्थात् सुमति राणिका ज्ञान कान्हासें होरी खेलें है, वृजका सब भाव हैं।

करी पगी में आज बसंत मनायौ, पिया ज्ञान कान्हा घर

आयौ। सखोरी में आज बसंत मनायौ॥टेक॥

कुबजा कुमति दिखोटा देनौ, सुमति सुहाग बढायौ। शील चुनरिया प्रमुख अमूग सह्य धारार हलयायौ, सखोरी में आज बसंत॥ पिया ज्ञान कान्हा घर आयौ॥१॥ छिमा अहार हितमित महंदी, करत सुगंध रचायौ। चुरका सत्य शौचसुत्र भूषण संजम चोब गुंदायौ॥ सखोरी में आज बसंत मनायौ॥२॥ तप कुदर्श नय त्याग चविनन वृश बटरन हटायौ, गुणगण गोप गुआल परसपर, घट वृन माहि रहायौ। सखोरी में आज बसंत॥ पिया ज्ञान कान्हा॥३॥ भर पिचकारी भाव दयारस, पिया संग फाग मचायौ। राधे सुमति निरखि पिया नैनन, आनन्द उर न समायौ। सखोरी में आज बसंत मनायौ॥ पिया ज्ञान कान्हा घर आयौ॥४॥

अथ होरीकी चालमें पद उपदेशी राग धमाल।

अरे कर ले सुफल जनम अपना, अब कर ले सुफल जनम अपना॥ अब कर ले० ।टेक।

कर ले देव धरम गुरु पूजा, जीवन है निसका सुपना। अरे कर ले अरे कर ले सफल ॥१॥ विषयवनमें मत जनम गमावे, ए है सन्मुख का तपना। अरे कर ले सफल ॥२॥ दानशील तप भाव जमा ले, तन जोवन सब है सपना॥ अरे कर ले अरे कर ले सफल जनम ॥३॥ त्रिग सुखपर उपगार बिना सब झूठो है जगको थपना। अरे कर ले अरे कर ले सफल जनम ॥४॥

होरी राग काफी और कान्हडा राजमतीकी तरफसैं।

आली कौन जतनसैं मनाऊं, पिया नेमभये मुनि बीतरागी। मैं कौन जतनसैं मनाऊं ।टेक।

भावभक्ति सपरस, रस त्यागे। कहू कैसैं अंग लगाऊं, रसनाके रस चोखो व्यंजन नाहीं॥ क्या नैवेद्य चढाऊं। सखीरीमें कौन जतनसैं मनाऊं। पिया नेमभये मुनि बीतरागी॥ मैं कौन जतनसैं मनाऊं ॥१॥ तज दिये फूल फुलेल अरगजा, किस विधि अतर सुंघाऊं। किसके लिये गूंदूं फूलनको गजरा, मैं किसपै रंग छिरकाऊं॥ सखीरी मैं० ।२॥ नासाद्रिष्टि स्वरूप निहारैं किसको सिंगार दिखाऊं, किसके लिये ओढूं सुख चुनरिया। मैं किस परमाग भराऊं॥ सखीरी मैं कौन० ॥३॥ पशु पुकार सुन भये हैं विरागी मैं किसको धमाल सुनाऊं, किसको सुनाऊं सखी कौन बजरिया मैं किसपै गुलाल उडाऊं॥ सखी कौन० ॥४॥ पलटि गए बिधि अङ्क हमारे, मैं कुलको ना लाज लजाऊं। कह दीनी आदमी मेरे मातपिताके, मैं उनसे छिमा कराऊं॥ सखीरी मैं कौन० ॥५॥

तजि सिंगार चली राजदुलारी, हो न अरजिका पाऊं।

धारे हैं पंच महाव्रत ऊद्धर, द्रिग सुख मैं शिरनाऊं॥ सखोरी मैं कीज़०॥

अथ होरीमैं पद उपदेशी राग काफी।

ऐसो नरभव पाय गंवायों, हे गंवायौं। ऐसो नरभव पाय गंवायौं॥टेक॥

धनकूं पाय दान नहि दीनू, चारित्र चित न लायौ। श्री जिनदेवकी सेवा न कीनी मानुष जन्म लजायौ, जगतमैं आयौ न आयौ, ऐसो नरभव पाय गंवायौं॥१॥ विषयकषाय बढी प्रति दिन दिन आतमबल सुघटायो तजि सत संगयोतू कुसंगी। मोक्ष कपाट लगायौ, नरकको राज कमायौ॥ऐसो नरभव०॥२॥ स्वान सम फिरत निरंकुश, मानत नाहि मनायौ। त्रिभुवन पति होय भयो भिखारी, यह अचरज मोहि आयौ। यहांतैं दनक फल पायौ॥ऐसो नरभव०॥३॥ कंद मूल मद मांस अपनकुं नित प्रति चित लुभायौ। श्री जिन वचन सुधा सम तजिके नयनानंद पछतायौ। श्री जिन गुण नहीं गायौ॥ ऐसो नरभव०॥४॥

अथ होरी राग आसावरी उपदेश रूप।

होरीका रूपमैं तो जीता जाय मतवारे जीया, होरीका रूपमैं तो जीता जाय॥टेक॥

ज्ञान गुलालकूं वे मत ना खोवेरे, फिर पीछे पछताय। मतवारे जीया होरीका॥१॥ मोहकुं कुमेजो मार फेंकदर वे, चूर चूर हो जाय मतवारे जीया। होरीका रूपमैं तो जीता जाय॥२॥

मतवा दोहा—भरि पिचकारी भक्तिकी कठिन वचन मति बोल। ममता तजि समता सहित भजि जोबन थिर होल। मतवारे जीया होरीका रूपमैं तो जीता जाय॥३॥ तजि प्रमाद तो वे, आतम चितवनको, मोह भंग मिटाय। मतवारे जीया

होरीका धर्मे तो जीता जाय ॥४॥ भर मनका तो जी, काका सुख करके घे रासभ होम चढाय। मतवारे जीया होरीका धर्मे तो जीता जाय ॥५॥

मतका दोहा—क्या जीवन है मूढमें, काल रह्यो मुसकाय। श्याम धुवें में देखियो, होरीसी फुंक जाय। मतवारे जीया होरीका ॥६॥ पांच सखी तोजी, मतवारे जीया होरीका ॥७॥

अथ होरीकी चाल राग काफीमें पद आध्यात्मिक।

कब आवेगो न जानैं म्हारो लब्धिकाल। कब आवेगो न जानैं म्हारो लब्धिकाल ॥टेक॥

मैं तो था चिद्रूप चिदानन्द, धर्मेवार कब जनूंगा, केथेके छूटेगी हिंसाकी चाल, कब आवेगो ॥१॥ कब अवरत वृत धरूं निरन्तर, कब घोर व्रत ठानूंगा। ताडूंगा न जानैं कब भवके जाल। कब आवेगो ॥२॥ कबकु शील तजि धरूं शीलव्रत, कब घन संग्रह भानुगा। नरूंगा न जाने कब भवको झाल ॥ कब लावेगो ॥३॥ आप ही आप धरूं अब अनुभव, तब नैनानंद मनूंगा। आवै ना हमारे फिर अशुभ काल, कब आवेगो न जानै म्हारो० ॥

इति अथ इसी अष्टप अध्यायमें कविताने अपने शागिर्द चन्दनलालका नाम रखकर जो पद उसको बल्य अवस्थाके लायक उसकी फरमायशके माफिक चालोंमें बनाये तिनका संग्रह रूप गुंगतीका लिखते ॥४॥ राग परज बचन राजुलजीका समापन् ॥

जबसे बन-बन फिरूं हुं प्यारे दिलोंसे तुमने हमको विसार। जबसे बन-बन फिरूं हुं प्यारे दिलोंसे तुमने हमको विसारो। टेक॥

किसके लिये तुम हुये दिगम्बर समझके कहना बचन हमारो। हिलपे हो आशक नैनोंके तारे होती है कैसे गुजर

तुमारी ॥अभीसे बन बन० ॥१॥ अपने न फेकूं तुम बनकूं विधारे, हुआ हमारा नुकसान भारी। दिलकू तुमारेमें नाहु खती; पर हूँमें बिरह न दुलहन तुमारी ॥ अभीसे० ॥२॥ नो भौकी उलफतसे ढूंढनको आई, आंसूके बादल हैं चश्मोंसे जारी। राजुलकी नालिश है चन्दनके स्वामी, कीजोगा शादीकी फिरकै तैयारी ॥ अभीसे बन बन० ॥३॥

अब नयन राजुलजीकी राग नोखास भैरवी है और खास जंगलेमें भी गाई जाती है।

बिसारी सैंय्यां हमैं अकेली रे, अरे मेरा जोबन जनम अकाज। बिसारी सैंय्या हमैं अकेलीरे ॥टेक॥

ब्याह समैं वैराग लिया प्रभु, त्याज दिया राज समाज। उजड़ गई चंपा चमेलीरे ॥ बिसीरी० ॥१॥ विघनहरन संकटके करन प्रभु तारण तरण जिहाज। हमारे लियां बड़े ऊमेली रे ॥ बिसारी० ॥२॥ प्रभु बिनहार सिंगार तजूं गी, लूंगी जोग तप काज। उतारो मेरी चूड़ा पछेली रे ॥ बिसारी० ॥३॥ राजुल ध्यान धरणन पधार्यो, चन्दनसी खनमाय। बिसारी उन सगको सुहेली रे ॥ बिसारी० ॥४॥ अरे मेरा जी तप जनम अकाज, बिसारी सैंय्यां हमैं अकेला रे ॥५॥

अथ राग कालंगडाया परज।

तारण तरण सिरी जिनस्वामी अपना बिरद निभाना होगा। टेक॥

सबके नाथ तुमको जग विख्यात तुमजी। नरकोंसे भी बचाना होगा ॥ तारण तरण० ॥१॥ करमोंनें मारा सैंयोजी, कैदमें डारा सैंयोजी। जमराजसे बचाना होगा ॥ तारण० ॥२॥ चोरी ना कीनीजी, दिक्षा न लीनीजी। अब मेरा ऐब छिपाना होगा ॥ तारण तरण० ॥३॥ जब लग मुक्ति न होय चन्दकीजी, चरणोंसे अपने लगाना होगा ॥ तारण तरण सिरी० ॥४॥

अथ—राग परज मन वैरागी मोरा रे ॥ बधाईरे॥ चढके सुनाओ सखि आज बधाई राना मरुदेवी सुत जायोरी ॥टेक॥

सुर गोर्थं इन्द्रादिक आयेना जिन पति सुख पायोरी, जिसका किया है कोई चढो अब अवधिपुर औ जिनके गुन गायोरी। चढके सुनाओ० ॥१॥ मुकट वंधराजा सब आये, ठांढर यान बजायोरी। नंद वृद्ध सुरराय पधारेंना सनकूं उमंगायोरी, चढके सुनाओ० ॥२॥ कोई जिय पूजे पावन भावे लिनाहू चरम चढायोरी, दोनूं इन्द्र चंवरक जहां ढारें पाति गायुं जय छायोरी चढके सुनाओ० ॥३॥ सफल भयो अब जन्म हमारो, जब नैनानंद छायोरी। आज प्रभुके पद परसन कारन चंदन चाकर आयोरी। चढके सुनाओ सखि आज बधाई ॥४॥

अथ—राग जंगला झंझोटीको ठुमरी पद हजूरी ॥

आज दुविधा मोरी मिट गई रे, छिरी वीतरागका देखी सूरत। दुविधा मोरी मिट गई रे। आज दुविधा मोरी मिट गई रे ॥टेक॥

अष्ट दरब ले पूजन आवे वीतरागके दर्शन पाये, जिनवानी कानोंसें, सुनी उर गति मोरी छुट गई रे। आज दुविधा० ॥१॥ रसना सुफल भई अब मोरी, भक्ति उचार करी जब तोरी। अब छाई आनंदकी घटा तिसना मोरी हट गई रे, आज दुवि० ॥२॥ अब मैं जन्म कृतारथ मान्यौं, गोप दुकुलय भयो सुधि जान्यौं। अब पाई मुक्तिकी डगर, भला अब पाई मुक्ति। कल मल मोरी घट गई रे, आजदु० ॥३॥ जब लग मुक्ति न आवे आवे नेडै, तब लग लग भक्ति बसो उर मेरे। तेरी छवि चंदन केहिये, तन मनसे छिपट गई रे। आज दुविधा मोरी० ॥३॥

अब गजल रागऊं झंझौटो मैंने भजो प्रति वचन राजुला।

बुनियाद तुमकूं रंजकी ठानी नचाहिये।टेक।

भीलनोके भौर्यों तेरा आवरा किया, वेक वहूं परना प्राव दिल जाना चाहिये। बुनियाद० ॥१॥ यह वक्त है शादीका तुम जोगी यहो गये। दीबार बिन पिनाके अबढानी नचाहि॥ बुनियाद०॥२॥ हैवानौंकी आवाजनैं तुमकूं भलो किया, फखमें महरूप अब रखनी न चाहिये। बुनियाद०॥३॥ हे मुखतिला-शीदारके चन्दनसे खाकसार, अब दिल में कुछ हूगमाज प्रभु आनी न चाहिये०। बुनियाद० ॥४॥

अब—राग बरवा जंगला गारा झंझेटोका जिला वचन राजमतीका॥

तजिके जग संपति सैंय्यां तपकूं बन गए गए, हे मैं वारी तपकूं बन गए गएजी। तजिके जग संपति सैंय्यां तपकूं बन गए गए॥टेक॥

व्याहनकूं जूनागढ आये, सुन पशु बनका शोर रे। हमकूं रोती छाड सजन जोगीश्वर भये भये, तजके०॥१॥ प्रीत वारी जोकन मुक्तिसैं, हमरा कौन हवाल रे। अब ना जाऊंगी साजन तहू ते दुःख सहे सहे॥तजिकै०॥२॥ जगने यात पितासैं तुमशों दिकस टूंगी राजजी। शीस पखरगढ केह दिजे लेली जो नये नये। त०।३। नेम निकट राजुल दुखहरनैं लिया बीर भरखोगजी, चंदससे चाकर जिनके सरणा तरहे तरहे। तजके जग संपति सैंय्या०॥४॥

अथ—गजल राग जंगलेकी वचन राजुलका।

काहेकूं त्यगे सिंगार बालमूवता दी प्रभुजो, बिचार क्या है। काहेकूं०॥टेक॥

कीफतन पर थारे खुशकीका आलम यह थारी खफगीका इजहार क्या हैं। काहेकूं त्यागे ॥१॥ छप्पन कोड बैंनाता तोरा, दिलोंमें थारे गुज़ार क्या है॥ काहेकूं त्यागे० ॥२॥

गजल—अब बरबश हो तकसीर मेरी दासी यह गुनहगार है, इस बेकसमें तुम सिवा न। कोई मेरा मददगार है, खफगीका यह आलम तेरा इक मैंसे तलवार है। अब जोगका मौसुम नहीं। यह दुःख मुझे बिसियार है ॥३॥ सर्मोको वर्षा गर्मोको आतिशइन तेरे दुःखोंका सुमार क्या है। काहेकूं ॥४॥ पशु बचाये तुमें रजुलके स्वामी, चन्दन आदरसे तु में इनकार क्या है॥ काहेकूं ॥५॥

अब—गजल राग देशकी बचन राजमतीका।

मेरा नौभोंका पिया हमसें मनाया न गया रे। मेरा नौभोंका पिया हमसें मनाया न गया रे ॥टेक॥

हाथूसे लागी मेरे इस व्याहमें खुश गुल महंदी, यह तो आतिश कलेजा। हमसें बुझाया गया रे, मेरा नौभोंका० ॥१॥ तनका यह जेवर अपना दिखलाऊंगी किसकूं सखती, मेरा जोबनका बमाल धकूं छुड़ाया न गया रे। मेरा नौभोंका० ॥२॥ दिलमें लाखो हैं मेरे नौभवका लगहा दानू, उसकी उलफतसे लेकिन। दिलको दुखाया न गया रे। मेरा नौभोंका० ॥३॥ यह शहर जूनागढ तुमकोंऊ जिवो मुबारिक आलो। हम तो जंगलमें खुशी घर तो बिगाना हो गया रे॥ मेरा नौ भवका० ॥४॥ बिल्कुल अब तू में हमें कीजिये शामिल स्वामी, यह तो चन्दनकी अरज तुमको जिताना हो गया रे। मेरा नौ भवका पिया हमसें बिगाना हो गया रे॥ मेरा नौ भवका० ॥५॥

राग कलापरी बचन राजुलका।

पिया वैरागी हो गयारी, मैंको दूर दिलोंसे डारी। पिया वेरागी हो गयारी ॥टेक॥

मेरे मांग ना छगाओ, मेरे गीत ना गवाओ, मोकूं नेमपै पठाओ तप काज ॥ पिया वैरागी० ॥१॥ मैं तो बोलने न पाई, भेद खोलने न पाई। सुन तात मात भाई खदि लाख पिया० ॥२॥

दोहा—हुआ दिवाना मुक्ति पर, हमकूं दई बिसार।
नव जन्मोंकी प्रीत उन, दई छिनकमें छार ॥ पिया वै० ॥३॥

मुक्तिने मोहा मेरा घर जब खोया, परपुरुषकूं भजो या तज लाज। पिया वै० ॥४॥ मुक्ति हमारी सौत दूर है अनारी। नाहीं दरूं सौ तणारी गया भाज, पिया वै० ॥५॥ मेरा खोट लेहु कानना, बाके संग तप करना सुख काज। पिया वै० ॥६॥ पहर लोनी श्वेत साडी, दीक्षा राजुलने धारी। चन्दन लाल बलिहारी महाराज, पाप मल सबके धो गयारी ॥ मैं तो दूर दिखोंबे हारी ॥ पिया० ॥७॥

राग-देशमें गजल परदेशी।

हो भोगूंको तू छांडता क्यों नाही, छांडता क्यों नाहो।
हो भोगूंको तू छांडता क्यों नाहो ॥टेक॥

हो तू ज्वारी ऊबावे जामिष मद किया पान। होतैं ज्ञानी वे वे सबासुखदाई ॥ हो भोगूं० ॥१॥ हो शिकारी तेने वै अपने कुलकी हान। हो बिन कारन वे, मृग पर तोर चलाई ॥ हो भोगूं० ॥२॥ हो पराई मायाको चोरा कबहू न ठान। होते दूदेगी पापनी दुखदाई ॥ हो भोगूं० ॥३॥ भाषत चन्दन वे, सतगुरु बहुत बखान। हो परनारो वे नागन दुरव दाई हो भोगूं० ॥४॥

इति अष्टमोऽध्याय समाप्तम्।

नववाँ अध्याय

अथ ज्ञान उपदेशके पदोंका संग्रहरूप उपदेशात्मक नवमा अध्याय प्रारम्भः।

खुशीरामकी फर्मायश पर दिल्लीमें बनाया रागरेखता बर्बीर गजलके उपदेशी चतुर्गति चौरासी लक्ष ८४००००० जीव योनियोंकी संख्या भेद। उनमें पशुयोनि बासठलक्ष ६२०००००

जगत जंजालमें प्राणी यहाँ जिसने क्या सुख देखा विषय अभिलाष में जियरा पड़ा उसहीमें दुख देखा ॥टेक॥

काल अनंत निगोद बसि, निकसि दुरगो बहु भाय। त्रस थावर संकट भरे, बासठ लक्ष पर जाय। बिना अष्ट प्रदेशकके सकल थल जन्म दुख देखा॥ जगत जंजाल में०॥ विषय अभि०॥१॥ थल जल पावक पवन तरु शूल फूल तन धार, विकलत्रयमें तू भ्रम्यो। क्रम विपोल अपार, खनन तापन शमन छेदन दहन पाचनका दुख देखा॥ जगत० विषय अभि०॥२॥ गमन अमन थल नभ बसे, छिदेभिदे पर हाथ। शीत उष्ण बाधा सही, भर भर कम्पे गात। पशुगतिमें भरे जीवन, विविध मरनेका दुख देखा॥ जगत०॥ विषय०॥३॥

मनुष्ययोनि चौदह लाख।

बहुत मनुष भव भवन क्रिय अनरथ दुष्ट अपार। लोक लाज परलोक भय, कियो न कछू विचार। मनुष भव नाश यह हुआ। विषयमें सुख न दुख देखा॥ जगत० विषय०॥४॥

दोहा—विषय कषायनतैं गयो, राज तेज अरु वंश। तीनों ताका दे गये। रावण कौरव कंस, असूरक नारदोंने भी नष्ट हो भ्रष्ट दुख देखा॥ जगत० विषय०॥५॥

दोहा—राव रंक भयो पारधी, पुत्र हीन बलहीन, कबहूक रोगी निर्द्धनी। कबहुक पायक होन, कभू बिन नैन करजिका। कमू बिन पाय दुख देखा॥ जगत० बिषय० ॥६॥

दोहा—बिना धर्म रुचि तूमरा, रुल्या जगत जंजाल, जिन बच श्रद्धा ना करी। डूब्या भ्रम जंजाल, खार पदभूमिसे थकी, अव्रत श्रद्धासे दुख देखा॥ जगत० बिषय० ॥७॥ कोध लोभ अरु मोहवश, जिनन कियो तन खार। नरभव चिंतामणि रतन, दियो उदधिमें डार। बिषय मधुबिंदु कूप नमैं, खरा नहि काज झुक देखा॥ जगत० बिषय० ॥८॥ चौदह लक्ष नर जातिमें, भ्रम्यो विषयवश मीत। मिथ्या अव्रत जाग तजि, तजि श्रद्धा बिपरीत। सदासैं मोहमें फंसिके, तैं नर भौ मैं।। दुख देखा॥ जगत० बिषय० ॥९॥

नर्कयोनि चार लाख ४०००००

द्युतं मांस सुरा वेश्या, पापर्द्धि चोरिका तथा। परस्त्रागमनं चेति, जगज्जंजाल दुस्तरा। तदुद्भवकं पापातेन नरक होरबका दुख देखा॥ जगत० बिषय० ॥१०॥ दण्डक टोंचीले तुके, फोड दई दोऊ आंख, ऊंधे मुख लटकाय दिय। चार करो तन फांक, कचित् पिस न कचित् पिशन् कचित् भस्मन् ।। दुख देखा॥ जगत० बिषय० ॥११॥ धोंक्यो ऐरन हारकैं, झोक्यो भाड मंझार। दव ऊकतां पागाडिके चोज दियो मुसफार, पराडो पाप पाछेन। कृतञ्ञो लोह दुख देखा॥ जगत० बिषय० ॥१२॥ तेल तल्यौ कोल्हू पिल्यौ, पदड दिखाई शूल। चार लाख गति नारकी, मग गिराई धूल। पड़ा करणोसैं बेतरणो, नरकमें भी ए दुःख देखा॥ जगत बिषय० ॥१३॥ कब ऊक काहू पुन्य सैं पाई सुरपद जाय, भूतप्रेत राक्षस भयो। किलबिस तीव्र कषाय, सुरगमें भी बिना सम्यक्। बिरह हदमूल

दुःख देखा ॥ जगत विषय० ॥१४॥ गज घोटक कारज किये, अरु भया वाहन जाति । हीन ऋद्धि लखि लखि झुर्यो, पर संपति न सुहात । अमर भी नाम धराया, तदपि मरनेका दुःख देखा ॥ जगत विषय० ॥१५॥

देवयोनि चार लाख ४००००० ।

च्यार लाख सुरजातिमें, मैं जरयो बर घोर । चौरासीमें तू रुल्यो, पुन्य पापके दौरे । चलांचलतो करो बीरन, बिना समताए दुःख देखा ॥ जगत विषय० ॥१६॥ तजि त्रिशल्य त्रय मूढता, दर्शन ज्ञान अराधि । है पेंडा शिव पंथकी, श्री जिन भक्ति समाधि खुशी हो तो समझ हमने । तो हग सुख होमें सुख देखा ॥ जगत विषय० ॥१७॥

अथ—रागनी धनाश्री पद उपदेशी तथा भैरवी ।

अब तू निज घर आव, अब तू निज घर आव । विकल मन अब तू निज घर आव ॥टेक॥

विकल्प त्याग सुनु जिनशासन, मत बीरन घबराव । पावैगो निज सुमरो सुमकूं, धा जिन धर्म पसाव । विकल मन अब तू निज ॥१॥ गति इन्द्रो अरु काय जोग पुनि, जाना वेद कषाय ज्ञानभेद अरु संजम दर्शन । लेश्या भव्य सुभाव ॥ विकल मन० ॥२॥ समकित सैनी और अहारक, चौदह मारग नाम । नाम थापना दर व भाव करि, तस दरप दरसाव ॥ विकल मन० ॥३॥ यों जगरूप विचारि शुभाशुभ, करि थिरता भाव हरै । करम सगाटे नयनानन्द, भ.ष्यो सुगुरु उपाव ॥ विकल मन० ॥४॥

अथ राग धनासरी पद उपदेशी तथा देश भैरवी ।

क्यों तुम कृपण भए, हो सुघर नर क्यों तुम कृपण भए ॥टेक॥

घटमें ज्ञान निधान तुमारे सो क्यों ढांकि रहे, भटकत विषय तु धनकूं छोड़त। नृप हो रंक भए, हो सुधर नर क्यों तुम कृपण भए॥१॥ विपत कालमें धन सब खरचत, ले लेकर वन ए। तुम धनवन्त होय दुःख पावो, मूरख भाव गए॥ हो सुधर नर०॥२॥ कब ऊक सूकरकूकर उपजत, कब ऊक बैल भए। पिटत पिटत नरकके माही। डाकत एक रहे॥ हो सुधर नर०॥३। दान शील तप भावन भाकर, संयम क्यों न लए। जाते नैनसुख तुम पाते, जाते धर्म दहे॥ हो सुधर०॥४॥

राग रेखता, पद उपदेशी अध्यात्म।

न फूलो दिलमें ऐ यारो पराई देख कैशा मन, बदसूरत गुजर सकें छुटालयो इसके सब दामिन् ॥टेक॥

नजर तुम पै मिलावैगी, तेरे दिलकूं भ्रमावैगी। तडफ कर जान जावैगी, डसैगी दिलको यह नागन्॥ न फूलो०॥१॥ इसीका खंशाल पद आया, बड़ा कीचकने दुख पाया। सुना है जैन शासन मैं गया है नर्कमें रावन॥ न फूलो०॥२। अगर कुछ नैन सुख चाहो, न इसके फंदमें आवो। नरकमें मार खावोगे, न होगा हां कोई जामिन॥३॥

अब राग ठेठ बरवा ठुमरी उपदेशी।

जिया ना लगावे रे देख कै पराई माया। जिया ना०। टेक॥

पुत्र कलित्र पराई सम्पति, इन संग मत ना ठगावे ना ठगावे रे॥ देख क पराई॥१। पुद्गल भिन्न भिन्न तुम चेतन, अन्त न संग निभावे ना निभावे रे॥ देख कै०॥२॥ मत कर विषै भोगकी आशा मत विषवेल बढावे नाह ना बढावे रे॥ देख कै०॥३॥ नैनानन्द जे मूरख प्रानी, खोवत धर्म लगावे रे। देख कै०॥ जिया ना लगा०॥४॥

अथ रागनी भैरवी अथवा खम्माच। पद उपदेशी।

वृपसैं मनोपा क्यों फेरी रे आतम रे। वृपसैं मनोपा० ॥टेक॥

याही बिन किया रे, भव वन भटक्यो रे। और कुगतिया भई तेरी रे॥ आतम रे वृपसैं० ॥१। सुख वंछत किया रे, दुख उपजत है रे। छोटि कउविया भईनेरी रे॥ आतम रे वृपसैं० ॥२॥ जिन प्रणीत क्रिया रे मारग चूकत रे, मारैगो काल अहेरी रे। आतम रे वृपसैं० ॥३॥ मृगतृष्णाकूं तूरे, क्यों बठ बठ आनत रे। द्रिग सुख होत अवेरी रे॥ आतम रे वृपसैं मनो० । ४॥

अथ राग धनाश्री।

तजि पुद्गलको संग, तजि पुद्गलको संग। अज्ञानी जिया तजि पुद्गलको संग ॥टेक॥

तुम पोषत यह दोष करत है, पयपिय जेम भुजंग। बड-वानल सम भूरि भयानक, घायक आतम अंग॥ अज्ञानी ॥१॥ या संग पंच पाप में छिय चौभुगती कुगति कुढंग, परिवर्तनके दुखद ऊराये याहीके पर संग। अज्ञानी ॥२॥ शीकारबाजि संग वागरके हो चवलादि विहंग, मूषनको मूसनकी संगति ठानत आदर भंग॥ अज्ञानी ॥३॥ अजहूं चेत भई सोमई है रे मद मत मतंग, नयन सुख देवगुरु बरगानिधि। अक्षत विमल अभंग ॥४॥

अथ रागनी ठुमरी बरवा पद उपदेशी।

सब करनी दया बिन थोथी रे ॥टेक॥

जीव दया बिन करनी निरफल, निष्फल तेरी पोथी रे। सब करनी दया बिन थोथी रे ॥१॥ चन्द्र बिना जैसें निष्फल रजनी, आव बिना जैसे मोतीरे सब करनी० ॥२॥ नीर बिना जैसे सरवर निरफल, ज्ञान बिना जीया ज्योतिरे। सब करनी ॥३॥

छाया हीन तरोवरकी छवि, नैनानन्द नहि होवीरे वन करनी ॥४॥

अथ राग देश उपदेशी।

मुक्तिकी आशा लगी, अरु मह्लकूं जाना नहीं ॥टेक॥

घर छोडके जोगी हुवा, अनुभावकुं माना नही। जिन धर्मकूं अपना सगा, अज्ञानतें माना नहीं। मुक्तिकी आशा लगी ॥१॥ आहरमें तू त्यागी हुवा, पातिन तेरा छाना नहीं। ऐ यार अपनी मूढमें विषवेल फल खाना नहीं। मुक्तिकी आशा लगी ॥२॥ संसारकूं त्यागे बिना निर्वाण पद पाना नहीं। संतोष बिन अब नैनसुख तुमकूं मजा आया नहीं। मुक्तिकी आशा लगी।३॥

अथ राग सारंग उपदेशी पद।

न कर करमकी तू आशरे, अरे जिया न कर करमकी तू आसरे ॥टेक॥

अंतराय भई प्रथम जिनेश्वर, जाके सुरपति दासरे। द्रव्य क्षेत्र अरुकाल भाव लखि, तजि विषकी विसवासरे। अरे जीया ॥१॥ छहूं खंडको नाथ भरथनृप, मान गलित भयो तासरे। जीता सती इंद्र करि पूजत, भयो विजन बनवासरे। अरे जीया० ॥२॥ खगधर वंश तिलक नृप रावण, करमन ते भयो नासरे। तीर्थंकरकूं होत परीक्षा, करम बडे ऊखरासरे। अरे जीया० ॥३॥ आसा करत करम सरखावत, ज्यों पय पोषत खांसरे। नैनसुख चिरकाल भयो अब, दाहो गलकी फांसरे। अरे जीया न कर करम० ॥४॥

अथ लावणी राग जंगला गारा। पद उपदेशी।

क्यों परमादी हुवा वेसुऊकूं बीता काल अनन्ता। क्यों परमादी हूवा वेसुऊकूं बीता काल अनन्ता। टेक॥

आयो निकसनि गोदवेरे, भटक्यो बाहर ज्योंवि। मिथ्या

दरसन तेरन मारे, मूरख पावक पीत । क्यों परमादी हुवा ॥१॥ भारी काया डाटकीरे, दहन पवनके हेत । सूक्ष्म और शूल तन धारयो, तउ हूं न करता चेत । क्यों परमादी हुवा० ॥२॥ विरल प्रयतें अभंगरे, भयो लसेनी अंग । लेनी होहि भार्में रच्यौं पीवहि दिश्या भंग । क्यों परमादी हुवा० ॥३। सुर नरनार दशोनिमेरे, इष्ट अनिष्ट संयोग । दर्शन ज्ञान चरण भर भाई, नैनानन्द मनोग । क्यों परमादी हुवा बेहुऊकूं पीता काऊ दानवा ।.४।

अथ राग कवा पद पारत्रो निषेधका उपदेश ।

यह तो काली नागेनीरे, जीया काली नागेनी । जीया तजो पराई नार, यह तो काली नागेनीरे ॥टेक॥

नारी नायो नागेनीरे, यो है विषकी वेल । नागन काटै कोपसेरे, यो मारे हंस खेल यो तो काली नागेनी । जीया तजो पराई० ॥१॥ बातां करतो औरसेरे, मनमें राखे और, वाकूं मिले औरकूं चाहे । वाकूं दगके ओर, यो तो काली नागेनीरे । जीया तजो पराई० ॥२॥ नैन मिलाये मन झूं बधे अंग मिलाए धर्म, धोखा देके दुःखमें डरे । याहि न भावे कर्म । यो तो काली नागेनी० ॥३॥ तीर्थंकर इंपाकूं त्यागैं, जो त्रिभुवनके राय, नैनानन्द नरककी नगर, सद्गुरु दई बताय । यो तो काली नागेनी० ॥४॥

अथ राग बिहाग खास तथा खंम्माच खासमें गाना पद उपदेशी ।

अरे जीया जीवदयासे तिरेगो, दया बिन भर भर जनम मरैगो ।.टेक॥ पर सिर काटि जीव निज चाहत, रे सठ तापत भ्रम भरैगी । अरे० ॥१॥ दोष लगाय पोख निज चाहेजी, मछिदे करु नरक परैगी । अरे० ॥२॥ छलकर परधन हरण

चितारै, दिन दिन नमक समान गरैगो। करे० ॥३॥ चेय कुशील बिषे बिषलोपत बहिमुख अमृत नांहि करैगो। करे० ॥४॥ ए पण पाप त्यागि दृग, आनन्द, धर्ममद्य बुधि पाकर धरैगो। करे जीया० ॥५॥

अथ ठुमरी पीलूकी राग कजरी पूर्वी।

भजन बिन काया तेरी योंही रे चली। टे०॥

बालापन न तेरो गयं रे खेलते, भोगत बिषंको यह ज्वानी रे ढली। भजन बिन० ॥१॥ लाग रह्यो मदका जाकि खेलिर, कीने अघ भारी पर नारीरे छली। भजन बिन० ॥२॥ वृद्ध भयो तन कंपन लाग्यो, दृष्टि कुम्हलानी तेरी प्रीत रे टली। भजन बिन० ॥३॥ नैनानन्द तजा जग आशा मानो सतगुरुकी ये सीक्ष रे। भजन बिन०॥४॥

राग ठुमरी बरवा पीलू वा बिहाग खास।

नाहि कियो भजन जिया बीत्यो काल ख्वारे ॥टेक॥

निकसिनि गाद रुलयो पसखावर, भूजल पावन दव रे। नहि किय० ॥१॥ सूक्ष्म थूल तरावर उरज्यो कृमि पिपील भ्रंगारे। नहि कियो ॥२॥ पंचेन्द्री भयो समनतन, किये पाप अभिचारे। नहि किय० ॥३॥ जूवा खेल मांस मद खावें, कुपथ न कम करे रे। नहि कियो० ॥४॥ अब तब तजि भजि परमातम पद, जो त्रिभुवनमें सारे। नहि कियो ॥५॥ नैनसुख भगवन्त भजन बिन, कह तरोगे पारे। नहि० ॥६॥

अब राग ठुमरी बरवा पीलू पुनः।

थिर रहे ना जगमें, मत ना जीव बिधुंचे, थिर रहे न मतमें। ना जीव बिधुंचे ॥टेक॥

कोप सतायें नष्ट होत हैं, राम तेज बहू बन्के ॥बिर०॥१॥ कोप दुलाय नष्ट भये जादव, दण्डक भाप बिध्वंसे। बिर रहे न०॥२॥ ब्रह्म सतायें गए नरकमें। रावणकी रौंसें॥ बिर०॥३॥ दयावन्त उन्नत पद पावें। तीर्थंकर जम वेवें॥ बिर० ।४॥ नैनानन्द दयातैं शिव पद पावें सन्त मशंसैं॥बिर०॥५॥

अथ—ठुमरी खम्माचकी॥

अरे भैय्या तजि विषियोंकूं चेतनजी। अरे भैय्या तजि विषियोंकूं चेतनजी। अरे भैय्या तजि०॥टेक॥

यहैं सुगुरु पुकारे, अरे मेरे प्यारे। भव भोग नागकारे, इन क्यों तजि देवनजी। अरे भैय्या तजि विषियोंको चेतयजी॥१॥ ए हैं धान रीते भव काननके चीते। तोहि चिर काल बीते, कीनों छेदनजी। अरे प्यारे०॥२॥ फोकनको पको हैं ये। भीडनको पको हैं ये, मौतको सतको। बहु विपत निवेतनजी। अरे भैय्या॥३॥ द्रिग सुखदाइ जिन्हें। तिनको सुगुरु भनें, ये तो मतधनें। एहैं बैरी तरे तनजी, अरे भैय्या तजि विषयूंकूं चेतनजी॥४॥ अरे भैय्या०॥

अथ—राग मांडदेशकी ठुमरी उपदेशी॥

सुनरे गंवार निदके उचार तेरे घट मंझार, पर घट विहार मत फिरे ख्वार परमोदको सुरझाउ। सु०॥टेक॥

तजि मन बिकार अनुभवकूं धार कर बार बार निज पर बिचार तूहै समयसार अपने ही गुन गाले। सुनरे०॥१॥ तुही भव सरूप तूही शिव सरूप, होके ब्रह्म रूप पड़ा नर्क कूप विसयनके तूर चेती मनकूं हटाले। सुनरे०॥२॥ कहे

दाय तैन। आनन्द दैन, सुन जैन वैन। आसु होय चैन, तजि मोहसे न नरभौ फल पाके रे सुनरे० ॥३॥

अथ—राग खास बरवेकी ठुमरी उपदेश ॥

सुन सुन रे मन मेरी बतियां, अब कछु करो नाम कांई जग में रे। सुन सुनरे० ॥२॥ ने मत तप न दान मन भावत। ढूंढत संपति पग पग में रे, सुन सुन रे० ॥३॥ भजन क्षमाबिन भाव शीलके। भगसें भागि चे भग में रे० ॥४॥ किह बिधि सुख उपजे सुनि बीरण, कंटक कूलोप मग में रे। सुन सुन० ॥५। द्रिग सुख धरम लखन जिन बिसरयों, अन्तरसौं न मनुष खग में रे ॥सु०॥६॥

अथ—जोगिया आसावरी पद उपदेशी ॥

पापनसें नित डरिये, अरे मन पापनसें नित डरिये। टेक॥

हिंसा जूठ वचन अरू चोरी पर नारी नहि हरिये, निज परकूं दुःख द य निदायन। तृष्णा वेग बिसरिये, अरे मन पापन० ॥१॥ आते पर सब बिगडे बीरण ऐसोहा मन करिये, ज्यों मधु बिंदू बिखेके कारण अन्ध कूप में परिये। अरे मन पापनसे ॥२॥ गुरु उपदेश बिमान बेठके ह्यांते वेग निकरिये, नयनानन्द अचल पद पावे भव सागर सूं तरिये अरे मन पापन० ॥३॥

इति नवमोऽध्याय संपूर्णम्।

दशवाँ अध्याय

अथ—अनुभवात्मक अध्यात्म पदोंका संग्रह रूप दशम अध्याय लिख्यते रेखता चालो रागमें पद अध्यात्म ॥

कहै कर्ता करम चेतो, सुनों सुत कौनकी पती। बुरामें क्या किया तेरा, तू दुश्मन हो गया मेरा।टेक॥

तेरे दर्शनकी रूचि आई पराई नारग कडाई, जबसे तू हुआ पैदा। कहाया पुत्र तू मेरा। कहै कर्ता० ॥१॥ तेरी परवशके खातिर, रहते वनमें पशु चाकर रहा गणिकाके घर निशदिन। दिया तेरे वास्ते डेरा, कहै कर्ता० ॥२॥ तेरी इश्रतको देखनको। सुहाया माल मेरे मनको, जुवेमें खो दिया धनको। कहा चोरीमें चित मेरा। कहै कर्ता० ॥३॥ लागी मदिरा मुजे प्यारी, सहा दुख बहु दुःख भारी। धरा तेरा नाम विधिनामो, रहूं हाजिर जैसा चेरा। कहै०क० ॥४॥ पडे दुःखसे तुजे पाला, मुजे तें फेदमें डाला। सात यारोंको संग लेके, उजारा खोज तैं मेरा। क० ॥५॥ न करता जो मैं यह नाता, तो मैं सब नैन सुख पाता। अगर कोई शत्रु बैर होगा, न लेगा नाम वह तेरा। बु०मैं० ॥६॥ तु दुश्मन हो गया, कहै कर्ता कर्म चेतो। सुनो सुत कौनकी पती। कहै कर्ता० ॥७॥

अथ—रागनी जोगिया असावरीमें पद अध्यात्म ॥

है मोहो हित तू हमारे, जो हमकूं दुःखत जगमें निहारे टेक।

आंधा परम हमें बतलावे, सांचे चैन उचारे। राग दोखसे मत नहिं पोखे, सब पर सुहित चित धारै जो हमकूं दुःखत है मोहो० ॥१॥ हम दुःखिया दुःख मेटन आये, जनम मरणके हारे। जो कोई हमकूं कुमति सिखावे, सोई शत्रु हमारे। जो

हमकूं डूबत। है बोही० ॥२॥ कोटी ग्रन्थको सार यह है, पुन्य स्व पर उपगारे। द्रिग सुख जे पर अहित तजि चारें। ते पापी हत्यारे जो हमकुं। है बोही० ॥३॥

अथ—राग देशाख सोरठ पद अध्यातम ॥

म्हारी श्रद्धामें भंग पर्यो, सरधामें भंग पर्यो, हे मिथ्यामैं भाव धर्यो। म्हारी श्रद्धामें भंग पर्यो ॥टेक॥

च्यारों कषाय गिनी हम अपनी, मद जोबनसे भर्यो। हे कुदेवोंको संग कर्यो ॥म्हारी ॥१॥ दरब करमकी ममता तनमें, आप ही आप जर्यो। हे कुलिंगीको स्वांग भर्यो, म्हारी० ॥२॥ भाव करम नौ करम जुदे हैं, मैं चैतन्य खरे। कुज्ञानीके पन्थ पर्यो, म्हारी० ॥३॥ ज्यों तिल तेल सुवरनमें दधिमें घी बसर्यो, हे अनादिको जोग जुर्यो। म्हारी० ॥४॥ मुक्त भये बडभाग नैनसुख, तेल खितोल पर्ये हे कलाकल भिन्न कर्यो। म्हारी श्रद्धामें० ॥५॥

अथ रागनी काफी पद अध्यातम।

कब आवेगी न जानें म्हारी लब्धिकाल, कब आवेगी न जाने ॥टेक॥

मैं तो चिद्रूप चिदानन्द समैसार कब जानूंगा, कैसे कै छुटेगो हियाको पाल कब आवेगी० ॥१॥ कब ममत्व ग्रह धरूं निरन्तर कब चोरी व्रत ठानूंगा। तोडूंगा न जाने कब जगके जाल, कब आवेगी० ॥२॥ कब कुशील तजि धरूं शीलमय कब धन समह भानूंगा। तरूंगा न जाने कब भवको ख्याल, कब आवेगी ॥३॥ आप ही आप करूं कब अनुभव तब नैनानंद मानूंगा। आवे ना हमारे फिर अशुभ काल, कब आवेगी न जानें म्हारी लब्धिकाल कब आवेगी न जाने ॥४॥ इति।

अथ दयाकी महिमाके विषयमें मरहठो लंगडो रंगतको जिसके ४ चौक हैं जिनमें पंच पापका त्याग है।

बन्धे है अपनी मूलसे बन्धो बन्धे बन्धे मर जावेंगे, दया जीवकी करेंगे तो हम भी सुख पावेंगे ।।टेक।।

दयासे परजा बढैगी राजा दयासे सन्त कहावेंगे। दयाके कारन सेठ साहूकार कहावेंगे ।।१।। जो दुखियाकी मदद करेंगे इस जगमें जस पावेंगे। विपतकालमें बहो फिर मदद पहुं-चावेंगे ।।२।। धन जोबनके मदमें हम तुम जिसका जीव दुखावेंगे, पुण्य गिरेगा तो वे फिर छातीपर चढ आवेंगे ।।३।। छेदें अरु भेदेंगे उनकूं काट खावेंगे। दया जीवकी करेंगे तो हम भी सुख पावेंगे ।। बन्धे है अपनी मूलसे० ।।४।।

झूठ वचनसे मान घटेगा अरु जिसके ढग आवेंगे। सत्य वचन भी कहेंगे तो सब झूठ बतावेंगे ।।१।। वसुराजाकी तरह झूठसे नरक कुण्डमें जावेंगे। सत्यघोषकी तरह फिर राजदण्ड भी पावेंगे ।।२।। चोरीके कारनसे प्रानी कुल कलंक लग जावेंगे। रावणकी ज्यों वंश अरु वैभवका नाश करावेंगे ।।३।। फिर नरकोंमें उनके मुखको फूंका खाक जलावेंगे। दया जीवको० बन्धे है०.।४।

मैथुन व्यसन बुरा है प्रानी जो इसमें फँस जावेंगे। उन जीवोंके बीज अरु वंश नष्ट हो जावेंगे ।१।। फिर उनके संतान न होगी तो मर जावेंगे। जो न मरेंगे तो उनके तनमे रोग न जावेंगे ।।२।। नरकोंमें उनकूं लोहेके थम्भोंसे लटकावेंगे। लोहेकी पुतली गरम करत छातीसे चिपकावेंगे ।।३।। हाहाकार करेगा जब वो मुखमें जांघ चढावेंगे। दया जी० बन्धे० ।.४।।

जिनके नहीं परिग्रह संख्या तृष्णावन्त कहावेंगे। लोभके कारण झूठ अरु चोरीमें मन लावेंगे ।।१।। गुरुकूं मार देवकूं वेचें सभामें धर्म उठावेंगे। बाल वृद्धके कण्ठमें फांसी दुष्ट लगावेंगे ।।२।। राजा पकड धरे शूलीपर फेर नरकमें जावेंगे। वचन अगोचर नरकके बहुत काल दुःख पावेंगे ।।३।। कहे नैन-

सुखदाय दयाके सब संकट कट जावेंगे, दया भीजजी० बन्धे है अपनी मूलसे० ॥४॥

अथ राग बिहागकी ठुमरी अध्यातम।

देखो मूल हमारी हम संकट पाए देखो मूल हमारी ॥टेक॥

सिद्ध समान सरूप हमारो, डोलूं जेम भिखारी। हम संकट पाए, देखो मूल हमारी ॥१॥ पर परणति अपनी अपनाई, पोट परिगृह भारी। हम० ॥२। द्रव्य करम अरु भाव करम कर, निजगल फांसी डारी। हम० ॥३। नोकर्म मनतैं मलिन कियो चित्त बांधे बन्धन भारी ॥ ४ ॥ बोये पेड बाबूल जिनोंने खावे क्यों सहकारी। हम० ॥ ५ ॥ करम हमाये आगे आवे, भोगें सब संसारी। हम० ॥६॥ नैनसुख अब समता धारो, सतगुरु सीख उचारी। हम० ॥ ७ ॥

अथ जैन मत व्यापार राग जंगला।

कीनाजी मैं कीना जगमें जैन वन अवहारीजी ।टेक॥

धर्मद्वीप दुर्गम्य दिशा वरतत गुरु संग व्योपारीजी। केवल-ज्ञान खानसे लेकर माल भरे हैं भारीजी ॥ कीना० ॥१॥ धर्म काष्ट केश कटा कीने, द्विविध करम वृष भारीजी। शक्ति आरके हांक चलाये, आगम सडक संभारीजी। कीना० ।२॥ सप्त तत्व अरु नव पदार्थ भरि, तीन गुप्त मणि सारीजी। भवि जहुरी बिन कौन खरीदे, खेय मोह दरबारीजी। कीना० ।३॥ मिथ्या देश उलंघि जलनके भवसमुद्रके पाराजी, नैनानन्द खेवट गुरु जनसंग, मुक्ति दीपमें ढारीजी। कीनाजी मैं कीना, जगमें जैन अब नज अवहारीजी ॥४।

इति दशमोऽध्याय सम्पूर्णम्।

ग्यारहवाँ अध्याय

अथ हस्तनापुर क्षेत्र पर पद बनाए तिनके संग्रहका एकादशम अध्याय लिख्यते।

राग जंगलेकी ठुमरी पजाबी।

हस्तनापुर तीरथ परसनकूं मेरा मन उमंगा जैसे गङ्गा घटा॥ हस्तनापुर०। टेक।

पूजत शांत प्रशांत भई मेरी विषय अगन ज्वाला पलटा ॥हस्त०।१॥ सुख अंकुर उद्गे घट अन्तर अब सब दुःख दुर्भिक्ष हटा।हस्तनापुर०॥२॥ धन यह भूमि जहां तीर्थंकर। धरि आतापन जोग रटा॥ हस्तनापुर०।३। नयनानन्द, अनन्द भए अब पर शिव पोवन गंग टटा। हस्तनापुर तीरथ परसनकूं मेरा मन उमंगा जैसे गङ्गा घट।४।

पद हस्तनापुरका रागनी जंगलूं।

अरे गजपुर नगरकी डगर बताय, हे वीरा दूंगी दरब अपार। गजपुर नगरकी डगर बताय॥टेक॥

झांझर दूंगी पायल दूंगी दूंगी कड़े निकाल, गजपुर नगरकी। हे वीरा दूँगी दरब अपार।गजपुर०॥१॥ कर्णफूल चूड़ामणि दूंगी, मुंदरी रतन जड़ाल। शांत कुन्थु अर मल्लिनाथके, चरण छूं परलोक ॥गजपुर०॥ हे वीरा दूंगी दरब॥२॥ ओंशन दूंगी पऊंची दूंगी, दूंगी मोतियन माल। करम कटै अरु दर्म घटैं, ज्यों निरखिनि रवि मृणाल, गजपुर नगरकी डगर बताय॥ हे वीरा०॥३। जिनगुण गावत हरख बढ़ावत चल मेरे वीर अगार, सुवरण थार रतनमई दूँगो। ले चल अरब सुधार गजपुर॥ हे वीरा०॥४। नैनानन्द कहै या जगमें, पाये दुःख अपार। अब वीर नमोहि प्रभु ढिग ले चल मानूंगी उपगार॥ गजपुर॥ हे वीरा०॥५॥

पाय पखारा जाऊं तीरथकूं ॥ चेवेछियां ॥ चलो० क्षुल्लकजी० ॥५॥

आया कातिग मास जब, पावस भयो विलीन। तीरथ बन्दना कारनैं, कियो विहार विनोद ॥ बिछुरा फिर गई थारे मुलकमें ॥ चेवेछियां ॥ चलो० क्षुल्लकजी० ॥६॥ दिल्लीके सब भाईयों, करके सकल समाज। पंच सुहाना फेरियो, एक पन्थ दो काज ॥ जिनदर्शन क्षुल्लक मिलन ॥ चेवेछियां ॥ चलो० क्षुल्लकजी० ॥७॥ देश देशके जिन भुवन, घन छनके हो हो संग। रथ गजबाजी लेयके, आये उमंग उमंग ॥ दुन्दुभि बाजैं जै जै धुनि रटैं ॥ चेवेछियां ॥ चलो० क्षुल्लकजी० ॥८॥ कातिग सुदी पून्यूं दिना, उत्सव भयो महान। दास नैनसुख यौं कहै, करो मोहि कल्याण ॥ पुण्य उदै सज्जन मिलैं ॥ चेवेछियां ॥ चलो० क्षुल्लकजी० ॥९॥

इतिश्री एकादशमोऽध्यायः सम्पूर्णम्।

अध्याय बारहवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ अष्टप्रकारके पदोंका संग्रह अध्याय बारहवां लिख्यते।

राग परवे पीलूका ठुमरी अष्टद्रव्यको।

न्हवण क्यों नहीं करै अरे नर न्हवण क्यों नहीं करै। तू तौ भवसागरसूं तिरै अरे नर न्हवण क्यों नहीं करै ॥टेक॥

सुवरण कलश सीस पर धरके, ल्यावो प्रासुक जल भर भरकै। ढारो प्रभु पर मन्त्र उचरिकै, जन्मजरामृत टरै ॥ अरे नर न्हवण ॥ तू तौ भव० ॥ अरे नर० ॥१॥ चन्दन घस चरणोंमें चढ़ावो, उलटो भव आतापके मिटावो। अक्षतसैं अक्षयपद पावो, पुष्प मदन दुख हरै ॥ अरे नर० ॥२॥ दीपक मोह तिमरको नासै, ज्ञान भानु घटमें परकासे। क्षुधा रोग नैवेद्य विनासैं, धूपसैं वसुविधि जरैं ॥ अरे० ॥३॥ फलसैं फल मुक्तीको पावो,

अरघमें फेर न जगमें आवो। नैनसुख मत समय गमावो, कर ले जो कुछ करे॥ अरे० ॥४॥

ख्याल चौकवंध राग जंगला अठलात्राके वस्त पढ़नेका स्पर्शइन्द्रीहुँर।

तू तो करले सिरीजीका न्हवन जातरा जल्की। तेरे सिरसे पापकी पोट ज्यों हो जाय हल्की॥टेक॥

अरे तेने मल-मल धोई देह खिडाए पानी, नहिं किया सिरीजीका न्हवन अरे अज्ञानी॥१॥ अरे तेने छपरखटे सब भोगे भोगे घनेरे, नहिं भए तदपि सम्पूर्ण मनोरथ तेरे॥२॥ अरे तेने ब्रह्मचर्य गजराज वेधिसर कीनों, ले जगत कलंक चले दुर्गति कहा कीनौं॥४॥ अरे अज हूँ चेत चेत खबर नहीं पलकी, तेरे सिरसे पापको पोट ज्यों हो जाय हलकी॥४॥ तू तो करले सिरीजीका न्हवण जातरा जलकी। तेरे सिरसे पाप० ॥५॥

रसनी इन्द्रो द्वार शीक्षा जल जात्राकी, ख्याल दलंगी छन्द।

तेने रसनाके वश पुद्गल सब भख कीने, तेने मून सुख चपट लायकूं संकट दाने॥१॥ तेने माखो मीरण सिकवा अमृत कहानो, दुर्वचनके बंधे मरम सताए प्राणी। तेने पावे नागर पान लोभकूं कोडी, तेनेरी तदपि रहो यह लीम धूरसे आडी॥२॥ अब दरले भजन मेरे वीर आशा तजि खलकी, तेरे सिरसे पापकी पोट ज्यों हो जाय हलकी। अब करले सिरीजीका न्हवण जातरा जलकी। तेरे सिरसे० ॥३॥

नासिका इन्द्रो द्वार शीक्षा जल जात्राकी, दलगी छन्द।

तू तो टांक मांच सीडईकूं नाक बतावे अरु मांदे डांक सुंघनकूं नाक धावे॥१॥ उसकी तो वास हैं फांस समझ ले मनमें, हो जैसा तोनका आंक देख दर्पनमें॥२॥ तैं तो इससे सूंघ लिये पुद्गल जगके सारे। नहीं गई सिनक रही सिणक समझ ले प्यारे॥३॥ अब प्रभुकी सेवा करो तजो पुद्गलकी, तेरे सिरसे। अब० । ४॥

अध्याय तेरहवाँ

अथ रामचन्द्र लक्ष्मण सीता सम्बन्धी पर्दोका अध्याय त्रयोदश लिख्यते। तत्रादौ रामचन्द्रजीकूं राजा दशरथ राजगद्दी दे हैं तिस अवसरकी बधाई राग खंम्माचकी ठुमरी।

जीवो राजा दशरथके ये पुत्र च्यार, जीवो राजा दशरथके ये पुत्र च्यार। श्रीराम लछमण भरत शत्रुघन, जीवो नित बटियो बधाई द्वार। जीवो राजा दशरथके ये पुत्र च्यार ॥टेक॥

जीवो नित मात कौशल्या प्यारी, जिन जायौ रघुपति अवतारी। सकल जगत दुख हरनहार, जीवो राजा श्रीराम, जीवो नित० ॥१॥ जीवो अपराजित मात सुहागन, जिन जयो लछमन बड भागन। राम कारन चित धारणहार। जीवो राजा श्रीराम, जीवो नित० ॥२॥ जीवो केकई लछमन हरणी, भरत महामणि जनम उधरणी। शिव रमणीको परणहार। जीवो श्रीराम, जीवो नित० ॥३॥ धन्य सुप्रभा प्रभुता तेरी जिन जायौ अरिघन सुन परी, परम धरम धन धरनहार। जीवो० ॥४॥ सुष नय लोए अजुध्या तीरथ, द्विग सुखराशी त्रिभुवनमें कीरत। भवि उद्धार सुकरणहार। जीवो० ॥५॥

रागनी खास जंगलेकी ठुमरी।

चकोरी बधाई देने अवधि मंझार। चकोरी बधाई देने अवधि मंझार। है अवधि मझार राजा दशरथके दरबार माता कौशल्याके द्वार, सीताजीके अगार। चकोरी बधाई देने अवधि मंझार। चकोरी० ॥टेक॥

आय चन्द्रवंशी सूरजवंशी जादोवंशी राजा, बजि रहे चौंके बठ बजि रह्या मारु बाजा। बजि रह्या रामका नटक दरबार, बाजै सारंग सितार, बाजे बीणा पट तार, गावें सभी नरनार। चकोरी० ॥१॥ फिर रह्या कटक ऊपर रघुपति पेखौं, सुरग

सुरेन्द्रपे उपेन्द्र छत्र धारे हैं ज्यों। होय रही जाकी चवरों फटकार, जले सोरी ठ्यार पढ़ें अमृत कुमार। चकोरी० ॥२॥ गावत सुर गन्धर्व किन्नरी प्रगट करें भावों स्वरके किन्नरी। नाचे वे तो इन्द्रशाठ किया अनुसार, छिन नाचे इक बार, छिन रूप हजार चकोरी० ॥३॥ गावोरी बधाई जाकी पुन्य फलेगा। आज रामजीकूं राज मिलेगा, धारेंगे राजाजी दशरथ जोग भार। कहे नेनसुख यार, सौंप देंगे सारा भार। चकोरी बधाई देने अवधि मंझार, राजा दशरथके दरबार। माता कौशल्याके द्वार, सीताजीके आगार. चकोरी बधाई देने अवधि मंझार, चकोरी बधाई देने अवधि मंझार॥ इति।

अथ सीतांकूं रामजीकी पट्टराणीका राज्यतिलक होते वक्तकी बधाई कौशल्याजी दे है रागनी झंझौटी जंगला खम्माच रागकी ठुमरी।

सीया पिया तेरा चिर जीवोरी, सीया पिया तेरा चिर जीवोरी। हे चिर जीवो चिर जीवो चिर जीवोरी ॥टेक॥

तूं तो अटल राज नित करियो, तेरे सिरपे छत्र नित फिरयो। पिया तेरा चिर जीवोरी॥ सीया० ॥१॥ सुन मन्दोदरीकी जाई। तूंतो बांट ले पीन बधाई॥ पिया पिया हे चिर ॥२॥ सुन जनक नृपतिकी लाडी। तुझे मात बिदेहा नैंपाली॥ सीया० ॥३॥ तेरे जीवो तात अरु माता। तेरा जीवो भामण्डल भ्राता॥ सीया० ॥४॥ तेनैं शील महाव्रत धारा। किया स्वसुर वंश निस्तारा॥ सीया० ॥५॥

तू तो दशरथ कुलमें आई। तेरा जीवो कन्त रघुराई॥ सीया० ॥६॥ तेरे सुफल भये चारे जेवर। तेरे जीवो पियारी ताँनो देवर॥ सीया० ॥ ७ ॥ कहै सास कुशल्या सुन प्यारी। तेरे स्वसुर करी तप त्यारी॥ पिया० ॥८॥ तेरे कन्तकूं गद्दी देंगे। वे तो संजम निश्चय लेंगे॥ सीया० ॥९॥

स्वामी त्याग चले वेटो हमको है काज हमारी तुमकों ॥ सोया० ॥१०॥ तूतो होगी रामकी रानी। बन्धका के पट्ट पटरानी॥ सोया० ॥११॥ तेरी सखियां मंगल गावैं। तेरा पुन्य प्रताप मनावैं॥ सोया० ॥१२॥ तेरे सिरपे चंवर ढ्ढारें। तेरे नामके सुजस उचारैं॥ सोया० ॥१३॥ तू देख नयन सुख भारो। तेरे कन्तकी राज तयारी॥ सोया० ॥१४॥

कौशल्याजीकी तरफसें सोक्षा सीतांजीको रामके साथ बनकूं जाते वखतका रागनी जं जैवंती०।

भर भर नैन मत रोवै मेरी सुन्दर जैसी पढैगी वैसी ओब सहैगा॥ भर भर० ॥टेक॥

हट गए पुन्य पलट गए सुभ दिन। हम ना रहैंगे वेटो कौन सहैगो॥ भर भर० ॥१॥ चाहत जीव सदा हो सुख सम्पति। होत वहो जो वेटो करम कहैगो॥ भर भर० ॥२॥ यद्यपि है परबाण यही बिधि। तदपि केकैय्याजीको बोल दहैगो भर भर० ॥३॥ नन्दन बन सम समकित द्रिग सुख घर लेहिये में काले बिघन बहैगो॥ भर भर० ॥४॥

सीताजीका वचन रावणसे लंकामें। रागनी परज॥

शीलसंगाती रे शील संगाती रे। जानत भई हम सुखदाई भैय्या, हम सुखदाई भैय्या। मैंईको ना छूवे॥ शील संगाती रे ॥ टेक॥

दश मुख रूर बिभव गुण तेरो रे; राम बिना मेरे मनकु नभातो रे। जानत भई हम सुखदाई भैय्या, हम सुखदाई भैय॥ मैंईको ना छूवे शील संगाती रे॥१॥ शील बिगारन तार हमारो रे। दूंगो सराप फटैगो तेरी छाती रे॥ जान० ॥२॥ देव धरम गुरु साख हमारे रे। हाथ लगावै मेरे मत उतपाती रे॥ जान० ॥३॥ सीता हरणसे नरक जाऊंगे; कोई ना चलैगो तेरे संगन साथ रे॥ जान० ॥४॥

दोहा—केहर देश फणेंद्रमणि शरणागति समरथ, सती पयोधर अतिथ घन। जीत न लागैं हाथ शील संगाती रे॥ जान०॥५॥
शील पिता मेरो द्रिग सुखदाई रे। शील बिना मेरो कोई ना संगाथी रे॥६॥

रामचन्द्रजीका वचन रावणसे लंकाके युद्धमें मोरचे पर खडे कहे है। लावणी केसी जग।

रावनसे कहे रघुबीर कहैं निज मनकी। तू जनक सुता दे ल्याय चाह नहि रनकी॥टेक॥

अरे मेरा जो कोई करे बिगाड कटुक नहि भाखूं। मैं औगुण परगुण हरूं वैर नहीं राखूं॥ रावन०॥१॥ अरे मैं सत गुरुके मुख सुनी जैनकी बानी। यह कलह जगतके बीच स्वपर दुखदानी॥ रावन०॥२॥ अरे ये बिन कारन बहु जीव मरेंगे रनमें। तू जनक सुता दे ल्याय जाऊं मैं बनमें॥ रावन०॥३॥ अरे मुजे जगत कहवेगा ठगे सिया बिन फोकी। तू ल्या दे सीतां सती कहत हूं नीकी॥ रावन०॥४॥ अरे बो मांगैं बत दुख सहै परीजन तेरे। तब तोकूं हवनोयरखे बोधमन मेरे॥ रावनसे०॥५॥ तब लंकपती यूं कहै सुनो रघुराई। जो लिखी हमारे कर्म मिटै न मिटाई। रावन०॥६॥ अब पछताये कहा होय जीव लूं तेरा। कहै नैनसुख रावनकूं काढने घेरा॥ रावनसे०॥७॥

वचन लछमनजीका रावनसे युद्धके मौकेपर रागनी जंगला झंझोटी ठुमरी।

हो रावन सीतांको दे देरे। हो मेरे बड़े भ्रातकी नार हरावन सीतांको॥टेक॥

हम बनबासी राज न चाहैं, जन चाहैं तकरार। रावन सीतांको दे देरे॥ हो मेरे बडे भ्रातकी०॥१॥ पिता बचनसे बनमें निकसे। जनक सुता हईभार॥ रावन सीताकूं। हो मेरे

अथ रागनी जोगिया असावरीकी चालमें कुमतिका खण्डन सुमति करे है।

मैं जानी बात तुमारी रे जीया तैनें करी है कुमतीसे यारी, मैं जानी बात तुमारी रे जीया तैनें करी है कुमतीसैं यारी ॥ टेक ॥

हमसे तौ तू टकसा ही डोले, उससे प्रीत करारी। जो काम्हाड होयगी तेरा, जीवो हिका गत प्यारी रे। मैं जानी बात तुमारी रे जीया तैनें करी है कुमतीसैं यारी ॥१॥ क्या तुम भूल गये उस दिनकूं पड़े थे निगोद मंझारी, एक स्वासमें जनम अठारा पाते वेदना भारी रे। मैं जानी बात तुमारी रे, जीया तैनें करी है कुमतीसैं यारी ॥२॥ अब हूं हम तुमकूं समझावत सुन रे पीव अनारी, तजि परसंग कुमति सौतनको नातर होगी खुवारी। मैं जानी बात तुमारी रे जीया तैनें करी है कुमती सैयारी ॥३॥ नैनानन्द कहो सब ज्ञानींसैं कीज्यो याद हमारी, जो न करूं उपगार तुमारा। तौ मोहि दीज्यो गारी. मैं जानी बात तुमारी रे जीया तैनें करी है कुमतीसैं यारी ॥४॥

अथ रागनी खास देशकी ठुमरी मिथ्याती कुलिंगीयोंका वर्णनकी।

हम देखे जगतके साधु रे, कहीं साधु नजर नहीं आते हैं ॥टेक॥

कोई अंग विभूत रमाते हैं, कोई केश नखून बढ़ाते हैं। कोई कन्द मूल फल खाते हैं, वे साधुका नाम कहाते हैं हम देखे ॥१॥ कोई नाहक कान फड़ाते हैं, फिर घर घर अलख जगाते हैं। कहि झूठ जगत भरमाते हैं, गांठ हाथ नफर ले जाते हैं॥ हम देखे जगतके साधु रे, कहीं साधु नजर नहीं आते हैं ॥२॥ घर छोड़ विरन चल जाते हैं, मठ छाय धुआ धन्दवाते हैं। वे पूजा भेट धराते हैं, सो वमन करा फिर खाते हैं॥ हम देखे जगतके साधु रे, कहीं साधु नजर नहीं आते हैं ॥३॥

निर्ग्रन्थ गुरु नहीं पाते हैं, जो मारग मोक्ष बताते हैं॥ नैनानंद शीस नमाते हैं, हम उनके दास कहाते हैं॥ हम देखे जगतके साधु रे कहीं साधु० ॥४॥

कुदेव कुधर्म खण्डण भजन राग भैरूं ठुमरी जंगला राग मिली हुई।

कैसी घरी देखो कैसी घरी, परमतमें कथा देखो कैसी घरी॥टेक

परनारी रत बहुत कृष्णकूं, ब्रह्माने निज कन्या वरी। परमतमें कथा देखो कैसी घरी, परमतमें० ॥१॥ मुकति मांहितें उलटो आवत, शंकरने सब सृष्टि हरी, कैसी घरी देखो कैसी घरी। परमतमें कथा देखो कैसी घरी॥२॥ वचका खड्‌क रसातल उतरी, शूकरने उद्धार करी। परमतमें० ॥३॥ ऐसी मूढ़ मतिनकी रचना, पाप कथा महा दोष भरी। परमतमें० ॥४॥ बिगत विरोध बचन श्रीजिनके, वस्तु सुभाव बिचार भरी। परमतमें कथा देखो कैसी घरी॥५॥ नैनानन्द नमत है ताकूं गणधर इन्द्रन शीस धरी। परमतमें० ॥६॥

इति चतुर्दश अध्याय सम्पूर्णम्।

अध्याय पन्द्रहवाँ

अथ कविताने अपने दयासागर पुत्रको असाध्य रोगी मुनि विदेशमें भजन बनाए संकट दूर हुवा तिनका संकट हरण नाम अध्याय पन्द्रहवां लिख्यते।

ऐसे ही नम्बर ७ का पद महासंकट हरण है। राग जंगला कविता अपने आत्माकूं समझावे है।

मूढ मन मानत क्यों नहीं रे मूढ मन मानत क्यों नहीं रे भयो परम धरमसे विमुख बेशरम, मन मानत क्यों नहीं रे टेक

परदर्वकूं डोलै रोता, फिरे आपनी सम्पत्ति खोता। बुद्धि

रसातल मारे गोता, सुख चाहै करे कुकरम। मन मानत क्यों नहीं रे॥ मूढ़०॥१॥ चिर अभ्यास कियो जिन शासन वेदी आदि मादिके वासन। तदपि भयो न विज्ञान प्रकाशन, क्यों भ्रमत अखिलनको शरम। मूढ़०॥२॥ अरे नैनसुख हियेके अन्धे, त्यागे क्यों न जगतके धन्धे। मत करना मतलबके गन्दे, तजिके जतन कर भजन धरम मन। मूढ़०॥३॥

अथ संवत् १९२६ में पांच महीनेकी उमरमें दया सागर था उस कविताकूं ४३ वर्षकी उमरमें उसका नाम हुआ बड़े एहसे पाला संवत् १९२६ में बीमार हुवा, तब कविता परदेशमें था। रस्तेमें ये दोनूं भजन बनाए जिस वखत अने, उसी वखत घरपे संकट उसका दूर हुआ। चंगा पाया, फिर यही भजन हर संकटमें सहाय करता रहा। राग कलगड़ा तथा परज पद अर्हत स्तुति॥

विपत पड़े कोई बन्धु न भाई तुम ही नाथ सहाई, विपत पड़े॥टेक॥

संपतिके सब बने संगाती संकटमें दुःख दाई, वे दुश्मन् तुम अति हितकारी या में शंक न राई। विपत पड़े॥१॥ सुनि लई आन परखि हिए नैन न हिए दोनूं पति याई, बेपाइन तुम मोहन वाछित शिर दग सारस जाही। विपत पड़े॥२॥ पुत्र जुगल पर कोप विचारे करम उदय गति लाई, फिर दर्शन यह नाच नचायो दो घर भीख मंगाई। विपत पड़े॥३॥ मिल गए रतन जतन बहु कीने, गाए गीत बधाई। तिनहू दोनूं दाप पछारे कछु नहि पार बसाई, विपत पड़े॥४॥ फिर कछु दाह कलेश उठाए, विरल अवस्था लाई। तुमरी भक्ति लिखे चित्त दोनूं कर लई तुरत सुनाई, विपत पड़े॥५॥

पांच मासको बालक लेके घर बैठे ईदमाई, कदम गई मोहि परम दया कर किंचित बार न लाई। विपत पड़े॥६॥ तब तैं

दया बिधु तुम जाने कह जाने सुख दाई, ता तैं नाम दयासागर धरिले पाल्यो जिन राई। बिपत पड़े ॥७॥ अब साहिब इक खबर कानमें ऐसी सुनि पाई, दास तुमारो संकट पावै कोई न शरण सहाई। बिपत पड़े ॥८॥ मैं परदेश दास तुमरो घर पारसनाथ दुहाई, तुम ही मन्त्र जन्त्र तुम औषधि तुम्ही वैद्य तुम भाई। बिपत पड़े ॥९॥ तुम ही पिता तुम ही प्रति पालो तुम ही करो सहाई, मातरदास नयनसुख भाखे होगी जगत् हंसाई बिपत पड़े ॥१०॥

इति संकट हरण अध्याय पञ्चदशम् संपूर्णम्।

अध्याय सोलहवाँ

अथ दिल्लीकी मन्दिर मंजरीका अध्याय षोडशवां लिख्यते छप्पय ॥

मगल श्री अरहंत सिद्ध मगल सुखसागर, मंगल गुरु निर्ग्रंथ पंथ सर्वज्ञ उजागर। वन्दनादि यत मान सुख नगल उच्चारूं शिष्टाचार विचार इष्ट हिरदै मध धारूं, श्री नदिल्ली नगरकी। पहूं प्रतिष्टा मंजरी, जिह धार निकट संसार जन। सेवो जिन पद नजरी ॥१॥

जिनकि फूलोंके हारकी तरह हर एक तर्जके फूल गूंथूंगा और हर बातको गूंथ कर एक एक दिलें गंडा डालता चला जाऊंगा जिसकु टेक और मिलाव कहते हैं सो यह है जिसे गंडा या नोहारा लिया। कंठाभूषण छन्द, जिसकी ६४ मात्रा और ४ यमक अन्तमें पड़ा होती हैं॥

बोलो जैन धर्म जैकारा, जिससे कष्ट या संकट सारा भाजै मुक्तिमें नकारा। भैया तन मन वारंवारा ॥१॥

अब बारमें जिनमतकी प्रशंसा, और अनादि अनन्त धर्म ऐसा कहूं हूं फूलोंकी गूंथ । छन्द कंठालंकृत ॥

सुनियों उत्तम जन बड़ भागी, जितने परमारथ अनुरागी । ग्यानी ध्यानी अरु बैरागी जिनके भक्ति प्रभुकी लागी, उनसे अपने दोष छिपाऊं । तुमकूं मितर जानि बुलाऊं, श्री जिन बिंब प्रतिष्टा गाऊं । मंगल मेला तुमैं सुनाऊं ॥२॥ अब तो उमगो आनन्द बादर, हो गई मुलकों बात उजागर । तुम हो पंचायतकी चादर, करियो जिन मंगलका आदर ॥३॥ ये है धर्म अनाहदि अनन्त, जिसकूं माने संत महंत । जिसमें जीव दया बिरतंत, भैय्या सब मतका है संत ॥४॥ पूजें ब्रह्मा बिष्णु महेश, ध्यावे इन्द्र और गणेश । सेवा करते हैं चक्रेश, जिसमें दोष नहीं लव लेश ॥५॥

बिश्रेशेष—बोलो जैन धर्म जैकारा, जिससे कटजा संकट सारा । बाजै मुक्तिमें नकारा, भैय्या जन्म न बारं-बारा ॥६॥ इति ॥

दूसरी बात में देश नगर बस्तीके हर मजहब के लोगूंको मेला देखनेके लिए सन्मुख करता हूं, फूलोंकी गूंथ । छन्द कंठालंकृत ॥

ए तो जम्बू द्वीप है भाई, जिसको खार समुद्र खाई । इक लाख जोजनकी चौड़ाई, गावे संत महत बड़ाई ॥१॥ जा में सुदर्शन जान, दुष्यन भरत क्षेत्र पहचान । जिसमें आरज खण्ड महान, पुण्य पुन्य भूमि अस्थान ॥२॥ यो हो कुरुजांगल है देश, जिसमें जैनी बसे हमेश । जन्म तीर्थंकर चक्रेश, कर गए जीव दया उपदेश ॥३॥ तीरथ हस्तनापुर है भारी, जिससे जैन धरम है जारी । तिसकी दक्षिण दिशा मझारी ॥ दिल्ली है केशरकी क्यारी ॥४॥ ये तो रची युधिष्ठिर राजा, बजता रहा है मारू बाजा । इसका जस है बे अन्दाजा, प्यारे सुनैंते लगे बाजा ॥५॥

बोलो जैन धरम जैकारा, जिसमें कट जा संकट सारा। बाजे मुक्तिमें नक्कारा॥ भैय्या जनम न बारंबारा।६॥

पहली दूसरी तीसरी बातमें शहरके कोट किले और रेल पुल और तीर्थके मार्ग बतलाए जाते हैं।

फूलोंकी गूंथ छन्दके ठाले कृत।

अब मैं लिखूं शहरका हाल, सुनियों सब हो खुशहाल। जिसकी खंदक है पाताल, जिसमें नहर दई है डाल॥१॥ जिसके बारा हैं दरवज्जे, पक्का कोट बने हैं छज्जे। जिस पर सदा द मामे बज्जे, उड गए दुश्मनके ह्यां धज्जे॥२॥ बुर्जे बुर्जों तोप धड़कें, जैसी बिजली टूट तड़कें। सुनके दुश्मन लोग धड़कें, बन रहे घूवल और छड़कें॥३॥ तीरथ कालिंदी के तीर, बन रहा लाल किला गम्भीर। बहता शीतल शीतल नीर, करते सैर अमीर फकीर॥४॥ आगे बना सलेमगढ़ बांका, ये है जंगल दलका नाका। जिसने बुरी नजरसे झांका, तांपे देख कलेजा कांपा॥५॥ पुल है कालंदीका प्यारा, मिखिल बांका बारंबारा। सो तो लोहेका है सारा, जिसकूं लागा दरब अपारा॥६॥ नीचे बहता जल धूधारा, ऊपर चलता है बजारा। उसपर छत लोहेकी डार, उसपर दोनी सड़क निहार॥७॥ सो तो दई लोहेकी तान, जारी कर दिये अग्नि विमान। फिरते सारी हिन्दुस्तान, चाले सो योजन अनुमान।८॥ माचे जावे जी गिरनार, भावे वन्दो शिखर पहार। जाओ काशी और बिहार। करल्यो तीरथ सब संसार॥९॥ बोलो जैन धरम जैकारा, जिससे कटता संकट सारा। बाजे मुक्तिमें नक्कारा, भैय्या जन्म न बारंबारा॥१०॥

अब इन्द्र प्रस्थकी आबादी और, और नगर निवा० सीसगूंथा हाल। फूलोंकी गूंथा। छन्द काठालंकृत॥

दिल्ली बस रही ऐसी ठौर। सारी पृथवी पर नहिं और।

हो गए मूरत ह्यां शाहशोर, दर गए जापना अपना दोर ॥१॥ जिसकी पूरब [illegible] राजे, दक्षिण में कृष्णभूमि बिराजे। पश्चिम में [illegible] गाजै॥ उत्तर गंगा जमना छाजे ॥२॥ इसमें मन्दर जहाँ भेद, उनमें पोपध भेटें खेद। पंडित बांचें जहां जिन वेद॥ जाते पापाश्रव निषेध ॥३॥ जाते मुल्कोंके सौदागर, हैं सब हटके धनके उजागर। ह्यांके नरनारी सब नागर॥ सबके रूपवन्त गुण आगर ॥४॥ रहते पंडित पंच प्रवान, करते गुणवन्तोंका मान। होते जाए ह्यां सुलतान॥ जाने सारी हिन्दुस्तान ॥५॥

इनकी पंच कमेटी प्यार, जिसमें पटमतमके सरदार। चुन चुन थापे हैं सरकार, करते नीत अनीत बोपार ॥६॥ ह्यांको इस संवतमें आए, राजा परजाके मन भाए। द हैं दया [illegible] पाए, उसके जस हमने ह्यां गाए ॥७॥ है ह्यां एक बाहर घर प्यारे, मानुष हैं [illegible] उधारे। सब सुन जैनी जिन मत धारे, हो रहे जिनके जे जे कारे ॥८॥ है सब बार इसी घर माल, दिग पट श्वेत पट सर्व समोव। रहते आपसमें सब प्रात, ये है रत्तन [illegible] रात ॥९॥ ये है धर्म दिगंबर मेला, ऐसा उत्सव परम दुहेला। खुल गया परमारथका गेला, हो गया दोनों लोक सुहेला ॥१०॥ पांचो जैन धर्म जंकारा, जिसके कटजा संकट सारा। बज गया दिल्लोमें नक्कारा, भैय्या जन्म न बारंबार ॥११॥

दिल्ली खास सहरके अन्दर बोस २० मन्दिर चैत्यालय तो पहले प्रतिष्ठित है और एक मन्दिर लाला ईश्वरीप्रसादजीका नया बना है जिसको जिन मन्दिर प्रतिष्ठा और जिन बिंब प्रतिष्ठाका मेला है सब मन्दिरोंका खोला और पता बयान किया जाता है एवं २१ शहरके अन्दर दिगंबर मन्दिर है। वहांदो जुगादि देवके पंचायती मन्दिर

शारदा टीका बयान और श्रीमान राजेन्द्रकीर्तिजी भट्टारक दिगंबर होके महन्त तिनकी गद्दी का वर्णन जो अपार जो प्रतिष्ठा करावेंगे फूलोंकी गुच्छ छन्द कन्ठाल कृत ।

भैय्या इन्द्रप्रस्थके अन्दर, हैंगे तीन निरे जिन मन्दिर । तिनका पता बताऊं सुन्दर, जिनमें तिष्टे देव दिगम्बर ॥१॥ नन्दी धरम परे संसार, मन्दर पंचायतका भार । होवे वेशक पूछ पुकार, खजूरकी मसजद जाके यार ॥२॥ यह तीं मंदिर आदि विराजे, श्री जिन ऋषभदेवता पाजे । जिसमें दुन्दुभ घण्टा बाजे, जिसकूं देख सुरग भी लाजे ॥३॥ तिसमें चौतीसों जगदीश, तिष्टैं पंचायतके बीस । जिनकी दीन करैंग रीस, करते मुक्तकूं बकसीस ॥४॥ करते भट्टारककी सेवा, पदवी जहां मनौं हो मेवा । जो कोई पूजैं श्री जिन देवा, उनका पार लगावें खेवा ॥५॥

उनकी पट्टावली है भारी, मैंने च्यार ही पुरुष उचारी । जिनकी प्रतिमाऊँ में जारी, खुदा हो लेख प्रतिष्ठा कारी ॥६॥ भैय्या वर्द्धमान भगवान, जबसे पहुंचे पद निर्वाण । छहसै और बिरासी मान, बीते वर्षोंके दरम्यान ॥७॥ श्रीमत् लोहाचार्ज विशाल, दोनों भ्रमपथ मरण दियाल । उनके उनका नाम जंजाल, पाई शुभ गति परम दयाल ॥८॥ तिनकी वन्दनाकरी स्वामी, श्री भट्टारक भए नामी । मानों ज्ञाता वर्द्धक धामी, पर गए कीरत शुभ गति गामी ॥९॥ भैया पंचम काल मझारा, इनके जिन मंदर उपगारा । जहां तहां दरसाते नकशा, बानें मुनिदार भेद न भारा ॥१०॥

यद्यपि हैं कुछ परिग्रह धारी, तदपि हैं पद की मर्यादारी । जो कुछ लेते भेट हमारी, देते परमारथमें सारी ॥११॥ जिनका काष्ठासंघ सुन्दर, भैय्या पाले संयम सुन्दर । वे ही करें ध्यानमें सुन्दर, बैठे पांचों इन्द्री सुन्दर ॥१२॥ रखते नित

कमण्डल पोथो, करते कुंकुम रंगको मोठो। जिनकी मांवर शुद्ध रचीतो, सब ही पंथोंके घर होतो ॥१३॥ रखते नग्न चरण अरु सीस, करते विद्याकूं बकसीस। देते जैन धरम आदेश, देते पंथोंकूं आसीस ॥१४॥ ऐसे देवेन्द्रकीर्ति कहाए, जिनकूं सब पंथोंने ध्याए। पंछे जगतकीर्तिकी गाए, उनको गद्दी पर बिठलाए ॥१५॥

पंछे ललितकीर्ति देखाय, ताने गद्दी पर बेठाय। तिनके राज इन्द्रध्वज थाय, सब ही रुचा धर्म जगाय ॥१६॥ जिनको गद्दके हकदार, पंडित हैं मुनि कर्मसिंघार। जिनको विद्याका नहीं पार, अरु हैं अति गम्भीर विचार ॥१७॥ वे तो शब्द कोश सब जानें, जिनको घटमत पंडित मानें। ज्योतिष वैद्यक मरम पिछानें, सारे सूत्र सिद्धांत बखानें ॥१८॥ प्यारे इस गद्दका मान, ताते थाप सब सुखवान। ये हैं पंचायत अरधान, बढ़ता ज्यादा जिनका दान ॥१९॥ बोलो जैन धर्म जैकारा, जिससे कट जा संकट सारा। चढ़ गया दिल्लीमें नकारा, भंडा जनम न बारम्बारा ॥२०॥

अथ हरसुखरायजीके नये मंदिरजीका बयान और पण्डितोंकी शैलीका जिकर यह मंदिर तेरहपन्थको शुद्ध आमनायका धर्मपुरेमें है।

प्यारे धर्मपुरेमें आके, पूछो दूजो मंदर जाके। तुमको गहरा ध्यान लगाके, बन्दो अजितनाथ गुण गाके ॥१॥ लाला हरसुखराय बनाया, जिसमें संगमरमर बिछवाया। सोना भीतों पर लिपवाया, जहां तहां रत्नोंसे जड़वाया ॥२॥ वेदी समोशरण मण्डान, जिसमें तिष्टे श्री भगवान। आवें देखनकूं सुलतान, जिसकी पड़ रही धूम जहांन ॥३॥ लग रहा हुकम द्वारपे तेज, दीना है मलकेने भेज। टोपी तारैं सब अंगरेज, बिछातो नहीं किसीकी मेज ॥४॥ तारैं दरवाजेपे बूंट, जो भा पग देखें

चौखूंट। बाटैं सम्पत भरभर मूठ, इसमें नहीं है भैया झूठ ॥५॥

जिसमें सब साधर्मी लोग, सुनते जिन सिद्धांत मनोग। करल्यो दरशन पुण्य संजोग, छुट जाय जनम जनमको रोग॥६॥ जिसमें च्यार विराजें पंडित, च्यारों अति ही गुण मंडित। जिनकी बुद्धि प्रबल प्रखण्डित, करते मिथ्या मतकूं खण्डित॥७॥ पंडित गोपालराय सुनामी, दोनूं मथुरादास हैं नामी। बनारसीदास बडे गुण धामी, च्यारों कहिये भद्र प्रणामी॥८॥ लाला श्री बलदेवसहाय, लाला पारसदास बताय। तिष्टे लाला दिलसुखराय, तिष्टे धरमदास प्रमुखाय॥९॥ तिष्टे लाला सन्मनलाल, तिष्टे लाला चिम्मनलाल। तिष्टे राय किशोरीलाल, तिष्टे जहां पिशोरीलाल॥१०॥

लाला रंगीलाल विशिष्ट, श्रोता हैं सब ही सदिष्ट। रहत मन्दिरजीसे इष्ट। जिनकूं मानौं सारो शिष्ट॥११॥ सुनते सूत्र सिद्धांत हमेश, जिनके राग दोष नहिं लेश। आदर सुनल्यो सब उपदेश, जिससे कट जांय कर्म कलेश॥१२॥ बोलो जैन धरम जैकारा, जिससैं छूट जा संकट सारा॥

पाथरीवाले सोदागरमल प्यारेलालजीके पोतयाँका वर्णन जो धर्मपुरेमें है—

भैया मन्दिर है इकविजा, सबका है कुछ यही नतीजा। जिसनैं दरस किया कोई जीसा, मैं ता नाम सुनत होरीझा॥१॥ उसका ऐसे पता लगावो, सूधे धरमपुरेमें जावो। पाथरीवालोंका घर पावो, प्यारेलालके का कहलावो॥२॥ तुमकूं उनका देंगे दर्शन, शम्भवनाथ होंयगे परसन। करियो मंदरका आकर्षन, दिन दिन लगेगी संपत वर्षन॥३॥ जल्दी लग जागो दरबार, जल्दी भरजांगो भण्डार। सब ही राजा बड सादार, तेरो करेंगे सब मनु हार॥४॥ होंगे दुःख दलिदर दूर, होंगे पार

सभी चकचूर। होंगे दूधपूत भरपूर, ऐसा मंदर है मशहूर ॥४॥
बोलो जैन धरम जैकारा।

भोंदूमलके चैत्यालेका शिखर जो धरमपुरेमें है। भैय्या चौथा मन्दर आना।

इधर। ऐसे पता लगाना, भोंदूमलके घरपे जाना, उनकूं सूते जाय जगाना ॥१॥ उसमें रहते हैं दुखुर लाला, साथै तिष्टै हैं चैत्याला। लिख रहा उसमें तो गुरु डाला, बाहे कूंज लाल जौहरीला ॥२॥ कहियो अभिनन्दनका ध्यान, होंगे भी तीर्थ कल्याण। तजियो मत जैसा श्रीमान, भजियो मनमें श्रीभगवान ॥३॥
बोलो जैन धर्म जैकारा ॥

सनेहीलाल रामप्रशादजीके चैत्यालेका शिखर जो अनारकी गलीमें है।

भैय्या जाना गली अनार, भाई सनेही लालके द्वार। लेज्यो रामप्रशाद पुकार, कहियो भाईजाय जुहार ॥१॥ तुमको दोनूं बाप मिलेंगे, पंचम मन्दिर देख चलेंगे। तेरे पुन्य प्रताप फलेंगे, भैय्या कर्म कलेश टलेंगे ॥२॥ करियो सुमतिनाथकी जाय, जिनसैं कट जांय सारे पाप। भैय्या दरशनके परताप, सो भी सुख पावोगे आप ॥३॥ बोलो जैन धर्म जैकारा ॥

सटवरेमें इनका लालाजीके चैत्यालेका शिखर अनारकी गलीमें।

अब मैं भाखूं मन्दिर छठा, जो है मुक्ति महलका चट्टा। करियो पूजा करके चट्टा, हो जाय मुक्तिसैं चट्टाबट्टा ॥१॥ प्यारे सब घरे संसार, जाना मन्दर गली अनार। लाला इरकलालके द्वार, देना मंदर पुछ पुकार ॥२॥ वहां है पद्मप्रभ सरकार, जिनका परगट है दरबार। जानैं जिनकूं सब संसार, करते सबका बेड़ा पार ॥३॥ जपियो ॐकार अर्हंत, जपियो सिद्ध सदा जैवन्त। जपियो आचारज गुणवन्त ॥४॥ ये ही मन्त्र मुनिश्वर ध्यावैं, जिसके गुणगण धरके गावैं। जिससे जनममरण

छुट जावैं, भैय्या फेर न जगमैं आवैं ॥५॥ बोलो जैन धरम जैकारा।

सेठके कूंचेका पंचायती मन्दर तथा इन्द्रामलीके मन्दरका जिकर।

भैय्या सेठ केकूंचे आयो, सारे पंचेनैं बतलायो। इनके ऐसे कह जिन आयो, सप्तम मन्दिर हमें दिखायो ॥१॥ देगे देव सु पारस दिखाय, लेंगे अपने पास बिठाय। लाला ज्ञानचन्द हरखाय देंगे तुमकूं शास्त्र सुनाय ॥२॥ झांदी वेदी है अलबेली, करतो पूजा नित नवेली। पढ़ते फल पढ़ फूल चमेली, बांटे रुपये भर भर थेली ॥३॥ ये है मन्दिर स्वर्ग समान, लागे रुपये लक्ष अनुमान। खिल रहा संगमर्मर पाषान, छिप रहे कंचनसे असथान ॥४॥ वेदी समोशरण है गोल, तिष्ठें श्री भगवान अडोल। भविजन रहे हैं जै जै बोल, करते चर्चा की कल्लोल ॥५॥ लाला सम्मनलाल घड़ाई, वेदी दूजी वहीं लगाई। करतो सब संसार बड़ाई, पूजा उत्सवसे करवाई ॥६॥ होते नित ही नृत्य अखाड़े, होते नित ही जै जैकार। बजते नौबत झाल नगार, घटा द्वारेपे टकारे ॥७॥ द्वारे जगमोहन गढ़वावे, जिसके देखनकूं जग आवे। जिस पर धर्म धूजा फहिवे, मानों शाखा देव बुलावे ॥८॥ आवो आवो भविजन प्यारे, हरूं पाप ताप तुमारे। पूजो श्री जिनदेव हमारे, जिससे कट जांय संकट सारे ॥९॥ बोलो जैन धर्म जैकारा।

इन्द्राजजीजीके चैत्यालेका जिकर।

भैय्या अष्टममन्दिर और, इसके आंही है या ठौर। जिसकी रचना है चौकोर, दरशन करना तुम बागौर ॥१॥ ये है इन्द्राजजीवाला, जगाके चौकोर चैत्याला। इसमें जिन ना करियो टाला, जपियो चन्दा प्रभु की माला ॥२॥ इनको पूजा जो करवावे, फौरन कुष्ट जलोदर जावे। डायन जायन पास न आवे, बंदी तुरत रिहाई पावे ॥३॥ जिनके होता

था भोग वियोग, हो गया इष्ट अनिष्ट संयोग। हो गए दोहीमें सब रोग फौरन होवें सर्व निरोग ॥४॥ चाहें अन्योंकी सुख आवें, बंझा पुत्र सपूत खिलावें। जगमें चक्रवर्त कहावें, इस भौ पर भौमें जस पावें ॥५॥ बोलो जैन धर्म जैकारा, जिससें कट जा संकट सारा। बज गया दिल्लीमें नक्कारा, भैया जनम न बारंबारा ॥ ६ ॥

चुलाको बेगमके कूंचेका मन्दर लाल किलेके नीचे उर्दू बाजारमें।

भैया लाल किलेके बार, लश्कर पड़ता है घरबार। बजता है उर्दू बाजार। जिसकूं जानैं सब संसार ॥१॥ वहांपर नौमा मन्दर जानौं, जिसको देख जआ पहचान्। जो तुम बात हमारी मानौं, इसकी महिमा कमीकमी बखानूं ॥२॥ वनूचतानूको है याद, फौजां हो गई बे मर्याद। उठे एक मरपकेवाद, उठा ऐसा एक फसाद ॥३॥ हाकिमनैं ए हुक्म सुनाया, मन्दर उठ नौठीमें आया। सारे पंचौने भेखाया ॥४॥ पहुंचा लाल किलेके अन्दर, रोणी चढ़के देखा मन्दर। उठ लंगा वो अति ही सुन्दर, दूंगा हुमक जाहिगा धुरन्धर ॥ ५ ॥

जब वो वहांसे बाहर आया, सब ही पंचौने गुन गाया। तब ही उसनैं हुक्म सुनाया। इसने मन्दर जैन बचाया, वहां था भैया एक शिवाला। उसपर बचने लगा कुदाला, उसकूं कहा जैन मतवाला। ऐसैं छह हाकिमकूं टाला ॥६॥ लाला जोरावर सिंह आये, लाला सालीग्राम बुलाये। लाला ग्यानचन्दजी आए, उसै हुक्म ए लिखवा लाए ॥८॥ मन्दर जैन रहे आबाद है, ए गवर्मेंट इरशाद। जो कोई तोडेगा मर्याद, मलके कर देगी बर्बाद ।.९॥ तबसै झण्डा जैन खड़ा है, जो तौ लाल किलेके बड़ा है। मन्दर अतिशैवा नम डाहै, जिसपर साहिबरी उपडा है ॥१०॥ लाला नानकचन्द सराफ, करते दोनूं वखतौं

भाई पाहिबरामजीवाला, हरिबादाबदा है चैत्याला। वन्दौ सबकूं जाके लाला। हरगिज मत ना करियो टाला ॥१॥ वन्दौ देव जिनेन्द्र महेश, वन्दौ गुरु निर्ग्रन्थ महेश। वन्दौ दयामय उपदेश, जिससे कट जाय कर्म कलेश ॥२॥ बोलो जैन धर्म जैकारा।

भीमामलजीका चैत्याला सुखानन्दजीके कूंचेमें।

भाई भीमामलजीवाला, यहां हो है परम चैत्याला। जपियो परमेष्ठीकी माला, हरगिज मत ना करियो टाला ॥१॥ जो कोई पूजैं वन्दो भेरी, फौरन छुट जांय जनी फैरी। जो कोई हो गए गुणके भेरी, वो तो हो गए पाप निखेरी ॥२॥ बोलो जैन धरम जैकारा।

दिल्ली दरवाजेका मन्दिरजी।

भैय्या चल दिल्ली दरवाजे, मन्दिर अति प्राचीन विराजे। श्रीमत पद्मावतजी राजै, स्वामी पार्श्वनाथ विराजे ॥१॥ यह तो मंदर है विख्यात, कुछ है सब पंचोंके साथ। पढ़ती देववारकूं जात। होती पूजा नित्य प्रभात ॥२॥ भैय्या रोप जोगमल्हार, पड़ते जल मस्तोंपर धार। चढ़ते छत्र चमर लटहार, होते सुरत फुल तल्हार ॥३॥ है यह चमत्कार परधान, महीमा जाने सर्व जहान। सारी दिल्ली परधान। ये है तीरथ जन महान् ॥४॥ बोलो जैनधर्म जयकारा॥ भैय्या चौहद्दमें मन्दर, है कुतुबवालो चांदो मन्दर। जलता जहाँ फवारा सुन्दर, पर है भीतर चैत्य धुरन्धर ॥५॥ तिष्टैं ऋषभदेव भगवान, तिष्टैं बाहुबली धर ध्यान। जपियो अनन्तनाथ भगवान, जिससे हो अनन्त कल्याण ॥६॥ ये है प्रतिमा अधिक मनोग, जिनका पड़े ध्यान दे लोग। महिमा जानत है सब लोग, हरते कुष्ट जलंदर रोग ॥७॥ ये तो रचना श्री जिन धाम, आतमराम अनन्दीराम। तिनके भए सनेहीराम, तिनके सीस करें विश्राम ॥८॥ बोलो जैन० ॥

सो भगवान ॥६॥ ए तो मन्दिर है पुर तेनी, जिसकूं जाने सब ही जैनी। बर्णों दूजे की है पैनी, मुझकूं बहुत पड़ेगी कहनी ॥७॥ इसका बर्णन फेर करूँगा, हरगिज टाला नहीं करूँगा। पदके प्रभुके पाय परूँगा, सारे जिन मन्दिर उचरूँगा ॥८॥ इसका बर्णन मैंने छोड़ा, वे दृढ़ होके मूं नहीं मोड़ा। फिर गया अब तो दिल्ली थोड़ा, साढ़ो बाड़ेमें था दौड़ा ॥९॥ साढो जैन धर्म उपकार१० ॥

चौरासी पहाड़ीका शिखरचन्द मन्दिर जिन और धर्मशालाका बयान सदर बाजारमें।

भैया साढो चाहे गाना, खण्डेलवालोंसे जा पतलाना। ऐसा मौका फेर न पाना, दर्शन करना कर गुण गाना ॥१॥ करियो कुन्थनाथकी पूजा, ऐसा देखने जगमें दूजा। तू तो काल अनादि अरूझा, अब फिर दाव तो सूझा सूझा ॥२॥ वहां तो शिखरचन्द है दहरा, लग रहा ड्योढीपर पहरा। तू तो ध्यान लगाके गहरा, कर पीवत मोहनका सेरा ॥३॥ भैया ड्योढ़ीपे पग धोके, जाना जिने वंत सदां होके। तू तो पातुं दरब संजोके, करियो पूजन चोखे चोखे ॥४॥ बांधो सोतो दैय कमरके, छोड़ो कुदृष्टी द्रिष्ट न मरिके। तू तो श्री जिननाम सुमरिके, दीजो अर्घ रकाबी भरके ॥५॥ ये हैं पंचायतके सीस, मन्दिर शिखरचन्द जगदीश। जिसकी कौन करेगा रीस, ए है सुरपुर बीस बाबीस ॥६॥ यहांके भाई पण्डित सारे, हैं परि पुरण भक्ति धारे। करते पूजा करु जयकारे, रचते नित ही नृत्य अखारे ॥७॥ पंडित लाला प्यारेलाल, पंडित लाला मिठनलाल, पंडित लाला मोहनलाल, पंडित सब ही परम विशाल ॥८॥ साढी सब ही परना माई, गावो मंगल और बधाई। पहले तप आभूषण भाई, जिनके दूषण एक न राई ॥९॥ भजते देव सदा अरहन्त, जपते सिद्ध सदा

जयवंत। नमत सतगुरु मुनि निर्ग्रन्थ, सुनतो केवल जिन सिद्धांत ॥१०॥ जिनकी कूंख उपन्ने लाल, है वे भागवंत गुण शाल, कायर जप ले श्री जिन माला। हो जाय तू भी तुरन्त निहाल ॥११॥ बोलो जैन धर्म जयकारा ॥

धौरकी पहाडीपर शिखरबन्द सुन्दर जिन मन्दिर और धर्मशालाका बयान शहरबाजारमें।

जाना धौज पहाडी प्यारे, मन्दिर शीखर बन्द गुंजारे। शिखर पर बाजे हैं नक्कारा, कर रहे जैनी जै जै कारे ॥१॥ वेदी संग मर्मरकी न्यारी, जिसकूं लगी संपदा भारी। वे ही लगे हैं ऐसी प्यारी। जैसी हो केशरकी क्यारी ॥२॥ करियो मल्लिनाथकूं बन्दन, पूजा करियो लेकर चंदन। हैं वे पर गट पाप निकंदन, टूटे जनम मरनके बन्धन ॥३॥ लग रहे संग-मर्मर फरश न्यारे, पीते सुबरण जैसी तारे। जिनमें ऐसे फूल निहारे, मानों खिल रहे नभमें तारे ॥४॥ भैया निज निज पुन्य संजोग, जैसे सभी शहरके लोग अपना तनि तजिके उद्योग। खाधैं लाडू दार निरोग ॥५॥

जैसे पुरुष नगरके सारे, जैसों सभी रियासी प्यारे। जैसों नफगढके प्यारे, जैसों गढी बहादुर वारे ॥६॥ जैसों खास पहाडीवाली, जैसो सब ही देश निवासी। जैसों बाल बिरध बनवासी, तोहैं सब ही जनकी फांसी ॥७॥ ले हैं जसमा मनने शरणा, जैसों लालाजी जस वर्णा। जैसो रतनलालजी वर्ण, जिनकूं आनै प्यारूं वर्ण ॥८॥ पूजा करे लोक उमराव, पूजैं कुल कलाल कर चाव। भाई दयारसैन धर भाव, करते निरत मद उछाव ॥९॥ हो गए रामचरण अनुरागी, जैसो हरीसिंह बड भागी। भक्ति हरदेवदासकूं जागी, लखमीचन्दके मनमें लागी। जैसे राय धमन्डीलाल, जैसे लाला नन्दूलाल। जैसे राय किशोरी-लाल, जैसे बल्लूमल गोपाल ॥१०॥

नाना पद धारे, होते जिन मंगल बहु भारे ॥२॥ भैया सुनले कान लगाके, प्रातःकाल ही सुने जगाके। ले जल चन्दन पद धार लगाके, पूजे नेमनाथ गुन गावे ॥३॥ यहांका है ऐसा पद साद, हो जाय रंक छिनमें राव। जो कोई पूजै धरके भाव, उनके होवे नित्य उछाव ॥४॥ बोलो जैन धर्म जैकारा

इनके यहां मन्दिर प्रतिष्ठा मंजरीमें वर्णन कर चुके हैं। पड़ पड़ गंजका दिगम्बर मन्दिर जमना पार दिल्लीके सन्मुख ॥

चलिये पड़ पड़ गंज मझार, दिग पट मन्दिर रहै गुलजार। यहां है जैनी घर दो चार, पर है जमनाजीके पार ॥१॥ याही युग नाम रूपे जाना, सुन्दरलालके जा बतलाना। इनकूं मन्दिर जरा बतलाना, स्वामि नेमिपार्श्वकूं ध्याना ॥२॥ जब तो जंग चलेगे तेरे, लेकिन जाना बहुत सवेरे। करके दर्शन भैया मेरे, आना जल्दी अपने डेरे ॥३॥ भैया मन्दिरका उपगारा, करियो कुछ जीरण उद्धारा। ये तो है संसार असारा, इक दिन है सब धुंध पसारा ॥४॥ बोलो जैन धरम०

शाहदरेका मन्दिरजी जमनापार ॥

प्यारे तज दे सब उपरोध, मत लावो वे मनमें क्रोध। हैगा शाहदरा दो कोस, वहां भी मन्दिर है दिग पोष ॥१॥ वहां दस घर हैं जैनी साठ रहते नित मन्दिरमें ठाठ, करते सब ही पूजा पाठ। बन रहो शिखर अजबही ठाट ॥२॥ याहीं पंडित साहबलाल, लोयाराम तथा ताराचंद। जोता हैं सब काम संभाल, लावा शास्त्र सभा का काल ॥३॥ लाला सुमेरचन्द बड़भागी, लाला बल्लामल अनुरागी। लाला लालचन्द त्यागी, कीर्तन सबकूं भक्ति लागी ॥४॥ लाला पालीराम उदार, लाला कल्लूमल जितलाय। लाला गुलजारीमल गाय, लाला चंदलाल भी आय ॥५॥

काका हैं परमेश्वरदास, काका हैं शंकर परकाश । काका सब पंचोंके पास, जाकर कर नायों अरदास ॥६॥ इनकूं दर्शन करना होजै, इतना अब दुनियामें कीजे भैया ज्यों कंवकी भीजं । त्यों त्यों भारी हो कमकोजे ॥७॥ तुमरे संग चलेंगे यार । ग्यामो मद्दा विरद बलिकरियो पूजा अष्ट प्रकार, जिससे हो जावे उद्धार । बोलो जैन धरम जैकारा ॥

इति दिल्लीकी जैन मन्दिर मंझरी समाप्त ॥

अब जैन स्तंभ मंझरी लिख्यते । जिन मन्दिर दिल्लीमें श्वेतांबर जैन धर्मके हैं । तिनका बयान ॥

भैया सुनज्यों कावर काम, जिन मत है जगमें सरनाम । ग्रां हैं और रान जिन धाम, करते श्वेतांबर परणाम ॥१॥ वे तो जैन हैं सब भाई, माने श्री जिनराज दुहाई । जिनकी भक्ति और बडाई, भैया सब गुरुओंने गाई ॥२॥ हैं तो वीतराग निर्भूषण, जिनका भूषणमें है दूषण । पर य पहराके आभूषण, करते संवछरी पजूषण ॥३॥ भैया माने जन्म कल्याण, पूजे चौवीसों भगवान । रखले निश्र भोजनको आण, पीवे पाणी सब ही छाण ॥४॥ जपते मन्तर श्री नवकार, रखते जीव दयासे प्यार, करते रत्नोंके व्यापार । जिनकूं जाने सब सनसार ॥५॥

जिनकी ओसवाल है जात, अरु है सौहरी जग बिख्यात । करते सामायक परभात, जाते पोसालोंमें प्रात ॥६॥ जिनके मन्दर स्वर्ग समान, लग रहे संगमरमर पाषान । लिख रहे कंचनके बखान, लग रहो जिनमें सर्व निसान ॥७॥ जिनके द्वारे नौबत बाजे, अन्दर घनघन घंटा बाजे । ऊपर कलश मनोहर छाजे, सिरपर धजा जैनकी साजे ॥८॥ बन रहा दादाजीका पहरा, बन रहा ठाठबाठ सब गहरा । करना वहां भी सब

केशोरा ॥९॥ वो तो माली बाडे पाय। है नौवरेके अंदर जाय, वहां पर जाके भेद निकाय, है इक शिखरबन्द बादाय ॥१०॥

दुजा चेलपुरीके अन्दर, हैगा एक शिवाला सुन्दर। उसकी गलीमें न पेन धुरंधुर, हैगा वहां श्वेताम्बर मन्दर ॥११॥ तीजा नखराजकीवाला, हैगा अति सुन्दर चैत्याला। खिल रहा जैन धरमका लाला, चौरे खानेमें गुलाला ॥१२॥ सेवें सब भाई श्रमाल, सेवे सकल पंच उजवाल। जिनकी कटहै राय पुराल, बन रही धर्मध्यान पोशाक ॥१३॥ बोलो जैन धरम०।

अथ बौद्धमती और श्री जिन हर्षसूरि कुशलसूरिनामा श्वेतांबर जती फरामती जैनीका जैन स्तम्भ लिख्यते।

भैया इन्द्रप्रस्थ जो दिल्ली, कर गई स्वर्गलोककी किल्ली। गड रहा बुद्धोंकी जहां किल्ला, जिसकी अष्टधामकी मिल्ली ॥१॥ वो तो दश गजकी है प्यारे, इतनी है पत्तल मझारे। उसके नीचे देखो आरे, लिख रही चौथी पाक पुकारे ॥२॥ वो तो ढली है उसके संग, हो रही मिलके एक ही अंग। है सब चौथीका यह ढंग, खुद रही बौद्ध मूर्ति सर्वंग ॥३॥ खुद रही गाथा एक महान, मैं हूं चन्द्र वंश सुलतान। पूजूं महत बधु भगवान, तज दई हिंसा पाप निदान ॥४॥ अब यां जीव हतेगा कोई, सो नर होगा राजद्रोही। जिसने जीव दयाली सोई, होगा राज मान्य नर सोई ॥५॥

मैंने तो भर अपना गाला, जिसने इसकूं ज्ञाते काला। उसका उजला जायगा मांदा, दिखलाता सब डेरा ढगला ॥६॥ तिसतें हमने ऐसा भाखा। ये है जैनामतका साखा, जिसके दिलमें हो अभिलाषा। पढ़लो जाय लखकरसाका ॥७॥ इसके पास बन गई है छत्ना, वहां है दादाजीके चरना। जिनकूं जैन धरमका शरना, उनपर धरते है वे कठना ॥८॥ पड़ गया इसका सूरका हेला उनका कुशलसूर था चेला, जिसका सोमवारको मेला।

आराम। पंछी करेंगे यहां बिश्राम, होगा दुनियामें सन्मान ॥३॥ थे यहां साहूकार घनेरे, मुखकूं देखे मेरे तेरे, आवें सब ही श्याम सवेरे। उठ जांय अपने अपने डेरे ॥४॥ उसने कीना एक शहूर, देखे जैनी चामक दूर। चढ़िये हरसुखराय हजूर ॥५॥

वो तो चलके उनपे आया, अपना दुःख सब आह सिखलाया, सुनके फौरन हुक्म चढ़ाया। उनका हुआ यहां मनाना, उसे करली नाह करार, पानी लेंगे वे कहदार। मेरे मन्दिरजीमें यार, पूजा होवेगी हर बार ॥६॥ पानी रोनदखेता लेंगे, कीड़ो एक कसो ना देंगे। हम तो मेला खूब करेंगे, चाहे जल ही जाय मरेंगे ॥७॥ बन्ध गई उसकूं वे परवार, आने रैयत अरु सरकार। फिर तो उस बगियामें यार, हो गए मन्दिर बहुत तैयार ॥९॥ होते नित हि राग विलास, कर दिया परघट मालोदास। अन्दर दालाजेके पास कूआ जैन धरम है खास ॥१०॥ जिसका शीतल मीठा नीर, पीके निर्मल होय शरीर। लाला हरसुखराय वजीर, दे गये जिन मतकी जागीर ॥११॥

सुनहरी महजतका जिकर और, कुछ बहस मकान पर जलसाह बहावनियानका बयान।

नाके फुलवालोंके पास, मन्दिर सुनहरी है खास। जिसमें खड़ी रहे थी घास, कर गया साफ उत्पात ॥१॥ संवत् १८५७ में आई, लाला हरसुखराय बनाई। सारी सोनेसे मढ़वाई, दोनों शाहनशाह चढ़ाई ॥२॥ गुम्बज सोनेका है जारा, देखो चांदनी चौक मंझार। ये तो लाने सब बजार, जिसके लागे चले फुआरा ॥३॥ मत कर मसहदको तकरार, है कुछ मिलकहीमें यार। टूटो मन्दिर भई सुधार, करिये जैनोंने उपकार ॥४॥ ये है जैन धर्म उपकारी, इसमें जीवदया है भारी,

१०

अध्याय सत्रहवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ दिल्लीकी प्रतिष्ठा मंजरीके पदोंका अध्याय सत्रहवां लिख्यते। श्रीमत् शांतिनाथ जिनो जयति।

अथ संवत १९३५ माघ शुक्ला ३ तथा ५ कूं इन्द्रप्रस्थमें। लाला ईश्वरीप्रसाद मेहरचन्दजीने जिनमन्दिर प्रतिष्ठा तथा जिनबिंब प्रतिष्ठा भट्टारक श्री राजेन्द्रकीर्तिजीसे कराई। तिसमें अनेक मंगलीकोंके विधान हुए तब हरयेक विधानके पद भट्टारकजीकी मरजीसे प्रतिष्ठापाठके अनुसार यति नयनानन्दने बनाये। भव्यजीवोंने गाये बड़ा भारी महान उत्सव भया जहां भव्य जीव हजारों कोसतें आये। तिस मंगल महोत्सवके पद लिखिये हैं।

माघ सुदी ९ अंकुरारोपणके उत्सवका पद राग दादरा।

डाली डालीमें बो बो अंकूर, जरि एरी डाली डालीमें बो बो अंकूर सजनी। श्री जिनबिम्ब प्रतिष्ठा केरो, डाली डालीमें बो बो अंकूर ॥टेक॥

वेदी रचकर चौक पुरावो, चलो मण्डपके बहु दूर॥ जरी एरी० चलो मण्डपसे बहु दूर ॥सजनी॥ श्री जिनबिंब प्रतिष्ठा केरी। डाली डालीमें बो बो अंकूर ॥१॥ पूजाकूं पंडित बुलवावो। कोई भट्टारक मशहूर ॥सजनी॥ श्री जिनबिंब प्रतिष्ठा केरी। डाली डालीमें बो बो अंकूर ॥सजनी॥ श्री जिन डाली ॥२॥ क्षेत्रपाल दिगपाल मनावो। वाको भेट मंजूर ॥सजनी॥ श्री जिन डाली डालीमें० ॥३॥ धूप दशंग खड़े चढ़ावो, जिससे होवे विघन चकचूर ॥सजनी॥ श्री जिन डाली० ॥४॥ मन्त्र लिखावो नागर पानपे, घसो केसर अरु कपूर ॥सजनी॥ श्री जिन डाली० ॥५॥

अभिपूजा यो मेहरचन्दसे । देखो दूधकी धार अरूर ॥सजनी॥ श्री जिन ॥डाडीडा० ॥६॥ कुन्द खुशाबो उमदे हाथसे, करो श्री जिनजीका मथकूर ॥यरीयरी धरो श्री जिन ॥सजनी॥ श्री जिन डाडीडा० ॥७॥ धंधमायनका मान कराबो, देखो वस्त्र आभूषण भूर ॥सजनी॥ श्री जिन० ॥डाडी० ॥८॥ परथमी सबो अठाराकूंडे, चलो माही जैन हजूर ॥ सजनी ॥ श्री जिन ॥ डाडीडा० ॥९॥ यो पोषान अठारा भाखी, ये है सबमहि मंगल भूर ॥सजनी॥ श्री जिन० डाडी० ।१०। शांतिनाथजीके मंगल गावो, होवे नैनसुख भरपूर ॥सजनी०॥ श्री जिन० ॥ डाडी डाडी० ॥११॥

अथ माघ बदी १० वस्तुविधान हुआ ताका पद राग डगरा चला दे पहाडिया ।

गाऊं वस्तु विधान करी है प्रतिष्ठा मेहरचन्दने ॥टेक।

गाऊं दिल्ली नगरकी बडाईयां, कछु धर्मपुरेका बखान । करी है प्रतिष्ठा मेहरचन्दने, गाऊं वस्तु विधानकरी है प्रतिष्ठा मेहरचन्दने ॥१॥ सखी चहोरी दिखाय काऊं मन्दर, परथमी शांतिप्रभूजीका ध्यान ॥ करीहै० ॥ गाऊं० ॥२॥ बना मन्दिर नन्दिश्वरका, नोहै शिखर महान । करीहै० । गाऊं० । ३ । सखिनी ही कलशनी ही देखु है, यो वी लगा अनुमान ॥करीहै० प्रति० गाऊं । ४ । वाके मन्दर बने है पांचू मेरुआ, अरखो मन्दर भगवान ॥करीहै०॥ गाऊं० ।५।

सखि च्यारों दिशाके मन्दिर बन्दियों, तेरा चौका बावन जान करीहै० ॥गाऊं०॥६॥ सखि नई वस्तु सुघर कीजियो, आसाधरजीकी बान । करीहै प्र० ॥गाऊं०॥७॥ सखि लक्षोंकूं जहां तहां थापिये, कीजे ड्योढो दरबान ॥करीहै प्र० ॥गाऊं०॥८॥ सखि छप्पन कुमारी पूजिये, ये है देवी परधान ॥करीहै प्र० ॥गाऊं०॥९॥ सखि मन्त्रोंके आदर कीजिये, लिख लिख दोजे

नागर पान ॥करोहै म० गाऊं ॥१०॥ बसि संवत् दशोपके पैंतीसमें, दशमी तिथ पहचान ॥करोहै० गाऊं० ॥११॥ बसि माघ बदीमै यहै नैनसुख, हुवा वस्तु विधान ॥करोहै प्रति०॥ गाऊं० ॥१२॥ इति।

अथ माघ वदी ११ नांदोविधानका पद राग जंगला झंझोटी।

चलो माताजीका न्हवणकरण सजनी ॥टेक॥

श्री जिनराज गरभमें आये। घडियों दिवनहर सजनी, चलो माताजीका न्हवणकरण सजनी ॥१॥ चलोरी कुलाचलवासी सगरी कुमारीदेवी, मोतियन मांग भरन सजनी। चलो माताजीका० ॥२॥ चलो बडभागन बाई ठविक हालनी, निज निज नेग करन सजनी ॥चलो माताजीका० ॥३। अतर तरग जाके ले लयौरी उबटने, पुण्य अनेक वरन सजनी ॥चलो माताजोका० ॥४। सगरी बहन भाई, चलोरी सुहागन बाई। प्रभुजीके चरन परन सजनी ॥चलो माताजीका० ।५।

मन्दर चढियो लाला मेहरचन्दजीके, मंगल करच धरन सजनी ॥चलो माताजी० ॥६। रहियो पहेलो प्यारो दहन सनेही न्यारी, हितमित चित हरन सजनी ॥चलो माता० ॥७॥ नंदी विधानके मंगल घडियों, नैनानन्द भरन सजनी। चलो माताजीका० ॥८॥ इति।

माघ वदो १२ कलशारोपण दूजोरोपण जिन मन्दर प्रतिष्ठाकी तैयारीका पद राग भैरूं नर। धन ये घडी भैया धन ये घडी ॥

मेहरचन्दने प्रतिष्ठाकी तैयारी करी ॥टेक॥

अब गया जैन धरमका डंका, मलके विघ्न दूरीयाने खिपे भरी। मेहरचन्द्रने प्रतिष्ठाकी तैयारी करी, बसि धन ये घडी धन्य भैया धन ये घडी। मेहरचन्द्रने प्रतिष्ठाकी तैयारी

करी ॥१॥ अपने पिताकी आज्ञा पाकी, जो कह गए वो धारी करी । मेहरचन्द्र० । आजि धन ये घडी भैया । मेहरचन्द्रने० । ॥२॥ धन वह कूख धन्य वह माता, जिन जाये नरके हरी । मेहर० । धनि धन घडी भैया मेहर० ॥३॥ बावन मन्दिर कलश चढाये । धजा परमकी कीनी खडो । मेहर० । आजि धन ये घडी भैया धन मेहर० ॥४॥ जिन मन्दिर जिन बिंब प्रतिष्ठा । दिल्ली नगरमें जारी करी । मेहर० आजि धन घडी० । मेहर० ॥५॥

घर घर देव दुँदभी बज गई । चढ लग गई रतननकी घडी । मेहर० । आजि धन० । मेहर० ।६॥ हो गये घर घर आनन्द मंगल । मुक्त मुक्तकी पंडा टरी मेहर० आजि धन० मेहर० उमंग चले नैनानन्दसागर । दश लक्ष रूण्डपलारी गई । आजि धन० मेहर० ॥८॥

इति पद गर्भकल्यानका माघव हरि १३ कूं उच्छावहवा राग जंगलेका गीत ॥

उतर आयारी प्रभु गरभ मंझारी, है गरभ मंझारी । जगत सुखकारी, उतर आयारी प्रभु० । है उतर आयारी० है संमक आयारी, प्रभु गर्भ मंझारी ।

इतनी एक टेक हरेक दफे पढना तब आनन्द आयेगा ॥

इन्द्रोंके आठो सिंहासन कम्पे, इमें तो आवेरी याका अरज भारी । उतर आयारी० ॥१॥ सुरगोमें घंटे जपानक बजे, ज्योतिष घररी बोलेसिंह बडभारी । उतर आयारी ॥२॥ भवन पतोंके संख धुन घोरें, ढोल बाजेरी बितरोंके सुखकारी । उतर आयारी प्रभु० ॥३॥ मंदी सुगंधी पवन चले आठी, बरष रही गंधोदकको फुवारी । उतर आयारो प्रभु० ॥४॥ घर घरमें बरसे रतनकी धारा । बरष रहेरी सखि फूल फुलवारी, उतर आयारी ॥५॥

आज सखि मेहरचन्दके महरचन्दके। बोल रहेरी सब जीव जे जे कारी। उतर आयारी ॥६॥ शांतने अशांतता हरी जगकी। भयोरी नैनानन्दमें तो आऊं बलिहारी। उतर आयारी ॥७॥

इति गर्भ मंगल संपूर्णम् अथ माघ सुदी १ जन्म मंगलका उत्सव भया ताका पद राग बरवा॥

तू तो गोदमें खिला ले बरनार सुहागन। परमेश्वर तेरे घर जन मारी, तू तो गोदमें० ॥टेक।

मैं तो नहलाये प्रभू मेरुपे। ढरे सुवरण कलश हजार सुहागन॥ परमेश्वर तेरे घर जनमारी॥ तू तो गोदमें खिला० ॥१॥ पूजा कर्मोंके ये आरते। भर भर सुवरणा थार॥सुहागन॥ परमेश्वर तेरे घर जनमारी। तरा गोदमें खिलावे परनार॥२॥ तांडव निरत कियो प्रभु आगे। मंगल गान उचार॥सुहागन॥ परमेश्वर तेरे०॥तरा गोद०॥३॥ दाग फूलोंके मण्डप छाये। मैंने इन्द्रभवनके द्वार॥सुहागन॥ परमेश्वर तेरे०॥तू तो गोदमें०॥४॥ भट्टारकजीने मन्त्र पढे प्यारी। जिन आगम अनुसार॥सुहागन॥ परमेश्वर तेरे०॥तू तो गोदमें०॥५॥

चंवर छतर धर प्रभूजीकूं ल्यायो। चढ़ ऐरावत असवार॥ सुहागन॥ परमेश्वर तेरे०॥ तू तो गोदमें०॥६॥ ठाडे समूह खड़े ते द्वारे खड़े सब चहुदेवार॥ सुहागन॥ परमेश्वर तेरे०॥ तू तो गोदमें॥७॥ सुफल भयो नर जनम हमारा। सुफल भयो घरबार॥ सुहागन॥ परमेश्वर तेरे०॥ तू तो गोदमें॥८॥ सुफल भयो मेरे मातपिता कुल सुफल भई तू नार॥सुहागन॥ परमेश्वर तेरे०॥९॥ नैनानन्द बचन सु निपजे। लिये प्रभु गोद पसार॥ सुहागन०॥परमेश्वर तेरे०॥१०॥

इति जन्ममंगलम् सम्पूर्णम्।

माघ सुदी २ कूं भगवानने बालक्रीडा करी घोडारोहणका उछाव हुवा पाछने सुथाए सोडा छोटा पद । राग दादरा जंगल जिला झँझोटी ।

नाथ झूलें सखि मधुवनमें, नाथ झूलें आछो मधुवनमें । नाथ झूलें भव्य फूलें, नाथ झूलें आछो मधुवनमें ॥टेक॥

इन्द्रपालमें इन्द्र बनायो, मेरुरत्नके खम्भ पंचनमें । आछो मधुबनमें, नाथ झूलें सखि मधुवनमें । नाथ झूलें भव्य फूलें ॥ नाथ झूलें० ॥१॥ जिन दरशनको भाव बढाई, जेजी प्रभावनके अंगनमें ॥आछो मधुवनमें ॥२॥ चहुविध संघके मनमें भाई, करी प्रतिष्ठा धन ता ही छिनमें । सखि मधुवनमें ॥नाथ०॥३॥ नाना बहाडीके मण्डप छायो, चमके मानो जैसे दामि निघनमें । आछो मधुवनमें ॥नाथ० ॥४॥ बाजत ताल मृदंग बांसरी, फूले भव्य समान यन तनमें ॥ आछो मधुवनमें नाथ० ।५॥

आप झुलावें इन्द्रणी झुलावें गावें मंगल कन छुन्नायें । सखि मधुवनमें ॥ नाथ० ॥६॥ माघ सुदी दोयज पैंतसे, पाई है सो आनुन चपार धरनमें । आछी मधुवनमें ॥नाथ०॥७॥ नयनानंद भव्यजन लखूं आनि परे प्रभु शांत चरनेमें, सखि मधुवनमें । नाथ झूलें० ।

इति बालक्रीडा घोडारोहण संपूर्णम् । तप मंगलका पद महलोंसे निकसी जाय वुन्दावन ठाड़ा धनो इस चाहमें ।

लियो जोग गिरी जिनराज, कनाबो सखी सुमकी बरो । गये चक्रवर्त पद त्याग, वशी जगपुरनारी ।.टेक॥

गये तजे चुराशी लाख, तजे इतने रथरी । तजे मुकुटबंध नरनाथ सहस्रबत्तिस छतरी, लिया जोग० गए चक्रवर्त ।॥१ तजे तुरग कठारा कोडी तजी प्रभु नीति धरी, तये रतन चतुर्दश छोड़ । तजी सब रिद्धसिद्धरी, लिया जोग० गए चक्रवर्त०

॥२॥ तजि राणी छयाण दे हजार, तजी षटखण्ड धरी। लिये पंच महाव्रतधार, गही शिवकी डगरी। लियो जोग० गए चक्रवर्त ॥३॥ जिस वनमें धरचो प्रभु ध्यान, तहां सब विपत टरी। षट ऋतु फल फूले धान, भई वन सेठ हरी। लियो जोग० गए चक्रवर्त ॥४॥ अहि नवल भुजंग मृगाद, जि [illegible] पीरमिटो। हरे गऊं सिंह प्रतिपाल चुंघावे दूध खड़ो। लियो जोग० गए चक्र०। ५॥

सब जाति विधी जाय छिमा उरमांहि धरी, मानके तप पर भाव। परस्पर प्रीत करी, लियो जोग० गए चक्र० ६॥ तप कर बारह परकार, हरे उन चार अरी। उन केवलज्ञान पसार जगतकी व्याधि हरी। लियो जोग० गए चक्र० ॥७॥ आए मेरुनन्द वन इन्द्र लिये सेवा सगरी, सखि पूजे शांत जिनेन्द्र। चलो दिल्ली नगरी, लियो जोग० गए चक्र०। ८॥ सखि समोसरण मझार, भई अति भग मगरी। हरे नैननन्द गुणगान, धरे चरनन पगरी। लियो० गए० ॥९॥

केवलज्ञान विषे भगवानकी वाणीमें उपदेश सुना तासे स्वरूप ज्ञान भया सुहानस्था पद राग सारंग।

वानी खिरी प्रभु शांतकी, मेरी शांत भई सब पर हो। वानी खिरी प्रभु देख।

छुटि कुमाति कुमति जागी, मैं टूटी करम जंजर हो। वानी खिरी० ॥१॥ सब चेत दोऊ भिन्न हैं, जैसे छीरमें उदक नीर हो। वानी खिरी० ॥२॥ मांटीमें ज्यों कंचन बसे, मिल तेल ज्यों एक सरीर है। वानी खिरी०। ३॥ जैसे घट घट माहि, रहै अग्नि गुपत मेरे वीर हो। वानी खिरी० ॥४॥ मेरा मन जगमें मेल ना, नैन नमत तुम्हारा चोर हो। वानी० ॥५॥

काल बचा पुद्गल बचा रहे एक विकार नहीं रहो। वानी खिरी० ॥६॥ भूल्यो कर्मके भर्ममें रहे सबके तुम दुखगार

चन्दन अक्षत पुष्प चढ़ाये लडु नैवेद्य करारी। मैं आऊं० ॥११॥ दीप धूप फल अरघ संजो के, करी आरती भारी। मैं आऊं० ॥१२॥ माघ सुदी तृतिया पैंतीसे, करी प्रतिष्ठा भारी। मैं आऊं० ॥१३॥ अनेक पिताकी आज्ञा पाली, विछोमें को भारी। मैं आऊं० ॥१४॥ हूव्यो सफल सकल जीवनकूं, नैनानन्द उचारी। मैं आऊं० ॥१५॥ जिन मंगलकी, गरभ मंगलकी। जनम मंगलकी, तप मंगलकी। ज्ञान मंगलकी, मुकत मंगलकी। मैं आऊं० ॥

इति अथ प्रतिष्ठाकी बधाई रागनी भैरवी।

ईश्वरीप्रशादजीके मन्दरकी गावो अब तो प्रतिष्ठा बधाई सगरी ईश्वरीप्रशादजीके मंदरकी। गावो० ॥टेक॥

सखि गवर्मेन्टने हुकम दिया, लगो देखि कलाहिबको लगन भारी। ईश्वरीप्रसादजीके मंदरकी, गावो अब तो प्रतिष्ठा बधाई सगरी ॥१॥ सखि मेहरचन्दने सुजस किया, दई लोक प्रतिष्ठाकी डगरी। ईश्वरीप्रसाद० ॥२॥ सखि सुफल किया नर भव अपना, अरु सफल करी दिल्ली नगरी। ईश्वरीप्रसाद० ॥३॥ सखि मेरु शिखर रचि न्हवन किया, क्षीरोदधिकी बहुत भर भर गगरी। ईश्वरी० ॥४॥ सखि जैसिंहपुरेमें जब संघ चढ़ा, दा तीन लाखके जगमगरी। ईश्वरी० ॥५॥ सखि अन्दर बाहर प्रतिबिम्ब विराजे, देखो श्री मन्दर रह्या जगमगरी। ईश्वरी० ॥६॥ सखि चारों ओर पड़ी पहटन, रहा तीन लोकमें जस जगरी। ईश्वरी० ॥७॥ कहो दास नयनसुखने बिनती, पूरो शांतिनाथ प्रभू हे पगरी। ईश्वरीप्रसाद० ॥ इति।

यह पद भी भजन कल्याणकका है, इन्द्र प्रशंसा करे है जन्माभिषेक वास्ते कुमरी देश और मांडले।

प्रभू धन्य धन्य तुम धन्य धन्य तुम हो प्रभु इस लिये। जन्य तुम सम न अन्य आगमन दिखारो। प्रभु धन्य० ॥१॥

सुनिये जिनेंद्र मैं हूँ सुर सुरेन्द्र, ये हैं मम उपेन्द्र ये है सुर गजेन्द्र । कहिये जिनेन्द्र किजे न्हवन तयारी । प्रभु धन्य० ॥२॥ हो जगत भान, किरया निदान, मोह हयो पक्षात, सो धर्म ध्यान, सुरपति इशान, ये है संग हमारी । प्रभु धन्य० ॥३॥ सन्मतिकुमार, माहेंद्र सार, अरु सुर अपार, चयारों विरकार, मैं तो लेकै डार, तोरी सेवा उर धारी । प्रभु धन्य० ॥४॥ हे दीनबन्धु, हे दयासिन्धु, मैं मेरचन्द तोहि वंदि वंदि ल्यूंगा सहज कजे जग लखबारी । प्रभु० ॥५॥

नहीं करी देर, गये गिर सुमेर, पांडुक बनेर, पांडुक शिलेर लई आय घेर, ताको पूजा विस्तारी । प्रभु० ॥६॥ भरी क्षीर वारी कलशा हजार, प्रभु धोल डार, जिन गुण उचार कहि जै जै कार, अरु कीनी शिव वारी । प्रभु० ॥७॥ बदि मिष्ट बैन, हरि यात संन हरि सुदस जैन, अगे गोद दैन, भई सुखचैन, मानों फूली फुलवारी । प्रभु धन्य० ॥८॥ इति ।

यह पद श्री जिन स्तुति राग देश और मांझको ठुमरी हजूरी संकट हरण पद । अर्थ सिद्ध अरु विजयकूं करावे है संकट हरण पदोंमें कुछर हैं रोग शोग चिन्ता भय फंद मुकमा फांसी इत्यादिकूं तोडे हैं बार ८ नित्य पढ़े त्रिकाल अर श्यामो रात दिन १ व ७ वा १४ वा २१ निहायत ४० दिन परवान दिया हुआ है ।

प्रभु तार तार भवसिन्धु पार संकट मझार, तुम ही आधार दुख देखहार वेगी टाटो मोरी नैया । प्रभू तार० ॥टेक॥

परमाद घोर कियो हमपे जोर, भगवोत तार दिये मझमें बोर । तुम सम न और तारन तरैया, प्रभु तार० ॥१॥ मोहि दण्ड दण्ड दियो दुख प्रचण्ड कर खण्ड खहुं गतिमयें भण्ड तुम हो तरण्ड, तारो तारो सैंया । प्रभू तार तार० ॥२॥

द्रिग सुखदाय तेरो है दिदार, मेरो काट फांस, हर भवको त्रास, हम करत आस, सुहै जग वरैया। प्रभु दार० ॥३॥

आगे यह पद पंचकल्याणकोंके स्वस्ति मंगल है चौवीसी महाराजकी पूजाका, राग भैरवीकी ठुमरी।

स्वस्ति श्री ऋषभोऽजित सम्भव अभिनन्दनजीके पंचकल्याण। स्वस्तिश्री० ॥१॥ स्वस्ति सुमति अरु स्वस्ति पद्म प्रभु, देऊं सुपार्श्वके पद सनमान। स्वस्तिश्री० ॥२॥ वन्दूं मैं चन्दा प्रभुके पद पंकज, ध्याऊं सुविधजीके गुण पहचान। स्वस्तिश्री० ॥३॥ ध्याऊं मैं शीतल श्रेयांस सम नाऊं, वासवपूज्यजीका करूं सरधान। स्वस्तिश्री० ॥४॥ स्वस्ति विमल अनन्त धर्म प्रभु शांति मनाके करूं कुन्थु गुण गान। स्वस्ति० ॥५॥

अरह स्वस्ति अरु स्वस्ति मल्लि जिन, स्वस्तिश्री मुनिसुव्रत- नाम। स्वस्ति श्री० ॥६॥ स्वस्ति नमि अरु नेमि पार्श्व प्रभु, स्वस्ति श्री महावीर भगवान। स्वस्ति श्री० ॥७॥ जन यश प्रभु भव्य यह पाकर, घर घरमें बरसें नव रतन महान। स्वस्ति श्री० ॥८॥ जब भगवन्त प्रगट भये जगमें, टूटेंगे संकट सकल सहना। स्वस्तिश्री० ॥९॥ होंगे हजारह नयनसुख आगर, मांगेंगे परम सरब सबीन। स्वस्तिश्री० ॥१०॥ मंगल चौबीसों सरवोत्त वंदनकूं, कीजो नैनचन्दके सारे कल्याण। स्वस्तिश्री० ॥११॥

इति पद जिनदेव स्तुतिका, राग खम्माचकी ठुमरी।

सेवें जब सुरनर मुनि तेरा द्वार, सेवें जग०। तू है परम करुण आस मोक्षदो दिवैया, तोहि तजि अब जाऊं प्रभु किसके द्वार। सेवें जग० ॥टेक॥

अतुल दरशपन अतुल ज्ञान धन, अतुल सुख बलको न पार। सेवें सब सुरनर० तू है परम० ॥१॥ लाल उदर पति दरब भाव अति, चरन पर तनरजा पसारी। सेवें जग०

तू है परम० ॥२॥ तुमकूं नमाव माथा कौनकूं पसारूं हाथ, तुमको दिवैया दे सकाराननगार । ऐसे सब० तू है परम० ॥३॥ तुम बिन राग दोष देव हो सब नमोप, किये हैं पखोड़ सब हो पुकार । ऐसें सब० । तू है परम० ॥४॥ तुम सन्मुख रहे, तिनें नैनसुख भये, तुमसें विमुख रुले जग मंझार, ऐसें सब सुरनर, तू है परम, तोहि तजि० ॥५॥ इति ॥

हिंडोला छतीसी राग हिंडोलेकी मल्हार जिनमें मेहरचन्द-जीके हिंडोलेका वर्णन हो ।

दिल्लीमें प्रतिष्ठा परी भैना ढि न करी, जिनपे झुलाये श्री भगवान दिल्लीमें प्रति० ॥ टेक ॥

पंचमकाल कराल्में, जिसने किया ये उपगार । धरम जगाया जम्बूद्वीपमें, भारत खण्ड मंझार । दिल्लीमें० जिनपे झुलाये० ॥१॥ बरसर हारी धीर बनारसी, नहि मुनिवर नहि ज्ञान । जिसने दिखाया चौथा कालये । जिन दिये पंचकल्यान । दिल्ली में० ॥२॥ जिनये रचायो मण्डप बन किये, जिनये बनाया बाल गुलाल । जिसने बनाए चौसठ खम्भये, जिन कटवाई चन्दनडाल । दिल्लीमें० जिनपे झुलाये० ॥३॥ जिसके सजो चन्द्रोपकतने, लटकत मोतियन माल । लटकि रहेरी मरतक मणि तने, झूले हरित रसाल । दिल्लीमें० ॥४॥ जिस दिये बाजें मंगल दुन्दुभी । जिन पद राई जयजयकार, बरस रही रतननकी झड़ी । पड़ रही अमृत फुवार । दिल्लीमें ॥५॥

जिसके कारज जिसको पालकी, जिसके घूमेंरी मतंग । जिसके नगारे बाजें रसभरे, जिसके ये सजेरी तुरग । दिल्लीमें० ॥६॥ जिसने बुलाए लाखों भव्यजन, जिसने करो है मनुहार । जिसने लगाया चौसर चौक ये, जिसने लगाया ये बाजार । दिल्लीमें० ॥७॥ जिसने रची ये चौ बुर्जे रचे, जिसने रचा है मण्डप द्वार । जिसने रची ये दरपर घर धरे, तोरण

दिपत अपार। दिल्लीमें० ॥८॥ किसने बनाये द्वार शाबानरी किन ये चढाये कलश रतंग। किसके ए मंडे लगे असमानमें, फरकें उमंग उमंग। दिल्लीमें० ॥९॥ किसने की ; दशो ये नौबत झड़ रही, किसकी बजे है ये घटताल। किसका ये धौंसा धें धें धें करे, किसकी बजे है ये घड़ियाल। दिल्लीमें० ॥१०॥

किसके बजे है बीणा बांसरी, किसके ये बजे हैं सितार। किस जिस रंगी बर सर दर रहो, बज रहे यंत्र अपार। दिल्लीमें० ॥११॥ द्रिम द्रिम बजत मृदंगरी, तुम तुम करत तम्बूर। किसके मजीरे धुमकिट धुम करें, बज रहे किसके हजूर। दिल्लीमें० ॥१२॥ कोन दलाओ किसका बाग है, किसने बताया ये मैदान। किसका हुकम किसका राज है, कौन प्रतिपाला जुगमान। दिल्लीमें० ॥१३॥ किनये लगाई रविि फुलवारियां, किनये लगाया गुलशन अपार। किसने लगाया मोती मोगरा, किनये लगाई चम्पा डार। दिल्लीमें० ॥१४॥ किनये लगाई मरवन मालती, किनये लगाई बेलाबेल। महक उतारी वलणीके बहा। महक लागी एषमेल। दिल्लीमें ॥१५॥

जुहीरुजी सखोरी कलियां खिल रही, खिल रहा हार सिंगार। केवड़ा खिलेरी खड़ कलके छिपें, भ्रमर करत गुंजार। दिल्लीमें० ॥१६॥ डिल रही मैनाचन्दन मंजरी, झुकर है दाष अलार। किस लिए किसमें नज किस लग रहो, किसका लगा है दरबार दिल्लीमें० ॥१७॥ किन रही सोला नाहा बीचमें, किन ए लगाई रेशम डार। किसके येमूले ठाकुर पालने, दोलत सादर मोर दिल्लीमें० ॥१८॥ कौन झुलावे ये सेहरचन्द सायन्ट, कसूरी ये बड भाग, किसको इन्द्राणी भेंट दे रहो। धन धन इसका सुहाग, दिल्लीमें० ॥१९॥ मंगल गावे झांझ किन्नरें, निरत करत गण गंधर्व। चंदर टर तसे जेघु नाटें, हो रहा आनन्द पर्व। दिल्लीमें० ।२०॥

माघ सुदी तिथतीजकूं, करी है प्रतिष्ठा श्री जिन दीश। दिल्लीमें० ॥३२॥ च्यार सहस्र प्रतिमाजी पूजी, शांतिनाथ प्रमुखाय। तीन लाख आए भव्यजन कीना धर्म लगाय, दिल्ली में प्र० ॥३३॥ गरभ जनम तप मंगल करे, ज्ञानमुक्तके गुण गाय। माघ सुदी तिथि तिजकूं, प्रभूजीकूं किये हैं शुभाय॥ दिल्लीमें० प्रति० करी० ॥३४॥ नाम जता कुछ है यहीं, चढण पर रता भार। दास नयनसुख यों कहै, पढ़ियो सब नरनार॥ दिल्ली में प्रति० करी० ॥३५॥

दोहा—नंदो बिरदो जगतमें, धर्मचक्र जिनराज।
जैवंती बरतो सदा, सेवो भोर समाज॥३६॥

इति हिंडोला छंद सम्पूर्णम्।

इति अध्याय सत्रहवां सम्पूर्णम् ॥१७॥

अध्याय अठारहवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ जहां जहां अनेक नगरोंमें जैनकी रथयात्रा भई तिनके पदोंका संग्रहरूप अध्याय अठारहवां लिख्यते।

तत्रादौ चांपनेरकी पूजाके पद रागनी रायदेशी ठुमरी।

हूवो नित नित मंगल चार, जगिदसौ हूवो नित नित मंगल चारजी। नगर चांदला सु जयजयकारजी, हूवो नित नित मंगल चार॥टेक॥

कमलदल भगवान विराजै, जाकी महिमा अगम अपारजी॥ नगर० ॥१॥ नरनारनके भाग बड़े सैं, पूजा हूई सेदारकी

॥ नगर० ॥२॥ उपज्यो हरख नगरमें सगरे, हो रहे जैजैकारको ॥ नगर० ॥३॥ नैनानन्द नगरमें छयो । म्हारे गिरे करमके भारको ॥ नगर० ॥४॥

इति रागनी जंगला झंझोटी ।

पंथोंके भाग उजागर मिल गए गुरु नागर पंथोंके भाग उजागर ॥ टेक ॥

दांय बरसतैं गुप्त रहे प्रभु । प्रगट भये अब आकर ॥ मिल गए गुरु० ॥१॥ हाथमें कमंडल करमें पींछो । जीवदयाके आगर ॥ मिल गए० ॥२॥ रूपोंसवे तेईसका सुन्दर । सम्वत विक्रम पाकर ॥ मिल गए० ॥३॥ ऋतु बसन्त वैशाख सु कलकी । पांचों आठैं गाकर ॥ मिल गए० ॥४॥ नैनसुख यह नगर पांवठा । पार प्रभुका पाकर ॥ मिल गए० ॥५॥ इति ।

रागनी कहरवाकी ठुमरी ।

सुफल भई म्हारी आज नगरिया । टेक॥

दरश देख मेरे नैन सुफल भये, चरन परस मेरे शिरकी पगरीया ॥ सुफल० ॥१॥ पारश प्रभुका न्हवन करनकूं । भर भरि ल्याऊं क्षीरोदधिकी गागरिया ॥ सुफल० ॥२॥ बहुत दिवसतैं भटकत भटकत । आज मिली शिवपुरकी डगरिया ॥ सुफल० ॥३॥ नैनसुख प्रभुके गुण गावे । मेटो प्रभुजी भवभवकी गगरिया ॥ आज सुफल० ॥४॥ इति ।

अथ बसीतकी पूजाके पद । राग खम्माचको ठुमरी ।

आज शुभ दशा उदे भई म्हारी, हो आए पूजा निरखन कारन । नगर वसीत मंझारी, आज शुभ दशा उदे भई म्हारी । टेक॥

मैं तो भ्रमत अनादो, गयो एतो काल वादो । अब जागी है समाधी, सुखकारी ॥ आज शुभ० ॥१॥ तेरा विनता उचारूं, मान मायाकूं बिडारूं । सदा आरती उतारूं, प्रभुथारी ॥ आज

शुभ० ॥२॥ कहै नैनसुखदास, मेटो मेरा भवत्रास। हमकूं है आस तुमारी ॥ आज शुभ० ॥३॥ इति।

पुनरागनी झंझोटी।

झिलमिलके पूजा रचो रचा, पुर बडोतमें चन्द्र प्रभुकी। झिलमिल पूजा रचो रचो ॥टेक॥

नवशत एक हजार चौदपे, और मिलादो च्यारहरे। चैत्र सुदी दशमी पंद्रस, घर घरमें जै जै मची मचा। पुर बडोतमें चन्द्र प्रभुकी झिलमिल पूजा रचा रचो है मैं ॥१॥ रथमें बैठ चले प्रभुवनकूं, मुदित भये नर नारहरे। भरभर अंजुलि करें आरते, मानों सुरपति नची नचो। है मैं ॥ पुर० ॥२॥ दर्शन हेत देश देशनके, आए आओ दौरहरे। आप हो आप नची त्रिभुवनकी, आई लक्ष्मी खिची खिचो, है मैं ॥ पुर० ॥३॥ जग प्रताप सुन्यो जिनशासन, सुनि सुनि भये सु शिवाकरे। नैनानंद दयाकी सरके, हिरदे महिमा खची खचा है मैं ॥ पुरे० ॥ झिल० ॥४॥ इति।

बिरधनेकी पूजाका पद रागनी किशनलाल भाटकी चालकी।

यह पूजा निस्तारे, प्रभुकी पूजा निस्तारे। है जनम जनमके बन्धन तोडै, भवसागर तारे। टेक॥

हुई बरधनेकी पूजा भारी सुन्दर हुई सारे। है गुलद सुलदके जैनी आये बाजत नक्कारे॥ ये पूजा० ॥१॥ नरनारी मंगल गावें, आनन्द विस्तारें। है नृत्य करें अठ करें आरते पावन सब हारें॥ ये पूजा० ॥२॥ बाटैं दान करें तिन पूजा लाह धुवा भारें। है नैनानंद करै सब परजा जै जै उचारे॥ ये पूजा ॥३॥ इति।

बरनावेकी पूजाका पद चाल किशनलाल भाटका ठुमरी।

जिनदेवकी पूजा आय नगर बरनावेमें चलकै ॥टेक॥

हलके मिट गए कर्मदलके कट गए फंद मल गलकै।

जो फंसि रहा जगजंजाल रह गया हाथ ही मलमलके ॥१॥ जिन पूजे श्री भगवान मनाए मंगल पलपलके, वो हो गया जगसे पार। मिटा दिये दुःख भव वल दलके। जिन ॥२॥ जिन गाये मंगलचार, छोड़ दिये झगड़े छल कलके, वे हुए संत मशहूर जहां गये, भविजन हल हलके। जिन० ॥३॥ जिन ले लिए प्रभुको गोद रथमें चढ़, पंचोंमें रलके, सो हुआ नैनसुख भक्त-मराले बसत ही जल अलके। जिन० ॥४॥ इति।

शाहपुरको मूलनायक प्रतिष्ठा पद रागनी भैरवी।

ध्यानि विराजे जिन पदम जिनेशा। टेक।

तानगतीमें दुलभ सुलभकूं, गनिये सुलभा दुलभ खमेशा। ध्यानि विराजे० ॥१॥ भवबाधिक बाधनको तरसें, तातें हमरे भागपलेशा। ध्यानि विराजे० ॥२॥

दोहा—मनबल धनबल अंगबल नृपबल वृषबल हो। ध्यानि विराजे०। ध्यानि पराभग दिन। जिनेश० ॥३॥ श्वेत संगमय बिंब विहारी, ज्यों अकलंक निशेशा। पाप ताप निरखत ही भागत, ज्यों अहि निरखि खगेशा। ध्यानि० ॥४॥ जयकुमार पर करुणा उपजी, तिष्ठेता सुजरेशा। पंचन मिल मन्दिर चिनवायो, जै जै जै नमतेशा। ध्यानि० ॥५॥ अबकों तारू भवसागर सुगतू करम कलेशा। भव भवमें प्रभु तुमरी सेवा, चाहत नैनसुखेशा। ध्यानि० ॥६॥ इति।

दिल्लीका पूजाका पद राग परज।

म्हारे बिघन बिनश गए दूर, अजि ए जो म्हारे बिघन बिनश गए दूरजी। सुन सुन संस्तुति दिल्लीकीजी, म्हारे बिघन बिनश गए दूरजी ॥टेक॥

बहुत दिवसके चित हुलसायो, मेरे भए मनोरथ पूरजी। सुनसुन ॥१॥ दुजा कलश वेदीके आगे, लागो सुरग संपदा

दूरजी। सुनसुन०। म्हारे सुनसुन० ॥२॥ ऐरावत गजके चिरचारे, जैसे कोटिचन्द अरु सूरजी। सुनसुन० ॥३॥ नैनानन्द कहे करजोरे, म्हारे कर्म महागिर चूरजी। सुनसुन० ॥४॥

रागनी जगंला। कवाल लोगूंके गानेकी भेटके तौरपर जैसे। चुगलखोरने चुगली खाई अकबरके दरबार तुझे मैं दूंगा पटा। अरि दुर्जनका दुर्जनका देश। इस जगते मान घटा। इस चालमें। अब पद सुरू।

तरस तरसके नरभव पायो, आयो तेरे दरबार फिरीजी, कीजे बचा। अजि कर्मनसे कर्मनसे प्रभु पीछाजी मेरा वेगी छुटा दे ॥टेक॥

कुगुरु कुदेव कुलिंगी पूजे हंड्या बहू संसार परम गुरु तूही बचा, अजि कर्मनसे, कर्मनसे। प्रभु हो पीछाजी मेरा वेगी छुटादे ॥१॥ स्वारथके सब संगी देखे, बिन स्वारथ फिर आंयजी। बने नहि कोई बचा। कर्मन० ॥२॥ बिना तुमारी शरण प्रभुजी कामनके अनुसारजी, चतुर्गतिमांही नचा। कर्मनसे० ॥३॥ कहे नैनसुख दास दयानिध, चित्त चकोर चनिहार, तेरे चरनोंमें रचा। कर्मन० ॥४॥ इति।

अथ भजन निरञ्जनका पद लिख्यते। राग देश विहाग परके जिल्लेकी ठुमरी।

भजनसे रहि ध्यान प्राणी। भजनसे० ॥टेक॥

भजनसे इन्द्रादि पद हों चढत वेटि विमान, भजन होवे होत हरि प्रतिहरी चक्रि बलवान। प्राणी भजनसे० ॥१॥ भजनसे षटखण्ड नवनिधि होत भरत समान, तिरे भवसागर तुरत कटे पापको अवसान। प्राणी भजनसे० ॥२॥ नवल सूकरसिंह मर्कटकरि भजन करधान, भए वृषभसेनादिक गणगुरु भजनके परवान। प्राणी भजन० ॥३॥ भजनसे भर पूग

मुनिगन गोतमादि महान, भजन ही से तिरे भोद जटायु मोरक स्थान । प्राणी० ॥४॥ कहत नैनानन्द जगमें भजन समन निधान, मर भजनसे अरहन्त सिद्ध आचार्यगण निर्वान । प्राणी० ॥५॥ भजनसे रहिये ध्यान, प्राणी भजनसे रहिये ध्यान ॥५॥

इति अष्टादशमोऽध्याय सम्पूर्णम् ॥१८॥

अध्याय उन्नीसवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

अथ सुरेन्द्र नाटकके पटनिश्चय पदोंका अध्याय उन्नीसवां लिख्यते ।

अथ भजन स्थापन हेतोः मंगलाचरण । दोहा ।

बीत्यो काल अनन्त ही, आवनहार अनन्त, वर्तमान ऋषभादि जिन, नमूं अनंतानंत ॥१॥ वंदु गुरु निर्ग्रन्थ सब, दया सिन्धु अणगार, जिनके शत्रु सुमित्र अरु, राव रंक इकसार ॥२॥ निकसी मुख सर्वज्ञते, जो धुनि गुण गम्भीर । इष्ट वानि ताकूं नमूं, हरो हरो भवपीर ॥३॥

कवित प्रतिज्ञा दोहा ।

अब सुरेन्द्र नाटक चूं, प्रगट्टं जिनकल्याण । समय समयके राग अरु, समय समयके गान ॥४॥ भजन कियौ ते तिर गए । बिना भजन करि खेद, यौंही बकि बकि मरि गए । पढि पढ च्यारों वेद ॥५॥

अथ गंधर्व शिक्षा । दोहा ।

तीन ग्राम अरु सप्त स्वर, ताल भाव करि शुद्ध, विनयसार हित परमाद तजि । गावो भजन सुबुद्धि ॥६॥ प्रथम अकार्य

उचारिए, मंद मध्य प्लुत टेर, उतरि उतरि चढ़ि चढ़ि उतरि। बार बार स्वर फेरि ॥७॥ बैठो गोद्दो मोदके, निर्भय सिंह समान। ताल चूकि स्वर चूकिके, मत कहियो बुद्धिवान ॥८॥ स्वरमें घुली कर तालके, समते लेहु उठाय। अष्टक समा कवि द्रिष्ट धरि, गावो चित उमगाय ॥९॥ चिरन बढ़ावो तालमें, खिल्लावो मति बोर। मटको मति पटको न पग। रहो धीर गम्भीर ॥१०॥

अथ श्री ऋषभ जिनगर्भ रास मंगल बधाई रागनी भैरवी तथा ख्याल धनाश्रीमें भी फिर चलती है। नाभिराजाके मरुदेवी स्वप्न फल पूछे हैं।

सुनियौं गरीब निवाज, सुनियौं गरीब निवाज। अरज मोरी सुनियौं गरीब निवाज ॥टेक॥

मैं जुगलनि तुम जुगल हमारे, कुलकर जुगल शिरताज। अबकि बिबिधि कबहि फिरि संक्रित [illegible] निशि सहित रात। अरज मोरी सुनियौं गरीब निवाज ॥१॥ बरषत रतन नगरमें घर घर आनंद भए पट काज। सोलह सुपन आज हम निरखे, कौन निमित्त किह काज। अरज मोरी० ॥२॥ इन सुपन हम ऐसो निरख्यो, भाखत लावे लाज। कहत धरयोग रस राज सुपनावलि, भाखो फल महाराज। अरज मोरी० ॥३॥ कहत नाभि सुन मुनि बड़भागन, भावी सुत जिनराज। गर्भ बसे सुनि त्रिगुण सुत आए, गयो भरम सब भाजि। अरज मो० ॥४॥ इति।

अथ श्री ऋषभ जिन जन्म मंगल बधाई रागनी भैरवी तथा ख्याल धनाश्री।

अवधिपुर आज कुलाहल भयो, हे अवधिपुर आज कुलाहल भयो ॥टेक॥

तजि सर्वार्थसिद्ध परमातम दायक देव चयो, नाभि नृपति मरुदेवीके मन्दिर आ अवतार लियो। यों अवधिपुर आज

कृतार्थ भयौ ॥३॥ रंक भये धनवन्त जगतमें करणके लेश लह्यो, नर्कनमें नारके सुख पायो, मोपे न जाय कह्यो। हे अवधिपुर आज कृ० ॥२॥ जो अनन्त त्रिकाल चतुगति भ्रमि मूढ भयौ, सो आनन्द नयन हम निरखे आदि जिनेन्द्र जयौ। यो अवधि-पुर आज कृ० ॥४॥ इति।

अब श्री जिन जन्माभिषेकार्थ चतुर्निकाय देवागम वर्णन लावनी पलू बरवा।

चले सुरासुर सकल अवधिपुर श्री जिन जन्म न्हवन करनें ॥टेक॥

हुकम सुधर्म सुरेन्द्र चढ़ायो अपने निकट कुबेर बुलायो, श्री जिन जन्म वृत्तांत सुनायो। सकल सम्पदा धार हमारे धार करो ऐसी करनें, चले सुरासुर० ॥१॥ चले कल्पवासी सब देव, चले भुवनपति करने सेवा, जोतिष अरु व्यन्तरि सब भेवा। चौबीस अरु चालीस दोय बत्तीस इन्द्र चाले शरनें। चले० ॥२॥ सेना सप्त सप्त विध ल्याए, गज घोटक रथपति सजाए। वृष गन्धर्व नर्तकी धाए, घन घन गगन मंझार। हो जे जैकार सो महिमाको करनें, चले सुरासुर० ॥३॥ नागदत्त ऐरावत सुन्दर सो सजिके ले प्रथम पुरन्दर, गए अवधि नृप नाभिके मन्दिर माया निद्रा रची। रे प्रभु शची, लगा जब कर धरने। चले सुरासुर० ॥४॥ लोचन सहस्र सुरेन्द्र बनाए, निरखि हरख उरमें न समाए। मस्तक धरी प्रभु चरण छुवाए, उमगि नयन सुख भाय हृदय लिपटाय। करो संस्तुति करने, चले सुरा० ॥ इति।

अब जिन जन्माभिषेकार्थ सुरेन्द्रने जिनेन्द्रकूं गोदीमें लिये सुर गिरपे ले जानेकूं तयार हुए तिस प्रमोद नाटककी स्तुति रूप ठुमरी पीलू बरवा।

भयो पावन आज जनम हमरो भयो पावन आज, हे जनम

हमारो तन मन हमरो। भयो पावन आज जनम हमारो, भयो पावन० ॥टेक॥

अब सुरेन्द्र पदको फल पायो, आनि कियो दर्शन तुमरो। भयो पावन आज जनम हमरो० ॥१॥ बिन तुम भक्ति वृथा खोये दिन, जामें को अरिथ न हमरो। भयो० ॥२॥ तुमसे बरते सेवें सुरगण तातर काई न दे हमरो। भयो पावन० ॥३॥ अब मैं अमर यथार्थ कहायो, करतो क्या दुर्जन जमरो। भयो पावन आज० ।४॥ ध्येय जिनेन्द्र सुरेन्द्र पदवी राज पदवी सुर गिरपै अमरो। भयो पावन० ॥५॥ पढियो द्रिग सुख जिन गुण मंगल, हरियो भव भवको भमरो। भयो पावन० ।६॥ इति

अब सुरेन्द्र कृत गजदन्तोत्सव बधाई रागभैरू नर तथा जंगला मिली हुई ठुमरी।

शुभकी घडी मैय्या शुभकी घडी, बोलो बारबार जै जैकार शुभकी घडी ॥टेक॥

तीर्थंकर अवतार लियो अब रहेंगे नैय्या महलनमें पडी। बोलो बारबार० ॥१॥ भवसागरकी अटक मिटा लगी होंगे बेडे पार, मत रखो अडी। बोलो बार० ॥२॥ बरषा यो पद रतनों सम्पदा जागी, लुटा दो भण्डा भर भर घडी। बोलो बार० ॥३॥ घर घर करो रतनकी बर्षा, नगर नगर अमृतकी झडी। बोलो बारबार० ॥४॥ गावो नाचो पर भावना बढ़ावो, नाचो नचैया गजदन्तपै खडी। बोलो बार० ।५॥ सुनि सुनि भाव दिखावो सुर सुन्दरि, अधिक रचैय्या रंग रंगली भरा। बोलो बार०॥६॥ भर भर अंजुलि अर्घ उतारो, वारो प्रभुपै मोतियोंका लडी। बोलो बार बार० ॥७॥ गगन स्तवे यह बडा धनभाग, नैन द्रिग नैन धन आज हो पडी। बोलो बारबार० ॥८॥ इति।

अब सुमेरु पर्वतोपरि पांडुक वन संस्थित श्री ऋषभ जिन

जन्माभिषेक समये सुरेन्द्र कृत भक्ति। रागनी देश गौंडकी पूर्वकी ठुमरी।

जन्मे जिनेन्द्र आप सुरेन्द्र, ले गए गिरेन्द्र, पांडुक सनेंद्र थापे शिलेंद्र पीठेन्द्र विछायो। जन्मे जिनेंद्र ॥टेक॥

तजि तजि विमान सुर आनि आनि दियो नभ समान। मंडप वहां तान छवि निरखि हरखि, अमर मन भयो। जन्मे जिनेंद्र० ॥१॥ जामें लगे झाड, मोतियनकी माल, गावे देवबाल, जिन गुण विशाल, लखि समय काल सुरपति फरमायो। जन्मे० ।२॥ सोमो सुरेन्द्र सोमो चंद्र सोमो धनेंद्र सेवो यह जिनेंद्र आयो सूर्य चन्द्र छीरोदधि जल ल्यायो। जन्मे जिनेंद्र० ॥३॥ रचि असंख्यात पेढ़ी विख्यात सब एक साथ, पुलकंत गात। हाथोंहाथ कलश ल्याए, लोजे न्हवनो न्हावो। जन्मे जिनेंद्र ॥४॥ करि भुज हजार, पढ़ि मंत्र सार। सब कलश ढार, दिए कई ही बार पड़ी धारा झघझम भई छटा ल्यो छायो। जन्मे जिनेंद्र ॥५॥ या जिन प्रसंग, भई जैन गंग प्रगटी अभंग। उछरी तरंग, लई सुरन अंग। आई गंगा नित ध्यायो। जन्मे जि० ॥६॥ यह अति विचित्र गंगा है मित्र सुनके चरित्र चित्त हो पवित्र, चितवित नयन सूं द्रग सुनहि पायो, जन्मे जि० ॥७॥ इति

अथ—इन्द्राणी सुरादि देवका जन्माभिषेक करि के कलशा-चल पर जुगकी आदि में कर्मभूमिकी रीति चलावनेके अर्थ भगवत के अंजन मंजन वेष आदि करि शृंगार करें हैं। राग जंगलेकी पक्की ठुमरी।

वांकी [illegible] वेणी वांको कजरा, इदरानी प्रभुओं के वेणी। वांको कजरा। टेक

ए तो चार ध्यान जल निरखत, मैं खेऊं प्रभु भक्तिभरा। इन्द्ररानी प्रभुओंके वेणी ॥१॥ ए तो निर्दूषण अंगभूषण, अग निरवारन जन्म धरा। इन्द्ररानी ॥२॥ हम तुम संसारी सुन

बछा गोदी लेलेरी। कहा सोवे, हे गोद० ॥१॥ जायो जगत जन्यों त्रिभुवनपति मचोरी ढङल। बल्ल गोदी लेलेरी, कहा सोवेस० ॥२॥ मिट गई जुगल जनम परिपाटी। मचोरी। इकला बछा गोदी लेलेरी। कहा सोवेस० ॥३॥ घर घर माता त्रिगानंद छाए। मच गई इकाबल्ला गोदी लेलेरी। कहा सोवे० ॥४॥ हे गोदी० इति ॥

अब श्री जिन जन्म समये प्रश्न बोध हर्षित माता पिता प्रति बधाई रागनी जंगला झंझोटी ठुमरी ॥ पूर्वोक्त चालमें जाननी ॥

ते राजं वो सुत ऋषभ जगत जननी। तेरा जीवो सुत०। हे जगत जननी भगवत जननी। तेरा जीवो सुत ऋषभ जगत जननी टेक पूरी कहनी ॥

जीवो तेरा कर नाभि नृप नागर, जायो तैनें पुत्र सुगत जननी। तेरा जीवो, हे जगत जननी ॥१॥ शिव जागरको करन उजागर, सब जन इष्ट जगत जननी। तेरा जीवो। हे जगत। भग० ॥२॥ नर्कादिकमें मिटी वेदना, ज्यों तप चन्द्र उगत जननी। तेरा० हे जगत० ॥३॥ गई असाता भई साता त्रिभुवनमें, निरखत हर्ष पगत जननी। तेरा जीवो सुत, हे जगत० ॥४॥ बरखे पुष्प सुधा रस घर घर, कोई न रत्न चुगत जननी तेरा। हे जगत०। भगवत० ॥५॥ त्रिग सुख मुक्ति कपाट जब टूटी। हरखे भव्य जगत जननी तेरा०। हे जगत। भगवत० ॥६॥

अब जिनेन्द्रके पिताजीको सुरेन्द्र जगावे है और माता भई निद्रा दूर करनेकुं स्तुति करे हैं जंगला झंझोटी ठुमरी ॥ चाल तड मारे नजरिया राम ॥

अब सुख निद्रा निवारो महाराज, तुम उठो दिवानंद पुत्रकुं लिया ल्यो रहामो। अब सुख निद्रा० ॥टेक॥

एक तो प्रभु तुम तीन ग्यान जुत दूजे जनम, मनु महाराज। तीजे त्रिभुवननाथ तात तुम, चौथे सकल जुगल सिर ताज। तुम उठो पितामह।१।। जनम्यो परमेश्वर तुमरे घर तुम चीनो तजि राज समाज। ज्यों मुनिराय करे निश्चल तप, त्यों निशदिन क्यों हो गए आज। तुम उठो पितामह ।।२।। असम नींद इस अधम कालमें करो जारी तुमने महाराज, जागो जागो निरखो सुतको मुख। मन चिंते सब होंगे काज, तुम उठो पितामह ।।३।। लागे तात बधाई आना, पुलकित गात चले जिनराज। काल अनादि सकल दुख त्रिग सुख गए, एक ही छीनमें भाज। तुम उठो पितामह० ।।४।। इति ।।

अथ श्री जिन ऋषभदेव जुगादि जिन जनम समये कर्म भूमि व्यवहार प्रवर्त नाय नाल काटन माता पिताका अभिषेक करण। जिनदेव पुनर्हृदण।। तालवादेन घुंटा चूंघावन तांडव नृत्य करण मङ्गल स्नानाचरण। पालने झुलावन तदुपरि इन्द्रादि देव स्वर्ग गमन इत्यादि वर्णन हेतो। ख्याल कल्हा मल्लारमें कडे लिख्यते ।।

अथ ख्याल शहले कडे मंगलाचरणका ।।

प्रथम नमूं मैं देव जुगादिको जो भए प्रथम करके अवतार। तीर्थंकर पद धारिके। अति भाने बतलाए सृष्टिके व्यवहार ।।१।। फिर मैं बताऊं प्रभुके जन्मको, महिमा रही जो कछुक अब शेष। मात पिताका उनके इन्द्रने, किया जा अजुध्यामें अभिषेक ।।२।। दौड़ ।।

सुन लो ज्यों पंचो किया इन्द्रने विचारयों, अरु गया चौथ ए तृतीय आरा काल। मिट गई जुगल जनमकी तो रीत अब ।। अरु भैया मिट गई भोग भूमी चाल ।।१।। अब वो दो ह्यां बीज। जुग किया सारे जनमते, अर जिनके माता पिताका रजते काल। कौन वो नहलावेको झुलावे उन्हें पालने, अजि

खिले हैं अशोक बेशुमार ॥३॥ खिल गया केवड़ा कपूरी अरु जाफ्रानीयां, अरु उठा मारुत सामानाम हकार। पकि रही नारंगी कपूरीके जे झुकि गए, अरु अंबे दाडिम आंब गुच्छेदार। ॥४॥ बिचरें हैं सारस पिरा दमो तूतियां, अरु मोर मैनाओ रहे हैं चहकार। कूंकेकारी कोयलकूं ओ नेवेले दे हिए, पेऊ पीऊ कर सब पैयाजी पुकार। ५॥

भर गए होद मकरंदोंओ गुलाबके, अरु छुटे पचरंगे फवारे गुलदार। बेठकोंमें बैठेओ बालक विद्या पढि रहे, अरु बटें द्वारे द्वारे औषधी अहार।६॥ द्वरे द्वारे राजाओ प्रजाकूं अभंकरि रहे, अरु जहां तहां मुनि बैठे संजम धार। कहीं राजभोग कहीं प्रभुधन ध्यानमें अरु करें पूरव भवोंमें तपसार ॥७॥ ज्योंका त्यों चरित्र प्रभूजाओ सुरेन्द्रनें, अरु चित्र पटामें दिखाया चित्र सार। ऐसी बसी भांति सबके मंदों मोनकूं, अरे मंदा हर्ष दिया भावी लोर कुमार ॥८॥ इति।

सर्द्रऋतु प्रथम भवन वर्णनम्।

अथ हिमऋतु संशोक द्वितीय महलका शोभामें सुरेन्द्र कृत दिक्रिया कार्तिक अवहन रवारू छन्द व.ड्डामकल्यान।

हिमऋतु महलोंमें गुलाबो सर्दी छा गई, अजि यो तो लगे जी सभीकूं सुखदाय, याही यो तो होवे कातिक अवहनमें उदे। अजि यो तो सब जीवनके मनकूं भाय। टेक पद्दो ॥

हिमऋतु पाई जी अन्धेरी छई गगनमें, अरु लगो महलोंमें तारनकी जगा जोत। उद लाग सूरज चन्द्रमा जहां देखिये, अरु देखे संध्या सुनै होतीका उद्योत ॥२॥ बुध गुरु शुक्रके सितारे देखे ऊगते, अरु शनि भौम राहु केतु अस्त होत। दीखे सब कोगनी नक्षत्र अश्वनी प्रमुख, अरु पुष्य श्रवण, विशाखा मलखोत ॥३॥ दीखे ध्रुव अचल समात हस्त स्वाति चित्रा, अरु दीखे रेवती नक्षत्र लेर गोत्र। हरित अंकुर फफूक

जिनपे कलोंकी लगी हैं कतार ॥२॥ कहीं पुष्पराज लगाए हैं फरसमें अरु चन्द्रकांतकी ए रोशन अपार सूर्यकांत मणिकी खिली हैं किरणावली अरु जहां भानुकी नहीं है दरकार ॥३॥ रच दिये फटकमईली मंदर सोहने अरु फूलवारीके बनाए गुलशन कयार पीरी पीरी केशरकली जिनपे खिल गए अरुदेवे फूल बरषोंके जीवहार ॥४॥ फूल गए अब अनार सौलो मालती अरु भैया कूदत कोयल बारबार बज रहे जनमृदंग बाजे बांसरी अरु कहीं बाजे डफ़ढ़ल सितार ॥५॥ कोई गावे भैयाजी बसन्तो मधु माधवी अरु कोई मालकोस बसन्त केदार कोई गावे सहं लिघु भैरवी मूपालीनट अरु भैया हो रहे प्रभुके जै जै कार ॥६॥

इति बसन्त भवन शोभा समाप्त ।

अथ मंध्या ऋतु सदृशीक पंचम भुवन शोभा सुरेंद्र कृत बिकिया केशरी ज्येष्ट महाराज बाग सांब ते रची पंचम भवनमें ।

पखे लगि गए आजि भैया खसके चंगले दिये हैं छुटवाय हरे हरे भैया तंबू तन गए अरु हरा लगी हैं कना तीको करतार ॥१॥ चाल कहीं दोहो ।

लेवडे गुलाबोंसे भराई इन्दर बावड़ी अरु भरवा दिये तलैबा सागर ताल सरवरोंकी नहरोंमें बोतरफ बंबे छुट गए पौर जिन बैठेखो हैं हंसरु मराल ॥२॥ हरी हरी दूबें सहनोंपे सोभा दे रही अरु नारंगी फलोंकी झुका डाल हरे हरे पत्तोंको महराबे महलोंकी बनी अरु जिनमें हरी हरी बना चंदवाल ॥३॥ हरी हरी अटारी हरी हरी बन गई, चांदनी अरु बिछ गए हैं फरश हरेलाल हरे हरे वृक्ष हरी हरी बेलें झुक रही अरु जिनपे हरे हरे तोते करे प्यार ॥४॥ हरी हरी समार्में निरत जहां हो रहे अर जहां हरी हरी नाचे सुकुमार, हरे ही गवैया गावे हरी हरी रागनी अरु करे किन्नर गन्धर्व अपार ॥५॥ ऐसो भांत बिकिया प्रकाशीजी सुरेन्द्रने अरु सोवर शरद प्रथम

दीखें चार तारी तारी धूपोंमें वे बादक छाया कर दई। अरे भैया! ए हैं प्रभुजीके पुन्योंका संसार पंखे लग गये अ० ॥६॥

अथ वर्षाऋतु प्रदर्शक वर्षा भवनोंकी शोभामें सुरेन्द्र कृत विक्रिया ॥ भामल्यो बाग रमाय लेलदो ॥

वर्षा भवनमें भाई वर्षा शुद्धि रही, अरे भाई कारे कारे उठे हैं अंबर ढकदार। दामिन दमके गरजे घन घटा, अरु अमृत गंधोदककी फुवार ॥१॥ दोउ ॥

बंगले टपके अरु टपके केलेके पडे, अरु टपके दाडिमो सरीफे सहकार। चन्दन टपके जी टपके सोता मोगरा, अरु जामें टपके हैं हारसिंगार ॥२॥ छोटा छोटो नालियां चलेंगी लहरावती, अरु जामें गुरके रहे हैं झणकार। तूती तूती बोले जामें तूती मीठो बोलियां, पीऊ पीऊ करत पपैया जो पुकार ॥३॥ घरर घरर घन जावे जब गरजते, अरु बाजे सनन सनन की बयार। चले पछ वैया पर वैया जब झरंटे, अरु छाती दीखेकी महलोंमें पछवार ॥४॥ ऐसी ऐसी शोभा वरसाकी जहां बन रही, अर बरसावे भैया नेव बहार। गावे गन्धर्व अखाडे सब सजि गये, अरु गावे किन्नरी इन्द्राणियां मलहार ॥५॥

सुंदर बजावे हैं तूंबरे वीणा बांसरी, अरु बजे बहन फोरी सहनार। सजि गये महल राजाके सब दिख गई, अरु जापे छायो सिंह आसन सिंगार ॥६॥ कल कल गगनमें डट गये देवा देवता, अर डट गये जुगलोंके ठठवार ॥७॥ किया अभिषेक जापेमें भगवानका, अरु तासूं पलेको दाईको करवहार। दिये राजाजीके सब टेरले सुरेन्द्रने, अरु इन्द्र रानीने जपेके संगल धार ॥८॥ निज निज थोतनि योगन सब कर रही, अरु कोई अंदर कोईने किये बार। ऐसी विधि कियाकी नहवन भगवानका, अरु किया न्यारा न्यारा सबका सिंगार ॥९॥ इति

गये छत्र सिंहासन गहां बिछ गई। अरु होवे राजापे चंवर फटकार, अवधिपुरीमें थांपे जुगलोंको आंदमें। अरु वहां आंदके मनुवाए दरबार ॥१८॥

इति दर्पा भवन। माता पिता अरु भगवंतका न्हवन समाप्तम्॥

अब अर्कंठित देवता अरु समस्त जुगल जुगलको जिन दर्शनाभिलाषी वहां कथाश बाहार लावना भगवंतकूं बनाने दिठावना प्रजाकूं दर्शन करावना घूंटो देना इन्द्रका तांडव नृत्य करना और समकालको वहार दिखावना। समुत्र वर्णनमें सुरेन्द्रकृत नाटक यहां पा थांव लेश्यो॥

अब माताजी मन मनवे पिता, अजि जिनके जनम भरे श्री भगवान। अजि जिनके बा‍पे चतुर्विध देवता, आवे करनेकूं जन्म कल्याण॥१॥ चटेंगो चतुर्विध देवता, अरु चढे भैया इन्द्र शतेन्द्र। नाभि नृपतजीके संगहा अरु भैया गये वे माताको लेने सहित जिनेन्द्र॥२॥ दोह॥ अरज गुजारीजो ड्यटपे सुरलायने, धाति जग जननी पधारो दरबार। अहो जग जननी दिखादे अपने पुत्रकूं, अजि थारे द्वारपे खडे हैं सरकार।॥३॥ पूर्व जनममें तेने किया तप स्वामिनी, अरु तेरे दर्शनोंकं खडे इन्द्र द्वार। तेने माथा पाता है परम दश लाक्षणी, अरु तेने धारा नाता शोलका विचार॥४॥ पाले तेने दुखित जनोंका दया धारके, अरु किया सुखित जीवोंका उगार। करी अर्हत शिव पंथकी प्रभावना। अरु दिया साधू संतोंका ते अहार॥५॥

दिये महा दान संतोषा सबको कामना, अरु भया भोग भूमें तेरा अवतार भई तू तो दानके प्रभाव भारतखण्डमें। अरु राजा नाभिकी भई है पटनार॥६॥ पाए तेने दानके प्रभाव कल्प वृक्ष ए, अरु मन वंछित भोगूंके भण्डार। आगे तुम जावोगे दोनूं ही सुरलोकमें, अरु होके देव ल्योगे नर अवतार॥७॥ भर भर संजम हरोगे सब कर्मकूं, अरु तुम

आवेगे मुक्तिके मंझार। जाया तेने पुत्र सुपूतो ऐसा जगतमें, अरु कोई जनेतो जनेगी तोकीनार ॥८॥ इतनी अरज कीज्यो अब भागनी। इस जंबू भरत क्षत्री खरड मंझार, बीत गयो काल ठारा कोडा कोडी सागरा। अरु ह्यां तो भयाना जिनेन्द्र अवतार ॥९॥ सारे भोग भूमियों भेगूं मैं गल्ता रहे, अरु नहिं धराह्यां काहूने व्रत धार। नहिं जाना मर्म किसीने जिन धर्मका, अरु नहि जाने कोई श्रावग अचार ॥१०॥

लिया अब जनम प्रभुने तेरे गर्भसे, अरु ए तो मारग चलावेंगे सार। धर्म मर्मको बतैया मैया ते जन्यों, अरु तू तो सुफल भई है संसार ॥११॥ जीवो तेरा कंत पिता भगवंतका, अरु तेरा जीवोए सपूती पुत्र सार। इतनी अरज मेरी सुनले तं अंकरी। अरु तेने जायो है धरम अवतार ॥१२॥ तेरे दरशनको आये हैं देवी देवता, अरु माता आये हैं चारूं ही परवार। किया तेरे पुत्रका न्हवन सुमेरुपै। अरु तेरे पतिका किया है शृंगार ॥१३॥ बट रहे दान बधाई तेरे द्वारपे। अरु बांटे माता तेरे खजा भरतार, बांटे मन भाई सो बधाई तेरे पुत्रकी। अरु बाहै बहा बिरछ डोगो हार ॥१४॥ इतनी अरज मेरी सुनले अब भागनी, अरु दिया ऊठ मरा जाने पर प्यार। जावो मेरो प्यारो परजाको पूरो भावना। अरु तेरे पुत्र को पधारो दरबार ॥१५॥ सुन ऊठ बाई न समाई फूली अंगमें। अरु किया उछाह इन्द्र राणीने सिंगार। निज निज नेग सुहागन सब कर रही, अरु सेवा करे सब छपन कंवारी ॥१६॥ चौंरपुरा बैंको उजारे देवी आरते, अरु गावे नाचें देवी करें संगत बार। तीयल पहराईभी मातकूं सुगं कोरबी, अरु जामें जड़े हैं रतन भैयाजी बेशुमार ॥१७॥

अथ माता महारानी जताका शृंगार। ख्याल।

धन्य जिन माता धन्य महावती, जिनको कूखमें सो

भगवान । जिनके तो शीशकूं सिगारैं धर्मको, अजिवे तो जानैं जगजीवनकूं पुत्र समान ॥१॥ चाव ॥ प्रथम लगाईजो माताके तनमें स्वर्गकी, अजि इन्द्रानीने सुगंध अपार । गजरे बनाये फूलोंके देवी देवता, अरु जिनमें रहैं मोठी मोठी महकार ।२॥ मेंहदी लगाई चरणोंके इन्द्र राणियां, अरु दर घोते हैं मंगायके महार । चन्दन केशर अर गंगा मंगायके, अरु घोते हीयकके पल्ले गुछेदार ॥३॥

माथेपे दिन्दी मुख जोताजी अबीरकी, अरु पोये मोती बाल बालमें सुधार । माथेपे मुकट झलके हिरणाकटी, अरु वे तो मुलके इन्द्र धनुष अकार ।४॥ चोटीपे चूड़ामणि बांधीजी सुधारिके, अरु माथे चिंतामणि टीका दलगादार । कानोंमें करणा भरण बांधे सोहने, अरु वे तो सोहै चन्द्र मंडल अकार ॥५॥ नाकमें धारी नकवेसर सुहावनी, अरु दिया बेसर फूलोंके बुन्देदार । कण्ठाभरण बनायेजी जड़ कर, अरु डारे रतन जटित सातों हार ॥६।

झलके हैं लटक माताके मुख चन्द्रपे, अरु मानों पकड़ीबे रही झगड़ा डार । हमरे बलोंपर तुम काहे बल खा रहो, अजि हम तो हैंगी माताजीकी ताबेदार ॥७॥ झीनी झीनी माताको पहराई आंगी सोहनी, अरु जामें साथिये निकारे बूंटेदार । कुरते पे फूल निकाले मखतूलके, अजि कटि मेखल पेटी पेटीदार ॥८॥ गुन्दा है तारोंके कमर दल सोहना, अरु डारे दावनमें लाल फूलो हार । बांधे भुज भूषण जटित नवरत्नके, अरु बाजू बन्धोंकी लगाई हैं कतार ।९॥

हरी हरी चूरियां पहराईजी सुहागकी, अरु कर कंगन जड़ाऊ दिये डार । पोरी पोरी छल्ले गूंठा गुठड़े बनायके, अरु पड़े पड़े पायलोंकी झनकार ॥१०॥ गूंठोमें आरसी जड़ाऊजी आदर्शकी, अरु दांतों मञ्जन आंखोंमें अंजन डार ।

झंकार। झंकारीमें झनकारो है मोहना, अरु भये राजारानी प्रभु जयकार ।।६।। हांके गजराजकूं सुरेन्द्र अंकुश लेयके, अरु प्रति इन्द्र दो चंवर रहे ढार। कोई तो बजावे भेरी बीणा अरु दुन्दुभी, अरु कोई झांझ मजीरो झनकार।।७।। बज रहे शंख अरु खेजड़ी जिनेन्द्रके, अरु बाजें घन्टे अरु घोंघे घूं घूंकार। लेके भगवानकूं विराजे गजेन्द्रपे, अरु किया उत्सव अजुध्या नगरीके बीच करेजी सत्कार।।८।। इति

अथ नगरकी जात्रा में सुरेन्द्र कृत पंचोत्सवकी बधाई, रागनी खम्माचकी।

चिरजीवो महारानी मरुदेवी अम्बा, चिरजीवो, जायो तेने आदि जुगादि जिनराजदेव। आज तीनों लोकमें हर्ष अचम्भा, चिरजीवो ।।टेक।।

रहियो तू खुपति हे प्रभुजी जगदात मात, जीवो ए जगतनाथ तेरा नन्दा। चिरजीवो० ।।१।। चलो आप दरबार यह करें जयकार, तेरे द्वार आज मंगल बधा। चिरजीवो० ।।२।। वंदिके जिनेन्द्र चन्द्र ले गयो सुधर्म इन्द्र, निरख नयन सुख भयो बधा। चिरजीवो० ।।३।।

अथ तांडव नृत्य होतो राजमहलमें माता पिता पुत्र संयुक्त विराजे दरबार लगा पुत्रको गादलोका और अखाड़ेकी तैयारी। चाल लावनी पूर्वोक्त खमाच।

धन धन माता धन वे पिता, अजि जिनके जन्म धरें श्री भगवान। अजि जिनके महलोंके हजूरी दरबारमें, अरु नाचें इन्द्र अखाड़ेमें देखे सकल जहान ।।१।।

धावा—बिछ गये फरश जरीके त्रिभुवन महलमें, अरु मणि कमलोंकी बिछी है कतार। नरम नरम मखमल मखतूलका, अजि कर दिया है फरश इक सार ।।२।। हो गये हाजिर सकल सुरलोकके, अरु देवी देवता सकल नरनार। सारे हो

अरु सब गये किन्नर गन्धर्व ॥१॥ भावा—सब गया सब अखाडाजी सुरेंद्रका, अरु सदी पजये हुवाजी तयार। पहरा है सजीलाजी रंगीला जामा इन्द्रने, अरु कर लीनी हाथै मुराजी हजार।२॥ सुज सुज ऊपर नचावें सुर सुन्दरी, अरु बाज बाजोंके अखाड़े लिये भार। छिनमें उछालेजी अखाड़ोंको आकाशमें, अरु फिर फिर आवे सभाके मंझार ॥३॥ ठुमक ठुमक गति भरेजी सुहावनी, अरु फिर समपं ले हाथूमें संभार। ले चेचक फेरी नाचे चकर आकाशमें, अरु आवे समपे सो सभाके मंझार ॥४॥ छिनकमें छोटा छिन भारें ऐसी विक्रिया करि को तो पीछे सुर गिर पनिहार, सररसरर बाजे सारंगी सुहावनी। थिटथिट धम धम बाजे तबला विसार ॥५॥

प्रथम करायो भैयाबानें भैरु रागकूं, अरु दूजै कियो मालकोशको उचार। तीजे हिंडोल करायो भैया मारके, अरु चोथे सिरीकूं उचारयो बारबार ॥६॥ पांचवें उचारयो मल्हाने नीच बसन्तकूं, अरु छठे दीपक उचारयो हर बार। पद सब राग इन्हूँकी भैया भार्या, अरे भैया तीसूं की उचारी बारबार ॥७॥ तीसोंकी उपजाया दिखाईको सुरेन्द्रने, अरु गाया इनका फिर सारा परिवार, कैसे कैसे नाटक दिखायेको सुरेन्द्रने अजितने प्रभुजीके दई भैया नौ जन्मोंकी नकल उतार ॥८॥

अथ भजन तांडवनृत्यके भावमें सुरेन्द्र कृत भक्ति रागनी जंगला चाल गंगाबाजी मेलासे लोगोंकी बजे पर रंगली दस व इकतारे पर गानेकी।

किया ऋषभदेव अवतार किया सुरपतिने निरत आके किया ऋषभ० भक्ति निरत किया आके हर्षाके, प्रभु जीके सब भवकी दरशाके। सररसरर करें सरंगी तम्बूरा नाचे पग पगरी मटकाके, किया ऋषभदेव० ॥टेर॥

अजि प्रथम प्रकाशी वाने इन्द्रसाक किया पेर, अ नवो

जगतमें सुनी न काहू देखो तैसी। आयो कोड़ कौड़ चरकी कायो मुकुट बांध, छम देखो कूदो मानूं क्या कूदो पून्योंका चांद। मनकूं हरत गति मरत प्रभूको पूजे चरणोंमें लिपटाके॥ छिया ऋषभदेव०॥ सारी देव पढ़ा॥

सभी प्रभुजूंपे चढ़ाये हैं हाररू देवदेव जिन, हाथोंकी हथेलीपे नचाये हैं अखाड़े तिन। ताधिन्ना ताधिन्ना किटकिट थिन्ना धनकी ध्यारी लागे, घुमकिट घुमकिट बाजे तबला नाचे प्रभुजीके आगे। देनूं भेरि गावें तिहूं लिपटार इक गावें, नव जासें भजन गाके॥ छिया ऋषभदेव०॥२॥ कभि छिनमें जाय देखो तो नन्दीश्वर द्वीप जाय, पांचू मेरु वंदि आ मृदंगपे बजावै थाप। वंदें ढाईद्वीप तेरा द्वीपके सकल चैत्य, तीनोंलोक मांहि पूजि आवै दिव नित्यानित्य। आवें जो झरटि छमूडीपे सोसा लेत दम करै छम छम मन मोहैजो मुस्काके॥ छिया ऋषभ०॥३॥ कभि अमृतके लगे झड़ परसी रतनधारा, घोरी घोरी पाके पौन लिए देव जे जे कारा। भर झर कोरी बरसावैं फूल दे दे ताल महके सुगन्ध चहके मुचंग खड़ताल। जन्मे जिनेन्द्र भयो नाभिके अनन्द, नैनानंद यों सुरेन्द्रगण भक्तिकूं प्रकटाके। छिया ऋषभदेव अवतार छिया सुरपति, ने निरत जाके॥ प्रभुजीके न०॥ सररसरर चर०॥४॥

इत ऋषभदेव भगवन्तके नवजन्म कल्याणको कथन संयुक्त सुरेन्द्र कृत नाटक। स्वांग लेलयो।

अब बानूंजी में भगवन्तके नाम व पिछलोंका कुछ वर्णन, अजि ये तो दिखलावे ऋषभ जिनेन्द्रकूं अजि भेया इन्द्र सुधर्मा कर हर भाव। भाषा—प्रथम दिखाया भाग चरित्र विदेहका, अरु महाबलकी विभूति विस्तार। समकित पायके सन्यास जैसे संहिता, अरु किया स्वय बुद्ध मन्त्री उपगार॥२॥ दूजेमें दिखाई दूजे स्वर्गकी विभूत सब, अरु ललितांग देवताका अधिकार।

घर घर पुष्प सुधारस बरषे, लग रहा पंचाश्चर्य झरी। नयन नंद सुरेन्द्र प्रमति करि, अविरल सम्यक् दृष्टि धरी। हे शुभकी घड़ी। आये पुन्य०।३।

अब चौथी बधाई रागनी पूर्वी झंझोटीका जिसमें इन्द्र महाराज भगवानको जन्म घूंटी दे हैं पहलि कहियां हैं मट्टरा वों ढोकसी साथ चढ़ना कहांसे प्रगट है।

हे दिवा ले माई पुत्रकूं जन्म घूंटी। हे दिवा ले० ।टेक।

हे बालक तेरा है बड़ा चंचल, पकर ले मुझे ढकले अंचल। ए है मगरा करे है झगरा। स्तुति कर ले, चरन पकर ले। नहीं है टलना, मुझसें मलना। मैं ल्याया हुं रत्नं कं चरे, इष्ट मिष्ट वह दिव्य अनूठो अमृत रसको घूंटोरा। दिवा ले माई ॥१। हे जो मैं अपना बहु बल दिखलाऊं, उलट पुलट सिरका फर डारूं। तेरा सुत है बली अनंता, मति श्रुत अवधिधार गुणवन्ता। याते मेरी कछु न बसावे, हाथ छुड़ावे निकसा जावे। मुख भावे बहलावे मोकूं हल हंस कर समझावे माता, बालक बड़ो नवीनदे हूं छवि मांन हूसारो जाय अनुचित टूटांगो। दिवा ले माई० ।२। माताने बालक पुचकारा, तब प्रभु दांया हाथ पसारा। देखें जुगल जुगलनी सारी, घूंटो इन्द्र सुधर्म निहारी। कुछ पिवाई कुछ गूंठे लपटाई, दिखलाई जब रीत सना- तनी। चूसें प्रभु अंगुष्ठ भये वो पुष्ट तब दुरष्टि दोनों जुगलन चूसें, हम मुख ए जब बालकूं ठेरा। दिवा ले माई पुत्रकूं जन्म घूंटी। हे दिवा ले० ॥३॥

अब जिनेंद्रको हिंडोलेमें इन्द्र महाराज झुलावे हैं। राग दादरा जंगला झंझोट में ॥

नाथ झूलें लालो जुगलनसें, हे नाथ झूले साथ झुके हाथ झुके लालो जुगलमें। हे नाथ झूले० ॥१॥ इन्द्र झुलावे इन्द्रानी

सदपिनगर सुखदाई। प्रभु तातको देन बधाई।।बदरका० ।।९।। आयो दर्शन प्रभुजीका करवयो। नयनानन्दके घर भर लयो।। बदरका० ।।१०।।

अथ दूजो बधाई तक तक मारे नजर या इन चाल।

जुग जुग जीवो ऋषभ अवतार, तुम जुग जुग जीवो ऋषभ अवतार। तुम सकल जगत दुःख हरन करन सुख, जुग जुग जीवो ऋषभ० ।।टेक।

एक तो प्रभु तुम हरी बपाया, दूजे तीर्थंकर अवतार। तीजे धर्म तीर्थंक कर्ता मोक्षपंथ दर्शावन हार, तुम सकल जगत दुःख हरन करन सुख। जुग जुग जीवो० ।।१।। चौथे स्वयं बुद्ध वृत धरि हो, करि हो भविजनको उद्धार। फिरि कई मोक्ष व जोगे साहिब, फेर न आवेंगे संसार। तुम सकल। जुग जुग जीवो० ।।२।। चरम शरीरी तुम हो साहिब, मेरा चेरा तुमरा रासा नाथ चरणमें अपने। तुम भगवत मैं भक्त तुमार। तुम सकल।।३। तारे बहुत भव्यजन तुमने, हमसे अधम रहे मझधार। अब कई नाथ हमें निरवारो, तुमरा जन्म हमारो पार। तुम सकल।।४। नाचे इन्द्र जिनेंद्र निहारे, ले तबलेमां मुख्य पसार। लखि लखि सुख दग सुख न समावे, अबकोके करि नयन हजार। तुम सकल।।५।

अथ तीजो बधाई रागनी देशका सोरठा।

छाये पुन्य जगत जन शुभको घडी, शुभको घडी हे शुभकी घडी हे शुभको घडी। छाये पुन्य जगत जन शुभको घडी ।।टेक।।

जग्यो सुहाग भाग जग जनके, परजा सकल निहाल करी। जन्म्यों तीर्थंकर या भूपर, नाभिदिमें चेन परी। हे शुभकी घडी। छाये पुन्य।१।। चिर जीयो यह बालक जगमें, आपे त्रिजगत्रिय मांग भरी। जुग जुग जीवो तुम मातपिता नित, सुत बल लोप अमविपुरी। हे शुभकी घडी। छाये पुन्य० ।।२।।

तीजे भव वज्रजंघ श्रीमती दिखा दई, अरु दिया वज्रदन्तसेकूं ज्यूं अहार ।३॥ चौथे भवमें भये थे जुगलया भोगभूमिमें, अरु तीन कोशका लिया है तन धार । पांचवें दिखाई माया मिरीधरा देवकी, अरु जाने करी जिन पूजा अधिकार ॥४॥

छट्टेमें दिखाई है सुविध श्रावककी क्रिया, अरु भये सुजन्द विदेहके मझार । सातवें दिखाई अच्युतेन्द्रकी विभूत सब, अरु लिया पुण्डरीकनीमें अवतार ॥५॥ भया सुत वज्रसेन तीर्थंकरदेवके, अरु भयो वज्रनाभिचक्री चक्रधार । मुनिवर होके जैसे भाई सोले भावना, अरु गये सर्वार्थसिद्धिके मझार ॥६॥ ऐसे नौ जनम दिखलाये भगवानके, अरु नाच्यो ताल सुरगति अनुसार । बांटें बहुदान प्रजाकूं परमेश्वर दई, लखियो तो गावें यों दश ई सप्त प्रकार ॥७॥

अथ शुक्ल चतुर्मास आषाढ़ वदी चौदसको ऋषभावतार दिन जन्म बधाई मल्हार । मेरा पियरवा नहिं आयोरी यह चाल ।

शुभके बदरवा झुकि आयरी । शुभके० ॥ हे झुकि आय झुकि आयरी । झुकि आयरी शुभके बदरवा ॥टेक॥

सखी अवनीके दिन आये, हेजी जगत पुन्य घन छाय बदरवा झु० ॥१। सखि मंगल भाग दिवारा, जलबिन्दु चुवो रूप सार ॥बदरवा०॥ ।२॥ बरसो सर्वोदय सृष्टि । भई ऋषभ जनमकी वृष्टि ॥बदरवा० ॥३॥ सखि जमे हरस अंकूरे । सब फले कल्पतरु पूरे । बदरवा० ।४॥ घनघोर दुर्भिक्ष हटायो । शिवफलको संवत आयो ॥बदरवा०॥३-५॥ दामिन दमक प्रताप निहारो । चले शीतल पवन विचारी ॥बदरवा० ।६। अजि बरसें अमृत फुवारे । सुर जैजैकार उचारे ॥बदरवा० ।७॥ सुर सुन्दर रतन भरावे । गन्धर्व समूह यश गावें ॥ बदरवा० ॥८॥ घनो

झुलावे, चन्द्र झुलावे आछो पेठा सुरगनमें । आछो मधुवनमें, नाथ झुले० ॥२॥ सूर्य झुलावे धारणेंद्र झुलावे, व्यंतरि फूले न समावें बदनमें । आछो मधुवनमें । नाथ झुले० ॥३॥ चमक दामन अगवतको झुलावे, फूले देवन दावे छवनमें । आछो मधु-वनमें । नाथ झुले० ॥४॥ कमुद वदाग वढो त्रिभुवन धर, वढो हरख भविजनके मनमें । नाथ झुले० ॥५॥

वरसे घर पर बहुत संपदा, चमके मानों जैसे दामिनि घनमें । आछो नाथ० । ६॥ ऐसे दर प्रभु जन्म कल्याणक, वारवार नमि पंचनमें । आछो नाथ० ॥७॥ गये सुरेंद्र जिनेंद्र प्रकट कर, सकल सुरा सुरगण सुरगनमें आछो० ॥८॥ चाकर देव करे प्रभु सेवा, नमें नयन सुख गाय भजनमें । आछो० नाथ० । ९॥

अथ भजन विसर्जन राग देशबिहाग परजका जिला ।

भजनसे रखि ध्यान प्राणी, भजनसे रखि ध्यान ॥टेक॥

भजनसे इन्द्रादि पद हो, चढत बैठ विमान । प्राणी भजनसे रखि ध्यान । भजनसे० ॥१॥ भजनसे षट खण्ड नव निधि होत भरत समान, फिरे भव सागर तुरत हो पापको अवसान । प्राणी भजन० ॥२॥ नकुलमर्कटसिंह शूकर करि भजन सरधान, भये श्र ऋषभसेनादि गणधर भजनके परमान । प्राणी भजन ॥३॥ भजनसे भये पूज्य मुनिजन गौतमादि महान, भजनसे तिर गये भील जटायु येदक स्थान । प्राणी भजन० । ४॥ कहत नयनानंद जगमें भजन सम न निधान, भये भजनसे अरहत सिद्ध आचार्य गये निर्वाण । प्राणी भजनसे रखि ध्यान, भजनसे रखि ध्यान प्राणी भजनसे रखि ध्यान । ५॥

इति श्री नयनानंद यति कृत सुरेन्द्र नाटक सम्पूर्णम् ।

बनाया संवत् १९४४ चैत्र शुक्ल ५ को सम्पूर्ण किया ।

प्रथम ही नुक्तकी पूजा करते काका उमरावसिंह व निहालसिंह भीतरमहालोंकूं जयसिंहा मांगा दिया संगमलाल ले गया जो कोई नकल करे हर्फ बहर्फ क्योंकि ज्यों टेक आंकड़ो विश्राम समेत शुद्ध उतारे और गाते वक्त जितने इसमें अक्षर हैं सारे गावें ये भजन जहांसे उठते हैं वहांसे ही लिखने शुरू किये हैं। क्षमा चुकनेपर आंकड़ी दूसरी जगह भी पड़ी है. जो गायन विद्याके अनुसार लिखे हैं गरज इसी तरह गाना इसी तरह लिखना अपनी कुशलसे कोई सुधारे बिगाड़े गावै अपराधी होगा। इति सुरेन्द्र नाटकके त्रिशत् पदोंका अध्याय एकोनविंशो अध्याय सम्पूर्णम् ॥१९॥

अध्याय बीसवाँ

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

अथ नयनानन्द यतिकृत भजन विलास सम्बन्धी उत्तम पदोंका छोटा सर्वसंग्रह नामा बीसवाँ अध्याय लिख्यते।

तत्र प्रो मङ्गल चमत्कारी रूप अर्हंत स्तुतिका पद संकट हरण लिख्यते ठुमरी देश गौड़ रागकी हजूरी।

प्रभु तार तार भवसिंधु पार संकट मझार। तुम हो अधार, दुख दे सहार, खेवो बाढ़ा मोरी नैया। प्रभु तार तार० ॥टेक॥

परमाद चोर दियो हमपे जोर, भग पोलहोर, दिये मझमें बोर। तुम सम न और तारन तरैया। प्रभु तार तार० ॥१॥ मोहि ठंडडंड, दियो दुःख प्रचण्ड कर खण्डखण्ड। चहुँ गतिमें भंड, तुम हो तरंड, तारो तारो मोरे सैंया। प्रभु तार तार० ॥२॥ दग सुखदाय, तेरो है हि राय, मेरो काट

फांस हर भवको वास। हम चरन आस, तू है जग पवरंया। प्रभु तार तार० ॥३॥ इति।

यह संकट हरण पद जाको जिस संकटमें १०८ दफे दिन ७ वीं १४ वीं २१ वीं ४० वीं पढ़कर अजमाइयो तदहाल संकटकूं मेटै है। रोग सोग दाम भय शत्रु भयभूत प्रेत पिशाच भय नष्ट करे है, फंद हवालात फांसीसे बचावे हैं। बड़ा चमत्कार इसका अनेक बार देखा है।

अब दूजा पद इसी भावमें काम हिंदू मुसलमानोंमें जो जीव हिंसा करनेवाले पापी हैं तिनके ऐश्वर्य पर ऊंचा दुकान फीके पकवानका ताना।

वाहरे अजान तेरी उच्च शान है हिन्दुस्तान अरु मुसलमान। किया निशान पकवान फीकानोंके वाहरे अजान ॥टेक॥

तेरे खड्ग म्यान चमका अजान तेरे खलि निशान। दम्मे विरान दुश्मनके मान, गड जावें पखलीके। वाहरे अजान० ॥१॥
है देवदान चक्र चन्द्रभान कोई है हवान। चक है शतान तेरे ए हमान, बेईमानो कहां पंखे। वाहरे अजान० ॥२॥
पढ़िकर कुरान वेदरु पुरान हरेकुंग रमान। जीवनके प्राण भयावह गुमान, मन घर नहिं भोंके। वाहरे अजान० ॥३॥
वाहरे जनान नामर्दानां हग मुखनशान, किया जो हदान ऊंची दुकान पकवान तेरे फीके। वाहरे अजान० ॥४॥

अर्थ—यहां हग मुख विशाल भा नाम है, पुनः हग मुख सम्यग्दर्शन रूप तत्वार्थ बोधमई मुखका भी है, जो तेने तत्वार्थ बोध न जाना अर्थात् हिंसाके फलकूं न जाना ऐसा अर्थ है। हिंसक जीवोंको उपदेश करके प्राणियोंके दश प्राणोंका नाश करनेकूं मने करे हैं।

सुनरे अज्ञान तुरकोंके थान अपनी समान लखि सबकी ज्यान, दश प्राण किसी प्राणीके ना संहारे। सुनरे अज्ञान ॥टेक॥

बन ना विपरीत, मत कर दुरीठ मत बन ढरीठ। तेरे सब बडीठ कर टीठकूं टलेंगे ॥ भजि० ॥४॥ कहै नैनसुख पले मेटि दुख यही मुख्य मत रहे बिमुख, तेरे दास प्रमुख सब साथमें रलेंगे ॥ भजि राम नाम० ॥५॥

अथ चतुरविध दानोपदेश।

कहैं बारबार सतगुरु पुकार सुनो दया धार, पट मतको सार। करो दान चार दोनूं भवमें सुख पावो, कहैं बारबार सतगुरु पुकार० ॥टेक॥

यहां हो यश अपार, वहां हो जग उद्धार। टले पाप भार फले पुण्य सार, कुछ लेज्यो सार, स्वाठा हाथां मत जावो। कहैं बारबार सतगुरु० ॥१॥ दीज्यो रोग जान औषधिको दान। जामैं गुण महान औगुण जरान, शुभ खान पान दे अकानकूं मिटावो। कहैं बारबार सतगुरु पुकार० ॥२॥ मूरख विद्वान दीज्यो विद्यादान, जामैं पाप हान सम्पत्तिकी खान। देके स्वार्थ ज्ञान परमारथ सिखावो ॥ कहैं बारबार सतगुरु० ॥३॥ भयवान जान शक्ति प्रधान, धन तन मसान पट मालनान। देके दान मान समझावो भय हटावो ॥ कहैं बारबार सतगुरु० ॥४॥ लगे भूख प्यास अति होय त्रास, नर पशु अनाश आवे शन्त पाश। तृण मण गिरास देके शुद्ध जल प्यावो ॥ कहैं बारबार सतगुरु पु० ॥५॥

इस भांत चार दीज्यो दान उदार, औषध सुसार विद्या अहार। भय भग निवारके आहार करवावो ॥ कहैं बारबार० ॥६॥ कहै दास नेन आनन्द देन बोलो मिष्ट वेन, पावे सर्व चैन लीखो जैन ऐन। जासूं सूधे शिव जावो, कहैं बारबार० ॥७॥

अथ दर्शन विशुद्धि भावना हेतोः इसी चालमें पद।

कब जगै भाग एकू जगत त्याग, होके वीतराग सेऊं धर्म बाग, कब कर्म नाग वन आगको बुझ ऊँ ॥टेक॥

जामैं भर्म बांस कुकरमकी तांस, पापोंकी फांस व्यसनोंकी

थांय, उत्पत्ति नाम चेतनिकाय कब पाऊं। कब करों० ॥१॥ जामैं भोग मुण्ड विषयनके झुण्ड, पीवोय कुण्ड पङ्खोय दण्ड कब अग्नि कुण्ड दुर्ध्यानकूं भगाऊं। कब करों० ॥२॥ जामैं धर्म फील अधर्मको झील, आकाश फील पुद्गलकी टील भरे काल भील। क्या दलील यहां बकाऊं। कब करों० ॥३॥ जावे कब वो काल मिले गुरु दयाल, टूटे मोह जाल मेरा हो निहाल कहि आपना हाल मस्तक जा झुकाऊं। कब करों० ॥४॥ टरि अशुभ वृत्ति धरूं शुभ प्रवृत्ति अशुभ अशुभ कृति, तजिहूं निवृत्ति कर निज परमातमकूं यही भाव भाऊं। कब करों० ॥५॥ दग सुम्ब कुबुद्धि कियो अति विरुद्ध दर्शन विशुद्ध, बिन रह्या अशुद्ध कर शुद्ध प्रवृति कर शिव पद पाऊं। कब करों० ॥६॥

इसी भावमें कविता अपने आपकूं उपदेश करे है।

सुनरे गंवार नित केवल्यार तेरे घट मंझार, परगट दिदार मत फिरे ख्वार। उसहीकूं सुरझा ले, सुनरे० ॥टेक॥

तजि मन विकार अनुभवकूं धार, कर बारबार निज पद विचार। पद समयसार अपने ही गुण गा ले॥ सुनरे ॥१॥ तूही भव कूप तूही शिवरूप, होके अज भूप पड़ा अंधकूप विषयनके तूप येता मनकूं हटा ले। सुनरे० ॥२॥ यही दाय नेन आनन्द देन सुन जैन बैन; आतूं होय चैन तजि मोह सैन। नर भवका फल पा ले, सुनरे गंवार० ॥३॥

कविता अपने आपकूं उपदेश करे है।

मत करे रोष ले दिलकूं मोष, किया कर्म दोष निज मनकूं दोष। करु आ आ अपने घरमें। मत करे० ॥टेक॥

तजि मान अर्फ मायासे घर्फ करे लोभ तर्फ, ए देह नर्फ मत जान फर्क इनहीसे तू तो भरमें। मत करे० ॥१॥ पाया कुल महान अरु रूप ज्ञान, मदीन शान घटमें निधान भगवान

तुही तेरी कुंजी तेरे करमें । मत फिरे० ॥२॥ हिम्मत न हार ले झट निहार, कहैं बारबार हम सुख पुकार । मत फिरे खुआर क्यों ला मोक्षके द्वारमें । मत फिरे० ॥३॥

रागनी जंगला ठुमरी चाल ।

सनम इतना न सतावोजी, तोरे दरशन बिना तरफें अंखियां, इतना न सतावोजी, सनम इतना० ॥टेक॥

जो तेरे दिलमें ए है सनम, सिर काटकर देहूं कदम । मुझे चैन खुशी नहीं होय जहम, परदेश न जावोजी । सनम तेरा० ॥१॥

इस चालमें गजल ।

जनम विरथान गंवावोजी, पायो तरस तरस नर भव दुर्लभ विरथान गंवावोजी । जनम० ॥टेक॥

मत ना मोह विषै तन खोवे, मत झूठी बढ निर्भय होवे । तजि च्यारों पांचूं सातूं मत पाप कमावोजी । जनम० ॥१॥ त्रिषट मोक्ष षट जीव विचारो, झटपट षट अरु पांच निवारो । द्वादश दान चतुर सार भर तेरह मन ध्यावोजी ॥जनम० पायो० ॥२॥ यही मोक्षको मूल बतायो, अरहन्तादि महन्त न गावो । पर अतोत करतो सम्यक, दृष्टि कहलावोजी ॥जनम० पायो० ॥३॥ तज चौबीस अठाईस धारो, पच्चीस छत्तीस संभारो । ले छय छीयपयाघा तूं, सीधे शिव जावोजी ॥जनम० पायो० ॥४॥ जो तैं नाम नैनसुख पायो, तो तैं निज पर क्यों न लखायो । तजि परार्थ निज अर्थ गहो, मत नाम लजावोजी ॥जनम० पायो० ॥५॥ इति ।

अथ त्रैकाल्यं द्रव्य षटकं इस श्लोक सूत्रके अनुसार प्रारम्भः ।

हे आत्मन् च्यारूं कषाय पांचू पापका तूं व्यसन मत सेवै, त्रिक कहिये त्रिकाल षट कहिये षटद्रव्य मोक्ष कहिये नौ ऐसे नौ पदार्थ । षटजीव, षटकायाके जीव, षटलेश्याभाव ६,

पाताल पधारे। नर्क कुण्डमें जाय धसा ॥ देखो ।.९॥ धिग धिग मूढ मूढ हम खोयो। पाप धर्मै तजि फेर फंसा ॥ देखो० ॥१०॥ नैनानंद जनमजन दुखकूं। मानत सुख मन हरखया ॥ देखो० ॥११॥ इति।

अथ भजन उपदेशी रागनी जंगला हांसीटोका जिका।

चाल—मेरा सांवरयां नहिं आयोरी, मेरा सांवरया नहिं आयोरी ॥टेक॥

सखी मेरे पान पर चूना, मेरा पिया बिन घर सूना। सांवरया० ए चाल।

समझ मेरे प्यारे जरा अब तो समझ मेरे प्यारे जरा। हे प्यारे जरा मतवारे जरा अब तो समझ मेरे प्यारे जरा ॥टेक॥

तुम त्रिभुवनमें फिर आये, चौरासीमें नचे नचाये समझ मेरे प्यारे ॥अबतो० हे प्यारे० ॥१॥ तेने स्वर्ग विमान रचाये, पशु गतिमें बले बहुघाये ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥२॥ ठाट तरह निशान बजाये, पंड नर्क सोच बिरधाये ॥समझ मेरे०॥अबतो० हे प्यारे० ॥३॥ तेने सपरस सब कर लीने, अरु पुद्गल सब धर लीने ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥४॥ तेने दुखामृत बहु पीये, पढि कुगति सूत पोविये ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥५॥

तेने सूंघे अतर हजारूं, पड़ा नर्क सदा दुख रूं ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥६॥ तै तो जगत व्यवस्था निरखी, अपनी गति क्यों ना परखी ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥७॥ तू तो नौग्रीवक लौं धारै, गया नर्क अनंतीबारै ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥८॥ किये ऊंच नीच सब काज, तुम आप करत हो लाज ॥समझ मेरे० अबतो० हे प्यारे० ॥९॥ तेने जो बहु करी कमाई, भो सो अपनी बतलाई ॥समझ० अबतो० हे प्यारे० ॥१०॥

सहजानन्द पायो, आयो न आयो संसार मंझि० कुछ० ॥११॥

इति पद उपदेशी चाल चम्बकीजे प्यारे चम्बकीजे मैं तोरे जोवन परवारी मान मेरा रखकीजे। इस चालमें रागनी सारंग ॥प्रारंभः॥

वश कीजे प्यारे वश कीजे, अरे हारे गुमानी मन वश कीजे। अरे हारे गुमानी मन०। केवाधू नवविध जिवार, जगतमें यश लीजे। अरे हारे गुमानी मन वशकीजे ॥टेक॥

पाप करत गया काल अनन्त, अब हो जा ब्रह्मचारी। दमर दृढ कस लीजे। केवाधू० अरे हारे गुमा० ॥१॥ उदय विपाक सहो सब सुख दुःख, जब अपजस सुनिगारी। समाधिमें धंस दीजे। केवाधू० अरे हारे गुमानी० ॥२॥ समता सुधा जिधुमें घुस कर, हगो कलुषता सारी। निजातम रस पीजे, केवाधू० अरे हारे गुमानी० ॥३॥ नयनानन्द बन्ध सब टूटैं, छूटैं व्याधि इत्यादी। मुक्तिमें वसलीजे। केवाधू० अरे हारे गुमान० ॥४॥

इति पद हजूरी जिन स्तुतिमें चाल ठ.ठे रहियो बलमां चलूंगी तोरे साथ। इस चालमें स्याल राग वरधा पीलू खम्माचका दादरा कजरी रागनी पूर्व।

मेरी करो करुणा परूं जी थारे पांव, मेरी करो करुणा परूं० ॥टेक॥

तीनो तोरो शरनाजी, तीनो मोरे हरता। जन्म जरा मरणाय, परूं जी० मेरी करो० ॥१॥ मोसो नहिं दुःखयाजी, तोसो नहिं सुखिया। मैं मंग तुम राय, परूं जी० मेरी करो० ॥२॥ काढो कारामह सैजी, हमारा भव दुःखसैं। कर्म महा गढ ढाय, परूं जी० मेरी करो० ॥३॥ दीज्यो नैनासुख तुम कीज्यो थारे दुःख गुम रखयो मत उलझाय। परूं जी थारे पाय। मेरी करो० परूं जी० ॥४॥

परावर्तन बहु बार। तू तो० करजो० ॥३॥ चौदह राज मनुष गति भरम्यो, पड्यो पड्यो मलमूत्र मंझार। लोक कहे जनराज कहे तन, ऊंधे मुख लटकयो दरबार। तू तो० करजो० ॥४॥ च्यार लाख पर आय नर्कमें भुगती भिन्न करम अनुसार, कुटि कुटि पिट पिट छिद छिद भिद भिद कियो। सगरां हाहाकार। तू तो० करजो० ॥५॥

भरम्यो बासठ लाख पशू गति नाना बिध दिये मरण अपार, छिप छिप मिच मिच छिलक छिलक मरि खाय खावमें ठारा बार। तूतो० करजो० ॥६॥ चार लाख सुरकुलों नविहंदयो जहां सागरा सुख भण्डार, झुर झुर मर मर दल्यो जगतमें। भोगे सुख होये बिपति पहार, तूतो० करजो० ॥७॥ कहत नैनसुख सुन मेरे मनवा, अब तो तज निज दोष गवांर। आगम आप्त गुरुको तत्सारस, परखि होय ज्यों बेड़ा पार। तूतो बहुत रुल्यो जग जालमें अज्ञानी अब करजो० ॥८॥ इति॥

अथ नयनानन्द कृत दशाध्याई तत्वार्थ अधिगम सूत्रके पहले अध्यायके अनुसार ख्याल बिरचते।

अथ त्रैकाल्यं द्रव्य षटकं इस श्लोकके भावार्थमें ख्याल लंगड़ी रगत।

अरहन्तादि त्रिलोक पति न कर जिन ग्यारह बातें जानी, सरमलीतमें। धरें चित्त सोई हैं सचे सरधानी ॥टेक॥

तीन काल षट द्रव्य नवों पद अठ षट कायाके प्रानो, लेश्य भाव षट। तथा पंचास्तिकाय जिनने जानी ॥१॥ द्वादश व्रत अरु सुमति पंच गति च्यार जिन्होंने पहचानी, ज्ञानावरणके समझि करि भेद स्वपर परणति छानी ॥२॥ यही मोक्षका मूल इसे सब मूल कहैं सतगुरु ज्ञानी, शिव सुख कारन दर्शनावरण

निवारन सुख दानी ॥३॥ मिटै दृष्टि तेरी भ्रष्ट नैनसुख अन्त करोगे शिव रानी, यह प्रतीत यें। धरै चित सोई है दृढ परधानी, अर्हतादि त्रिलोकपति० ॥४॥ ।इति।

ख्याल दूसरा लंगडो रंगतमें। अथ मोक्षमार्गस्य नेतारं इस मंगलाचरणके आचार्यकूं किये हुये आप्तदेवकूं नमस्कार सहित मतिज्ञानरूप तत्वार्थ अधिगम विद्याके समस्त साधन वर्णन करनेकी इच्छासे वक्ताकी प्रतिज्ञामें ख्याल लिख्यते।

वन्दे हैं जे मोक्षमार्गके शुद्ध प्रवर्त्त करतारे. कर्म महागिर चूर्ण करि सकल तत्व तिन विस्तारे ॥१॥ वन्दूं सतगुरु विनय हेत पुनि कहूँ अधिगम साधन सारे। सधे जिनसे मोक्षका मारग परमारथ प्यारे ॥२॥ अति अगाध तत्वार्थ तिन साधन मूढन भ्रम हारे। मेरे रखवारा, दुखा दग्ध कर गये सतगुरु उपगारे ॥३॥ जिस मारग करि तिरे आप भी औरन तारे तारन इस पारे। किये शुभ साधन सनातन जो सन्तोंने विस्तारे। ४॥ उमास्वामि उधृत सन्मारग प्रथम अध्याय सुना भ्रम भागा। नैनसुख कहै, धरै चित्त सोई है सद्ज्ञानी। अर्हन्तादि० ।५॥

अथ मंगलाचरण हेतोः उमास्वामि सद्गुरु चरण निज प्रति पद वक्ताकी तरफसे नमस्कार।

दोहा—उमास्वामि पद कमल नमि, नमूं सूत्र मत जैन।
कहूं प्रथम अध्याय अब, तत्वारथ पद ऐन ॥

अथ सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः।

इस प्रथम सूत्रमें एक रत्नत्रयरूप ही मोक्षमार्ग माना है। तातें ताके रूपकी सिद्धिके अर्थ इस सूत्रका सिद्धांत प्रगट करनेकूं पद वक्ता ख्याल दूजा रंगतका छटा कवितोंमें कहै हैं।

चाल-हमें लड़नेकूं क्यों लड़े बांध बरेली । यह ख्याल बांध बरेलीका ।

भाई सम्यग्दर्शन ज्ञानचरणचित धरल्यो । है यही मोक्षका मारग इसीमें परल्यो ॥टेक॥

है सम्यक शब्द प्रशंसा वाचक वीरा, तीनोंके पदका सूचक है सुनि धीरा । तीनोंकी आदिमें सम्यक शब्द बताबो, यो मोक्षमार्ग तरुका सन्मूल बतावे ॥१॥ या मार्ग ऐसा एक वचन है मानो, यो प्रथक प्रथक शिवपन्थ न गिणयो ज्ञानी । तीनों मिश्रित यह एक मार्ग जित आवे, यो मोक्षमार्ग यथा जिन आगम गावे ॥२॥ तीनोंकी परीक्षा अब तुम ऐसें करल्यो, है यही मोक्षका मारग इसीमें परल्यो भाई० ॥३॥

अब सम्यग्दर्शनकूं मूल अरु सम्यक्ज्ञानकूं वृक्ष अरु सम्यक्-चारित्रकूं फूल वर्णन करकैं तीनों अवयवयुक्त मोक्षमार्गरूप कल्पवृक्ष बताया मोक्षफलकी प्राप्तिके होनेका नेम बतावे हैं तथा संसारका मूल कारण पंच प्रकार मिथ्याभाव है ताकूं भी कहे है ।

ख्याल-हैं ज्यों पदार्थ त्यों श्रद्धे जो श्रद्धानो, यो तत्व प्रतीत भाषी है केवलज्ञानी । तिसहीका सम्यग्दर्शन नाम उचारा, यो शांतिमूल तिनबिन फलफूल न सार ॥१॥ पुनि जित विध है जीवादि पदार्थ व्यवस्था, या नय प्रमाण करि समझे सर्व अवस्था । तहां संशय अरु विपरीतता मूल मिटावे, अरु शेष अनध्यवसाय प्रवेश न पावे ॥२॥ जहां सकल चराचरका कर कर व्याकपन, धरे ज्ञान कसौट में तिनका संघर्षण । सत् असत् भावकूं निर्मल करि निर्धारे, सो भाष्या सम्यग्ज्ञान कल्पतरु सारे ॥३॥

है तिसका चारित्र फूल यही उर धरल्यो, है यही मोक्षका

माने अरु वैद्यकूं चाहिये दवा अदोष बखाने। जो वैद्य न समझे रोग दवा न विचारे, जो देखो रोगीके निर्णय नहि धारे ॥२॥ तो है मुझमें सन्देह यहां है भाषा, नहीं होगी निर्मल देहको क्यों आशा। तिस वैद्यकूं चाहिये देखी भाली वर्ती, दे औषध युत दृष्टांत रोगकूं हरती ॥३॥ पुन रोगी पासें आप दिखावे जोरां, अरु पूछे तिन रोगिनसूं बहुती ठौरां। यदि ज्ञान सत्य औषधकूं खावना जब हो, तो है निश्चय यह रोग जावना तब हो ॥४॥ कहूं आने न करे तो दुख ही भाख्यो, है यही मोक्षका मार्ग इसीमें परख्यो। भाई सम्यग्दर्शन०, है यही मोक्षका मारग० ॥५॥ पुनः।

पुनि वैद्य न जाने क्रिया वचन नहि आने, अरु देशकाल वयकूं नाहि पिछाने। सेवनकी विधि विपरीत तरह बतलावो, अरु तैसे ही रोगी उसकूं खा जावे ॥१॥ तो होय वैद्य बदनाम नाश रोगियका, तिमवें सद्गुरु उपदेश करे सम्यकका। दोनूंको सम्यक रूप क्रिया हो दोनों, तो है निश्चय मिट जाय रोगके जोरों ॥२॥ पर एक क्रियासे कछ उन काम चले हैं, अन दोसे औरन कछु रोग टले हैं। अन आदि अंतको विरया व्याधि मिटावे, अन अंत मध्यको दोसे साता पावे ॥३॥ अन आदि मध्यको हरे व्याधि विज्ञानी, तीनों बिन होय न सुख समझल्यो प्राणी। तातैं सम्यक सरधान ज्ञान आचरिये, हो निर्मल देह अकाल वृथा क्यों मरिये ॥४॥ भाई देह रोगका यह दृष्टांत बताया, पर कर्म रोगका रत्नत्रय ही गाया। तीनों मिलित शिवपंथमें जब धावेगा, तो निश्चय तद्भव परभव शिव पावेगा ॥५॥ कहे नैनसुख सन्मार्ग रुचे तो परख्यो, है यही मोक्षका पंथ इसीमें परख्यो। भाई सम्यक्०। है यही मोक्षका पंथ इसीमें परख्यो ॥६॥ इति।

अब केवल सम्यग्दर्शनका स्वरूप कहनेकूं। तत्त्वार्थ श्रद्धानं

सम्यग्दर्शनम्। अरु जीव अजीवादि तत्वोंका नाम मात्र बतावनेकूं सूत्र। जीवा जीवास्रव बन्ध संवर निर्जरा मोक्षास्तत्वं। इन दोनूं सूत्रोंका अर्थ दर्शावनेवाला खयाल कहिये हैं। छोटा बांसबरे०।

भाई सम्यग्दर्शन भाव हृदयमें धरल्यो। है यही मोक्षका मूल अराधन करल्यो ॥टेर॥

सुन तत्व शब्दका शुद्ध अर्थ कैसे हैं, है तत्व जिसी विधि है जैसे तैसे है। अरु अर्थ शब्दका निश्चय अर्थ बताया, निश्चय करि ऐसो तत्वारथ समझाया ॥१॥ भाई तत्वारथ श्रद्धान है सम्यग्दर्शन, जब उपजे निजपर बोध जीव हो परसन। सो दो प्रकारसे उपजत है सुन प्राणी, इक तो सुभावसे याकूं निसर्गज जानी ॥२॥ जो उपजे देव गुरु आगम परवानी, सो उपदेश अधिगमज कह्यो जिनवानी ॥३॥ सम्यक्त शब्दकूं शांति दशा उर धारल्यो, है यही मोक्षका मूल अराधन करल्यो। भाई सम्यग्दर्शन भाव हृदयमें धरल्यो। है यही मोक्ष० ॥४॥

अथ सम्यग्दर्शन सराग १ वीतराग१ भेद करि दो प्रकार है। और तत्व जीवादिक सात हैं। तिनके नाम वा लक्षण कहनेकूं खयाल बांसबरेलीका कहे हैं।

जहां प्रशम और संवेग दया आस्तिकता, सो सराग समकित वरनि भेद व्यक्तिता। जहां केवल आत्मानुभवकी होय विशुद्धी, सो वीतराग समकित इनके जाणों ॥१॥ जो भी अर्हन्त सदा तिनके पावे, ताते सम्यक् गुन तिनके कहावे। अब तत्व कहा है जिनका वर्णन सुनलो, करि शब्द नाम निक्षेपादिसे गुनलो ॥२॥ भाई जीव अजीवरु आस्रव बन्ध विचारो, संवरकूं धनस्य निर्जरादि मोक्ष विचारो। इन तत्व नमें तुम जीव जुदा कर डारो, है यदा बद्ध छूटनेकूं मोक्ष विचारो। जो चाहे छूटना ... ठिकानो, है [illegible]

भरमावैं सदा कलह करतारी हैं। ये अति उतपाती कुराफाती अरु दुर्मद भारी है ॥२॥ मानैं त्रिज गर्धम हैं हम ही हम सबे ब्रह्मचारी हैं। इक छिनमें उचलो, करैं हम भसम रूप बना डारी हैं ॥३॥ ते मिथ्याती हैं ब्रह्म घाती परपर नचकारी हैं। तिनकी कुसंगत, भवांबुधि दवन करावन हारी हैं ॥४॥ दृष्टि भ्रष्ट अरु नाम नैनसुख दुर्गतिके सहचारी हैं। विपरीत भावमें, करें फिरिया० ॥५॥

अथ ननौतानगरके जिन मन्दिरकी वेदीमें विराजमान वासुपूज्य १, मल्लिनाथ २, नेमिनाथ ३, पार्श्वनाथ ४, महावीर ५, ए पंचकुमार जिन तथा शीतलनाथ भगवानकी नित्य पूजाके पढ़नेका भजन। रागनी जंगला झँझोटीका जिला। मैं कहूँ गुरु महाराज रतनू सब विधा जाग मेरी इस चाहमें लंढोरेके राजाकी ठुमरी, चोईं चाल इसकी है।

मैं पूजे पंचकुमार मिटो भव भ्रम अटक मेरी ॥टेक॥

जय वासुपूज्य भगवान मल्लि मैं करी याद तेरी, भये नेमि पार्श्व महावीर प्रगट गई टूट मोह बेड़ी। मैं पूजे० ॥१॥ आयो तुम दरबार करी प्रक्षाल तीन बेरी, भई जन्म जरा मरणादि भवातप शीतल जिन मेरी। मैं पूजे० ॥२॥ चर्चत चन्दन शांत भये प्रभु पंच पाप वैरी, भई अक्षय ऋद्धि समृद्ध करी जब अक्षतकी ढेरी। मैं पूजे० ॥३॥ पुष्प हरें कन्दर्प क्षुधा नैवेद्य चढ़ाय गेरी, दीपक चढ़ाय चरणारविन्दमें आंख खुली मेरी। मैं पूजे० ॥४॥ अष्टकर्मको वंश भयो विध्वंस धूप खेरी, फलतैं अजरामर वास भई शिव सम्पत अब नेड़ी। मैं पूजे० ॥५॥ अर्घ अनर्घ उतारतो आरत मेटो सब मेरी, कहै नैन चैन मांगे मंगल भव सेवा तेरी। मैं पूजे० ॥६॥

अथ गजलके तौरपर जिनेन्द्र स्तुति, रागनी धानी गर्मित

छीज्यो छीज्यो० ॥९॥ काटैं सुगुरु दयालु दया करि, तदपि शठ रहे हठ धरजो । छीज्यो छीज्यो० ॥१०॥

सकल संघ सम्झावत सबकूं, झूंठा झूंठो बात रहे परजो । छीज्यो छीज्यो० ॥११॥ कारज करन बिचार करो सब, जको होय पड़े खरजो । छीज्यो छीज्यो० ॥१२॥ निर्णय कियो परस्पर बहुजन, जैन सभा घर घर धरजो । छीज्यो छीज्यो० ॥१३॥ तो यह बात निहारमें आई, बिन विद्या रहे दुख भरजो । छीज्यो छीज्यो० ॥१४॥ मूढ़ गये विद्या बिन मारग, श्री गुरुकी तो यही दरजो । छीज्यो छीज्यो० ॥१५॥

करि परमान विपर्यय हो, हो गये कुसंगतिमें परजो । छीज्यो० ॥१६॥ सेवें प्रसंग कुदेव कुमारग, भगवत मतसैं गये फिरजो । छीज्यो० ॥१७॥ तदपितु शठ मन हठन तजत है, कहत बहुत दल परबरजो । छीज्यो० ॥१८॥ पुनरपि पंच सकल समझावत, सुनयो भ्रात दया करजो । छीज्यो० ॥१९॥ बन गई जैन सभा अब जहां तहां, तुमकूं आड़व रहे करजो । छीज्यो० ॥२०॥ हो गयो सूर परस्पर दयाछमें, भग गयो दुर्गतिको डरजो । छीज्यो० ॥२१॥

देंगे रुण मण धन सब दिलमिल, होके विद्याके गरजो । छीज्यो० ॥२२॥ ढारलयो आर निघार रहे सहे । है अब सबको यही मरजो । छीज्यो० ॥२३॥ कछु लघु शाखाके काम चले नहीं । ल्यो बड़ा शाखा जिर धरजो ॥ छीज्यो० ॥२४॥ जातें होय धरमकी रक्षा, जगे जैन दल फिर करजो । छीज्यो० ॥२५॥ पढ़े जैन दलके सब बालक, कर्म कटैं जावें भगतरजो छीज्यो० ॥२६॥ नातर खोय जन्म नयनानन्द पड़ दुर्गति आमोगे सबजो । छीज्यो० ॥२७॥

इति जैन सभासदोंका अर्ज । जैन दलोंके नामकी सम्पूर्णम् ।

अथ सिद्ध महेश्वरकी आरती हमारे महादेव सिद्ध ही शिवरूपी हैं अन्यथा नहीं। चाल तुमहो महारानी नमोनमोकी।

तुम ही प्रभु सिद्ध महेश्वर हो, हे महेश्वर हो परमेश्वर हो, तुम ही प्रभु सिद्ध परमेश्वर हो ॥टेक॥

निरावरण चिद्ब्रह्म स्वरूपी, तुम जिनधर्म धर्मेश्वर हो। तुम ही प्रभु० हे महे० ॥१॥ तुम शंकर कल्याणके करता, सुख भरता भूतेश्वर हो, तुम ही प्रभु० हे महे० ॥२॥ हर्ता हो सब कर्म कुलाचल, मृत्युंजय अमरेश्वर हो। तुम ही प्रभु० हे महे० ॥३॥ निर्बन्धन सब बन्धन भेत्ता, नेता मुक्ति पथेश्वर हो। तुम ही प्रभु० हे महे० ॥४॥ ध्यावें सुर नर मुनिगण तुमकूं, तातैं जाय गणेश्वर हो, तुम ही प्रभु० हे महे० ॥५॥ पूजत पाप ताप मिटे सब, शांति प्रद चन्द्रेश्वर हो, तुम ही प्रभु० हे महे० ॥६॥ इन्द्रादिक पद पंकज सेवें, तातैं पूज्य प्रजेश्वर हो। तुम ही प्रभु० हे महे० ॥७॥ मेटो जन्म जरादि त्रिपुर दुःख, तुम सच्चे मुक्तेश्वर हो। तुमही प्रभु० हे महे० ॥८॥ नैन सुख परब्रह्म जानतो, तुम दृग सुख प्रदेश्वर हो, तुम ही प्रभु सिद्ध महेश्वर हो, हे महेश्वर हो परमेश्वर हो। तुमहो० ॥९॥

अथ कलिकाल महिमा रागनी करखा पीलू ठुमरी।

कष्ट पड़ो कलयुगमें, अरे नर पापके बोझ भरे भारोरे। कष्ट पड़ो० ॥टेक॥

बढ़ गई व्याधि उपाधि जगतमें, अन्न रहै न महंगा भारी रे। कष्ट पड़ो० ॥१॥ भूपति मारि गऊकूं खावें, बिन धर्म भये म्लेच्छ सभीरे। कष्ट पड़ो० ॥२॥ वेश्या भोग करें मन वांछित, भूख मरैं सब साधु पुरुष होरे। कष्ट पड़ो० ॥३॥ निर्बल भई गऊ दूध घाटो, औषधमें रस रह्यो ना रही रे। कष्ट पड़ो० ॥४॥

मातापितकूं पुत्र कहैं हम, हम आदर तुम दुखिहारा रे।

कष्ट कटे० ॥५॥ पर रमणी रत भये हुं भार्या, रावनकूं करें गर्भपतारे । कष्ट कटे० ॥६॥ धरम अंग भव भंग करै जब, पद कुबेर माये भानुमतीरे कष्ट कटो० ॥७॥ कहीं हम मातु भ्रात अंबे जननी, दौं न हार माने दीन गतीरे । कष्ट कटो दहयुगमें, हरे नर पाय० ॥८॥

अथ संवत् १९४६ वैशाख सुदी ९ तथा १४ कूं सहारन-पुरमें पो. जी. डिप्टीके नवीन मन्दिरमें जिनराजकी प्रतिमा विराजमान होनेका महान उत्सव भया ताके ४ पद लिख्यते । प्रथम पो जी डिप्टीका ५ दिन तक निराहार व्रत करना अठ परमेश्वरकी हजूरमें अर्ज गुजरना पूजाकी निर्विघ्न समाप्तिके वास्ते ताके भावके पद पहला । रागनी जंगला झंझोटी ॥

मुझे तारो भो भगवान शरण तई थारी, मैं अति अधीन बलहीन अनाथ हूं नारी ॥टेक॥

बोल पहला—मैं या भवमें भगवान धरमवे या तेरा, है तुही तात तुही मात तुही गुरु मेरा ॥१॥ मैं पूरब जन्म अनंत भरे दुःख स्वामी, तुम जानत हो सब ज्ञानमें अन्तरजामी ॥२॥ जनि मैं सुर नर नारक पशु परजाय भरी अब । कोई पुन्यके करके पाप भई नारी अब ॥३॥ पाई पराधीन परजाय पड़ा दुःख भारी, अरु पति वियोग भगवान करम अनुसारी ॥४॥ मुझे इसको दिया नाहिं करै कोई जैसा । जो हो आगे तद्भव परभवमें फल तैसा ॥५॥ मैंने ठानिया अब इक पोस बोध भया भारी, मैं अति अधीन बलहीन अनाथ हूँ नारी ॥६॥ मुझे तारो०

बोल दूजा—अनि मैं बनवाया भगवान तुमारा मन्दिर, तुम आके आन प्रभु तिष्ठो उसके अन्दर ॥१॥ मेरी है इतनी अरज न शक्ति मेरी थोरी, मैं ठानिया भारी बोझ निशंकित होरी ॥२॥ तुम भोजो मुझे निबाहि पार पद पाऊं । नहिं

उजागर भव सागरसें तारारी । बीबी० है जन्म० ॥३॥ इसने तो बीबी अपना जन्म सफल किया ॥ हमारी तो नैय्या अटक रही मझधारारी । बीबी० है जन्म० ॥४॥ पाया है दुर्लभ नृपारी धर्म जिनेश्वरजीका । पाकर अ.नग वंश वृथा गया जन्म हमारारी । बीबी० है जन्म० ॥५॥

दरव्यो उमरोरी ऐसा किरपीने किया जैसा । धांस चले है शिरपे हरदम मौतका आरारी ॥ बीबी० है जन्म० ॥६॥ खाता जाता छाटे ये तो उमरको ऐसो प्यारो । चाटे जैसे काटको कोई अरघव एडु मारारी ॥ बीबी० है जन्म० ॥७॥ कहत नयनसुख लगावें धद्वारी दुख । करल्यो पूजा तिरल्यो हो जाय भग बिस्तारारी ॥ बीबी० है जन्म० ॥८॥

अथ तीजा पद किरपीपै भगवन्त कृपावन्त होनेका भावमें ।

रागनी जंगला ।

किरपीपे किरपा करो करी, किरपीपे किरपा करो करी । एजी सुध सब लोग सहारनपुर । किरपापे० ॥टेक॥

सुखी रहो सब पंच नगरके, प्रभुजीकी पूजा किर करी करी । किरपीपे किरपा करी करी एजी सुधख० ॥१॥ मंगल गावें सुहागन घर घर, परम हरख उर भरी भरी । किरपीपे० एजी सुखख० ॥२॥ उमंग चले परमानन्दके घन, बटत बधाई गरी । गरी किरपीपे० एजी० सुरख० ॥३॥ नैनानन्द भया भविजनके, सब अग बिता टरी टरी । किरपापे किरपा करो । एजी सुखख० ॥४॥

चौथा पद अति चमत्कारी प्रभावीक इसके चमत्कारकूं उस दिन वैशाख सुदी ९ तथा १४ कूं प्रत्यक्ष लाखों आदमियोंने देखा जिस वक्त रथ उत्सवका दिन था और धूप बिजलीसी पड रही थी जमीन पर भाडसीसी भूमक तप रही थी भारी धूप .. गरम.. [illegible]

चक्र तीरथकी पैडीने रथके आगे लोगोंने गाना शुरू किया तो इकबारगी च्यार तरफसे शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलने लगी अरु छिड़काव मात्र मेघ बरस कर देशकूं शीतल अरु पवित्र करता चला गया अर दूनूं दिन उत्सवोंमें प्रातःकालसे दो घड़ी दिन रहे तब तक सूर्यने दर्शन न दिये, मुख न दिखाया अरु बीचके दिनोंमें वैसी ही धूप पड़ती रही इससे प्रभाविक समझा गया मगर उत्सवके दिन बादल चन्दोवेसे तने रहे जिनके चमत्कारके आख्याने कहने चाहिये सो यही सकल यहां लिखता हूं यह बड़ी धूपघामकी चतुर चाहला पद है।

रागनी जंगला। खास उत्सवके दिन पड़ती हुई धूपोंमें गाया वो प्रभाव देखनेमें आया।

किया जन्म सफल जिन्होंनै, जिनजीका मन्दिर बनवाया। किया जन्म०। आजि मन्दिर बनवाया मन भाया, [illegible] जनकूं बुलवाया। तजि अरज परम प्रभु ईकूं [illegible] पधराया, किया जन्म० ॥टेक॥

आजि सहरानपुरके सकल पंच भेले कर, बोलो सब पंच धरो हाथ मेरे सिर पर। मैंने बनवाया है जिनेन्द्र धाम शुभ काम, हारी हूंमें नारी अरु पूजाजीका सारी काम। सो पंच निर्वाह पकड़ल्यो बांह दोस नहि जानूंहै ठया, किया जन्म० एसो मन्दिर० ॥१॥ आजि दरपन तेरा [illegible], पूजा में लगावो मैं तो टाटा थारे दरबार। [illegible] रहेगा तुमरा पंचो तावेदार, करदा तरीक नौका दया [illegible] पार। फिर पीने जिनकी कही पंच सिर धरी बहुत हरषर सुभवाया। किया जन्म० एसो मन्दिर० ॥२॥ आजि संवत् पियालीसा बैशाख सुदी नौमी भाई। सोपी फेर तेरस शुभ लग्न सुभराई, पूरब पच्छिम तथा दक्षिण उत्तर [illegible] भई

हमारा अष्ट करमसें जरना है, सम्यक्तादिक अष्ट गुण पाय जगतसें तिरना है ॥१॥ अजर अमर० ॥ध्रुव॥

पाप पुन्य दो बन्ध शुभाशुभ हरि शुद्धातम करना है, सोहं सोहं जाप जपि इन पापोंकूं हरना है ॥२॥ भूत भविष्यत बन्धन हरिके पथ अबंधमें परना है, दुकर्नी ए तो कहा सन्मुख तो सबके मरना है ॥३॥ भव समुद्रसे तिर नयनानन्द शिव रमणीको वरना है। अशरनगममें हमारे पास हमारा ॥३॥ अजर अमर० । ऐशा अटम० ॥

रागनी देशकी ठुमरी अपनी आत्माकूं उपदेश अध्यात्म ॥

मत दे करमके सिर दोष मत दे करमके सिर दोष ॥टेक॥

दोष तेरी आत्माको कियो नहिं संतोष पियो मद मिथ्यात चाही कुशल पर गल फांस। मतदे० ॥१॥ असत बोली छमाय भरम्यो कियो पर धन खोस, खोयो सील छिपाय बहु आरंभमें बेहोश। मतदे० ॥२॥ भग्यो भक्ति जिनेन्द्रसे कियो सत गुरन पे रोस, सीख मुनि जिन धर्मकी उठ लग्यो पीछे ओस। मतदे० ॥३॥ नहीं मिटे धीर विज्ञान अंजन बिनक भूद्रिग दोष, आजै हलाहल मूढ़ चाहे नैनसुख अफसोस। मत देकर० ।४॥

रागनी भैरवी ठुमरी मधुबिंदुका दृष्टांतमें जगतकी विडंबनाका वर्णन। अध्यात्म विचार उपदेश ॥

देखो सुघड मधुबिंदुके कारन जग जीवनकी मूढ दशा। देखो० ॥टेक॥

भूले पंथ फिरैं भवकानन; जैसैं कटक बिच व्याकुल शशा। देखो० ॥१॥ भटकें चहुं गतिके पंथमें नित, लगीं अगनजामें चारों दिशा। देखो० ॥२॥ लटकें भव तरुप करि

कूपै भ्रम मीखीं परिजन खीनसा। देखो० ॥३॥ काटत स्याम स्वेत चूहे जड़ निस दिन आयुर्य सार्घसा। देखो० ॥४॥ नीचे नर्क सर्प्प मुख फारत भक्ष गम लखि हंस हंसा। देखो० ॥५॥

सिरपर काल वली गज गृझत, कहत देव कोई हाथ पसा। देखो० ॥६॥ काढूं तोहि विमान चढ़ाऊ, पडत बिन्दु मुख लागी चसा। देखो० ।७। भाखत नाक चढ़ाय मूढ़ हम, कैसे तजूं सुख आयो गसा। देखो० ॥८॥ टूटी जल पाताल सिधारे नरककुण्डमें जाय धंसा, देखो० ॥९॥ धिग धिग मूल मूल हम खोयो सारसमें तजि फेर फंसा, देखो० ॥१०॥ नयनानन्द अन्धजन दुःखकूं मानत सुख नड साडसा, देखो० ॥११॥

आगे मुतफर्कात पद मांदगीसे पहले इसी सालमें बनाये गये थे सो लिखे जाते हैं। संवत १९४४ रचना है रागनी जंगलेकी ठुमरी चलती हुई जिनेन्द्र भक्तिकी महिमामें।

भक्तिसें मुक्ति पावोगे, भक्तिसे मुक्ति पावोगे, अजि भक्ति विना गल जावोगे भक्तिसें मुक्ति पावोगे।टेक।

पूजो श्री अर्हन्तदेव सत सच्चे भक्त कहावोगे, अजि भक्ति विन० ॥१॥ आराधो नित धर्म अहिंसा निराबाध हो जावोगे भक्तिसें० ॥२॥ सेवो गुरु निर्ग्रन्थ जगतमें फेर न भर्म पावोगे, भक्तिसें० ।३। त्यागो कुगुरु कुदेव कुमारग परभवमें फलपावोगे भक्तिसें० ॥४॥ त्यागो पांचूं पाप नरकमें पड़े पड़े मूंयाओगे भक्तिसें० ॥५॥ नयनानन्द कहै सौ बार मै भक्ति तुरत तिर जावोगे भक्तिसें० ॥६॥

अथ जिनेन्द्र भगवान भक्ति जिनवाणीकी स्तुति. राग भैरूं नर।

धारण करूं मैं तो धारण करूं, जिन वचकी लिखी धारन करूं ।टेक।

सबै देव परम गुरु सेऊं, तन मन धन सब वारन करूं जिन वचन० ॥१॥ रत्नत्रय भजि अष्ट दरब सजि, नित नित अर्घ उतारन करूं जिन वचन० ॥२॥ पूजूं तीनों पर्व अठांही, असि आउसा उचारन करूं जिन वचन० ॥३॥ नयनानंद तिरो या मारग, भव भव बन्ध विदारन करूं जिनव० ॥४॥

अथ संवत १९४८ में एक मुनिराज इलाके राज्य जयपुरमें फागी ग्राममें चौमासा किया तिनकी वन्दनकूं भव्य जीव गये कवि ताकूं हाकिमने नौकरीके सबबसे रुखसत न दई तिन मुनिराजकी भेटके वास्ते परोक्ष वन्दना निमित्त पद बनाकर भेजा सो लिखे हैं। राग खम्माचकी ठुमरी।

लीज्यो हमरी सुगुरु वन्दन त्रिकाल, लीज्यो हमरी सुगुरु वन्दन त्रिकाल। हे अशरण शरण तरण तारण प्रभु मुनियो अरज होके दयाल, लीज्यो हमरी सुगुरु वन्दन त्रिकाल, लीज्यो० टेक।

निवसत मन मधु लिट पद पंकज, निसदिन दरशनके खयाल, लीज्यो० ॥१॥ जबसे चरण धरे तुम साहिब, कीने भविजन जग निहाल। लीज्यो० ॥२॥ बील्यो काल अनादि भ्रमत जग, पकर सुजावेंगा निकाल। लीज्यो० ॥३॥ परवश परम अभाग उदय करि, आन सक्यौं फंसि कर्म जाल। लीज्यो० ॥४॥ ज्यों निर्भाग पाय चिन्तामणि, देत भवोदधि मांहि डाल। लीज्यो० ॥५॥ त्यों हम विमुख रहे दर्शन विन, नाथ अभव्यनकी मिसाल। लीज्यो० ॥६॥ नयनानन्द परोक्ष वन्दना, लीज्यो प्रभु कीज्यो न टाल। लीज्यो० ॥७॥

रागनी ड्योडी, भजन जल जात्राका चाल हमकूं छोड़ चले वन माधो अथ पद।

आवो सन्त चलें जल भरने, आज सिरीजीका न्हवन करेंगे ।टेक।

सुवरण कलश धरो शिर ऊपर, क्षीरोदधि जल छाण भरेंगे; केशर अरु कर्पूर रलाकर ल्याय प्रभुजीके पाय परेंगे आवो० ॥१॥ अष्ट दरव ले पूजा करके, भवसागरसे वेग तरेंगे; जल चढ़ाय प्रभुके पदपंकज जन्म जरामृत दाह हरेंगे। आवो० ।२। पुष्प चढ़ाय मंगाय महाचरु, दीपक ज्योति जगाय धरेंगे। आवो० ॥३॥ खेवैं धूप दशांग चरण बीच, जातें कर्मके वंश जरेंगे; फल चढायकर अर्घ आरती, अब हम पुण्य भण्डार भरेंगे। आओ० ॥४॥ चरण पकर अरु पसर करि लगर लगर अरदास करेंगे, दृग सुख सन्मुख होय प्रभुके; मुक्ति लिये विन नाहिं टरेंगे। आवो० ॥५॥

अथ न्हवन करनेका भजन राग दादरा पूर्वी ठुमरी; चाल–अरे हां रे कटरिया नैनोंने मारा हो नैनोंने मारा गोरी सैनोंने मारा हो रे कटरिया नैनोंने मारा। इस चालमें।

भाई करल्यो सिरीजीका अब तो न्हवन, भाई कर ल्यो० अब तो न्हवन करो। पूजा भजन करो ले ल्यो शरन, भाई करल्यो० ।टेक ।१। तरसि तरस उत्तम कुलमें तुम आये खोवो अकाज मत नरभो रतन। भाई कर० ॥२॥ पायो है भाई जिनजीका धरम अब, जीव प्रतिपालका है जिसमें कथन। भाई कर० ॥३॥ कलशे भी ले ल्यो बदल ल्यो वसतर, भरल्यो जल छान करिये जतन। भाई कर० ॥४॥ धीरे धीरे चलियो निरखके पृथ्वी, नैन चैन जैनका है जैसा वचन। भाई करल्यो० ॥५॥

इस चालमें पूजा पद्‌: शान्तिजीका।

गये भैना पियरवा नैना बदल गये भैना० है नैना बदल

गये, घरसे निकल गये व्रत लीने धार, गये भैना पियरवा नैना बदल० ।टेक।

हे व्याहनकूं आये मोरे दूला कहाये, देके दरस गये तोरनसे फिर। गये भैना० ॥१॥ हे पशु पुकारे प्रभुजीने निहारे, दुखिया विचार दिये बन्धन कतर। गये भैना० ॥२॥ हे मोडा अरथ परमारथके कारन, कंगनकूं तोड लिया संजमकूं घर ॥ गये० ॥३॥ हे लेल्यो पियारी सब छिमा हमारी। वेगी बता दो गिरनारकी डगर ॥ गये० ॥४॥ हे करूंगी नयन सुखदाई तपस्या, लूंगी प्रभूके पद पंकज पकर ॥ गये० ॥५॥

इस चालमें तीसरा पद श्री गुरुदेवोंकी तलाश।

कहीं देखे वहनियां श्री गुरु हमारे, कहीं देखे वहनियां श्री गुरु हमारे। हे श्री गुरु हमारे आली जिन मुद्राधारे, देखे वहनियां श्री गुरु हमारे। कहीं देखे० ॥टेक॥

हे जब देखूं तब पाऊं परम सुख, धारूं धरम मिट जांय भ्रम सारे। कहीं देखे० ॥ हे श्री गुरु० ॥१॥ हे सम्यकदरस धार, सम्यकज्ञानसे विचार, सम्यक आचारसे निवार कर्म डारे। कहीं० ॥२॥ हे इस भवमें कोई हितू न आली, वोहि हितू जो भवजालसे निकारे। कहीं देखे। हे श्री० ॥३॥

हे नाती संगाती सब स्वारथके साथी, घाती हैं ए तो परमारथमें सारे। कहीं०। हे श्री० ॥४॥ हैं वे स्वारथ परमारथके साथी, सतगुरु हैं प्यारी अवलम्ब देन हारे। कहीं देखे०। श्री गुरु० ॥५॥ हे व्याकुल हैं प्यारी बिन दर्शन ए दोऊ नैन, सुख हो कहांसे बिन सतगुरु निहारे। कहीं०। हे श्री०। आली जिनमुद्रा धारे० ॥६॥

अथ नवीन रचनामें जिनवाणीका पद।

चाल—डंगर गंगाके जाङ्गियोंकी लयमें जोग्र जरी इकतारे पर गाते हैं।

हे आराधो साधो जिन प्रवचन मात गंगे, अजिकलि मलंक प्रक्षाले गालै पाप करै मन चंगे साधो जिन प्रवचन मात गंगे। जी अराधो साधो० ॥ टेक दौड़ ॥

ए तौ तीर्थंकर हिमवन्तोंसे निसरी, गणधर गुरुवोंके हिरदेमें पसरी डायक वगाये मोहाचल दश दिशरी। मेटी जग जड़ तात पोंकी सव तिसरी, सादि अनादि अचल ध्रुव शासन नाशन क्लेश कुढंगे। साधो जिन प्रवचन०। हे अराधो० ॥१॥ ए तौ मुनिभि रूपासित है तीरथ भारी, करै अजर अमर रहै तीनौं काल जारी। जाके रसके रसैश सेवें साधु ब्रह्मचारी, याकूं जानियो जहाजकी समान उपगारी। ये तौ सम तत्व पट द्रव्य पदारथ परमारथ रस भरी सदा रत्नत्रयमई शिव गंगे। साधो जिन०। हे अराधो० ॥२॥

तारे याने सिंह नवल कपि पापाचारी, तारे गज सूकरने कूकरने वलधारी। चोर ढोर चोल और तारे भील भगकारी, तारे वज्र पापीयानै मुनिके शिकारी। कहै नैन चैन अैनकी है ऐन याद्शाही करै सवकी रिहाई, भव भयमैं है सुखदाई जौसवेगे गंगे, जिन प्रवचन मात गंगे। हे अराधो साधो जिन० ॥३॥

अथ गजल रागनी भानी।

ए प्यारे चेतन दुनियामें आखिर आजाद रहो, बेखबर सोता है क्यों तू बेखबर सोता है क्यों। ए प्यारे० ॥टेक।

ए गाफिल तू कौन बशर है, कुछ भी फिकर नहीं। ज्ञान दशा के जान बशर वर्थाद तू होता है क्यों, बेखबर

सोता है क्यों । ऐ प्यारे चेतन० ॥१॥ विषय अगन यहां जग रही धन्दे, जोग जुगतमें चले तो चल दे । भोगोंमें फंस रहा इसमें अपने सार न खोता है क्यों, वेखबर सोता है क्यों । ऐ प्यारे चेतन ॥२॥ लगा रहा कर्म कलंक अनादी, हिमिहवाका मत हो आदी । ज्ञानके दरयाको ज्ञानमें, वे अकल धोता है क्यों । वेखबर सोता है क्यों । ऐ प्यारे चेतन० ॥३॥ यह तो जगह है जहां न फानी रंज अलममें ह्यां जा विरानी, ऐ गुल राहत वक्त सफरका, वे कदर सोता है क्यों । ऐ प्यारे चेतन० ॥४॥

राग कालंगडा पद हजूरी अपने पुत्रकी पीड़ामें नैनसुखनें परदेशमें बनाया संवत १९३८ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ शुक्रवारके ।

विपत पड़े कोई बन्धु न भाई, तुम ही नाथ सहाई विपत पड़े० ॥टेक॥

सम्पतके सब सगे संगाती संकटमें दुखदाई, वे दुश्मन तुम अति हितकारी या में झूठ न राई विपत पड़े० ॥१॥ सुन लई कान परख लिये नैन लिये दोनू पतियाई, वे पाहन तुम मोह नसाहिब शिव लग सारथ वाही विपत पड़े० ॥२॥ पुत्र युगल परलोक सिधारे करम उदय गति आई, फिर कर्मन यह नाच नचायो दो घर भीख मंगाई । विपत पड़े० ॥३॥ मिल गये रतन जतन बहु कीने गाये गीत बधाई, तिनहू दोनू हाथ पसारे कछु नहिं पार बसाई । विपत पड़े० ॥४॥ फिर कछु काल कलेश उठाये विरध अवस्था आई, तुमरी भक्ति विषै चित दीनों कर लई तुरत सुनाई । विपत पड़े० ॥५॥

घर बैठे संवत सैंतीसे भेजी सहजोवाई, वक सगई मोहि पुत्र अचानक किंचित वात न लाई । विपत पड़े० ॥६॥ तव तैं दया सिंधु तुम जाने अरु जाने सुखदाई, तातैं नाम दया

पाप उदय तेरो आयो, नृप अरविंदने पकर बुलायो। जारे कमठ ॥३॥ फारयो नाक कियो मुखकारो, पर लदाय दियो देश निकारो। जारे कमठ० ॥४॥ क्यों धारयो सठ भेष कुलिंगी, क्यों हाटोगिर जेम भुजंगी ॥जारे कमठ०॥५॥ क्रोध महाविष तज्यो न काहू, लेय शिलाखण्डो कर्ध बाहू। जारे कमठ० ॥६॥ क्यों मरुभूत मिलन तोहि आयो, चरण पकर मस्तग जा झुकायो। जारे कमठ०॥७॥ हाहा तोहि दया किन आई, पटक शिला मारयो सज्जन भई। जारे० ॥८॥ पीटि कुलिंगन पकरि निकारयो, चोरी करन गयो कहूं मारयो। जारे कमठ० ॥९॥ भयो कुकुंट अहि पापाचारी, नैनानंद भयो सठ संसारी। जारे कमठ० ॥१०॥

इति प्रथम भाव। आगे कहे हैं जो सारा सुरेन्द्र नाटक गाना मंजूर न होय तो नंबर २३३–२३४–२३५ ए तीन पद तो हर भजनमें गावने ही चाहिये सोई मंगलाचरण पूर्वक फिर लिखे हैं।

अथ मंगलाचरणम दोहा।

बीत्यो काल अनंत ही, आवनहार अनंत. वर्तमान ऋषभादि नमूं अनन्तानन्त ॥१॥ नमूं सिद्ध निष्कल सकल, सकल सुगुरु निर्ग्रंथ। नमि नमि वंदू भगवती. जिनवाणी जयवंत ॥२॥ भजन किया ते तिर गये, भजन विना करि खेद। यों ही वकि वकि मर गये, पढ़ पढ़ च्यारों वेद ॥३॥

अथ गांधर्वी शिक्षाके दोहे प्रारम्भ।

तीन ग्राम अरु सप्त स्वर, ताल भाव करि शुद्ध। विनय सहित परमाद तजि, गावो भजन सुबुद्धि ॥४॥ प्रथम अलाप उचारिये, मंद मध्य अरु तार। गर्भ जन्म तप ज्ञानके, गावो मंगलचार ॥५॥

अथ जुगकी आदिमें जुगादि देवके जन्मके दिन कर्म

भूमिकी रीति प्रवर्ती चनके निमित सुरेन्द्र विचार करे हैं ताकी सूचना चाल आल्हा मलखानकी।

पद पहला।

प्रथम मनाऊं मैं अर्हन्तको, अजि जाकों धरें सुरनर मुनिजन ध्यान। अब मैं बताऊं जिन पितु मातको, अरे भैया इन्द्र करावे जैसे असनान ॥१॥ धावा पहला। सुनलो ज्यों पंचों किया इन्द्रने विचारयों, अब गया बीत ए कुतीय सारा काल। मिट गई जुगल जनमकी परिपाटियां, अरु भैया मिट गई भोगभूमकी चाल ॥२॥ अब लों तो जोडीजी जुगल या सारे जनमते, अरु जिनके माता पिता कर जाते काल। कौन तो न्हुलावेको खिलावे उन्हें गोदमें, अजि उनकूं पालेथी कलपतरु डाल ॥३॥ छिप गये कलप कलप चौथा आ गया, अरु होगी कैसे परजाकी प्रतिपाल। विद्यमान जुगल जिते हैं इस क्षेत्रमें, अरु ए तो जानें नहीं करम भला हाल ॥४॥ भया नहिं काहूके अकेला ऐसा पुत्र तो, अरु नहिं जनीकाहु कन्या सुन्दर बाल। अब भगवान अकेले जन्मे नाभिके, अरु किये माता मरूदेवीने निहाल ॥५॥

आगे जन्मेंगे जी अकेले सुत कन्यका, अरु नाना भी जीवेंगे बहु काल। किया मैंने प्रभुका न्हवनविधि मेरुपै, अरु नहिं देखा यो जुगलियोंने हाल ॥६॥ करूं अब ऐसी इन्द्राणी दाई होयके, अरु क्रोड़ नारियोंमें होके प्रभुजीका नाम गावै सुर सुन्दर सुहागन मंगल मंजरी, अरु न्हावैं [illegible] जावें में याही काल ॥७॥ न्हाऊं मैं प्रभुको पहराऊं [illegible], अरु वस्त्राभूषणसे पूजों न्यावे भाल। देवे [illegible] र जुगलनी, अरु जासे छूटे जी [illegible] कुपों [illegible] ॥८॥ पहराऊं तालवे फूलड़ टोपू [illegible]

सुतोंकी प्रतिपाल। ऐसी विध इन्द्रने विचारी कोरी विक्रिया, अरे भैया फैला दई थिया इन्द्रजाल ॥९॥

अथ जिनेन्द्रके जन्मोत्सवमें नाभिराजाकी सभामें भगवतके आगे सुरेन्द्र तांडव नृत्य करनेके वास्ते अपनी गांधर्वी सैनीकूं तैयार हो जानेकी शिक्षा करे हैं। चाल आल्हा। दोहा। राग आल्हा कवि वचन।

अब आरम्भ करायोजी सुरेन्द्रने, अरु भयो नृत्यके करनकूं तैयार। जन्म समयमें श्री भगवंतके, अजिये तौ नाभि नृपनिके दरबार ॥१॥ भावा। हुकम चढायो जीव जावो गति देवना, अरु सारी मंडली हो जावो हुशियार। साजकूं मिला ल्योजी निकालो स्वर शुद्ध कर, अरु छेडो खरज ऋषभ गंधार ॥२॥ मध्यम गरमगरमकूं विचार ल्यो, अरु करो पंचमका शुद्ध उचार। धैवत साधो अरु सोधोजी निखादकू, अरु ल्यो ऐसा तौं चली उनगी संभार ॥३॥ स र ग म प ध नि नि ध प म ग र स क्रिया, अरु र ग म प ध नि सोधो हुशियार। ग म प ध नीको अरु स प ध नि सुरनकूं, अरु फिर प ध नीके छेडो तीनों तार ॥४॥ छेडो धानी दोन अरु छेडोनीकूं एकली, अरु छेडो स नि ध प म ग र स सार। उलटि पलटि कई बजावो गति चावसे, अरु दरसावो छहों रागोंकी बहार ॥५॥

पांचूं पांचूं भार्या दिखा दो छहों रागकी, अरु दिखला दो उनका सारा परिवार। स्वरसें चूकेगा अरु ऊकेगा जोलसे, अरु फक दूंगा तेरा द्वीप सेतीवार ॥६॥ वे जा मटकेगा अरु देगा ओछा ताल जो, अरु वेजा हंसेगा वृथा जो मुख फाड। विन अवसरकी उठावेगा जो रागनी, अरु नहिं करेगा जो भक्तिका विचार ॥७॥ कंठकूं फुलावेगा चिल्लावेगा जो गावता, अरु साज वाजोंमें अडावेगा जो नाड। दिल घबराये वे

उठावेगा जो रागनी, अरु गाये जावे गान सोचेगा विनाद ॥८॥ विगड सुरांपे नथमेंगा झट गावतां, अरु नहि पकडेगा झट समताल। झट न बुसेगा न छुटेगा स्वरकी चाससें, अरु हो हो जावेगा जो स्वर नैनीवार ॥९॥ अरु जो ना बैठेगा गवैया गोडी मोडके, अरु सिंह आसन वाउझा सनमार। इतने दोषूंको जान बचावेगा जो देवता, अरु मैं तो बुंनार्जा अपाढे सनिकार ॥१०॥

अथ फुटकड भजन उत्तम भैरवी ॥हजुरी॥

जिस दिनसे मैं दरस तोरे पाये, अनुभव घन वरसाये। दरस तोरे० ॥टेक॥

भेद विज्ञान जग्यो घट अंतर, सुख अकुर सरसाए। दरस तोरे पाये, जिस दिन० ॥१॥ शीतल चित भये जिम चंदन, शिव मारगमें धाये। दरस तोरे पाये, जिस दिन० ॥२॥ प्रगट्यो सत्य स्वरूप परापर, मिथ्या भावन नाये। दरस तोरे पाये, जिस दिन० ॥३॥ नयनानंद भयो अब मन थिर, जगमें सन्त कहाये। दरस तोरे पाये, जिस दिन० ॥४॥

किस विध कीने करम चकचूर इसका जवाब नयनसुखका।

जिस विध कीने करम चकचूर, सोही विध बतलाऊं तेरा भरम मिटाऊं वीरा। जिस विध कीने करम चकचूर ॥टेक॥

सुनों सन्त अरहंत पन्थजन स्वपर दया जिन घट भरपूर, त्याग प्रपंच निरीह करें तप। ते नर जीतें कर्म करूर, सोही विधि बतलाऊं तेरा भरम मिटाऊं वीरा। जिस विधि कीने करम चकचूर ॥१॥ तोरे क्रोध निठुरता अवगन, क्रूर ... सिर डारें धूर। असत अदत्त करि भंग बताये, ते नर जीतें करम क्रूर। सोही विधकीने करम चकचूर ॥२॥ ... सुझनें भरि, काढ असंजम स्वाद जरूर। विषय ...

चाल फूंके, ते नर जीत करूर । सोई विधकीने करम चकचूर ॥३॥ परम छिमागुंद भाव प्रकासे, सरल वृति निवाल कपूर। धरि संजम तप त्याग जगत सवें, ध्यावें सतचित केवल नूर। सोई विधकीने करम चकचूर ॥४॥ यह शिव पन्थ सनातन सन्तो, आदि अनादि अटल मशहूर, या मारग नयनानंद पायो । इस विध जीते करम करूर । सोई विध कीने करम चकचूर, जिम विधकीने करम चकचूर ॥५॥ ॥इति॥

अथ अर्हत महिमा मंजरी यति नयनानंद कृत लिख्यते, तिसकी आदिमें ऐसा वर्णन है कि व्याकरणमें अर्ह धातुसे अर्हन बना है ताका ऐसा अभिप्राय है कि अर्हत ही पूज्य है और नहीं । चाल खयाल बन्ध चौक लंगडी रंगतको, कलंगी छन्द । प्रारम्भः ॥

मुजको है भगवान भरोसा जो कोई तुमको ध्याते हैं, भक्त तुमारे । कर्म रिपु जीत सिद्धपद पाते हैं ॥टेक॥

ज्ञानावरणी हरा आपने जिसने जग भरमाया है, करके अचेतन । चेतनाकू भवसिंधु फंसाया है ॥१॥ हरा दरशनावरणी कामद केवलज्ञान उपाया है, फोरि महाबल । जीतिके मोह-मल्ल जश पाया है ॥२॥ अंतराय करके अन्त अर्हन्त जगतीर्थ कहाया है । बन्ध मोक्षके, आप्त हो तुम षटमतमें गाया है, ॥३॥ वैयाकरणी अर्ह धातुकू पूजामें बतलाते हैं, भक्त तुमारे । कर्म रिपु जीत सिद्ध पद पाते हैं ॥४॥ मुझको है भगवान भरोसा जो कोई तुमको ध्याते हैं, भक्त तुमारे, कर्म रिपु जित सिद्ध पद पाते हैं ॥४॥

अथ व्याकर्णोक्त शब्द षटमत प्रमाण है तस्मात अर्हत देव षटमत पूज्य है अरु प्रमाण है सो कहे हैं । खयाल चौक दूजा, यहां ऐसा मतलब है कि व्याकर्ण है सो शब्द शास्त्र है अरु यह किसीका मत शास्त्र नहीं है अरु षटमत मान्य हैं ।

शब्द शास्त्र निर्वेर जगतमें सो मान्यो पटमन निर्दिट पूजनी कहो। छहों मैं तुम अर्हन् क्या जानैं मट ॥१॥ गणधर इन्द्र धरणेन्द्र तुमारे, समवशरणमें आडट डट चरण तुमारे पकर पीते हैं ज्ञानामृत गटगट ॥२॥ करि धिपध्यानल शांत सन्तजन धरते हैं संजम झटपट, पट पटमेंसे पांच तजि जिन चिनमें जात हैं लिपट ॥३॥ तुम सेवासे तुमसे हो हो काट करमशि वजाते हैं। भक्त तुमारे कर्म रिपु जीत सिद्ध पद पाते हैं। मुझको है० भक्त तुमारे० ॥४॥

अथ समवशरण शब्दमेंसे अर्थ निकले हैं। कल्याणमंदिर १ शिवालय २, मंगलमंदिर ३; शरणमें प्राप्त होनेका शरणालय ४: वा शरण स्थान ५, अभय स्थान ६, उदार मंदिर ७. अघ भेदि मंदिर ८। इत्यादि समवशरणके नाम हैं ख्याल तीजा।

समवशरण भगवान तुमारा अद्भुत महिमावाला है, सत्पुरुषोंने, अर्थ उसका इस भांति निकाला है।१। सर्वोंमें कल्याण अब शरण मन्दिर वही शिवाला है, मंगल मन्दिर, जगतका निराबाध रखवाला है।२। तथा शरणमें प्राप्त होनेका वही शुद्ध शर्णाला है, शरणागतको. शरण [illegible] करनेवाला है।३। अति उदार अग अघम भेदी [illegible] शाला है, मानों भाषै, अरे नर शिवकारण [illegible] ॥४॥ तारण तरण निरखि सुरनर मुनि शरण तुमारी आते हैं, भक्त तुमारे, करम रिपु जीत सिद्धपद पाते हैं ।५। मुझको [illegible] भक्त तुमारे।

अथ अरहन्त देवकी अनन्त चतुष्टय [illegible] वर्णन. चौक चौथा; ख्याल लंगडा।

लब्धि अनंत चतुष्टय महिमा गुण दर्शन [illegible] ज्ञान अनन्ता; भये प्रतिबिंबित सर्व द्रव्य सारे ।१। [illegible] काल प्रवर्ति द्रव्य स्वगुण पर्यंयधारे. युगपत् [illegible]

तुम अनन्तदर्शी प्यारे।२। अनन्त अलोक विलोको सब अनंतके भंडारे. वीर्य अनन्ता; अनादि कर्मबन्ध तोड़न हारे. ।३। परम ब्रह्म पद पाय घातिया हाय क्याकिम सब टारे. परमेश्वर हो: आपने सब अघभर पटकि डारे।४। हलके हो निरे हो गगनमें किससे ए गुन पाते हैं, भक्त तुमारे: कर्मरिपु जीत सिद्ध पद पाते हैं।५। तुमको है० । भग० भक्त तु० ।४।

अथ अरहंत चरण शरणके महात्मसें भक्तोंके कुष्ट रोग अग्निभय दूर भये अर जे विमुख हो गये ते दुर्गतकूं गये तिनका वर्णन । कव्वाल चौंक पांचवां ।

निर्निदित पद पंकज तुमरे त्रिभुवन जंतु सहाई हैं । पनत भवांबुधि पोत यत भक्तोंको सुखदाई हैं।१। वादिराज श्रीपाल नृपतिकी बाधा कुष्ट मिटाई है। अग्नि भई जल, ध्यानकी कंवल विषै पधराई है।२। विष्णुकुमार मुनि गजपुरमें अग्नि प्रचंड बुझाई है। बलकी बझमें बचे मुनि जिन तुमसें लौलाई है।३। बचे पांडु सुत लाखा मण्डप बचि गई कुन्तीमाई है। तुमरे ध्यानसें बचे भारतमें फतै जिनपाई है।४। गये सागरसेन नर्क अनंते जो तुमसें फिर जाते हैं। भक्त तुमारे. कर्मरिपु जीत सिद्धपद पाते हैं।५। भक्त तुमारे।६।

पुनः अर्हंत भक्तिसे शूली भय समुद्र भय पाताल पतन कूप भय निर्जन, वन गुफा भय भक्तोंके दूर भये अरु जिनोंने अर्हंतकी आज्ञाकूं लोपा ते असभ्य संभाषणके दोष करि नर्कमें धस गये और पृथ्वी फट गई, कव्वाल चौंक छठा ।

शूली टूट भया सिंहासन महिमा सुर नर गाई है, सेठ सुदर्शन; गये मुक्तिमें धजा फराई है।१। संजयंत मुनि पड़त सिंधुमें केवल सिंधुमें लब्धि उपाई है; गये मुक्तिमें, शत्रुकी कुछ नहीं पार बसाई है।२। चारुदत्त रस कूप गोह गहि

अथ संग्राम भय अरु अनेक भक्तोंके भय संकट अरहन्त भक्तिसे दूर भये अरु अनेक पशु पक्षीनके उद्धार भये सो लिखे हैं: ख्याल नवमां।

वज्रकिरण संग्राममें जीत्या कर मुद्रा जिन धारे हो। सद्भक्तोंको तुमहीने संकट सेती उभारे हो।१। भील भुजंग जटायु स्वान मोंढक चण्डाल निहारे हो, चोर ढोर खर धनी निर्धन अनअक्षर उधारे हो।२। हिंसक व्यसनी गुणी निर्गुणी भवदधि पतत थिचारे हो, अतिथ अनाथन साथ दे सिद्ध सदन ले धारे हो।३। मानतुंगके बन्धन तोड़े भक्तामर यश गाते हैं। भक्त० मुज० भक्त० ।४।

कवि कुल व्यवस्था वा जन्म वा निवासनगर ख्याल

जन्म लियो गुजरात देशमें जहां नौसराणा नगरी, पाल्यो भूधरदास यतिने पढ़ा जाने सारी।१। जिले मुजफ्फरनगर कांध ले ले आयो अपनी नगरी, सकलपंच मिल बधाई दई मिनुमुपिलकी नगरी।२। चलन गृहस्थाचार अवस्था भई पचासके लगभगरी, नाथ तुमारे सुजस गानेमें कलम हमने रगरी।३। जलते हैं पापीजन हमसे भक्तोंके मन भाते हैं; भक्त तुमारे कर्मरिपु जीत सिद्धपद पाते हैं। मुझको है भगवान० भक्त०।

कविताके पद नाम तथा उसने अपने च्यार सागिर्दोंके नामसे अनेक पद बनाये तिनमें अपना नाम नहीं गेरा परन्तु रचना सब कविताकी कृत्य जानना ताकी सूचनामें यह अन्तमें खयाल बन्ध छैक लिया चोक है; इसके कहनेका यह प्रयोजन है कभी कोई ऐसी शंका न करे कि बिगानी रचना अपनी रचनामें क्यों शामिल किया है तातें आशंका मेटी है।

हैं पद नाम नैनसुख दृगसुख दृगानन्द प्रमुखादिप्रभू। ऐनुल राहत नयन आनन्द नैन चैनादि प्रभू।१। चन्दनलाल

खुशालराम अरू मुँशी अरू मंगलमल्लादि प्रभु। इन नामोंमे चना पदमें करि दिये विख्यात प्रभु ॥२॥ सुफल भई नव रचना हमरी तुमरे पद परशाद प्रभु, हर मुल्कोंमें भक्तजन गाते हैं कर याद प्रभू ।३। भजन प्रताप सकल पंचोंसे पाते हैं हम दाद प्रभू; करो अनुग्रह न आवे अब आगे परमाद प्रभू ।४। गाऊँ में गुण ग्राम तुमारे घर घर ध्यान समाधि प्रभू; कहै नयनसुख मिटा दो जन्म मरणकी व्याधि प्रभू ।५। तारे तुमने दुष्ट अनन्ते हम तो दास कहाते हैं; भक्त तुमारे कर्मरिपु जीत सिद्धपद पाते हैं ।६। मुझको है भगवान भरोसा जो कोई तुमकू ध्याते हैं; भक्त तुमारे कर्मरिपु जीत सिद्ध-पद पाते हैं मुझको है० ।७।

इति श्री नयनानन्द कवि कृत अर्हत महिमा मंजरी समाप्तम्।

अथ नवीन भजनः अर्हत स्तुति रागनी जंगला यानी देहाती मेवाती गंगावासी लोगोंके भजनकी तरहमें चटतान इकतारे पर गानेकी छोटी कली।

तुम्है त्रिभुवनके जन ध्यावें थारे गुण गुण गुण भगवान, तुम्है त्रिभुवनके जन गावें ।टेक।

अजि अर्हघातुसे भये हो अर्हत योग्य लब्धिसे भये हो भगवान, धरो अनन्त दरस सुख वीरजः जिन गुण सब गावें। थारे गुण गुण गुण भगवान तुम्है त्रिभुवनके जन ध्यावें ।१। अजि आप तिरे औरनकूं तारो शुभ शिक्षा करि भर्म निवारो; तारनतरन निरख सुर नर मुनि शरण तुम्हारी आवें; थारे गुण गुण गुण भगवान तुम्है त्रिभुवनके जन ध्यावें ।२। अजि पद पद पद पद पद गाजि अविकल सार्थक जिन चिनमें धरि मन, धर्म अर्थ काम मोक्ष पुरुषारथ फल पावें, थारे गुण गुण गुण भगवान तुम्है त्रिभुवनके जन ध्यावें ।३। अजि शूकर सिंह नकुल कपि तारे, आन कुमति कमठ

उधारे, इस सुखके इस दोष हरो थारे सेवग कहलावें; थारे सुण सुण गुण भगवान तुम्हें त्रिभुवनके जन ध्यावें थारे० ।४।

अथ दूजा भजन इसी चालमें जिनेन्द्रके अठारह गुण अरु कुदेवोंमें अठारह औगुण दिखाये हैं तिनकी सूचनामें ।

मैं तजि दिये कुदेव अठारह दोष धरनहारे, मैं तजि दिये सर्व कुदेव अजि दोष धरनहारे; सब टारे, निर्दोषी इक तुम ही निहारे, वीतराग सर्वज्ञ तरणतारणका विरद धारे, मैं तजि दिये सर्व कुदेव० ।टेक।

भूख्यास तुमकूं नहीं साता, रागद्वेष अरु नाहि असाता, जन्म मरण भय जरा न व्यापै मद सब निरवारे, मैं तजि दिये सर्व कुदेव अठारह० ।१। मोह खेद प्रस्वेद न आवै विस्मय नींद न चिंता पावै, भजि गई रति अरु अरति कहै सुरनर मुनिजन सारे, मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरन हारे । मैं तज दिये० ।२। भूखा देव छिपटता डोलै प्यासा नित सिर चढ़ चढ़ बोले, रागी छीन पराया धन दे द्वेषी दे मारे, मैं तजि दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरनहारे । मैं तज दिये० ।३।

रोगी रोग सहित दुख पावें, जन्म धरें सो मर मर जावें, डरना बांधे शस्त्र बुढ़ाया सुधबुध हरि आरे, मैं तजि दिये सर्वकु देव अठारह दोष धरनहारे । मैं तजि दिये० ।४। मदवाला नित मदिरा पीवें, मोह मूर्छित मरयान जीवें खेद खेद विस्मय करि व्याकुल किसको निस्तारे, मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरनहारे । मैं तज दिये० ।५। सोवें सो परमादी होवें दूवें अरु सेवगकूं डबोवें, खोवै आतमगुण सु तुमारे गुण कैसे निर्धारे, मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरनहारे । मैं तज दिये० ।६।

चिंतातुरकूं चिंता सोखै, रति बेहोश अरतिसें रोकै. मृत भवानी ऊतमानी तज यो सब प्यारे, मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरनहारे। मैं तज दिये० ।७। ब्रह्म विष्णु नोंत है वोही, जिसने कर्मकालमा धोई. दयानन्द वो ही देव हमारा सेवो सब जन प्यारे, मैं तज दिये सर्व कुदेव अठारह दोष धरनहारे। मैं तज दिये० ।८।

रागनी धानी चाल यह है–चाहो पिया मार डारो न्यारी रहूँगी, हो न्यारी रहूँगी मैं तो गारी ना सहूँगी. चाहो पिया मारि० ।टेक।

सौतन वैरन मोपै ताने चलायें. एकै कहैगी तो मैं सौ सौ कहूँगी, चाहो पिया मार०। भजन।

राखो रुचि वीरा मत रूसो धरमसे, राखो रुच वीरा, हे रूसो ना धरमसे, जिनमतके मरमसे, राखो रुचि वीरा मत रूसोजी धरमसें ।टेक।

धर्म प्रभावति रोगे भवसागर, पिंड छुटैगा तेरा आठोंही करमसें, राखो रुचि० ।१। सांचे देव धरमहीको लेनो, नाहिंसे तिरोगे, ना तिरोगे जी भरमसें. राखो रुचि० ।२। सांग नयनसुख सीख सयानी, भाषै है सु गुरु तेरे जीया देनकसें. राखो रुचि वीरा मत रूसो धरमसें. राखो रुचि वीरा, हे रूसो० ।३।

रागनी भैरवी वा खम्मान चाल।

तेरे इश्कमें दिवाना हुवा. तैंने कदर मेरी जानी नहीं. मैं तो तेरे इश्कमें दिवाना हुआ ।टेक।

बोलो ना हमसें खफा हैं तुमसें. प्यारी रही प्यासी साना हुवा, तैंने कदर मेरी जानी नहीं. मैं तो तेरे० यह चाल है.

रागनी भैरवी।

मैं तो शांति पाई तृष्णा घटानेसें, जबसे बनारसी स्वामीसे

लई प्रभु जबसे चरनकी शरनमें लई. जागी सुमत मोरी भागी कुमत, प्रभु जबसे चरनकी शरनमें लई ।टेक।

छूटी अदर्शन विथा अनादी, जबने समाधी धरनमें लई, जागी सुमत० ।१। अनुभव भयो मेरे मनमें तुमारो, जबसे तेरी जप करनमें लई, जगी सुमत० ।२। साता भई भगगई सब असाता, जो पूर्व जन्मन मरनमें लई, जागी सुमत० ।३। भजी सर्व चिंता भया सुख अनन्ता, नैनानन्द सम्पत भरनमें लई, जागी सुमत० ।४।

अथ पद अध्यात्म चाल।

मैं बाज आई झिलके लगानेसे, मैं बाज० ।टेक।

सोनेकी थलयामें भोजन परोसा, रे स्या गया यार बहानेसे, मैं तो बाज० यह चाल पद।

मैं तो शांति पाई तृष्णा घटानेसे ।।टेक।।

रागीसे पूजे विरागी न पूजे, भ्रष्ट भयो बहकानेसे, मैं तो शांति पाई तृष्णा० ।।१।। धारी कुभेख अनेक भरे दुख, दूर भग्यो जिनबानेसे, मैं तो शांति पाई० ।२। मिटी कुदिष्ट सुदिष्ट भई अब, श्री जिनके समझानेसे, मैं तो० ।३। बन्ध मोक्षको मारग सूझयो, स्वपर स्वरूप पिछानेसे, मैं तो शांति पाई० ।४। जाने पुन्य पाप दोऊ बन्धन, शुद्ध भावना भानेसे, मैं तो० ।५। नैनानन्द मिटे सब सुख दुख, सम्यग्दर्शन पानेसे, मैं तो शांति पाई० ।।६।।

अथ द्वादशानुप्रेक्षा गर्भित धर्मोपदेशका भजन रागनी झंझोटी चाल यहै है।

मनहर लिये जाय मेरा सांवरया, दिलहर लियें जाय मेरा सांवरया ।।टेक।।

सुनरी सखीरी जिन सजननसे दिल फंटा, उनसे मिले सोई बावरा, दिलहर० इस चालमें।

अरे भाई भाले सम्यकभावना रे, भाई भाले० ।टेक।

सुन ले पियारे मेरे इस भव विषम विदेशमें, हैं कुगुरुनकी बहकावना, रे भाई० ।१। सुन ले पियारे मेरे देहादिक सब अथिर हैं, इनमें चित मत भटकाव रे, भाई० ।२। सुन ले पियारे मेरे तू अशरण तिहुंकालमें, जहां चहुं गतिमें भरमावना रे भाई० ।३। सुना ले प्यारे मेरे एक अन्य तू अन्य सब, अपनायत क्यों निभावनारे, भाई० ।४। सुन ले प्यारे मेरे अशुचि अमंगलका घड़ा, तुजे पड़ता है धरना उठावनारे, भाई० ।५।

सुन ले प्यारे मेरे आश्रव हर संवर करो, विन निर्जिरा और उपावनारे, भाई० ।६। सुनरे पियारे मेरे लोक विषे तेरी रोक है, विज्ञान विनानिके सावनारे भाई० ।७। सुन ले प्यारे मेरे शिव पापक जिन धर्म है विन धारे होगा बचावना भाई० ।८। सुन ले प्यारे मेरे पिछली मत अब छोड दे, अगली विन हो सुरझावना भाई० ।९। सुन ले प्यारे मेरे अनुप्रेक्षाका यों ही अर्थ है, दृग सुख वृथा न गंवांवनारे भाई० ।१०। ॥ इति ॥

अर्हन्त भक्तिके उपकारमें पद। इस ही चालमें पद दूजा।

मैं तो तिर गया तेरे परतापसे। टेक।

मैं तो प्रभूजी भवसिंधु में तेरी सेवा विन खाए गोते आपसे। मैं तो तिर गया० ॥ १ ॥ मैं तो चल्याजी खोटे पंथमें, दुःख पाए कुगुरुनके मिलापसे। मैं तो० ॥२॥ तुमसे प्रभुजी मैं तो फिर गया, जैसे फिर जावे पापी वे ठानापसे। मैं तो० ॥३॥ सेयो सदासे मिथ्या धर्ममें, पीछा छुड़ा नहीं मेरा काहू पापसे। मैं तो० ॥४॥ दृग सुख अब टूटी भव वेडियां, मेरी असि आउसाहीके जापसे। मैं तो० ॥५॥

नैनानन्द भयो मन मेरे, कर्म प्रकृति सब दगी दगी, प्यारे दर्शन० ।४।

अथ पुन्यः अर्हन्त स्तुतिका पद हजूरी रागनी ।

यही अंदेशा हमेशे रहा, तेरे धरमकी शरन ना लई । मुझे यही अन्देश हमेशे रहा । टेक ।

मानी न मैंने हिदायत तुमारी, सतगुरुने मुझसे तेरा कहा । तेरे धरमकी शरन ना लई, मुझे यही० ॥१॥ हंस हंसके विषयोंमें फंस फंस कुगतिमें, पद पद सजामें न तिरना चहा, तेरे धरमकी शरन ना लई । मुझे यही० ॥२॥ छेदन व भेदन व सूलीपे धर धर, मारा व बांधा अगनमें दहा । तेरे धरमकी० ॥३॥ चीरा करोतोंसे कोल्हूमें पेल्या, चक्कीमें पीसा व घोसा गया । तेरे धरमकी० मुझे० ॥४॥ ऐसी करोले धरो मोक्ष हीमें, कहे नैनसुख फिर न आऊं यहां । तेरे० मुझे यही० ॥३॥

अथ पद राजुलजीका राग पीलू ।

सांची कहो भए जागी कब नगुन सांची । टेक ॥

हम न विसरि शीवकुल टासू अटके, भोगी परम निर्भोगी कब न गुन । सांची कहो० ॥१॥ जगत रिद्ध तजि चहत अभै निधि, लोभी परम निर्लोभी कब न गुन । साची कहो भए जागी कब न गुन० ॥२॥ वस्त्र शस्त्र विन करत करम रण मदन मथ्यो निष्क्रोधी कब न गुन, सांची० ॥३॥ नव भव परम दया मोपै राखी दशम भए प्यारे न्यारे, कब नगुन, सांची० ॥४। कहत राजमति तुमरी शरण विन, द्रिगानन्द मोहि होवे कब न गुन सांची० ॥५॥

अथ राजुलजी अपने परिवारकूं अपनी दिक्षामें विघ्न करनेको रोकें हैं रागनी खम्माचकी ठुमरी वाखास भोरवी मारवाडी जबानमें ।

वाईना बोलोजी म्हेतो आतम ध्यावाला, वाईना, हे आतम ध्यावाला म्हे परमातम ध्यावाला, वाईना बोलोजी, म्हेतो आतम ध्यावांला; जीजो ना बोलोजी म्हे तो, आतम ध्यावांला। टेक।

देयौ म्हानै खेगी अज्ञा, म्हांके, छै यही परतज्ञा, म्हेतो नेमी सरजीरै लारेजावांला, वाईना।१। म्हांको अपराधगीनो, करयौ हे छिमासु हेल्यौ, म्हेतो जोग लेस्यां तो आहार पावालां, म्हुं नै ना बोलोजी, म्हे तो आतम।२। येतो म्हांका जन्म नाती, कर्मोरो छै कौण साथी, संजम दियादो उपगार गावांला, म्हांसूं ना०।३। सुनस्यां जिनेन्द्रबैन, जांकी म्हांके नैनचैन, म्हेतो धर्म ध्यानमें जनम बितावांला, म्हांनू ना० ।४।

अथ सनौली गांवकी पूजाका पद। चाल तक तक मारे नजरिया। रागनी जंगला वा भैरवी।

ले चल सहेली सनौली आज, जहां हो रही है पूजा चन्दा प्रभुजीका मेरी प्यारी, ले चल मोली सनौली आज।टेक

एक तो स्वामी मुजें मन्दिर दिखल्या, दूजे दिखादे पूजाजीका समाज, तीजे सुनवादे जिनवाणी तू दिवानी मेरी, बिना धरम जावै जनम अकाज, जहां हो रही है पूजा चन्दा प्रभुजीकी मेरी प्यारी, ले चल मोली सनौली आज, आए मुल्क मुलकके श्रावक, लेले रथ घोटक गजराज, बिच बजार पहुंची रथजात्रा, चल पैदल जल्दी उठ भाग, जहां हो रही है पूजा।२। हो रहे मंगल गान बधाई, सखि रथा देखो जैसा धर्म जहाज, तिरना है तो लेल्यो शरन प्रभुजीकी, मरना है क्या कर नाराज, जहां हो रही पूजा०।३। नैनसुख भगवान भगति बिन, जिनके चक्रवर्तिको राज, गए सातवीं नर्कमु भूमो, ब्रह्मदत्तसे नर सिरताज, जहां हो रही है पूजा०।४

नहीं इनसें तू न्यारा ॥१॥ ता हम चेतन व अचेतनमें फरक हैं, ग़फलत है तेरी तुही है इसका मिटावन हारा ॥२॥ रंजव महुव्वपै कलम फेर दे ऐदिल, तू है नित अंत नहीं ज्ञान मई द्रिष्टा प्यारा ॥३॥ निर्भय ओंकार चिदानन्द स्वरूपी, जाना मैं सिद्ध समो रूप तुमारा ॥१९॥ बीज वई सूक्ष्म अवगाहन मई है, अगुरु लघु निर्बाधक सब कर्मोंसें न्यारा ॥२०॥ ऐदिल समझावें सुर गुन रूप तक तुमको. द्रिग सुख चाहै तौये है काफी इशारा ॥२१॥

आगे आरती अरहंत देवोंकी लिख्यते। सबमें कीजे शिव ॐकार ॥

जै श्री जिन देवा। जै ॐ जिन देवा। पार लगावो स्वेवा, करूं चरण सेवा ॥टेक॥

वन्दू श्री अरहंत, परम गुरु। परम [illegible] प्रभु परम दयाधारी. परमातम पुरुषोत्तम। जग जन [illegible]. जै श्री जिन देवा। पार लगावो स्वेवा, करूं चरण [illegible] ॥१॥ प्रभु भव जल पतित उधारण चरण शरण थारी. [illegible] सद्गुरु निर्लोभी करम भरम हारी, जै श्री जिन देवा। पार०। करूं ॥२॥ स्वामी तुम केवल ज्ञानमय [illegible] धारी प्रभु भयो, तीर्थंकर पद पारसपा [illegible] जयश्री जिनदेवा. पार० करूं ॥३॥

आयो पिहिताश्रव मुनि नारन [illegible] प्रभु गुणपति; भयो तीर्थंकर सुन [illegible]. जय श्री जिन देवा. पार० करूं ॥४॥ स्वामी दोषक शील [illegible] अघिचारी. प्रभु दुर्जन: [illegible]. जय श्री जिन देवा. पार० करूं ॥५॥ [illegible] प्रभु तुम मेटे भव भारी. प्रभु०। [illegible] होय भारी, जय श्री जिन देवा. पार० करूं ॥६॥

मल्लिने जग परभाय दुःखी किए मुनिवर ब्रह्मचारी प्रभु, विष्णुकुमार मुनीश्वर किये तुम उपकारी; जय श्री पार० करु ।७। पुण्याहार भए सखी जिन्होंने तुम सेवा धारी; प्रभु० । विदित कथा सतियनकी गावें नरनारी, जय श्री पार० करु ।८। स्वामी वज्रकिरण नृप मूरति तुरी करमुद्रा धारी, प्रभु० । जीत्यों सिंहोदरसेरा मगर दुखारी, जय श्री पार० करु ।९।

स्वामी तिर गए नृप श्रीपाल सुजनते महा सिंधुवारी प्रभु महा० । कुष्ट व्याधी गई छिनमें तुम ही निर्वारी, जय श्री पार० करु ।१०। महा मंडलेश्वर पद दे तुम कियो जगतचारी, प्रभु कियो, वादिराय मुनिवरकी हरी व्याधि सारी; जय पार० करु ।११। मानतुंग मुनिवरके तोड़े राजबन्ध भारी, प्रभुराज; चढ़े सुदर्शन सूलीधरी मुकति नारी, जय श्री पार० करु ।१२।

इत्यादिक भगवंत अनंती महीमा तु धारी, प्रभु महीमा०, तीन लोक त्रिभुवनमें व्रदित तथा थारी; जय श्री पार० करु ॥१३॥ शेष सुरेशनरेश मुनिश्वर जावे बलिहारी, प्रभु० । पावें अबे अचल पद टरें विपत सारी, जय श्री० ॥१४॥ कहत नयन सुख आरती, तुमरी भरत हरनहारी, जयजय जिनवाणी नमो नमो; त्रिभुवन जनमाता नमो नमो, गराधर बखानी नमो नमो; जय जय जिनवानी नमो नमो ।टेक।

वीतराग हिमगिर तें उछरी, गणधर गुरुवोके घटमें पसरी; मोह महाचल दमो दमो; जय जय० ॥१ ॥ जग जडता तप दूर करो सब, समता रस भरपूर करो अब; ज्ञान विषे ले रमोरमो, जय जय०; त्रिभुवन जन, गणधरन बखानी ॥२॥ सप्त तत्व षट दरव पदारथ; खोदिये तो बिन भेए अकारथ, अब मेरे उर जमो जमो, जय जय० त्रिभुवनर गणधरन० ॥३॥ जबलग शिव फल होयन प्रापत, चहुँ गति भ्रमण न होय समापत, तब लों यह कृषि थमाथमो, जय जय० ॥४॥

सूकरसिंह नवल कपितारे, भील भील अरफीन उभारे; त्यों मेरे अघ खमो खमो, जय० त्रिभुवन जन० गरधरन वन्दा० ॥५॥ जै जग ज्योति सरस्वती प्यारी, त्रिग सुख आरती करे तुमारी; आरति हरो सुख समो समो, जय जय०। त्रिभुवन० गरधरन० ॥६॥ ।इति।

अथ पांचों इन्द्रि छेदन निषेध तथा दया पालन हेतु चतुर्विध दानोपदेश रागनी झंझोटी वतौर इस रागनीके गाई जायगी।

राजा वन्शीने डेरे कहां डालेरे, कहां डालेरे। हे कहां डालेरे, मेरे प्यारेने डेरे कहां डालेरे।टेक।

राजा जोड़ मैं ढुंगी अनोरों तले तेरे दुल्हन जो बैठो चंमेली तलै, राजा वन्शीने डेरे ॥१॥

इस चालमें, अथ भजन।

सारे जीवोंकी भैया दया पालो रे, हे दया पालो रे, अदया टालो रे, सारे जीवोंकी भैया दया पालो रे टेक।

भैया काया न खण्डो न जिह्वा विदारो, नाकमें रस्से मती डालो रे; सारे जीवोंकी भैया हे दया० ॥१॥ भैया आंखें न फोड़ो न त्योंडी चढ़ावो, केड वचनके न दा [illegible] रे, सारे जीवोंकी हे दया० अदया० ॥२॥ भैया भोजन [illegible] दो पिला दोजी पानी, रोगीकूं औषध बैठा दो रे, सारे जीवोंकी भैया हे दया० अदया० ॥३॥ ज्ञानी [illegible] को [illegible] वीरन, करके अभै सवके मेटालो रे, सारे हे अदया० ॥४॥ भैया पा लागोगे अज्ञातो होंगे नयनसुख, सुन [illegible] जिनेश्वरके मतवालो रे। सारे जीवोंकी भैया दया पालो रे हे दया० सारे० ॥५॥

अथ संगतराय ननौते वालनें एक पद सुनगिरी [illegible] चेतनकूं समझावनेके वास्ते बनाया था जिसका नमूना यह है।

चेतोजी चेतनने थारे काम आऊंगी, मैंने चेतनकी तरफसे सुमतीके जुवाबमें यह पद बनाया है। रागनी मेरु नट है, इस रागनीके चीज्री पर।

सैयां तोरी गोदीमें गेंदा बन जाऊंगी टेक।

जो मेरे सैयांकूं भूखें लगेगी, लड्डू जलेबी खांठी बरफी बन जाऊंगी। सैयां तोरी गोदीमें गेंदा बन जाऊंगी।

अथ मेरा बनाया उत्तर यह है—

चेतूंगा जब ही तू वेदन मिटावेगी, मैं चेतूंगा जब ही तू वेदन मिटावेगी टेक।

मैं तो अनादी प्रमादी हूं प्यारी, व्याधि मिटा दे फिर कब काम आवेगी; चेतूंगा जब ही तू वेदना मिटावेगी। मैं चेतूंगा० ॥१॥ मैं हूं नशेमें चूर, तू तो फिरे दूर दूर। पोसोंकूं तारेगी दोसी कहावेगी, चेतूंगा जब ही तू वेदन मिटावेगी चेतूंगा मैं० ॥२॥ जो है तू प्यारी पतिव्रता नारी, मुझे समझावेगी तो मेरे मन भावेगी। चेतूंगा० ॥३॥ चेतन कहे सुन सुमति सुहागन, पियाकूं निभावेगी तो मैनानन्द पावेगी। चेतूंगा जब ही तू वेदन मिटावेगी। मैं चेतूंगा ॥४॥ इति।

अथ रागनी जंगला कुमरी चेतना प्रति सुमति कृत धर्मोपदेशमें। चाल यह है।

देखो मलनीया ऐसी चमोरे जैसी गेंद हजारे फूल टेक।

सोनेकी थालीमें जीमना परोसूं, खाना मलनिया आ जा प्यारी हो जा प्याले निवालेश सूल। पियारी हो जा प्याले निवालेश सूल, ए तो देखो मलनिया एसी चमोरे जैसी गेंदे हजारेके फूल ॥१॥

लपेटी, मत मूली घट सोवे। जनम मत० ॥४॥ मत मधु विधु विपके कारन, मगमें काटे बोवे। जनम मत० ॥५॥ श्री अरहन्त पन्थमें परले, ज्यों नयनानन्द होवे। जनमत० ॥६॥ इति।

अथ कलकत्ता नगर निवासी सकल पंच श्वेतांबर जैन मतीयोंका फर्मायशके अनुसार कलकत्तेमें धर्म्मनाथ तीर्थंकरकी रथजात्राकी लावणी गर्रा नयनानन्द दिगम्बरी कृत संवत १९४६ कार्तिक सुदी १५ की जात्रामें बनाकर कलकत्ते भेजी ताकी नकल।

अथ मंगलाचरनम् ख्याल लगडी रंगतका।

वन्दूं धर्मनाथ तीर्थंकर धर्मतीर्थके कर्तारा, भर्म अविद्या मिटाके सकल जगतको निस्तारा ॥टेक॥

मिथ्यामतके हेत जगतजन पड़े थे भवदधि मझधारा, पचपापमें। करे थे जनम मरन वारंवार ॥१॥ हिंसक जन जीवोंको हतें थे डरे थान ही कोई हत्यारा, असत्यवादी। असतमें धर्म समझते थे प्यारा ॥२॥ चुरा चुराके दरब पराया देते थे संकट भारी, दुष्ट कुशीले। थपे थे अपना मत न्यारा न्यारा ॥३॥ तृष्णावन्त मलन्द पापोंका करे थे निभय अविचार, पडके नरकमें सड़े थे नहीं था हां कुछ आधार ॥४॥ जान अनाथ हाथ गहि काढ़े, दयाका मारग विस्तारा। भर्म अविद्या वन्दूं धर्म०। भर्म० ॥५॥

अथ कथा प्रबन्ध—सुनरी सखी इक बात नवेली आज नगरमें बरसें रतन, चल कलकत्ते। चलै जहां शील मन्द सुगन्ध पवन ॥१॥ धर्मनाथ भगवतकी जातरा करेंगे वहां सब जैनीजन, दान बटेगा। चतुर्विध मचौजी जै जै लुटेंगे धरन ॥२॥ आए देश देशके श्रावककरन परम गुरु गुरुके

दर्शन, कर ले जातरा। तेरा दिल हो जावेगा अति परसन ॥३॥ पूजा सम सखिका जन दूजा इसीसे होगा उद्धारा। भर्म० अविद्या ॥४॥

भाग जगे इस नगरके आली सुफल भई ए आज भरन. घर घर मंगल वधाई वटैं रटैं जस च्यार वरन ॥१॥ चल जल्दी मत देर लगावैं नग भव्य भवसिंधु तिरन. तिरे नौ तिरले। अरी तेरा छुट जावेगा जन्म मरण ॥२॥ अमीर लाल अहप पारे लाल गन्धर्वोंके सुननेको भजन. चली जात है प्रजायो दौड़ी जिसें जाय हिरन ॥३॥ तू भी चलके सुनले तान भगवतके सुजसकी इकवारा। भरम०। अविद्या०। वन्दूं० भरम० ॥४॥

पडितजन जिनवेद उचारे सुनके होगा मोह शमन. क्रोध मान छल। लोभकी हो जावेगी शांत अगन ॥१॥ हुई मर्यादा जिनमन्दिरसें वीच वजा रहो रहे जशन. ... खड़े अंग्रेज बहादुर हुए मगन ॥२॥ दादाजीकी निर्माप चलके करेंगे सब जन रे नवसन, पूरनवासी। ... खिलेगा आजहु सम ॥३॥ अघहन वदि एकमको निर्वाणका होगा पूजन अति भारा। भर्म अविद्या। वन्दूं० ॥ भर्म० ॥४॥

श्री जिन हर्षसूरि सतगुरुके पूजेंगे सखि चलके चरन. कुशलसूरिके। चरनकी लेवेंगे सब सन्त सरन ॥१॥ गुरु परम जती भरा जगमें हैं भक्तोंको चही चरन। ... जंगलमें, जहां तहां किए भक्तोंके कष्ट हरन ॥२॥ सिंह स्याल सम किए लिये जिन घेर भक्त जन निर्जन वन ... भूखको, तोपके रोके मुख छुड़वा दिए जन ॥३॥ कहैं नैनसुखदास खास है नगर कांधला मेरा वतन, जन्म ... जिन मत जती ग्रहस्थीपन ॥४॥ वैद्य मिनुनपिल्का पद पाया जैन धरमका है आधारा, भर्म अविद्या० वन्दूं। भर्म० ॥५॥

जिले मुजफ्फर नगरमें रहते आराधे भगवन्त चरन, मुल्क मुल्कमें । हमारे रचित्त भक्तजन गावें भजन ॥१॥ नयनानन्द कहैं कोई हमको नैनचैन कोई करें रटन, गुल राहत । कहै कोई द्रिगानन्द द्रिग सुख सजन ॥२॥ मुनियों कलकत्तेके ज्यों श्री जिन धर्म शरन, सब धर्मोंमें अर्जा है सुख धरम यह दया रतन ॥३॥ विना दया धरमोंने जगतमें वही, प्रभुनें उचारा । धर्म अविशा० । वंदूं० धर्म० ॥३॥ ॥इति॥

अथ मुनफरेकातपद उमदा उमदा चालके हर तरहके लिखते, तत्रादौ राजुलजीका जीव भीलनी भीलमें उस वक्त कर रही है जबकी मुनिकी घातसे टरि कर भील भयातुर हुवा । दादरा पूर्वी पल ॥

मत कर प्यारा जी अज्ञान जिया थोरारे, मत कर प्यारा जी ॥टेक॥

आय बनी अति कठिन पियरवा ए मुनि तू पिया मोरारे, अपन जिया थोरारे । मत करि० ॥१॥ मौन धरत है यह ननमुनिनजन, जनम बिगरि जाय तोरारे । अपन मन थोरारे, मत कर० ॥२॥ ए ज्ञानीगुरु जगत जननके, तू पीतम अति भोरारे । अपन मन० ॥३॥ उदर निमित्त मुनि हनन निरखी तोहि, मैं कर पकरि मरोरे । अपन मन० ॥४॥ तजि तकसीर छीमाय मुनि नमन, द्रिग सुख करिके निहारा रे ॥५॥ ॥इति॥

अथ राजुलजी श्री नेमिनाथजीके संजम धारणके अवसरमें आप भी सजम ले हैं, माता पितादि परिवारकूं सिद्धांत उपदेश करे हैं । रागनी खम्माचकी ठुमरी ॥

हमारे पिया मुकतिवरन गएरी, हमारे पिया मुक० । एमें साची कहुं तो सूं, वे जिताय गए मोसूं री । हमारे पिया मुकतिवरन गएरी ॥टेक॥

या भवमें कछु सार न साईरी, या मैं सार है तपस्या

सच झूठी है लपस्या। वे तो प्यारी छिमा जैनकी धरन गएरी। हमारे० ॥१॥ दोहा मतला, चौरासी लख जौनिमें धार अनंतानंत। जो दुख देखे जीवने, समझा गए सबकंत। अहो तृष्णासे प्यारी दुख पावै जीव भारी ऐसे प्यारी मोहिप्यारि कई तिरन गएरी। हमारे० ॥२॥ तृष्णा बस पशु दुखित निहारेजी, उनके बन्धन छुटाए। कंगन तोरिके धगारी, वे मौडजौड जोगकूं धरन गएरी। हमारे० ॥३॥ दोहा मतला, स्वारथ बस जिस जीवने। परमारथ दियो खोय, जिस नैया भव सिंधुमें। नरभव दियो डबोय, मैं तो संजम धरूंगी। ए सिंगार क्या करूंगीरी, पियाके सग आली असरण गएरी। हमारे० ॥४॥ दोहा। नैनचैन राजुल कहै, छिमा करो सब जीव। सतियनके संसारमें, धर्म ही शरण सदीव। ए म्हारी भाई मेरा गहना, कीज्यौ छिमा भाई बैनारी। मैंने स्वामीने नेमके चरण गहेरी, हमारे पिया मुकति वरन गएरी। ए मैं साची कहूं तो सूं वे जिताय गए मोहूंरी। हमारे० ॥५॥ इति।

चाल नगर वसाया वेगभर हो तेरा राजपद झांकरा ॥टेक॥

तौपूंसे फिरंगी लडते, तीरोंसे नवाब, नैनोंसे ए बेगम लड़ती। बड़ी है खराब, नगर वसाया बेगम रहो मेरा नाम। इस चालमें जानना।

राग पीलू अब भजन सुरू करते हैं।

ले लेरे शरनसे ले सिरी भगवान, ले लेरे सरनने ले सिरी ॥टेक॥

खेलेरे तैं खेल घनेरे, पेलेरे पठान। खेले खोटे खेल कीने पापके समान, ले लेरे शरनने ले सिरी। स० ॥१॥ छोड़ी रे तौं छाती ले ले जीवनके प्राण. खोलेरे तैं पर धन चोरे कपट बेईमान। ले लेरे सर० ॥२॥ दे लेरे अनाथों अपने हाथोंसे तू दान। जावोगे अकेले, साथ जावेगे समान। ले लेरे

सरन० ॥३॥ ए लेरे तू त्रिग सुखदाई शिक्षा बुधिवान, चेलेका न लेगा को कायाये निदान । ले लेरे० ॥४॥ इति।

अथ पद अध्यात्मोपदेश । राग जंगला झझोटी ।

अरे मन माने मेरी कही, तजि पाप चेति सही संसारमें तेरो कौन हैं क्यों मूढ पक्ष गही । अरे मन० ॥टेक॥

हे परम ब्रह्म तुही, सर्वज्ञ ज्ञानमई । सम्यक्त बिन भयो भ्रष्ट तू, चिरकाल बिपत सही । अरे मन० ॥१॥ स्वर्गादि बिभव गई, तृष्णा तऊ न गई । तो आस समनर भोगते यह रोग जाय नहीं । अरे मन० ॥२॥ फिर सीख तोहि दई, मति खाक चतु सुजान । यह बहवार भोगि लई, अरे मन० ॥३॥ है सगळ मीत यही, तजि भोग ए विरही । कहि नैनसुख रह विमुख इनसे सीख गुरुकी कही, अरे मनमानि मेरी कही ॥ ४ ॥

अथ राजुलके विवाहकी बधाई राजुल प्रतियतीर सहेरके रागदेश । राग स्याम कल्याण ।

सखीरी तू बाटले पीव बधाई, सखीरी नेम नवल तोहि ब्याहन आए प्यारी ॥टेक॥

हे हर्षित खबर सुनावन आए द्वार खड़े बाह्मण नाई, सखीरी तेरे द्वार खड़े बाह्मण नाई । सखीरी नेम नवल तोहि ब्याहन आए, तू तो बांट ले० ॥१॥ हे पोरी चढ्यो मुख रोरी लगी जाक; देख ले देत दिखाई सखीरी तू देखले देत दिखाई, सखीरी नेम नवल तोहि ब्याहन आए ॥२॥ हरि बलिभद्र चंवर जापै टारे, छत्र फरे जदुराई । सखीरी नेम नवल०, बाटले पीव० ॥ ३ ॥ धन धन समुद्र विजेन्द पनागर, धन जिनजायो ये माई । सखीरी धन जिन जायो ये माई, सखीरी नेम नवल तोहि ॥४॥ बंट रहे दान निरख ले सुन्दर, भूख न भूख

मिटाई। सखीरी भूख न भूख मिटाई, सखीरी नेम० ॥७॥ पुष्प रतन सुर नर बरसावें, सम्पत्ति अतुल लुटाई। सखीरी नेम नवल० ॥८॥ निरख तने न चैन भयो राजुल, फूली तन न समाई। सखीरी फूली तन न समाई, सखीरी नेम नवल तोहि, प्यारी बांट लें० ॥९॥ इति।

राग समन्दर भजन उपदेशी राग खम्माचकी धुन।

तेरी नवका लगी है सुघाट किनारे लागी मनना डबोवोजी ॥ टेक ॥

हर कर्म धर्म धरम परम मिथ्या तम रगने ... उठा, चिरकाल जगतमें दुख भरे जिस भांत यने ले पिड छुटा भाभाव अनित्य अशर्ण सदा। संसार हरट सा चलता है; एकत्व दशा समझो अपनी यह बलसे क्यों नहिं टलता है। तुम अशुचि अंगके संग शुद्धता अपनी ना खोवोजी. तेरी नवका लगी है सुघाट किनारे लागी मनना डबोवोजी ॥१॥ दे आश्रव वाटमें सवर डाट प्रकाश महावल कर्म खपाना। ये पुन्पाका रहे कारागर तू चन्द पड़ा है बात सफा है दुर्लभ बोध ले सोध जरा जिन धर्मकी प्राप्ति दुर्लभ है ले तत्त्व अतत्त्व विचार हिये इस वक्त तुझे सब सुलभ है। तें पाई नर परजाय अगामी मत काटे बोवोजी। तेरी नवका० ॥२॥ ए भोग भुजंग भयानक हैं क्रोधादि अगन नहीं जलती है। तुम जलते हो न संभलते हो ए मार यही ये जलती है। जो इनकूं त्यागि वनें वनमें वे शुचि ध्यान नें धरते हैं। निर्बाध अचल सुख पाते हैं। वे जन्म मरण दुःख हरते हैं, तू धरले सम्यक्दृष्टि नैनसुख निज हिय जोवोजी। तेरी नवका० ॥ इति ॥

श्री नैनानन्द यतिकृत भजन विलास संग्रहे छोटा बड़ें सग्रह नामा बीसवां अध्याय सम्पूर्णम्।

अध्याय इकीसवाँ

श्रीवीतरागाय नमः। ॐ नमः सिद्धेभ्य।

अथ इकीसवां अध्याय लिख्यते।

अथ लब्धिसार सिद्धांत आगमानुसारेसा सम्यक्तके अनाधिकारी वा अधिकारी व सम्यक्तके उपजनेका क्रम वा सम्यक्तोंके भेद वा सम्यग्दर्शनके घातक २५ दोष वा सात कर्म प्रकृति वा पंच लब्धियोंका किंचित स्वरूप रत्नकरण्ड श्रावकाचारमें लिखा देखिकर यति नयनानन्दने वास्ते पाठ करने भव्य जीवोंके ख्याल लंगी रंगतके संवत १९४१ में बनाए सो लिखिये हैं। तत्रादौ सम्यक्तके अनाधिकारीके लक्षण। अर्थात ऐसी दशामें सम्यक्त न उपजे छन्द ख्याल लंगी रंगतका बतौर कलंगी तुर्रेके लिख्यते।

लब्धिसार अनुसार यार इक बात मेरी सुनना चाहिए, समकित किसको न उपजे तिसको अब सुनना चाहिये ॥टेक॥

अर्थात अमनस्क भव्य अरु तीव्र कषाई हठधारी गुण दोषके ज्ञानसे सून्यहिरदय अरु अविचारी ॥१॥ तजि साकार ग्यान उपयोग अरु दर्शन उपयोगी भारी निराकारमें। मगन हो तत्वारथ परणति हारी ॥२॥ सनमूर्छन अथवा हो सूता सुण भारक तिर्यंच व मिथ्यारी, च्यार लब्धिबल। पापके वर्तो नित स्वेच्छा चारी ॥३॥ प्रथम लब्धि क्षय उपशम कहिये द्वितीय विशुद्धी सुखकारी। तृतीय देशना, चतुर्थी प्रायोपगमन उर्मी ॥४॥ तो भी भव्य अभव्य एकसे करण विना गुन्हा चाहिये। समकित किसको न उपजे तिसको अब सुनना चाहिये ॥५॥ लब्धि सार०। समकित किसको०। न उपजे तिसको अब०॥६॥

अथ कैसे कैसे लक्षणों युक्त, कैसे कैसे योग मिलनेसे कब सम्यक्त उपजे अरु कौन सम्यक्तका निश्चय करिके अधिकारी है। अर्थात सम्यक्त कब किसको किस प्रकार हो सकता है।

लब्धिसार अनुसार यार इक बात मेरी सुनना चाहिये। समकित किसको कौन विधि उपजे सो सुनना चाहिये ॥टेक॥

पंचेंद्री समनस्क तथा पर्याप्त जीव होना चाहिये. मंदकषाई। भव्य भग उपयोगी होना चाहिये ॥१॥ बैठे ग्यानी पास दोषगुण अवग्राही होना चाहिये, फिर वे। दोष तजि गुणग्राही होना चाहिये ॥२॥ लब्धि पंचमीके त्रिकर्णमें अन्तकरण होना चाहिये. सबसे उत्तम जिसे अनि वर्तकरण कहना चाहिये ॥३॥ तिसके अंत समय अबै जब इतना होना चाहिये। प्रगट पचीसों दोष तजि अ[illegible] होना चाहिये ॥४॥ आयु अंत समय अनिवर्तका उ[illegible] होना चाहिये। उपसम सम्यक, और काहूके नहिं होना चाहिये ॥५॥ मणि करडमें साख है पारो नित्य [illegible] चाहिये, समकित किसको। कौन विधि उपजै [illegible] चाहिये ॥६॥

अथ सम्यक् दर्शनके घातक पचीस दोष तथा सात [illegible] प्रकृतियोंका वर्णन ख्याल छन्द लंगडी [illegible] नाई है॥

जानैं जाहर दोष पच्चीस रहैं [illegible] अविनाशी। तिनकों ग्यानी कहत हैं शुद्ध दृष्टि पच्चु न नाशी ॥टेक॥

मूढ त्रिकामद अष्ट अष्ट शंकादि [illegible] [illegible] षट अनाय तन। ग्यान के दोष पचीस बताई ॥१॥ तीन प्रकृत दर्शन मोहिनि की हैं तिनकी ऐसी जानी. [illegible] मिथ्याती। जिनौनें शुद्ध दृष्टि जिनवाणी पानी ॥२॥ [illegible] है

मिथ्यात दूसरी सम्यग मिथ्यात न साथी, और तीसरी ॥ कही सम्यक्त नाम अति उत्पाति ॥३॥ पुनि चतुष्क चारित्र मोहकी अनन्तानुबन्धी जाती, विषै मचाती, क्रोध मानादि जियाकी आराती ॥४॥ इनका उपसम क्षयोपशम विना न होंगे श्रद्धानी, तिनको ज्ञानी। कहत हैं शुद्ध दृष्टि कबहु न आनी ॥५॥ जानें० । तिनको० ॥

अथ सम्यक्त तीनि भांति है, उपशम १ क्षयोपशम अर्थात वेदक २ क्षायिक ३ पहले उपशम ही होते है। जिसके प्रथम प्रथम ही उपशम है उसकूं प्रथमोपशम सम्यक कहते हैं और च्यारू गतिमें सब सम्यक्त यथा योग्य हो सकते हैं अर्थात जैसे परणाम तैसा सम्यक्त विशुद्ध तागेल बात है ॥ ख्याल लंगड़ा ॥

उपशम करि उपशम सम्यक्तो क्षयोपसम जिनके थाए. सो क्षयोपशम ! समकिती क्षयते क्षायिक कहलावे ॥१॥ जिस अनादि मिथ्या दृष्टिके उपशम शमिक उदय आए । प्रथम प्रथम ही । सोई जन प्रथम उपशमिक कहलाए ॥२॥ सबसें पहले यही होत है यही गुरु कहते आए, क्षयोप सम्यक । भावकूं वेदक कहते आए ॥३॥ उपशम श्रेणीकी जुआदि में क्षयोप-सम्यक्ती थाए, तिनके उपशम । होय तौ द्विती उपशमिक बतलाए ॥४॥ च्यारों गतिमें उपजें सब ही जिसनें बातिक ले हाए, जैसी जिसनें करी तैसे ही तिसने फल पाए ॥५॥ विन समकित रही अष्ट रसायन खायक भतेरोंने छानी । तिन० । जानें जाहर । तिनको० ॥६॥ इति ।

अथ सम्यक्तकी उद्योतक पंचलब्धियोंका पृथक् पृथक् लक्षण सों इस प्रयोजनके अर्थ कहे हैं कि च्यार लब्धि तक तौ अभव्यके भी हो जाती हैं। परन्तु करणलब्धि विना भव्यके भी सम्यक्त नहीं उपजता है। तातें पांचूं ही लब्धि

हो तो सम्यक्त उपजै नहीं तो न उपजै यह नेम है। पुनः आदिकी चार लब्धि हुए विना पांचवीं होय नहीं यह भी नेम है।

अथ पंचलब्धियोंके नाम और महीमा वर्णनके अर्थ मंगलाचरण तत्रादौ पांचूंके समूदायकी सूचना।

दोहा—लब्धिसार आगम नमूं, वन्दूं रतनकरण्ड; पंचलब्धि वर्णन करूं, सम्यक हेतु अखण्ड ॥१॥ क्षयोपशमलब्धि प्रथम, द्वितिय विशुद्धि विचार; तृतिय देसना सुखकरण, प्रायुपगमनी च्यार ॥२॥ पंचमकरण महाशुभग, जो समकितको मूल; जा प्रशाद आवें उदय, संजम अरु शिवफूल ॥३॥

अथ जिनेन्द्र इश्तहार विज्ञापन लिख्यते. चलाल दूजी किसमका लगे लदनेको ल्यों ललटेवास वरेली:

कहूं पंचलब्धिका रूप न्यारा न्यारा. जिनके विन सम्यक होय न हो निस्तारा ॥टेक॥

सम्यक नाम है शांत भाव करनेका. पचीस दोष अरु सप्त प्रकिति हरनेका, जब जगे भेद विज्ञान शांति तब आवे. हो शीतल परणति तब सम्यक्त कहावे ।१। विन शांति न हो कर्माग्नि शांति सुनि प्यारा, तातै है परमानन्दक सम्यक धारा. सो पंच लब्धि शांति अवस्था आवे, तिनका स्वरूप जिन आगम यों समझावे ।२। भाई चार लब्धि तो भव्य अभव्य दोऊं पावें. विनकरण लब्धि सम्यक्त भाव नहीं आवें. विन च्यार लब्धि उपजै न पांचमी प्यारा है यह भी निश्चय नेम समझ ले सारा ।३। जो नर अवश्य सम्यक धरनहारा है. अरु निश्चय करि चारित्र धरनहारा है। इनहीके हेत करण लब्धि सुनि वीरा, कियो मणिकरण्डमें नेम कहा मुनि धीरा ।४। यों नाम तथा महिमादि सूचना गाई. किया [illegible]

हार न च्हू विदित सुखदाई, रही उसे नाथ सुरमेगा सुर-गनहारा, जिसके बिन सम्यक्त होय न हो निस्तारा ।४। कहूँ पंचलब्धि सरूप न्यारा न्यारा । जिसके बिन सम्यक्त० इति ।
अथ क्षयोपशम नामा प्रथम लब्धि लक्षण माह ख्याल पूर्वोक्त ।

भाई प्रथमलब्धि क्षय उपशम नाम कहावे, तिसका सरूप मणिकरण्ड यों समझावे, जिस कालमें ऐसा जोग जुड़े मेरे प्यारा, ज्ञानावरनादि अप्रसारत प्रकृत बलसारा ॥१॥ सो समैं समैं प्रति अनन्त गुण बल घटता, अनुक्रमसे आवे उदै लब्धिकूं बढ़ता, सो उदय पूर्व बलसे मिलान मिलावे, है भाग अनन्त समसमयों पावे ॥२॥ तहां देश घातिया नाम सपद्धक पावे, जो ता अवसरमें उदै अनुक्रम आवे तिस उदै होय भांति नहीं भाग समाने, सो सर्व घातिया कर्म सपद्धक माने ॥३॥ जिनका हो उदय अभाव सोई क्षय जानों, रहे शेष सर्व घाती ने यों परमानों, वे सत्तामांहि अवस्थित प्रगट कहीं हैं, पर उदय अवस्थाकूं नहीं प्राप्त भए हैं ॥४॥ ऐसा जब उपसजोग लब्धि करि पावे सो क्षयउपशम लब्धि जिन, आगम गावे, यों मणिकरण्डमें लक्षण मूल उचारा, जिसके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा कहूँ पंचलब्धिका० जिसके बिन ।५। इति ।
अथ विशुद्धि नाम द्वितीय लब्धि लक्षण माह ख्याल पूर्वोक्त ।

अब लब्धि दूसरीका स्वरूप सुनि ज्ञानी, जिसका विशुद्धि है नाम कह्यो जिनवानी । पूर्वोक्त लब्धि क्षय उपशम करि बड़ भागी, भए भव्यजीव धर्मामृतके अनुरागी ॥१॥ तब समतादिक शुभ प्रकृत बन्धके कारण, किया शुभ परणतिको जिन जीवांनों धरणा । जिस काल प्राप्ति शुभ परिणामोंकी पावो, सो लब्धि दूसरी विशुद्धि आगम गावै ॥२॥ जब अशुभ कर्म

करम तो रह्या काट लतावत मानों ॥४॥ पर हालाहल समरस थिंबु सकरि डारा, जिसके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा। कहूँ पंच०। जिसके बिन० ॥५॥ इति।

अथ प्रायोपगमनलब्धिका भावार्थ खुलासा लिख्यते। ख्याल पूर्वोक्त।

अब आगे इसका और तत्व मुनि ग्यानी, भावार्थ कहूँ करि साफ समझ न्यों प्रानी, पूरब रस मांहि अनन्तका भागहि डारो, जितने हों तिनमेंसे बहुभाग निकारो ॥१॥ ततुल्य तहां अनुभाग भया विक्षेपण, शेषानुभागमें शेष भये निक्षेपण, इस भांत कार्य करनेकी योग्यता पावे, प्रायोग्य नाम सोचौं शोलब्धि कहावे ॥२॥ है भव्य अभव्य दो उनके यह इक सारा, जिसके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा, कहूँ पंचलब्धि० जिसके बिन० ॥३॥ इति।

चतुर्थलब्धि समाप्तम्।

अथ संक्लेश परिणामी सैनी पर्याप्तके भी प्रथमोपशम सम्यक न हो ऐसा नैगरूप सूजा जैनेन्द्र इश्तहारका विज्ञापन ख्याल पूर्वोक्त।

जिसके हिरदै क्लेशभाव रहे वीरा, तिसकै सम्यक्त कभी नहीं उपजे धीरा, यदि हो संगी समनस्क और पर्याप्त, उत्कृष्ट स्थित अनुभाग प्रदेशकूं प्राप्त ॥१॥ तदपि कुलोशित परणामी नहीं गहते हैं, प्रथमा उपशम सम्यक्त सतगुर कहते हैं, पुनि जो विशुद्धि क्षपक श्रेणीमें चहिये, ऐसा जघन्य थित वन्ध भी उसके कहिये।२। अरु जघन्य थित अनुभाग प्रदेश भी पावै, तदपि तु प्रथमा सम्यक्त न उसके आवे, कह्या मणि करण्डमें लब्धिसार अनुसार, जिसके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा। कहुँ पंचल०। जिसके०।३। इति।

अथ पूर्वोक्त चतुर्थी लब्धिके प्रारम्भ समयका नेम ।

अब अन्तर मुहूर्त पर्यंत आगेके समयोंकी समानताका नेम, दिखावे हैं कि इस लब्धिमें प्रथमोपशम सम्यक्तके सनमुख भया जो जीवसो आयु कर्मकी ।

स्थितकूं छोड बाकीके सात कर्मोंकी स्थितिका बन्धाव-सर्पण प्रति समें किस क्रमसे करे है । कथान्क पूर्वोक्त ।

अब सुनके समझि ल्यों भविजन याते सारी, सम्यक्तके उपजनेकी है आगे तैयारी । जिनके उपजंते क्या क्या काज करे हैं, किस किस अवसरमें क्या क्या दशा धरे हैं ॥१॥ प्रथमोपशमिक सम्यकके सन्मुख वर्ते, जे जीव विशुद्धता वृद्धी करते सन्त । प्रायोग लब्धिके प्रथम समैमें ग्यानी, पूर्व स्थितिके संख्यात भाग परवानी ॥२॥ अन्तः कोडाकोडी सागर प्रमिमानी, बांधे आयुष बिन सप्त करम तिथि प्राणी । फिर [illegible] बन्धते पल्यका भाग संख्यातम घटता थिति बन्ध [illegible] भांत यो आतम ॥३॥ अन्तमुहूर्त पर्यंत समानता [illegible] है जिनागममें यो वर्णन कीए फिर क्रममें [illegible] धरिकै, सख्यात स्थिति बंधावसर्पण जकरिकै ॥४॥ [illegible] सागर घटनेसैं पहला, येनिझन [illegible] जहां प्रथक्तसौ सागरकी कथनी आवै, तहां [illegible] सागर प्रमित कहावै ॥५॥

इस ही क्रमसें इतना थिति बन्ध घटाए [illegible] अस्थान जिनागम गाए । ऐसैं प्रकृति बन्धापसर्पणके [illegible] होवें चौंतीस स्थान कहौं जिन धीरा ॥६॥ [illegible] प्रथमोपशम सम्यक तक, नहि होय बन्ध [illegible] घातक । यहि चौंतीसों बन्धापसरण उचरियौं, तौ [illegible] बहुत घड़ जाय इसी सौं डरियौं ॥७॥ सो [illegible]

घना मेरे प्यारो, गोमटसार वा लब्धिसार पढ़िहारो। प्रायोग लब्धिके वर्णनकूं पढ़िलीज्यो, अपने चितकी सब भ्रांति दूर करलीज्यो। करि लब्धि चतुर्थी गणितकरण्ड अनुसारा, जिसको बिन सम्यक होय न हो निसतारा। कहूं पञ्च० त्रिलकैं० ॥८॥ इति ॥

अथ सम्यक्त भाव जनक कर्ण लब्धि पञ्चमीका स्वरूप वर्ण्यते। ख्याल पूर्वोक्त ॥

अब करण लब्धि पांचमीको सुनल्यो प्रानी, जो भव्य नहीं हैं हो समकितकी ध्यानी, समकित चारित हो जिनके आवनहारा। तिनके करि उनका करनी है उपगारा ॥१॥ जहां मंद कषाय न करि विशुद्धता आवै, पर रागमनतें सो करण हि नाम कहावे। सो मंद कषाय विशुद्ध प्रणाम न केरे, है दूजे तीन त्रिकर्ण रूप श्रुति टेरे ॥२॥ भाई पहला दूजा अधकरण कहलावे, दूजेको अपूर्वकरण जिनागम गावै। अनिवर्त करण है तीजा शांत अवस्था। सुनो तीनोंका कालादि समस्त व्यवस्था ॥३॥ कहूं पंच०। जिसके बीन सम्यक०। कहूं पंच० ॥४॥

अथ त्रिकर्णमें तृतिय करणकूं प्रधान करि तीनों करणकी स्थितिका काल लिख्यते ॥ ख्याल पूर्वोक्त ॥

तीजा है अन्तर्मुहूर्त परमाना, जिसका सबसें लघु काल जिनेन्द्र बखाना। पुनि अधकरण इस तें संख्यात गुण है, तिसका भी अंतरमुहूर्त काल भराग है ॥५॥ अंतर्मुहूर्तके भेद असंख्याते हैं, सो सब मुहूर्त ही के अन्तर पाते हैं ॥

अथ अधः करण व्याख्यास्याम ॥

पुनि अधः प्रकृति समये तिहुं कालनके हैं। नाना जीवन संबंधी भाव जुके हैं ॥५॥ सो असंख्यात लोक प्रमाण हैं

प्राणी। सो ताके जेते समै हैं तिनमें ज्ञानी, सारे समान वृद्धिकूं लीए हुए हैं। प्रति समें है वृद्धि स्वरूप जिनेन्द्र कही है ॥६॥ यां निचले समें सन वधी परिणामनकी, संख्यात विशुद्धि है जैसी कुछ तिनकी, सो उच समय परिवर्तककाह्-जीके, परिणमोंसें मिलती है कदाचित्कीसीके ॥७॥

तातैं यौं अधः प्रकृति करण कहलावे, इस भांत जिनागम सार्थक अर्थ बतावे, याके परिणामनकी संख्यात विशुद्धि, गोमटसारमें देखो तुम सद्बुद्धि ॥८॥ अथवा तुम देखो लब्धिसार दे दृष्टि, लौकिक दृष्टांतन अलौकिक सदृष्टि पुनि अधःकरण परणामनके परभावें: हों च्यार बात आवश्यक तिन्हैं सुनावें ॥९॥ हैं च्यारूं अधःकरणहिके फल प्यारा, जिनके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा, कहूं प० जिनके० ॥१० इति॥

अथ अधःकरणमें च्यार बात आवश्यकनिकै हो तिनका वर्णन, एक तो प्रति समय अनन्त गुणी विशुद्धि हो ।१। दूजे स्थिति बन्धावसर्पण हो ।२। तीजे हर एक प्रशस्त प्रकृतिनका शांति प्रद अनुभाग बन्ध सातारूप हो अरु च्यार स्थान लिए हो ।३। चौथे अप्रस्त प्रकृतिनका असातारूप रस प्रति समय अनन्त गुणा घटता जाय ।४। तिनका वरणन रचना।

इक तो कहो समय समय अनन्त गुण सुद्धो, दूजे स्थिति बन्धावसर्पण हो सद्बुद्धो, जेता प्रमाण ले कर्म [illegible] होता था, तिस हेत पड़ा परमाद बिचे सोता था ।१। [illegible] तिस प्रमाणसें घटता वन्ध करै है, तिन [illegible] सो [illegible] संपाद करै है, तीजे साता वेदनी आदि दे प्यारे, हर इक प्रशस्त प्रकृती हर समय संभारे ।२। बढ़ बढ़ अनन्त गुन करें साताकी दाता। जैसें गुडखांड मिश्री अमृत स्वाता, [illegible]

चतुस्थानोंकूं लिए मेरे भाई, अनुभाग बन्ध होता में शांति कराई ।३।

चौथे जु असाता अप्रशस्त प्रकृतिनका रस अनन्त गुण, हर समय घटे है तिनका सोनीव तथा कांजी रस वन हो जावै, द्विस्थान लिए अनुभाग बन्ध त्यां पावै ।४। विशरूप तथा हालाहल शक्ति हरै है, यों अधकरण न्यारों आवश्य करै है, यों करण लब्धिका पहला करण उचारया, जिसके बिन सम्यक होय न हो निरधारा, कहूँ पंच० । जिसके० ।५। होता।

अथ द्वितीय अपूर्वकरणके अपूर्व अपूर्व परिणामोंकी व्याख्याका क्रम, खयाल पूर्वोक्त ।

भाई, अधःकरण अन्तमुहूर्तके वीत्यां, फिर आवै दूजी अपूर्वकर्ण निजरीतां, अधःकरणके परिणामनतें याके घणे हैं । सो असंख्य'तलोकां परिमाण भणे हैं ॥१॥ है नाना जीव अपेक्षा कथनी जानों इक जीव अपेक्षा एक समै इक मानों, पुनि एक जीवकी यावत सुनल्यों प्यारे, अन्तरमुहूर्तके जेते समैं उचारे ॥२॥ ते ते परिणाम अपूर्वकरणके जानो. ऐसे ही अधकरणके भी परमानों. इक जीवके एक समै में एक ही पावे, नानाकी अपेक्षा सतगुरु यों समझावें ३॥

इक समैं जोग्या परिणाम असंखे गाएं. फिर मध्यकरणकी कथनी पर हम आए, याके परणाम जु पूरव सकल उचारो, सो समय समय प्रति वद्धमान हैं सारे ॥४॥ निचले समयों-वर्तीसे मेलन पावे, यों सत्य अपूरवकरण नाम कहलावे, जो प्रथम समय उत्किष्ट विशुद्धि भणी है, दूजेकी तिसतें जघन अनन्तगुणी है ॥५॥ ऐसे परिनामनका अपूर्वपन पावे, यों दूजा सत्य अपूर्वकरण कहलावे, पुनि अपूर्वकरणके प्रथम समैं तैं लेकर, अरु अन्त समैं तक सोच ल्यों ग्यानमें देकर । ६ ।

अपने जघन्यतें, अपने जे उत्किष्टे, अरु पूर्व समय उत्किष्टसे आगे तिष्टो, उतर समयोंके जे जे जघन पियारे, क्रमतें अनन्तगुण लिए हैं सुद्धि सारे। ७। सो सर्प चाल चत कही जिनेश्वरवानी, समझे सद्दृगे तिनकू सन्यग्ज्ञानी, ज्यौं सर्व चालमें पीछे टेढ घनेरा, आगे फड़ सीधा आगे सीध भतेरा। ८। ताकी गतिमें अनुक्रिष्टपना मत जानों, अर्थात एकसा टेटा सब मत जानों, जहांसे पतला तहां ऐंठ घना खाता है ज्यौं ज्यौं मोटा त्यौं त्यौं सीधा जाता है। ९। यौं करपूर वसें अपूर्व सु द्वीप्पारा, हो ऐसें काज अपूर्व-करण मंझारा, लखि मणिकरण्ड इमने प्रबन्ध रचि डारा, जिसके विन सम्यक्त होय न हो निस्तारा। कहूं पंच०। १०।

अथ अपूर्वकरणके पहले समयते लेकर सम्य० मिश्र मोहिनी प्रकृतियोंक। जेता काल है। सम्पूर्ण कालमें जीव गुण संक्रमण करता है तिस कालके अन्त समय पर्यंत च्यार काज अवश्य होय हैं तिनके नाम मात्र कहै हैं, ख्याल पूर्वोक्त।

अब अपूर्वकरणके प्रथम समैसे धारो, सम्यक्त मिश्र मोह-नियोंका काल विचारो, सारेमें गुण संक्रमण दशा भगता है, मिथ्यातको समकित मोहि निमई करता है। १। तिस कालके अन्त समय पर्यंत पियारे, हों च्यार आवश्यक काज सुनल्यों सारे, पहला काज गुण श्रेणीजाने विज्ञानी, दूजा है गुण संक्रमण कहा जिनवानी। २। तीजा स्थिति खण्डन नाम विचारो वीरा, चौथा अनुभागका खण्डन जानों धीरा। पुनि थिति बन्धावसर्पण जो हम कह दीना, सो अपूर्वकरणके प्रथम समें ते लीना ॥३॥ तिसके गुणका संक्रमण पूर्ण होने तक माना है तिसका लखन महोने तम घचनि प्रवीन [illegible]

ते शुद्ध बताया, तदपि यहां समकित होना नेमन गाया, तातें नहि काल प्रमा मुनि आगे ग्यानी, थिति बन्धापसर्पण कालकी शेष कहानी, यह अरु थिति कांडोत्करणका काल पियारे, दोनूं समा अन्तमुहूर्तनुचारे ॥४॥ अब गुणश्रेणी आदिक अवश्य बारुके, कहूँ भेद सुनूं बच मणिकरण्ड धारुके, यह है अपूर्व ही कर्णका फल प्यारा, जिसके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा। कहूँ पंच०। जिसके० ॥५॥

अथ अपूर्वकरणमें एक आवश्यक कार्य तो गुण श्रेणी निर्जरा होय है ताका स्वरूप, ख्याल पूर्वोक्त।

बाधे जे पूरव कर्म अणु इसजीनें, ते द्रवरूप करी सत्तामें भरि लीनी, तिस द्रव्य मांहि तें पहले समें मंझारा, कछु द्रव्य काट जो करे निर्जरा प्यारा। १। तिसतें असंख्य गुण दूजे समें बिग्यानी, काटिक निर्जरा करे जहां कोई प्राणी, तिसतें असंख्यगुण तीजेस समें निकारे, अरु करे संगके संग निर्जरा प्यारे। २। इस ही क्रमसे प्रति समय काटना हरना, जब होय तहां भगवानने ऐसा बरना, वो गुण श्रेणी निर्जरा कहावे प्यारा, जहां पंक्ति बन्ध निर्जरा हो यह हरबारा कहूँ०। जिसके०। ३। इति।

अथ अपूर्वकरणमें दूजा अवश्य कार्य गुण संक्रमण अर्थात गुणका पलट देना होय है ताका स्वरूप, ख्याल पूर्वोक्त।

पुनि जितनो जितनी गुणाकार क्रमकरिके, काढी जो पूरव कर्म प्रकृति बल फुरिके, तिनके परमानु पलटि करि जबके तब ही, प्रति समय अन्य प्रकृतिकूं धारे सब ही। १। ऐसे गुणकार अनुक्रम पलटा खावे, तहां कहूँ गुरु गुणका संक्रमण कहावे, यह है दूजी आवश्य अपूर्वकरणकी, सो है मानौ सूचक सम्यक धरणकी। २।

अथ अपूर्वकरणमें तीजा कार्य थिति खण्डन अवश्य होय है ताका स्वरूप, ख्याल पूर्वोक्त।

पुनि पूर्वबन्ध सत्तामें तिष्ठन हारी, जो कर्मप्रकृति तिनकी जो थिति दुखकारी; तिसका घटना तिस काल निर्मो मन पावै तातैं थिति खण्डन नाम यथार्थ कहावै ॥३॥ पुनः।

अपूर्वकरणमें चौथा कार्य अनुभाग खण्डन अवश्य होय है। ताका स्वरूप, ख्याल पूर्वोक्त।

पुनि पूर्वबन्ध करि सत्तामें तिष्ठाए, ऐसे ज अशुभ अनुभाग प्रकृतिके गाए, तिसका घटना तिस काल निर्मो मन पावे, सो जिन मतमें खण्डन अनुभाग कहावे ॥४॥

अथ च्यारूं अवश्य कार्योंके होनेसे अपूर्वकरण वारे जीवोंके आदि अन्तके समोंमें अनुभागका तफावत वरनन करे है ख्याल पूर्वोक्त।

यों करे अपूरव करण च्यार आवश्यक, अब सुनो इसीका साफ कथन सावश्यक; जो अपूरव करणके प्रथम समेमें प्यारा, हैं प्रशस्त प्रकृति तिनके जो फल सारे। १। तिनका जो कछु अनुभाग सत्व है ग्यानी, ताके है अन्त समयका केता प्राणी; है प्रशस्त प्रकृतिनका अनन्तगुण बढ़ता, अरु अप्रशस्तका है अनन्तगुण घटना। २। प्रति समें अनन्तगुण विशुद्धताके कारण, है प्रशस्तका फल अनन्त-गुण विस्तारा, अनुभाग कांड घनके मारन करि न्यारे, है भाग अनन्तम अप्रशस्त काचारो। ३।

इस भांति अपूरवके आदि अन्त समयोंका, अनुभाग तफावत समझल्यो सब शमियोंका; इसमें प्रकरणके धनेरे वरणन कीना, संक्षेप मात्र सतरंचको समापत कीना। ४। विस्तार रूप है लब्धि सारमें प्यारे, थितिखण्डनादिक कथन सो है न्यारे न्यारे. अनिवृत्ति करण जो तीजा करण बखाना.

थिति खण्डाद्रिकनामें भी जिनेश्वर गाया।५। तामें तिनका प्रारंभ और विधि जानों, इतना विशेष अनिवृत्ति अपूर्वमें मानों; अनिवृत्तिके सब समयोंमें उन जीवोंके जिनम होवे यह करण बहुत जीवोंके।६।

होइ सबके परणाम फर्क नहिं पावे, जहां हो सजातिता सो इक ही कहलावे, तातैं यह सिद्ध भई सुनले विज्ञानी, प्रति समय जुनाना जीवों परणति ठानी।७। तिस अवसरतें सब समान परणति धारे, होय यदपि बहुत तदपि हैं एकसे सारे, तातैं अनिवृत्तिके अन्त महूरत भीतर, हैं जे ते समय तिते परणाम हैं मितर।८। इक इक ही समय इक इक परिणाम कहा है, नाना जीवनका एक ही भाव लिया है, यहां थितिखण्ड रु अनुभाग खण्ड नहिं गावे, है और भांति हम पहले भी कहि गाए।९। तातैं यहां अपूर्व करण सम्बन्धी सारे, थिति खण्डादिककी हुई समापति प्यारे, यहां अन्तरकरणादिककी विधि वरणी हैं, सो लब्धिसार पढि सीखो सुखकरणी है।१०। हमकूं थी जिनजी चाह तिता उचारा, जिसके बिन सम्यक होय न हो निस्तारा, कहूं पंच०। जिसके बिन०।११।

अथ सम्यक उद्योतक अनिवृतकरणका अन्त समयकी ध्यान, जामैं सम्यककी घातक सात ७ प्रकृतियोंका उपशम कैसे होय है सो कहे हैं।

दोहा—अब भाखूं अनिवृत्तिके, अन्त समयकी बात।
जामैं सातों प्रकृतिका, होवे उपशम भ्रात॥१॥

खयाल लंगडी रंगतका।

तीनूं दर्शन मोहिनि चारो अरु चारित्र मोहिनी च्यारूं, समकित हरणी, सप्त प्रकृतिनका उपशम उचारूं। टेक।

इन प्रकृतिके स्थिति प्रदेश अनुभागका बिलकुल पाता है,

उदय अनागम, तिसीतैं उपशम यहां कहलाता है।१।
तिसनें तत्वारथ श्रद्धा करि सम्यग्दर्शन आता है, परन्तु पहले,
उपशमिक सम्यग ही उपजाता है।२। प्रथम समय अरु
द्वितीय स्थितिमें तिष्ठि मिथ्यातको ढाता है, इसी रीतीमें तीन
तरियोंका द्रव्य कराता है।३। थिति कांडक अनुभाग कांडके
घात, बिना सुरझाता है, भाग संक्रमण लगाकर तीन भाग
करवाता है।४। प्रथम मिथ्यात द्वितीय सम्यक मिथ्यात
दशामें आता है तथा तीसरी तहां सम्यक मोह रस भाता
है।५। अब तिसका भावार्थ खुलासा ज्योंका त्यों यहां
उच्चरूं, समकित हरणी, सात प्रकृतिनका उपशम उचारूं।६।
तीनों दर्शन मोहिन चारो अरु चारित मोहिनि ख्यारू, समकित
हरणीत सात प्रकृतिनका उपशम उचारूं।७।

अथ त्रिकर्णक सिद्धांत फल सम्यकधारा है सो अनिवृत्ति
करणके अन्त समयमें किस भांतिसें।

दर्शन मोहिनीके द्रव्यकूं तेरा तीन धारा धाट करके
उपशम सम्यक्तीके।

शांति भई खयाल।

था अनादिका दर्शन मोहन एक रूप द्रव्य जु प्यारा,
तीन करणके जोगसे तीन भांतिका कर डारा।१। तहां
तीनोंकी शक्ति विपच रस वर्णन है न्यारा न्यारा, ज्यों
शत्रुनके झुन्डकूं तोडि किसीने मन फाडा।२। अब ऐसा कोई
करे मूरमात हांकते सूचे प्यारा भगवानका, दर्शे है परम
विजयका नकारा।।३।। यों मिथ्यादृष्टिके उपजे हैं उपशम
सम्यक धारा, पंचलब्धिके, योगतैं नाशितपनेसें उबारा।।४।।
इस उपशमका काल जघन्य तथा उत्कृष्ट मुहूर्त प्यारा
श्री जिनेन्द्रने। कहा है अन्तरमुहूर्त सारा।।५।। इसी बेर
उपशम तिष्टे है तदनन्तर मुनि विचारा, तीनों दर्शन,

मोहमें एक उदय आवै प्यारा ॥६॥ तिसका वर्णन आगे एनं जैन वचन ले विस्तारूं, समकित हरणी। सात प्रकृतिनका उपशम उचारूं ॥७॥

अथ उपशम सम्यक्तका अन्तरमुहूरत काल बीते उपरांत मुहूरत पूर्ण होते सते जीवके च्यार भांति परणतिमें कोईसी परणति होय तिस परणतियोंका विस्तार वर्णन करिये हैं। तत्रादौ वेदक समकितकी मीमांसा कथ्यते ॥

दोहा—अन्तरमुहूर्त एक लग, उपशम समकित होय।
तदनंतर परिणति तिसी होय जु सुनियों सोय ॥१॥
दर्शन मोहिनिकी प्रकृति, तीनोंमें ते एक।
उदय होय निश्चय थकी, तहां लखियो टेक ॥२॥

गीत छन्द।

सम्यक मोहनिका उदय होवे तो उपसम छोडिके. सम्यक हो वेदक तहां तत क्षण, महामद तोडिके. तिस प्रकृतिके परभाव चलमल शिथलताकूं आदरे सत्यार्थको श्रद्धान अचल सरूप नाहीं आचरे ॥३॥ श्रद्धानमें हो चलपणामल अतीचार लगायके, ढीलो रहे तत्वार्थ श्रद्धा यही वेदक भाव ले, इसहीकूं क्षय उपशमिक सम्यक कह्यो श्री जिनदेवने, जिसके विषै इस जीव जीवके इस भांतिकी परणति बने ॥४॥ ये सर्व घाती जे सपर्द्धकरूप मोहिनीके तहां, तिनके उदयका है अनागम यही क्षय मान्यो यहां, पुनि देश घाती जे सपर्द्धक रूप समकित प्रकृति है। तिसका उदय होते तहां सम्यक मोहनि विदित है ॥५॥

तिसकालमें जो वर्तमान तना निषेक जुगाइये, तिससे अगाडीके निषेक उदय जहां नहिं पाइयो, तिनके सपर्द्धकका अब स्थित जहां सत्तामें मिले, सोलेहु उपशमयों उपशम समकित है भले ॥६॥ सम्यक्त प्रकृतिके उदयका अनुभवन वेदन

जहां, तातैं इसीकूं कहत हैं सम्यक्त वेदक जिन नाहीं।
इस भांति समकित मोहनीके उदयका फल संचरे. अब सुनों
तुम सम्यक्त मिथ्यातन जुदो तो क्या करे ॥५॥

अथ मिश्र गुण स्थानी होनेका कारण । दोहा।

जो सम्यक्त मिथ्यातनी, उपशम पर आ जाय, मिश्र गुण
स्थानी करे, तत्व अतत्व सहाय ॥१॥

अथ मिथ्यातमें जा पडनेका कारण । दोहा।

आ आवे मिथ्यातही. उदय करम वशनीत, तौ मिथ्यादृष्टि
करे, सर्द्धे सब विपरीत ॥२॥ ज्यों ज्वर पीडित पुरुषकूं, रुचै
न मिष्ट अहार। त्यों तत्वार्थ सरूप सत, अनेकांत [illegible] ॥३॥
रत्नत्रै शिव पन्थते, भगे कुबुद्धी दूर. स्वपर दया [illegible].
धर्मरू जैन हि मूर ॥४॥

अथ उपशम सम्यक्तका अन्तमुहूर्त काल पूर्ण होनेमें जो
कुछ थोडी घणी कसर रह जाय तो ता अवसरमें जीवके कैसी
परणत होय ताका वर्णन । दोहा—

एक समें छ आवली, रहे जघन्युतकिष्ट. अनन्तानुबन्धी
कोई, आनि करे जो मिष्ट ॥१॥ क्रोधमान छल लोभमें, जो
कोई कूदे आय, तो समकित ते छूटिके, सासादनमें जाय ॥२॥

अथ उपशम सम्यक्तका अन्तरमुहूर्त कालमें एक समें आदि
आवलीकी कसर रहां पर जो अनन्तानुबन्धीका [illegible]
जीवसासादन दशामें आ जाय तो तिस सासादनमें कैसे काल
तिष्ट करि फिर कहां जाय। दोहा—

पुनि जघन्य इक समय रहि. छ आवलि उतकिष्ट. ऐसे
अवसरमें करे, मिथ्याती महा भ्रष्ट ॥१॥ ऐसे उपशम समकित
गई, अन्तमुहूरतवाद, क्षयार मार्ग है जीवके. [illegible] सो
भविजन पान।

अथ खुलासा कथन । दोहा—

सम्यक मोहिनिके उदय, क्षयोपशम सम्यक, मिश्र प्रकृतके उदयमें, मिश्र गुणी हो सत्य ।३। जो आवे मिथ्यातका, उदय जीयके मीत, निश्चय मिथ्याती थरै, सर्द्धै सब विपरीत ।४। अनन्तानुबन्धी विषें जो को उदावे आय, तो सासादन नाम गहि, मिथ्याती हो जाय ।५।

अथ क्षायिक सम्यक होनेका नियम रूप अधिकार वर्णन । दोहा—

अब क्षायिक सम्यक्तको, नेम सुनो भवि लोय: दर्शन मोह खपायके क्षायिक समकित होय ।१। देव नारकी पशुनमें, क्षायिकका प्रारंभ, सबके नाही होत है, कहै सु मूरख दम्भ ।२। कर्म भूमिका मनुष ही, दर्शन मोह खपात, भोग भूमियनके कहै, सो जानो मिथ्यात ।३। कर्म भूमिका मनुष ही तीर्थंकर पद पास, अन्य केवली निकटता, करै मोहका नाश ।४। दर्शन मोहनिकूं तहां, आरम्भो क्षयरूप, वाश्रुत केवलिके निकट, कहो जैन शिव भूप ।५। अन्य ठौर उपजे नहीं, ऐसो परम विशुद्धि, यह आगम आज्ञा भविक, धारो हिरदय सुबुद्ध ।६। तिस विशुद्धसे प्रथम जिन, जोगति बांधी होय तहां जाय पूरी करै, या में फेर न कोय ।७।

अथ विशेष दृढ़ताके वास्ते दर्शन मोहकी क्षपणका स्थापक ।

जो निष्ठापकजी कहै सो कौन था, और क्षपणका प्रारम्भ किस समय और किस ठौर किया था, और मिथ्यात तथा मिश्र मोहनी जो दर्शनमोहिनी रूप है, तिनका संक्रमण करि सम्यक्तरूप करनेकी हदके ते कालकी है, और ताकू कहां कहां पूरी कर सके हैं, और तदनन्तर क्षायिकसम्यकूं कहां कहां वर सके हैं, अरु निष्ठापकताका मंडन केवली श्रुत-

केवलिके पादमूलकी निकटता बिना, अन्य तौर भी धर सके हैं कि नाही, पुनः देवकरिके मनुष्य करे कि, पशु क्षायिक सम्यक्तकी निष्ठापकताका मंडण थापे, ताका यथार्थ स्वरूप जाननेके लिये विशेष आगे कहै हैं। पुन क्यों कर जानी गई कि निष्ठापकता धम्मा नकेमें जाय पूरी करे है।

खुलासा सवैय्या ॥३१॥

भाई अधःकरणके प्रथम समैसे लेय जोन्हीं जीव मिथ्यातके भाव पलटाव है, अरु मिश्र मोहनीके द्रव्यकू तोहि कोटि सम्यक प्रकृति रूप शुद्धतामें ल्यावे हैं, ऐसे संक्रमण स्वरूप काज कर तौलों दर्श मोह पक्षपणाकी थापना भरावे है। अन्तरमुहूरतमें करे ताहि पूरी सोतौ कहा भगवान निष्ठापक कहावे ॥१॥

तातै यह सिद्ध भई जैन औ नमांहि क्षायिक नाशिकके ग्रहणका जो समैं है, ताके पहले ही तौ कहावे निष्ठापक सो जहां किया प्रारम्भ तहांते संगरतें है। कर्मकू महीपा नर प्रारम्भ करे हैं फिर बन्धी हुई पूर्व गति अनुसार गमैं है; कल्प कल्पातीत अहमेन्द्र भोगभू मनुष्य पशु तथा धम्मा नर्क जाय पूरीपमें है।२।

दोहा—यों भी ज्यों तिहुं लोकमें, क्षायिकका उद्योत।
केवली श्रुतकेवली निकट, निष्ठापक तो होत॥

उत्तर सवैया ३१

पहले जाने बांधी आयु ऐसो जीव कृतकृत्य वेदक क्षायिक वाला च्यारों गति जावे है; तहां क्षपणकूं करै पूरन सु इस भांति रही सही घातिकूं खपावे है; अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ अरु मिथ्यातम सम्यक मिथ्यातकू मिटावे है; पुनि सम्यक्तकूं खपाय सातोंकूं हटावे, क्षायिक धारक मुनि ऐसे कहलावै है।३।

अथ क्षायिक सम्यक्तपणांकूं विसावनेके अर्थ।

दर्शन मोहकी क्षपणाकी पूर्णता नर्कादिकमें जाय क्योंकर करें हैं; ताका स्वरूप दिखावनेकूं वेदक सम्यग्दृष्टी है सो; निष्ठापक अवस्थामें अनन्तानुबन्धी क्रोध मान माया लोभ सम्बन्धी उदयावलीमें याका तिष्ठे। समस्त निषेकनिकूं किस भांति संयोजन करे हैं इकठा करे है अर्थात-अनिवृतकरणके अन्तके समय विषैं; समस्त अनन्तानुबन्धीके द्रव्यकूं द्वादश कषाय अरु नव कषाय रूप कैसे परिणमावै है। ताका वर्णनके अर्थ वेदकसम्यक्तके अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनका वर्णन करि है।

अथ वेदक सम्यग्दृष्टीके अनन्तानुबन्धी चतुष्क विसंयोजन करनेका वर्णन।

दोहा—अनन्तानुबन्धी चतुष्क, सम्बन्धी यह ठौर।
कहौं विसंयोजन तना, क्षायिक मारग और॥

सवैया ३१—कोऊ नर वेदक शमिक हो; असंजत वा देश-संजमी वा परमत दशा धरे हैं; अप्रमत्त होइ वा इन्होंमें काहू एकमादि तिष्ठ तीन करणकी विधितैं यों करें हैं। अनन्तानु-बन्धी क्रोध मान माया लोभके निषेक उदयावलीमें तिष्ठ छोडि और हैं, तहां वो अनोदय निषेकनकूं खैंची खैंची उदय भयों सैंज्वा कषायरूप परे है॥१॥

अनिवृतकरणीके समैंमें ऐसे सकल अनन्त अनुबन्धीके दरबकू; द्वादश कषाय अरु नव नोकषाय रूप तहां परिणवै ताकी दरनि सरबकूं; थापै या संयोजनमें गुण श्रेणी थित कांड घातादिक विधि कर तजै है सरबकूं। अन्तरमुहूरत लौं करे विसराम तहां; फेरि उठि धावे मिथ्याभावकी चरबकूं॥२॥

अथ अनन्तानुबन्धीके विसंयोजनके पीछे अन्तमुहूरत लौं निधिकता रूप विश्राम करि क्षायिक सम्यक्तके निकटवर्ती ऐसा

आया है। ताके अनुसार कवि ताने यह परम्परा पूर्वक कथनी कमाल ग्रन्थ छन्दोंमें रचा है, ताका प्रमाणार्थ ।

सवैय्या ॥३१॥—तीसरी अनन्त तीर्थराज हिमवन्तनमूं गणधर गुरु कुण्डपर विस्तरी है, सप्तभंग जोरसे मिथ्यात नग तोर फोर धाराधाही सदा ज्ञान सागरमें परी रहै, जाको साधनादि ध्रुव शासन सरूप सत्य मुनिभिरुपासित पवित्र सुरस भारी है। जाको ज्ञान जे तो तिन पायो सार ते तो यहै तो रत्नकरण्ड देखि रचना यो करी है।

पुनः कविताकी तरफसे विज्ञापन सवैय्या

प्रथम विचारी भाखूं पंच लब्धि सारी पर छोटीसी बनाऊं जासुं याद करे सबही, थोरीसी बनाई तौन आई सुद्ध कथनीमें पापसें प्रकंपिके विचार कियौ जबही। १। सबही कथन लीजे छन्दनमें जोरि दीजें छोडि एन अक्षर अरथ सब तब ही, अन अधिकारी अधिकारी पंच लब्धि सारी तनों समकितको सरूप कह्यो तब ही ॥२॥

अथ कविता का देश नगर धर्म पेशा जात अरु नाम तथा वर्तमान राजाके राज्यका नाम सहित रचनाके फलकी भावना सहित व्याख्या होतो ।

सवैया ॥३१॥—देश कुरु जांगलमें कांधला नगरनामी जाकी करतूत छाय रही जगमें, धर्मको निवास जिनमतको प्रकाश जहां, जीवदया भाय रही सबहीके मनमें, मलके विक्टूरियाका राज्य अंगरेजी तपे नौकरी करूं हूँ ताकी बैठा वैद्यगणमें, भूधरजतीके नन्दन नैनानन्द रचे छन्द दीज्यौं समकीत ज्यों भ्रमूं न भववनमें।

अथ सम्वत मिती सहित कवि ताकी सन्त पुरुषों प्रति प्रार्थना ।

सवैय्या ३१—दो हजार मांहि ते घटाय साति एक घाटि विक्रमको सम्वत् १९४१ विचारिके धरत हूं, भादवा शुक्ल दूजवार जानि देव पूज्य अर्हनिशा माहि याहि पूरण करत हुं ॥इति॥

श्री पंचलब्धि समकित की समृद्ध रचिके पवित्र नैन आनन्द भरत हूँ, ज्ञानवन्त करो शुद्ध जानि मेरी, बाल बुद्धि दोषपे न रोष करो पायन परत हुं ॥२॥

अथ इस पंच लब्धिके प्रबन्धके छन्दोका प्रणन नयाशी लंगड़े खयालोका प्रमाण।

सवैय्या ॥३१॥ लंगडे खयालनके छन्द दो दो कलियोंके जोडिये तें, अत तीस हैं सिलोक सबही। ताके भए चौक साढ़ेनौ तथापि ऐसो क्रमनि भयोना कथन भंग सोच भयो जबही, कोई चौक छोटोकोऊ बडे कियो मैं निवारी कलनीको क्रम भंग कियो नाहि कब ही। त्यों ही भव्य जीव याही परचा सिद्धान्त जानि कीजो मत भंग त्यों संभारी जब तब ही ॥१॥

अथवा सब रेलीके खयाल तथा दोहे तथा और छन्द तथा सवैय्या॥ इकतीसेके ते हैं तिनका वर्णन।

सवैय्या इकतीसा—ताही भांति छोटे बडे चौकनपे सोच ठारि वांस बरेलीके खयाल रचडारे हैं, च्यार च्यार कलि-योंके असी हैं सकल छन्द ताके चौक बांधिवे तो ठीकसे संभारे हैं।

दोहे-इकतीस जान गीता छन्द पांच जान इकतीस अक्षरे
सवैय्ये जो उचारे हैं द्वादशमें ए हैं सब सबहीके जोडे
तब एकसो छियासठि सिलोक यामें सारे हैं ॥२॥

अथ अंगभंग कथनके अपराध ॥दोहा॥

गुन्नीमें कुना बनें एक बिंदु बिन मीत, अंग भंग सिद्धांतमें। होय महा विपरीत ॥१॥ मणिकरण्ड सिद्धांतमें, चुनि चुनि काढें रतन, रचि पचि मणिमाला रची। धरियो उर करि जतन ॥२॥ अति अगाध चर्चा जलधि, सुगुरु सहारा पाय। त्यागीं सम्यक त्रिविधि कवि, काढि सुधा सुखदाय ॥३॥

अथाशीर्वाद:।

दोहा—जब लग हैं षट द्रव्य थिर। आप्त शब्द जिन धर्म तब लग
भवि पीर्वो वरो, पंच लब्धि शिव सर्म ॥इति॥

श्रीमत यति नयनानन्द कवि विरचिते मणिकरण्ड श्रावकाचार अनुशासने लब्धिसार सिद्धांतोपदेशान पंच लब्धि सहित त्रिविध सम्यक्त रत्नमाला समाप्त ॥

इति श्री नयनानन्द यति कृत भजन विलास संग्रहे पंचलब्धि स्वरूप वर्णनो नाम एकत्रिंशतमोऽध्याय सम्पूर्णम् ॥

तत्वारथका मतलब अब कैसे है, भाई तत्व तो जो जैसे है सो तैसे है। अरु अर्थ शब्दका अर्थ यही समझाया, निश्चय करियें सोई तत्वारथ बतलाया ॥२॥ भाई तत्वारथ श्रद्धान है सम्यग्दर्शन, जब उपजे निजपर बोध जीव हो परसन। सो दो प्रकारसे उपजत हैं सुनी प्राणी, इक तो सु भावसे कह्यो निसर्गज ज्ञानी ॥३॥

जो उपजे देव गुरु आगम श्रवानी, सो उपदेशज अधिगमज कह्यो जिनवानी। जहां प्रसम और संवेग दया आस्तिकता, सो सराग समकित अब सुनि भेद अधिकता ॥४॥ जहां केवल आत्मस्वरूपकी होय विशुद्धि, सो वितराग समकित सुनले सद्बुद्धि। अब तत्वकहा हैं तिनका वर्णन सुनले, करि याद जिन बैन मनमें गुन ले ॥५॥ भाई जीव अजीवरु आश्रव बन्ध चितारो, सबरकूं समझि निर्जरादि मोक्ष विचारो। इन तत्वनमें तुमको न जुदा कर डारो, फिर तजि पदार्थ निकारो ॥६॥ प्रभु भव समुद्रसे पार करणहारे हैं, ते वन्दूं तद्गुणलब्धि भरणहारे हैं। जो सकल तत्वका ज्ञान धरणहारे हैं॥ ते वन्दूं तद्गुणलब्धि० ॥

ते नाम थापना द्रव्य भाव करि जानों, इन च्यारूं निक्षेपोंसे उन्हें पहचानों, विन लक्ष्य वस्तुके लक्षण किसका ठानों। तातें ऐसा धनसाधन वस्तुके मानों ॥१॥ पुनि दो प्रमाण अरु सप्त नयन करि साधो, जातें हो अर्थ अनर्थ विचार अबाधो। फिर पांच भेद विधि थापि उन्हें आराधो, निर्देशत था स्वामित्वके पैर जमा दो ॥२॥ पुनि साधन अरु अधिकरण स्थिति भेदोंसे, करो पूर्व कथित सब सिद्ध छुटो खेदोंसे। सत्संख्या क्षेत्र स्पर्शन उद्योगोंसे, समझो कालांतर भाव जैन वेदोंसे ॥३॥

तुजकूं तो साध्य है शिव सम्पति अविनाशी, जो परतें

थापे बिन नहि वस्तुत्व सिद्ध हो ग्यानी, तातें थापो कोई वस्तु तदाकृत प्रानी। क्या भावका है परभावभाव क्या जैहै, कर नाम स्थापना वस्तु जिसी जैसे है ॥४॥ जैसी जड़ अजड़ सरूप सुखदुख दाता, हो जैसा रंगढंग तिसी मानि सेरे भ्राता। मत कहो सांपकूं रज्जु रज्जुकूं भोगी भोगीकूं कहो मत मित्र भूलकर जोगी ॥५॥ मत माटीके पिंडकूं गणेश बतावे, मत काठ धातु पाषाणकूं श्रीजिन गावें। मत कहै जड़कूं चैतन्य धरमकूं अधरम, मत कहु नभकूं तू काल पापकूं तु करम ॥६॥

जिस भांति द्रव्य पर्याय नाम गुण जाके, तिस भांति थापि कर भाव समझ त्यौं ताके। विभ्रमसे जीव दुर्गतिमें जाय पर हैं, सतसंग्यकसें शिवरमणी जान वरें हैं ॥७॥ ए च्यार प्रथम ही साधन मूल जताए, सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए। तत्वार्थ सिद्धिके साधन मूल जताए। सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए ॥८॥

अथ च्यारों निक्षेपोंकी दृढता हेत भव्योंको द्रिष्टांतरूप उपदेश ख्याल दूजा।

ए सुन सर्के अरथ चित धुन ले मुकतिके दूला, ए च्यारों हैं तेरे व्याहके मंगल मूला। इस कथनी पर दृष्टांतर एक सुनाऊं, निक्षेपोंकी द्रिढता तुमको करवाऊं ॥१॥ बिन वरकन्याके नाम न होय सगाई, बिन दोनूं गावें किसके गीत लुगाई। यदि हैं दोनूं अतदाकृत तो क्या करिए, भए इष्ट अनिष्ट संज्ञा मत भ्रमित जरिए ॥२॥ अथवा जैसा संजोग करमवश पावे, सब भाव समझि कर ग्यानी तद्वत गावे। इन तत्वनिमें तेरा जीव नाम है दूला, यदि भव्य जीव है जैन धरम अनुकूला ॥३॥

सिरी जिन गाया। सो है प्रमाण सतरूप इसीके कारण, पर तत्व कहे हैं साधक तदपि निवारण ॥२॥ सो परतत्वार्थ पदार्थ प्रमाण है दूजा, यह असद्भूत लखित जो करो मत पूजा। निजमें निज मानों परमें पर मेरे धीरा, सम्यक पाप शिव जाप वसोगे धीरा ॥३॥ इस भांति नैनसुख दोष त्राण मिटाये, सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए। तत्वार्थ सिद्धके० सम्यकके हेत० ॥४॥

अथ नयैरधिगमः कहिये सप्तनयों करि तत्वार्थ ज्ञान होना है तातें सप्तनयोंका स्वरूप कन वरणन करे हैं यहां सप्तभंग स्याद्वाद स्वरूप जैनका जयवन्त अखण्ड झण्डा है इस हीके बल करि जैन लोक तिहुंकालमें शुद्ध अविरुद्ध सर्वोत्तम मत विजयवन्त हैं तातें भव्य जीवोंको इस स्याद्वादका तथा सप्तभंगका तथा नयका अर्थ सहित नाम गुण स्वरूप याद करना चाहिये। जिसमें अनन्त धर्मावस्तुका स्वरूप सिद्ध करनेमें आलाप करना आ जावे अरु एकान्तवादीके कवि तुण्डावादका खण्डन अरु स्याद्वादसे अनन्त धर्मावस्तुके स्वरूपका मण्डन हो सके, नहीं तो तत्वार्थ अधिगम होना हासीन्वल नाहीं है अनर्थ मण्डण हो जायगा। छन्द ख्याल।

तत्वार्थ सिद्धके साधन जे गुरु गाए, सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए ॥टेक॥

जय स्याद्वाद सर्वांग जिनागम गंगे, तू सुख मण्डण भ्रम खण्डण विमल तरंगे। मैं उस स्वामी सतगुरुकूं सीस नमाऊं, अब सप्तभंग साधनकी रीति बतलाऊं॥१॥ कोई पूछे नय क्या वस्तु हमें समझाइये, भाई वचन भेदकूं आगममें नय कहिये। मैं दोकूं भङ्ग अरु सहते हैं तरज कलामो, तिनके जुगपत कहें अर्हन् अन्तरजामी ॥२॥

जहां हठ निहंठ दोऊ पक्ष दोऊका त्यागन, है सफल भाव करि युक्त वस्तुका साधन। अर्थात उलटि अरु पलटि वचन उचारें, थापैं उत्थापैं वस्तु सुभाव विचारें ॥३॥ है स्याद्वाद मत याका नाम पियारा, तातें है सन्मत जैन जगतसें न्यारा। एकांत मती जे थापें वाद वितुण्डा, करे खण्ड खण्ड यह विजयवन्त बल बन्डा। घट पट पदार्थ सब दृष्टान्तक दिखाए, सम्यक० तत्वार्थ० ॥४॥ इति।

सब वस्तु अनन्ता धर्म भावकूं धारें, हठग्राही पापी एक ही भाव उचारें। जिनके वचनोंमें प्रगट दोष प्रति भाषे, यह सप्तभंग करे निर्मल दोष निकासें ॥१॥ इनकी तो है वीरण जगमें अकथ कहानी, जिन जिते त्रिभुवनके सब ही अभिमानी। इसकी तो शक्तिका पार नहीं मुनि ज्ञानी, है प्रभुके अतुल बलकी यह मूल निशानी ॥२॥ गौतमसे महाबाणी सिर आनि झुकाए, सम्यकके हेत तिनके यौं अर्थ बताए। तत्वार्थ सिद्धके साधन जे गुरु गाए, सम्यकके हेत तिनके यौं अर्थ बताए ॥३॥

स्याद्वादकी सप्तनय या सप्तभङ्गका वर्णन स्थान।

तत्वार्थ सिद्धिके साधन जे गुरु गाए, सम्यकके हेत तिनके यौं अर्थ बताए ॥टेक॥

अब स्याद्वादको ऐसे थापन करिये, स्यात्‌की आदिमें स्यात शब्दकूं धरिये। यह स्यात किन्चा कर्थंचि दोय बताई, है यौं भी यौं भी तहां लगावें है भाई ॥१॥ भाई वचन भेद है सात तिन्हें नय कहिये, तसो सप्त भाव सर्व सहगाहय रस गहिये, सो सप्तभङ्ग इस भांतिसे है सूनो लोगों जिन वचनोंका यथार्थ प्रथम गुण लीजो ॥२॥

अब सप्त नव भंगानि आलाप स्यादस्ति स्यात अस्ति ॥१॥

भाई अस्ति वचनका है यथार्थ बताया।

स्यात नास्ति ॥२॥

अरु नास्ति वचनका नहीं है यों समझाया ।

स्यात् अस्ति कथन्चित् वक्तव्य ॥३॥

फिर अस्ति कथन्चित कहि वक्तव्य सुझानी, है किसी भांति कहनेके जोग्य हम जानी ।

स्यात अस्ति कथन्चित अवक्तव्य ॥४॥

फिर अस्ति कथन्चित अवक्तव्य गुण धारै । है किसी भांति पर है न कहनकी सारै ॥४॥

नास्ति कथन्चित वक्तव्य ॥५॥

फिर नास्ति कथन्चित कहि वक्तव्य विवेकी, नहि है काहू विधि कथन जोग्य है देखी ।

नास्ति कथन्चित अवक्तव्य ॥६॥

फिर नास्ति कथन्चित अवक्तव्य सुनो वीरा, नहि है काहू विधि अवचनीय है धीरा । हैं अस्ति नास्ति रस रूप तत्व गन सारे, हैं अवचनीय सब ही अलापसे न्यारे ॥६॥

अब सप्त भंगके अर्थोंकी परस्पर विरुद्धताका सूचक खयाल ।

तत्वार्थ सिद्धके साधन जे गुरु गाए । सम्यकके हेत तिनके यों अर्थ बताए ॥टेक॥

अब सप्त भंगकी प्रगट परस्पर खटपट, समझावैं सत गुरु समझ ल्यौं मितर झटपट । मैं तजिकै सातूं शब्द अर्थ कहि डारया, इन रत्नोंको परखेगा परखन हारा ॥१॥ भाई है पर नहि है पर कहनें लायक, है पर कहनेके जोग्य नहीं है वायक । नहि है पर कहनेके जोग्य जानकर कहिये, नहि है यूं अकथ विचारी मौन गहि रहियै ॥२॥ हा है पर नहि है यहि सिद्धि भई वीरा, तब अवक्तव्य भई सकल व्यवस्था धीरा । जब कही अणकही बात एकसी होवे, तब मौन

उलट गए लेकूं आई, घोल्यौ सट क्या तेरे नैनतिमिरने आए। सम्यककै० । तत्वार्थ । सम्यक० ॥७॥

अथ एकांत अनेकांत मत संचर्षण तत्राद्दौ एकांतवादी नास्तिक वचनम् ॥ख्याल॥

मैं प्रगट ख्टा क्या तुमकूं दीखत नाही, दीखत है मुती तुम हमकूं दीखत नाही। कहै वादी मैं हूं पंचभूत समुदाई। पांचूंसे भया विना पांच रहूँगा नाही ॥१॥ कहै स्याद्वाद विन पांचन थे अथ थीरा। थे नास्ति फेर क्यौं अस्ति रूप भए थीरा। भई अस्ति नास्ति दोऊ सिद्ध तुम्ही मैं ध्यानी। एकांत-वाद भया खण्डण सुनि अभिमानी ॥२॥ पुनि पंचभूतके विरन नाश भया तेरा। तुम हो तौ कौन होय ही वाद है मेरा, नहि नास्तिक हो तौ हूं मैं यौं मत भाखो। हो अचल तौ अपना वचन। अचल ही रखो ॥३॥

मैं हूं मैं हूं मत करै रूप कछु अपना, है कौन भांति किस अंगमें तेरी थपना। हो अचल तौ अपना वचन अचल ही राखो। तब कहै वादी प्रत्यक्ष देखल्यौ मैं हूं, भया पंच-भूतमें जो कछु सोकछु मैं हूं। तब स्याद्वादवादी पांचूं लेआए। सम्यककै इत० ॥४॥

अथ पंचभूत संग्रह करि स्याद्वादवादी एकांत मती नास्तिकका खण्डण करै है ॥ख्याल॥

उन पंचभूतका यौं समुदाय मिलाया घटके अकाशमें सुन्दर जल भरवाया। चूलेपै चढ़ाकर नीचै अगन जलाई, पंखेकी पवनसे खूब उसे धंधकाई ॥१॥ माटी आकाश जल अगन पवन सब ल्याकर, वादीने कही तू दे अपना साधना-कर। बोला वादी यह कुदरत हममें नहीं है। है ईश्वर मैं उस कृति किसीमें, नहीं है ॥२॥ उसकी लीलाका नहीं कोई जानन हारा, कहै स्याद्वादवादी सुन ले मेरे प्यारा। तेरा

नास्तिक मत भया नष्ट कष्टकूं छोडो, अब ईश्वर अरु जीवका सो कन्थनकूं जोडो ॥३॥

नास्तिकसे भए तुम आस्तिक ईश्वरवादी, तुम हो अनादि अकसादि कसादि अनादी। कैसा ईश्वर अरु कैसी है उसकी माया, उसने किस विधि किस भांतिका तुझे बनाया ॥४॥ तू अपना हमकूं सारा हाल बतावो, वादी है हमको कौन हमें समझावो। सुन स्याद्वादके प्रश्न मूढ घबराए, मन्यकके [illegible]। तत्वार्थ ॥ ५ ॥

अथ ईश्वरवादी एकांतमती वचनन ख्याल तामें मतका संघर्षण ॥

तब उठ बोल्या वाचाल क्रोधभरि ल्याया, मुझे परम ब्रह्म परमेश्वरने उपजाया। मैं हूँ आनादिसे उस भगवन्तका चेरा, है उसका मेरा सब भांति मोहसे डेरा ॥६॥ वो निर्गुण चेतन अज अखण्ड अविनाशी, सब शक्तिमान सब ठौर सदाशिव भासी। सर्वज्ञ अलख अरु दीन दयाल कहावे, उसकी मायाका पार न कोई पावे ॥७॥ रचि रचि पचि पचि हारि गए भेद नहीं पाया, मैं उसके हुकममें सब बन्धनमें आया। उसहीके अंशका अंश अणु भई मैं हूं। विभ्रम करि दीनं भिन्न जीवो सो मैं हूं, अन तू अलमें अन कोई और कहां है। है विश्वरूप वही एक ए बात सही है, सुनि हठ धर्मी मूढ वादीका मण्डण। निहठवादी करे स्याद्वादमें खण्डण ॥९॥

सुनि वादी मेरे वचन चित थिर करिके, मत भाखै वचन विरुद्ध न बोल अकरिके। तू है अनादिसे तो मत कह उपजाया, उपजाया तो तू अस्ति नास्तिमें आया। भया निर्णय हेत वाद खण्डण, एकांत नया भया स्याद्वादका मण्डन। नहिं मोक्ष विषे थावो स्वामी तू पावर, जो ठाकुरका भा [illegible]

यहांके है ठाकुर ॥४॥ तू मोक्ष होय कर जैसे दास कहाया, तो यहां हाल तेरे परमेश्वरका पाया । तो मोक्षमहे निहुं काल महा दुखदाई, जहां पराधीन संसार अवस्था पाई । धिक धिक जिन पापिन भोरेजन बहकाए, सम्यक० । तत्त्वार्थके० ॥३॥

पुन्यः एकान्त खण्डण ॥३॥

हे अन्निकाको नाथ हमें बतलावो, तुम आए कहांसे यहांका हाल सुना दो सब दोषन ते अविरुद्ध शुद्ध कहो वानी । मैं प्रश्न करूं तू दे उत्तर विज्ञानी ॥१॥ तू परमेश्वरकूं निर्गुण तो बतलावे । फिर वचन पक्ष करि ऐसा दोष लगावे, दुःखनकूं भव बन्धनके दुख दिखावे । हा हा धिक धिक तोहि आपन लाज न आवे ॥२॥ तू कहे ईश्वर चैतन्य चेतनारूपी और कहे जड़को तद्जन्य तथा तद्रूपी, तू पंडित है एक है कोरे खली पद्द । दिखला तो हमें कहूं लगत नीचके कहूं । तू भाखे अज अरु जनम मरण बतलावे, अपना भी जन्म उसहीके अंशसे गावे । तू पंडित है एक स्वांग भरा है भाई, तुझे किसने गहरा मिथ्यातकी भांग पिलाई ॥३॥ तू कहि अखण्ड खण्ड कर गावे, कोई शिव कोई संसारी बतलावे । कोई शिष्य कोई गुरु सुखी दुखी फरमावे, क्या आप ही स्वामी सेवक आप कहावे ॥४॥ धिग धिग भांडोंने भांडमती भरमाए, सम्यक० । तत्त्वार्थ० ॥५॥

तू अविनाशी थापे अरु फिर उत्थापे, कहे दुःखनकूं भव पतन असत आलापे हाहा कुबुद्ध एक बलग धरोगे । कब लो अनन्त समारके दुख भरोगे ॥१॥ सब शक्तिमान सब ठौर चराचर भासी, तेरी कुबुद्ध क्यों हरी न आकर हांसी । कहां गई चराचर अब लोकनकी शक्ती, तू अंश वही तू भक्त तुही है भक्ती ॥२॥ सर्वज्ञ अलख अरु दीनदयाल कहावे, सब जाने देखे क्यों तोहि दया न आवे । तेरी छतीताती कुटिल

करि धर्माधर्म विचार जीव सुख पावे, तेरे चितकूं कबै विश्राम नांक नहिं आवे। कभी तीनों फांक टांक भर केरी, हो जैसा तीनका आंक तिणकी ढेरी॥२॥ मत धरे लोकपर स्वक जले मत तनगें, तू मानी सुगुरुकी आंक दया धरि मनगें। तब वादी भये अबोल वचन नहीं आवे, बिन जानें अपना रूप कहा बतलावे॥३॥

तब स्याद्वाद करुणा करियों समझावें, तुम तजो मूढ हठ ज्यों शिवमारग पावे। कहै नैनसुख जो मने तो इतनी करले, तू उमास्वामी सतगुरुके चरण पकरले॥४॥ तुम सम्यग्दर्शन ज्ञानचरण आराधो, है यही मोक्षका मार्ग इसीकूं साधो। तत्वारथ अधिगम मोक्ष शास्त्र गुरु गाया, तिसमें शिवपथका साधन सब बतलाया।५॥ तहां तीन बीस साधनकी रीति बताई, पहले पहली अध्याय बहुत क्यों गाई। मैं सप्तभंगके शब्दारथ यों गावे, नहीं समझें बालक तिनकूं बिन समझाए॥६॥ एकांत मतिनकूं तिनकी शक्ति दिखाई, अद्वैतवाद खण्डणकी रीत बताई। है स्याद्वाद सर्वांग शुद्ध जिनवानी, इसके प्रताप तिर गये अनन्ते प्राणी॥७॥ अद्वैत-वाद बकवादने जग भरमाए। सम्यकके०। तत्वार्थ०।

अथ वादी वादकूं तजि अनुकूल भया शरल ब्रतसे तत्व व्यवस्था पूछे है अरु यह कहे है तुम ही मोहि बतावो मेरा क्या सरूप है, मैं कौन हूँ और मैं तत्व व्यवस्था कैसे मानूं।

छन्द खयाल—कहै भव्य गुरु मोहिं मेरा नाम बतावो, मेरा स्वरूप क्या मुझकों सब समझावो। हूं मेहलका एक भारी नरम गुंसाई, एक हूं कठोर एक तना शीतलताई। चिकना कि खदरा खट्टा मीठा स्वामी, कडवा कि चर्चरा खारी अन्तरजामी। एक हूं कसैल दुर्गंध सुगन्धोंवाला, एक

पीत पद्म एक धौला गोरा काला। नीला कि सब दूसा तेरा भेद बतावो, धूवां कि धूप छायाला हूँ समझावो। आकाश प्रकाश कि दिनसा दीप समाना। माटी जल पावक पवन वनासपति नाना, हूं लंवा गोल मंझोल कि तिरछा सीधा। चौकोर दुकोर कि तीनको गुण अकलीदा, पसरा छिपा कि खडा ऊंधा एक वैठा। चलता हल्ला कि जागता सूता लेटा, वहता दहता कि बन्धा कि खुला हूँ। सुगन्धा पतला मैला उजला कि धुलाहूँ, देव कि मानुष तिरजंच कि नारकवासी। पंडित पाठकस्वामी सेवक अककामी, नारी कि नपुंसक अरु पुल्लिंग बतावो, सबसे उत्तम कि बुरा नरमें समझावो। चेतन कि अचेतन नर चितक सदा अनादी, हूं निरजोग निरुपाध कि सिद्ध समाधी। हूं धर्म अधर्म अकाशक काल सरूपी, चेतन कि अचेतन पापक पुन्य अनूपी। कर्ता कि अकर्ता गुरु ही सब समझावो, मैं कौन कहांका कहां जाऊं बतलावो। किस भांति करूं जिस भांत अचल सुख पाऊं, कहीं नैनसुख प्रभु तत्व व्यवस्था पाऊं। सतगुरु दयालने मैंने अरज [illegible]. सम्यक्षे० ॥ तत्वार्थ० ॥

अब एकांतवादी जब [illegible] होय [illegible] चुपका हो रहा अरु उसके आत्मस्वरूपके जाननेकी [illegible] उपजी तब स्याद्वाद् विद्यार्थीने अति [illegible] आत्मस्वरूपका निर्णय करावे है कि भाई [illegible] स्वीकार है कि मैं अपने स्वरूपकूं नहीं जानता हूं [illegible] विचार कर देख ॥ स्यात् अस्ति ॥१॥ स्यात् नास्ति ॥२॥

ऐसी जिज्ञासा तेरी सिद्ध भई [illegible] नहीं [illegible] वाहां हूं कहनेसे भी तेरा अस्तित्व सिद्ध भया ॥१॥ अरु नहीं हूं कहनेसे तेरा नास्तित्व सिद्ध भया। [illegible] हूं [illegible] कहनेसे भी तेरा हूंपना। अर्थात अस्तित्व है। सिद्ध [illegible]

क्रिया करूं अपने स्वरूपकूं नहीं जानता हूं । इन तेरह अक्षरोंमेंसे मध्यके ११ अक्षर छोड़ आदि अन्तके अक्षर दोनूं ओंकार विचार कि याकोंमें हूंके मिलाय करा रहा । अरु जब नु है तो हूं ऐसा कहनेवाला तो चैतन्य द्रव्य ही है । अचैतन्य नांही सो ज्ञानी द्रव्य है अरु ज्ञान ५ प्रकारके है । सोई कहिये है ।

अथ सुज्ञानके पंच भेदोंका वर्णन मरहटो लंगड़ी ।

परमारथ हित हेत परम गुरु दया भाव विस्तारे हैं । ज्ञान सुधारस पिलाके वे स्वारथ निस्तारे हैं ॥टेक॥

मति श्रुत अवधिन या मनःपर्यय पुनि केवल्य समझ प्राणी । नप्रमाण दो असन्मुख सन्मुख भाखे जिनवानी । परमारथ हित हेत परम० ॥१॥ मति श्रुत दोय परोक्ष बताये तीन कहे परत्य ज्ञानी. अब पांचनकी कहूं मीमांसा सबकूं सुखदानी । परमारथ हित हेत परम गुरु दया० ॥२॥ मतिके नाम हैं पांच पांचका अर्थ भेद नहीं जिनवानी, और न कहियो न करियो मतिका अर्थान्तर प्राणी । परमारथ हित हेत० ॥३॥ मति स्मृती अरु संज्ञाचिंता अभि निबोधक हे गुरु ज्ञानी. येही पांचों नाम कहे उमास्वामी जैसे मानी । परमारथ हित हेत०, ज्ञान सुधारस० ॥४॥ तेसे उनके अर्थ अनुक्रम सतगुरु यों उचारे हैं, ज्ञान सुधारस पिलाके वे स्वारथ निस्तारे हैं । परमारथ हित हेत०, ज्ञान सुधारस० ॥५॥

अथ मतिज्ञानके पांच भेदोंके जुदे जुदे सकोच विस्तार रूप अर्थ जिसको सामान्य लक्षण तथा विशेष लक्षण कहना चाहिये ।

अथ सामान्य अर्थ मरहटी लंगडी ।

प्रथम विचारण द्वितीय समरण तृतीय नाम संज्ञा करिये । भावी चितवन चतुर्थी पंचममें सब भरिये ॥१॥

पिलाके० ॥२॥ इन कारजको नाम अवग्रह, यही महण कारज तिनका। तिन लब्धिनका अवग्रह ज्ञान छटा जानी मनका, ज्ञान सुधारस० ॥३॥

तामैं गर्भित कहीं अवग्रह लब्धि बोध इन्द्री मनका, ईहा कहिये चाहना ताकी सो भी है मनका। ज्ञान सुधारस० ॥४॥ ता लब्धिको निश्चय करना सो अवाय भी मनका. कालांतर लौं याद रखना पिचारना है मनका। ज्ञान सुधारस० ॥५॥ यौं मतिके षट कारण तिनके कारज षट कह डारे हैं। ज्ञान सुधारस पिलाके वे स्वारथ निस्तारे हैं॥ परमारथ हित हेत परम गुरु दया भाव विस्तारे हैं। ज्ञान सुधारस पिलाके वे स्वारथ निस्तारे हैं॥६॥

अथ इन्द्री मनकूं मुख्य करि इहां कहिये इच्छाका स्वरूप वर्णन यह मनमें उपजती है। मरहठी लंगडी।

इहां मनकी बहुत बहुत प्रविध तरंग सुभावी वरणी है। रहै चलाचल सदा अध्रवजगमें ले परनी है॥१॥ पुनि अनि-सृता तथा अनुक्ता अरूल हमेशा वरनी है। विना निकासे उचारे यच मनसे अवतरणी है॥२॥ सदा अमंगलमें हित राखें मंगलमें कट भरणी है। करे उदंगल शुध सम्यककी मूलक तरणी है॥३॥ यौं इच्छाका रूप कह्या अब चर्चा और उचरणी है। क्योंकि ध्रुवाणां सेतराणांकी व्यवस्था करनी है॥४॥ यह रंडा जगमांहि डबोवे है ध्रुव चर्चा ले तरणी है। रहै चलाचल सदा ध्रुव जगमें ले परणी है॥५॥

इति समाप्तः॥ सम्पूर्णम्। शुभं भूयात। ॐ नमः सिद्धेभ्यः अर्हद्भक्तिभ्यो नमः॥

है चौथा समवायांग सुधाका सागर। एक लाख सहस्र चौसठ पदशांहि उजागर ॥१॥ व्याख्या प्रज्ञप्ति पंचम अङ्ग बताके। दो अरब अठाइस सहस कहे पद ताके ॥२॥ है ज्ञाता धर्म कथा षष्ठम श्रुत वीरा। ताके पद छप्पन सहस पांच लख धीरा ॥३॥ है सप्तम अङ्ग उपासकादि अध्ययना। ग्यारह लख सत्तर सहस पदोंका अयना ॥४॥ है अष्टम अङ्ग दशांत कृतस्तु विचारे। लख तेईस ठाईस सहस कहे पद सारे ॥५॥ उन छहों अवग्रह लब्धि बोधसे० ॥६॥ ध्रुव ज्ञान। उन छहों अवग्रह लब्धि० ॥७॥

है नवम अनुत्तर दशनामांग सुज्ञानी। बाणव लख सहस चंवालीस पदमें प्राणी ॥१॥ है दशम प्रश्न व्याकरण महा बलकारी। तो तीन एक छह त्रिंशद्द पदोंका धारी ॥२॥ एका-दशमां है विपाक सूत्र सुखभासी। इक कोटि चुरासी लाख पदों करि नासी ॥३॥ पुनि च्यार कोडि लख पन्द्रह युगल हजारा। इन ग्यारहका सतगुरु यह जोड उचारा ॥४॥ द्वादशम अङ्ग है दृष्टिवाद पण भेदम्। एकसौ किरोड वसु कोडि जोडि गत छेदम्। अठसठि लख छप्पन सहस पांच धरि तापे। इतने पदका धरि जोड जु आवै थापे ॥५॥ ए ज्ञानामृत करि पूह सूत्र हैं प्यारे। ए श्रुतज्ञानके अङ्ग हरें दुख सारे। ए श्रुतज्ञान० ॥६॥

इस भांति किया प्रत्येक अङ्गका वर्णन अब सबके पदोंका जोड धरो निज कर्णन ॥१॥ सौ कोडिपै द्वादश कोडि तिरासी लख धर। अरु सहस अठावन पांच मिला करि वमकर ॥२॥ ए द्वादश सर्वांगके पद उचारे। हम ध्यानत कृत श्रुतपूजा देखि निकारे ॥ ३ ॥ अब मुनि इक पदका तूल एक चित्त

श्रुतज्ञानके अंग हरै दुख सारे। तुम द्वादशांगके करल्यौ तीर्थ मेरे प्यारे, ए श्रुतज्ञानके अंग हरै दुख सारे ॥६॥

ए परम पूज्य हैं जैन वेद मुनि प्राणी। हिंसा गर्भित है वेद महा दुखदानी ॥१॥ इनकूं आराधैं सन्त बड़े सद्‌ज्ञानी। उनकूं आराधे हिंसक अरु अभिमानी ॥२॥ लग रही जगनमें ऐसाताल विडंबन। बिन श्रुतज्ञान नहि सुखदायक अवलम्बन ॥३॥ गह वीर हिमाचलसे जिन गंग ढरी है। सो गौतमादि गुरुके घटमें पसरी है ॥४॥ सप्तांग सुधारससे सर्वांग भरी है। जड़तादिक जगकी बाधा सकल हरी है ॥५॥ पाखण्ड महावनके जिन पेड़ उखारे। ए श्रुतज्ञानके तुम द्वादशांगके, ए श्रुत० ॥२॥

इन तोड़े भ्रम गजदन्त पन्थ सब खोये। द्विग मोह मरुस्थल फेंकि अधर्मी धोये ॥१॥ प्रक्षाले जग जनमन कलंक सब यानें। तानें सन्तन करि सेव्य सुरादिक मानें ॥२॥ है मुनि भी रूपासित तीरथ तारणहारी। है सदा काल जैवन्त जगतकूं प्यारी ॥३॥ याकूं तजिकैं मनमैं मति कुमति विचारो। नदियों हृविकर मत जीवनकूं मारो ॥४॥ इस ज्ञानगंग जलसे मनकूं धोडारो। नहि अवसर वारंवार समझल्यौं यारो ॥५॥ मत भव समुद्रमें आत्मरतनकूं डारो। ए उसहीके है अंग उसीकूं उजारो ॥६॥ तुम द्वादशांगके ॥ ए श्रुतज्ञान० ॥३॥

एकांत बैठि इस जलका भाव विचारो। तुजहीमें वसै यह गंग तु ही घटवारो ॥१॥ तेरे ही रतन ए द्वादश तुजमें भरे हैं। है तू ही साहु तू ही चोर तुजीमें धरे हैं ॥२॥ है तू ही नाव तू ही प्रेरक तू ही तरवैय्या। तेरी ही अटक रही थेय तू ही अटकैय्या ॥३॥

तू अपनी खेपकूं आप ही पार करेगा। घाहेगा जिन तौ बेशक थार तिरेगा ॥४॥ तू उमास्वामि कृत तत्त्वारथकूं पढ़िले। तू भवसमुद्रसे वेगी वेगी कढ़िले ॥५॥ कहैं दास नैनसुख मनि पुरुषारथ हारे। ए श्रुतज्ञानके अंग हरैं दुख सारे ॥६॥ तुम तुम द्वादशांगके करल्यौ तीरथ प्यारे। ए श्रुतज्ञानके अंग हरैं दुख सारे ॥७॥ ॥१॥

इतिश्री नयनानन्द यति कृत भजनविलास संग्रहे तत्त्वार्थ अधिगम मोक्षशास्त्रके प्रथम अध्यायानुसार बाईसवां अध्याय सम्पूर्णम्।

इसमें ३४ चौंतीस खयाल हैं ॥ २२ ॥